

# শিক্ষণ-ব্যবহারিকী



পশ্চিমবঙ্গ শিক্ষা অধিকার

14.10.93

				পর্চা
स∜वक्ष		•••••	•••••	5
পূথ্ম অধ্যায়				
১। ভূমিকা		*	2011	3
দ্বিতীয় অধ্যায়			A A A	
২। শারীরিক শিক্ষা:—			AL WEST	
(ক) ভূমিক। ও শিক্ষাপদ্ধতি	•••••		चि	22
(খ) শারীরিক শিক্ষা সম্বন্ধীয় নিয়	र्मन		•••••	२७
(গ) স্বাস্থ্য শিক্ষা		•••••	*****	२३
তৃতীয় অধ্যায়				
৩। (ক) সামাজিক শিক্ষা				ე8
(খ) সামাজিক ও পৌর শিক্ষা		-		26
(গ) जानम छ९मव				80
				00
চতুর্ণ অধ্যায়				
8। সৃজনাম্বক কর্ম	•••••			88
(ক) চিত্ৰকলা			******	86
পঞ্চম অধ্যায়				
<ul> <li>৫। শিল্পকাজ :—</li> </ul>				
(ক) ভমিকা ⋯⋯				~~
(খ) ভাগদা ····· (খ) কাতাই শিল্প			•••••	65
			******	GP.
(গ) চামড়ার কাজ (য) হাতে তৈরী কাগজ শিল্প			•••••	<b>68</b>
	*****		******	95
(ঙ) মাটির কাজ	*****	******	******	9.0
ষষ্ঠ অধ্যায়				
৬। (ক) গার্হস্থা বিজ্ঞান				98
(थ) छम्यान त्रहना			*****	99
সপ্তম অধ্যায়				
৭। ভাষা শিক্ষা	*****	******	*****	43
অষ্টম অধ্যায়				
৮। সহজ গণিত			*****	<b>ब</b>
मा प्रवासिक		.,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	***************************************	

#### নবম অধ্যায়

91	পরি	বেশ পরিচিতি :—			পূৰা
	(季)	ভূমিকা	 •••••		226
	(村)	ভূগোল	 *****	******	224
	(st)	ইতিহাস	 		252
	(可)	প্ৰাকৃতিক বিজ্ঞান	 <b>*****</b>		254
	(8)	প্রকৃতিপাঠ, ছড়া ও কবিতা	 		205
	ट्यांच	অধ্যায়			
	4-14	ЧОЛЯ			
10	(₹)	নৃত্য সম্বনিত অনুশ্লন	 **************************************	•••••	206
	(ব)	ছল ও ছড়া	 		509
	(গ)	সঙ্গীত	 		588
	(a)	গান ও স্বরলিপি	 •••••		500
	এব	ন্দশ অধ্যায়			
33	। देन	তিক ও আধ্যান্ত্ৰিক শিক্ষা	 	******	२००

नवर्णात्रकां न्थि श्रार्थां क्षेत्र व्यानियाप क्षिण्य प्रविष्ठ विकार क्षिण्य क्षिण्य विकार क्षिण्य क्षिण्य विकार क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र विकार क्षेत्र क्षे

অতথব শিশ্ জীবনের নব নব সমস্যা, নবলব্ধ অভিজ্ঞতা, শিশ্ব তান্দ্ ও তার স্জনেছাকে পুরোভাগে রেখে প্রাথমিক শিক্ষা দিলে, শিশ্ব পক্ষে শিক্ষা দেলে কাশ্বর পরে শিক্ষা দেলে কাশ্বর পরে কাশ্বর হওয়ার সম্ভাবনা আছে, শিশ্বর পরিপ্রণ বিকাশের পক্ষে তা সহায়ক হবে বলে আশা করা যায়, প্রমের মর্যাদাব্রেধ ও ব্যক্তিগত ও সামাজিক প্রয়োজন মিটানোর জন্য শিশ্বর প্রচেন্টা এতে বাড়বে বলে শিক্ষাবিদ্যেণ আশা করেন।

এই পরিকলপনাকে বাস্তবে পরিণত করতে হলে শিক্ষাপদ্ধতিরও অনেকটা পরিবর্তন আবশ্যক। বর্তমান প্রস্তকখানি শিক্ষকগণকে এই ন্তন পদ্ধতি ও এর ব্যবহার সম্বশ্যে কথাণিং সাহায্য করার জন্যই রচিত হল। তবে এই পদ্ধতি কতখানি স্ফলপ্রস্ হবে চা নির্ভর করবে বহুলাংশে শিক্ষকের আন্তরিকতার উপর। শিক্ষক যদি স্বীকার করেন বর্তমান পদ্ধতি ক্রটিপ্রণ এবং বর্তমান শিক্ষা উদ্দেশ্যবিহীন, স্বাধীন রাষ্ট্রের উপযোগীনবতর শিক্ষাব্যবস্থার প্রয়োজন এবং আন্তরিকতার সঙ্গে যদি তিনি স্বাধীন দেশের স্বাধীন নাগরিক স্থির কার্যে আজুনিয়োগে কৃতসংকলপ হন, তবেই এই শিক্ষাব্যবস্থায় দেশের অজ্ঞানান্ধকার দ্রীভূত হওয়ার সম্ভাবনা।

এই প্রতকে বণিত শিক্ষাপণ্ধতি বিশেষ করে ব্রিনয়াদী বিদ্যালয়ের প্রথম দ্ব শেকার শিক্ষকের কাজের দ্বিধার জন্য রচিত। এই শিক্ষাপণ্ধতিও একমার পণ্ধতি বলে কোনখানেই দাবী করা হয়িন। কেবলমার একটা পণ্ধতিকে অন্সরণ না ক'রে প্রচলিত বিভিন্ন পণ্ধতির সমন্বয়সাধনের চেন্টা করা হয়েছে এবং এই প্রতকে তারই ইঙ্গিত দেওয়া হয়েছে মার। বিভিন্ন বিদ্যালয়ের সামাজিক ও প্রাকৃতিক পরিবেশ এবং তাদের প্রয়োজন বিবেচনা ক'রে পণ্ধতিরও পরিবর্তন কিংবা উণ্ভাবন করার স্বাধীনতা শিক্ষকের সব সময়েই রইল। পাঠা-স্টার কিংবা দৈনন্দিন কার্যক্রমের পরিবর্তনও শিক্ষক প্রয়োজনবাধে করতে পারবেন; তার উদ্ভাবনী শক্তিকে তিনি যথাসম্ভব নিয়োগ করবেন; সবেণিরি তিনি প্রত্যেকটি শিক্ষক অন্তেনিহিত সম্ভাবনাকে বিকশিত হওয়ার স্ব্যোগ দেবেন।

এই প্রতক প্রণয়নের উদ্দেশ্য এ নয় যে পশ্চিমবঙ্গের সমস্ত ব্রনিয়াদী বিদ্যালয় একই ছাচে গড়ে উঠ্ক। ব্রনিয়াদী শিক্ষার ম্লনীতি ও পদ্ধতিকে স্বসংবদ্ধ করা এবং বিভিন্ন শিক্ষাবিদ্গণের অভিজ্ঞতাকে একত্রীকরণই এই প্রস্তুক রচনার প্রধান উদ্দেশ্য।

পরিশেষে যণারা এই প্রতক প্রণয়নে সাহায্য করেছেন, পশ্চিমবঙ্গ শিক্ষা অধিকার তীৰের স্বাধিকার করছেন।

রাইটার্স বিল্ডিংস্ 
জান্যারী, ১৯৫০!

# বুনিয়াদি (প্রাথমিক) শিক্ষার নীতি ও পদ্ধতি প্রথম অধ্যায়

ভূমিকা

#### প্রাথমিক শিক্ষায় অপচয়

वाश्वादित्य वार्थामक निष्मात मश्र्मादात श्रद्धालन वर् भूदि वन् ज्रूण रद्धा । य निष्मावावश्य जाल भयान्न श्रिन्व जाह जात निष्मात कार्याय। मन्दि व्यक्ष स्त्रान्य करात श्रद्धा हाणा जना वित्मय किंद्र करा मम्जवभर र्यान, नाना कार्याय। मन्दि व्यक्ष स्त्रान वाज कर्दि मन्द्र श्रिम्म र्यान। श्रिम वहद श्राथिमक विकालस्त्र श्र्यम द्यान एक या द्यायामक विकालस्त्र भिष्म वाज भाव स्त्र व्यक्ष व्यव स्त्र भाव श्रायामक विकालस्त्र भिष्म भाव स्त्र व्यक्ष व्यव स्त्र भाव स्त्र व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष विकालस्त्र भिष्म भाव स्त्र व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष विकालस्त्र भाव स्त्र व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष वाज कार्य कर्द्य व्यक्ष वाज कर्द्य (भाव वाज वाज वाज श्रायामक विकालस्त्र भाव स्त्र व्यव वाज वाज स्त्र व्यक्ष विकालस्त्र भाव स्त्र व्यव वाज स्तर व्यव वाज स्त्र विकाल स्त्र वाज स्त्र वाज स्त्र वाज स्त्र वाज स्त्र वाज स्त्र व्यव वाज स्त्र स्त्र वाज स्त्र स्त्र वाज स्त्र स्त्र वाज स्त्र स्त्र स्त्र वाज स्त्र स्त्य स्त्र स्त

#### প°্রিথগত শিক্ষা ও তার ব্যর্থতা

वहें एठा एवल बार्ऋातक विमान मिक्। किन्तू धार्थामकरें एशक किश्वा मार्वाक म्लान हिला का मार्थ प्रीध्या विमान मार्थ प्राध्या विमान के मार्थ के मिक्स वाचा विमान के मार्थ के मिक्स वाचा के मार्थ के मिक्स वाचा वाचा हिला के मार्थ के मिक्स वाचा वाचा हिला मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मा

#### উদ্দেশ্যবিহীন প্রাথমিক শিক্ষা

প্রাথমিক শেষ প্রীক্ষায় পাশ করাটাই ছিল এতদিনের প্রচলিত প্রাথমিক শিক্ষার চরম ও প্রম কাম্য। শিক্ষকও মনে করতেন ছাত্রদের প্রাথমিক প্রীক্ষায় পাশ করানোটাই তার যোগ্যতার একমাত্র মাপকাঠি। সেই উদ্দেশ্যে শিশুকে মুখদ্হ করানো হোত বাংলা, অঙক, ইতিহাস, ভূগোল ইত্যাদি। সেও পরীক্ষায় সেগ্রিল কৃতিত্ত্বের সঙ্গে উদ্গিরণ করতে পারলেই উত্তীর্ণ হোত। এবং বিদ্যালয়ে প্রবেশ করার দিন থেকেই শিক্ষক মহাশয়ও তাকে সেই দিনের সম্মুখীন হবার জন্যে প্রস্তুত করতে লেগে যেতেন। /কিন্তু পণ্ডিগত ছাড়া অন্যান্য যেসকল শিক্ষা ভবিষ্যাৎ জীবনের বৃহত্তর প্রীক্ষায় তাকে জয়যুক্ত ক্রবে, তা তাকে কোনদিনও দেওয়া হ'ত না। কর্মপট্তা, দৈহিক সাম্থ্য, সাহস, ধৈয়া, প্রমৃতসহিষ্ট্তা, সভ্যবদ্ধভাবে কার্য করার মনোব্তি, প্রত্যুৎপর্মতিত্ব, রুচিবোধ, স্বার্থত্যাগ, কর্তব্যবোধ, সত্য ও সুন্দরের প্রতি याप्या ७ श्रीिं, — এ निकरलत जर्म भौतात्व नमग्न एका वालाकाल ; किन्तू এ नम्यत्ये अ पून्यत्य লিখিত প্রবন্ধ পাঠ করা ছাড়া তারা ব্যক্তিগত ও সমাজ-জীবনে এগুলিকে অনুশীলন করার न्द्रांश वा निका त्रव ना। गुर्द कि এই? य गिका जीवत्नत न्याना न्यायात न्याया করে না সে শিক্ষা কি পরিপূর্ণ শিক্ষা? শিশুকে উত্তরকালে পারিবারিক ও সামাজিক দায়িত্ব গ্রহণ করতে হবে; কোন একটি বৃত্তি অবলম্বন ক'রে তাকে গ্রাসাচ্ছাদনের ব্যবস্থা করতে হবে ; দেশের চিন্তাধারার ভাবগ্রহণ ক'রে সেই অনুসারে নিজেকে পরিচালিত করতে হবে ; কিন্তু প্রাথমিক শিক্ষার প্রচলিত ব্যবস্হায় এগুলির দিকৈ মোটেই দ্বিট দেওয়া হয়নি; ফলে

যেট কু শিক্ষা শিশু এই ব্যবস্থায় পেতে পারে তাতেও তার এই সকল প্রয়োজন মেটানো সম্ভবপর হয়ে ওঠে না। সকলে একই প্রকার পর্বাগতি শিক্ষা পাওয়ার ফলে একই ছাচে ঢালা প্রাণীতে পরিণত হয়ে ওঠে। প্রাথমিক থেকে মাধ্যমিক, মাধ্যমিক থেকে উচ্চতর শিক্ষা—সর্বাত্র এই পর্বাগর ছাপই স্পন্ট হতে স্পন্টতর হ'য়ে ওঠে।

#### <del>प्राप्त अस्मालक विद्यालकीय</del>

কিন্তু এই উদ্দেশ্যহীন শিক্ষার পরিবর্তন ক'রে তার স্থানে স্কুপণ্ট উদ্দেশ্য নিয়ে আমাদের কাজ আরম্ভ করতে হবে। মনে রাখতে হবে প্রাথমিক শিক্ষাই সর্বপ্রকার উচ্চতর শিক্ষার বুনিয়াদ, আর এই বুনিয়াদ যদি অপট্রহস্তে রচিত হয় এবং সুদৃঢ় না হয় তবে এর উপর শিক্ষার মনোরম সুদৃঢ় সৌধের কলপনা করা বাতুলতা মাত্র।

#### প্রাথমিক শিক্ষার উদ্দেশ্য

নবপরিকল্পিত প্রাথমিক শিক্ষার উদ্দেশ্য হবে প্রত্যেক শিশ্বকে ভবিষ্যৎ জীবনের উপযোগী বাস্তব ও মানসিক প্রস্তুতিতে সাহায্য করা এবং প্রত্যেক শিশ্র বিভিন্ন স্থমতা অনুযায়ী তার ব্যক্তিত্বের সর্বোত্তম বিকাশের সুযোগ দান করা। এই উদ্দেশ্য নিয়ে বিদ্যালয়গ্রীলতে এমন পাঠ্যক্রমের ব্যবহুহা করতে হবে যাতে (১) শিশ্ব পর্যবেক্ষণ এবং স্কুপ্ট্রেপে চিন্তা করার সুযোগ পেতে পারে; প্রাকৃতিক নিয়মের সঙ্গে যেন সে সুপরিচিত হতে পারে; স্বদেশের उ विदिम्परभात मान त्यत जामर्भ धवः जाविष्कात मम्बर्भ यार्ण एम छान जर्जन केत्रण भारत, দ্বদেশের কৃষ্টি, তার সাহিত্য ও ইতিহাসের সঙেগ যেন সে পরিচয়ের সুযোগ পায় এবং বিদ্যালয় ও পারিবারিক জীবনে সেই কৃষ্টির ব্যবহারিক প্রয়োগের সুবিধা পায়; মাত্ভাষার উপর তার যেন এমন অধিকার হয় যাতে সে স্কুপন্টর্পে চিন্তা করতে এবং মনের ভাব প্রকাশ করতে পারে এবং পাঠে আনন্দ পায় এবং প্রাথমিক শিক্ষালাভের পর যদি তার উচ্চতর শিক্ষা-बाल्डित मुर्याण ना-७ घटि ठटव रयन रम माञ्छायाय विधिष्ठ भूम्ठिक भारते जानन्स भाय, भूमिजत জ্ঞানলাভে সমর্থ হয়। (২) শিশু যেন তার সহজাত কর্মপ্রবণতার সুযোগ থেকে বণ্ডিত না रस ववः विमानतस रयन वेत्र्भ भितिरवम थारक यारा मिमा विचिन्न वसरमे विভिन्न अकारतत काल क्রाর সুযোগ পায় এবং এইর্প কাজের মাধ্যমে সে যে অভিজ্ঞতা সগুয় করবে, পাঠ্যবিষয় যেন তার সঙ্গে সম্প্র থাকে এবং তাকে ভিত্তি ক'রে গড়ে ওঠে। হাতের কাজ যেন শুধু দৈহিক বিকাশ কিংবা হাতের মাংসপেশীকে সবল করার উদ্দেশ্যেই প্রযুক্ত না হয়। কাজের মধ্যে যে সমস্যার উদ্ভব হবে শিশ্ব যেন নিজেই তার সমাধানে সচেণ্ট হয়, এরকম শিক্ষা দিতে रत्। প্রথমদিকে শিশুর কাজ আর খেলার মধ্যে পার্থক্য না থাকলেও পরে যেন সে উদ্দেশ্য-विश्नेन, "(थ(ला" कार्ज ना करत, वाङिशल वा नामाजिक धरमाजन निष्यत जना कार करत। কর্মের মাধ্যমে শিশ্ব অভিজ্ঞতা সণ্ডয় করবে; প্রথমদিকে সেই অভিজ্ঞতাকেই শিক্ষা বলে মনে করা যেতে পারে; ক্রমশঃ সেই অভিজ্ঞতাকে স্বসংবৃত্ধ করার জন্য এবং তাকে ভিত্তি ক'রে न् प्रनण्त छानेनारखंत छन्। श्रद्धां क्रम् रूटव श्रू प्रण्केशारवेत विदः एथनरे मिम् दक श्रू प्रण्केशारवे প্রবর্তনা দেওয়া হবে, তার প্রবে নয়। (৩) প্রত্যেক শিশ্বই স্থিমী; সৈ নিজস্ব প্রয়োজনের তাগিদেই কাজ করতে চায় এবং ক'রে আনন্দ পায় এবং এইভাবে সে নিজেকে कर्मात मधा मिरस श्रकाम कत्रा हास। এरक श्रथमिरक रथलात भर्यारस्ट ताथा हला; किन्तू ক্রমশঃ সে খেলায় গানে গলেপ ছবিতে পুতুলগড়ায় এবং অনুরূপ বিভিন্ন কাজের ভিতর দিয়ে निष्फ्रांट न्दार्थीनजाद প्रकाम क्रवात न्द्रांग भाग धवः क्रममः जाञ्च अर्जन क्रवं शारत। शिगात ग्रान्त वह म्हित श्वत्वारक म्वीकात क'रत निरम न्जन श्राथिमक विम्हालरम्त প্রত্যেক শিশুকে দৈনিক কিছু ক্ষণের জন্য দ্বাধীনভাবে কাজ করার সুযোগ দিতে এবং তার জন্যে উপযুক্ত পরিবেশের স্থিউ করতে হবে। (৪) প্রাথমিক শিক্ষার অন্যতম উদ্দেশ্য হবে শिশ्र कठके गूलि न्यान्याकतं ववः वानन्यमायक वाधानगरित नयायणा कता। वरे वाधारमत कटल मिन निरंज्त ଓ जन्दत्त म्र्विधा मन्दिन्ध मजान एट मिथर ; म्रूम्थ्थल निर्णान्तक क्तीवन्यातात छिछि वशात्नरे न्हां त्रिण हरव ; न्रणावां पिणा, नाहिन्कणा, नत्रमणनिहरूणा, क्रेंग्वरत विग्वाम, भूत् जरनत शिंठ युग्धा, छप्तठा, स्मोजना, निष्ठाठात, प्रा पाक्रिंगा श्रृष्ठि नम्, गू न वतः नू - ज्ञारम् त गठरन् आर्थामक निष्क्करकरे माश्चि धर्ण कत्र रह । किन्तू व

সম্বন্ধে প্তাকের বাধাব্লি থেকে শিশ্কে তোতা পাখীর মত মুখস্থ না করিয়ে এমন পরিবেশের স্থিট করতে থবে যাতে শিশ্ক ক্রমণঃ ঐগ্লির প্রয়োজনীয়তা ব্রুতে পারে এবং সেদিকে আকৃষ্ট হয়। দেখতে থবে, আনন্দান্ভূতির মধ্য দিয়ে শিশ্ক যোগ্যতা অনুসারে প্রারী হয়ে ওঠে। (৫) প্রত্যেক শিশ্বর বিশেষ শারীরিক এবং মানসিক যোগ্যতা অনুসারে তার শিক্ষণীয় বিষয়ের ব্যবস্থা করতে থবে এবং প্রত্যেক শিশ্বর শারীরিক, মানসিক, নৈতিক উরতি অবনতির হিসাব রাখতে থবে যাতে ক'রে এই থেকেই শিশ্ককে কারিগরী না উচ্চতর শিক্ষা দেওয়া থবে তা বোঝা যেতে পারে। (৬) প্রাথমিক বিদ্যালয়ের আর একটি উদ্দেশ্য থবে শিশ্বর পরিবারের সঙ্গে যোগস্ত্র রক্ষা করা। বিদ্যালয়ে শিশ্ব যে শিক্ষা লাভ করছে, সে শিক্ষা শ্ব তার ব্যক্তিগত সম্পদই হছে কিনা অথবা সে শিক্ষা সে পরিবার ও সমাজের প্রয়োজনেও নিযুক্ত করতে শিখছে এটা দেখাও থবে প্রাথমিক শিক্ষকের আর একটি গ্রুর্ ন্যায়ত্ব। (৭) শিশ্ব যেন বিদ্যালয়-পরিবেশের মধ্যে গণতান্ত্রিক জীবনযাত্রার মুলনীতিগ্রিল অনুশীলনের স্থোগ পায় এমন ব্যবস্থা করতে থবে। প্রতিযোগিতার পরিবর্তে সহযোগিতাই হ'বে বিদ্যালয়ের গণতন্ত্রে আদর্শ। শিশ্বরা যাতে আর্থানর্ভরশীল হ'তে পারে, শিক্ষকের হসতক্ষেপের প্রয়োজন যাতে কম হয়, শিশ্বকে ক্রমণঃ সেই শিক্ষায় শিক্ষিত ক'রে তুলতে হ'বে। বিদ্যালয়ের আভ্যন্তরীণ জীবনযাত্রার নিয়্তরেণ শিশ্বের যথাসাধ্য স্বাধীনতা দিতে হ'বে। বিদ্যালয়ের আভ্যন্তরীণ জীবনযাত্রার নিয়্তরেণ শিশ্বের যথাসাধ্য স্বাধীনতা দিতে হ'বে।

#### পাঠ্যবিষয়

প্রাথমিক শিক্ষার প্রাগ্রন্থ উদ্দেশ্যগর্লি যাতে গাধিত হতে পারে তার জন্য নৃতন ব্যবস্থার নিন্দের পাঠ্যবিষয়গ্র্লি নির্বাচন করা হয়েছেঃ—

- (১) गतीत शालन।
- (६) ज्वाञ्छात्रका ७ थिलास्ला।
- (৩) সামাজিক ও নাগরিক শিক্ষা।
- (৪) স্জনাত্মক কার্য ও কার্ শিল্প।
- (৫) গার্হস্থ্য বিজ্ঞান ও কৃষি (সন্জীবাগ) সহ গৃহস্থালীর শিক্ষা।
- (৬) ভাষা ও সাহিত্য।
- (৭) সহজ অঙক।
- (৮) পরিবেশ-পরিচিত।
  - (क) ইতিহাস।
  - (খ) जूशाल।
  - (গ) প্রকৃতি-বিজ্ঞান।
- (৯) मिल्म महमील न्लाकला।
- (১০) নৈতিক ও আত্মিক শিক্ষা।

गिगा त्याणा नय़ कमी

উপরের পাঠ্যস্চী চলিত পাঠ্যস্চী অপেক্ষা অনেকটা গুর্ভার মনে হতে পারে, কিন্তু শিশ্র সহজ উৎসাহ ও আনন্দের কেন্দ্র থেকেই এই সকল বিষয়গুলির উৎসারিত হওয়ার সম্ভাবনা রয়েছে এবং শিশ্র উৎসাহ এবং আনন্দরোধ যদি একবার জাগ্রত হয় তবে কোন শিশ্র পক্ষেই সেগুলি গুর্ভার মনে করার কারণ হবে না। তবে প্রচলিত রীতি অনুসারে যদি শিশ্ নীরব শোতার আসন গ্রহণ করে এবং শিক্ষক হন বক্তা তবে শিশ্র পক্ষে এই পাঠ্যস্চী নীরস ও নির্থক হওয়ার সম্ভাবনা আছে। কাজের মাধ্যমে শিশ্ শিক্ষালাভ করবে, কাজ ক'রে সে আনন্দ পাবে। কাজ করতে করতে যখনই সে সমস্যার সম্শ্রীন হয়ে তার সমাধানের জন্য আগ্রহান্বিত হবে, তখনই সে বিষয়ে তাকে শিক্ষাদানের সর্বোৎকৃষ্ট সুযোগে। শিক্ষক সেই সুযোগের প্রতীক্ষায় থাকবেন এবং প্রয়োজনবোধে শিশ্বকে সমস্যার

সম্মুখীন ক'রে তার জান,বার ইচ্ছাকে জাগরিত করবেন। একটা ছোট্ট উদাহরণ দেওয়া যাক্। মাটি দিয়ে শিশুরা নানাপ্রকার জন্তু জানোয়ার তৈরী করে। মাটি দিয়েই তারা সেগুলির लिक लाशित्य प्पंस, भा लाशित्य प्पस्ते। খूर छाल क'त्त रेज़री माछि ना एटल मूकित्य रिश्ल লেজ ও পা খুলে যায়। শিশুর পক্ষে এটা মহা বিরক্তির কার্ণ। দু'একবার এই সমস্যার সম্মুখীন হলেই শিশ্ব শিক্ষকের সাহায্যের জন্য আসবে। শিক্ষকও তখন দেখিয়ে দিতে भारत्वन कि क'रत मत् जात किश्वा काठि जिक्स एला ७ भा प्रत्व मर्डण लागिरस ताथा যায় এবং এই সুযোগে, কিভাবে মাটি প্রস্তুত ক'রে নিতে হয় তাও দেখিয়ে দিতে পারেন।

# ক্টার্জিত অভিজ্ঞতার মূল্য

শিশ ता छानला करत णापत সমস্ত रेन्छिस पिरस, माध पाणि कान पिरस मान नस। म्बर्ध कथां वि वामता वृद्ध यारे; मत्न कित्र कान मिर्स या र्गाना यास जा नवरे वन्त्र अरवन् করে। কিন্তু শিশ্বশিক্ষার ক্ষেত্রে এটা একটা মহত ভুল। কর্ণবিবরে যত জ্ঞানগর্ভ উপদেশা-वलीर जालि ना रकन रामीत छार्गरे जात जना धकि विवत्न तर्थ निः माति राम याम। ना श्ल य ছেলে তाর घूष् लड़ारेयात यूप्यक्य काश्नी प्राविष्ठात वर्णना क'रत यात पारत সেই ছেলেটাই क्राইভ-সিরাজদ্দৌলার युष्यकारिनी मत्न রাখতে গলদ্দেদ্ হয় কেন? নিজস্ব অভিজ্ঞতাপ্রস্ত যে জান, সেই জানই প্রকৃত জান এবং তাকে অবলম্বন ক'রেই সমগ্র পরবর্তী জান বিকশিত হয়; এই অবলম্বন সামান্য হতে পারে, কিন্তু ফুলে ফলে সম্দ্ধ হয়ে ওঠার পক্ষে এর नाराया त्य कंज्थानि श्रद्धां के oा এक नित्रं नित्वरे त्यां या या या श्रा

শিশ্ব তার অভিজ্ঞতা অর্জন করে কর্মের মাধ্যমে; এই অভিজ্ঞতাই তার শিক্ষা। স্বতরাং প্রাথমিক বিদ্যালয়ে শিশ্ যাতে বিচিত্র অভিজ্ঞতা সন্তয় করতে পারে সেইর্প বিভিন্ন কার্যের वावभ्या ताथरण रदा। निगात स्वाणाविक जाशर त्राणः नथरक वाधानित्यस्त निलास त्रूप्य ক'রে তার কাছে দেহমনের দ্বাভাবিক বিদ্তার আশা করা ভুল হবে; এতে সে দেহ ও মনে ऋौण श्रम यारव।

# সব স্কু শিশ্ই সক্রিয়

थाउऱा, (थला, प्रोंड़ान, लाकान, बालान, प्रांड्यान, शान कता, कथा वला, अर्न कता, কোনকিছুর দিকে তাকিয়ে থাকা, প্রীক্ষা ক'রে দেখা, খুলে দেখা, গোলমাল করা, অনুকর্ণ করা, পরের কাজে সাহায্য করা, নৃতন জিনিষ দেখা, বেড়াতে যাওয়া, অভিনয় করা, কাদামাটি नित्य (थला कता, जल नित्य (थला कता, क्रूलत वाशान कता, जन्जू, जानायात प्रथा, जन्जू জানোয়ার পোষা, রায়া করা, রঙ করা, অাকা, কাটাকুটি করা, সেলাই করা, ছাপ দেওয়া, লেখা, গোণা, ছবি দেখা, বই পড়া, গলপ শোনা, ছুটির দিনে সফুরি করা, বড়দের সঙ্গে থাকা এবং তাদের সঙ্গে কাজ ক্রা, মিলেমিশে কাজ করা—শিশ্রো প্রধানতঃ এই সকল কাজের ভিতর দিয়েই নিজেদের স্বাভাবিকভাবে প্রকাশ করে। স্কুলের সঙকীণ গণ্ডীর বাইরে এই বিচিত্র কিন্তু অতি স্বাভাবিক, কর্মধারায় অভিসিণ্ডিত হয়েই অধিকাংশ লোক বড় হয়। কিন্তু পাঠশালার কর্মস্চির মধ্যে শিশুদের বেলাতে যখন তাদের এই সকল কাজ করতে দেখি তখন আমরা বিরক্ত হই, এবং মনে করি তারা সময়ের অপব্যবহার করছে। কিন্তু তাদের এই ছেলেখেলাই তাদের পক্ষে স্বাভাবিক এবং একে ভিত্তি ক'রেই আমাদের প্রাথমিক শিক্ষার পাঠ্যসূচীও নির্ধারিত হয়েছে। অর্থাৎ দ্বীকার করা হয়েছে যে, শিশুর দ্বাভাবিক সক্রিয়তার মধ্যেই তাকে শিক্ষাদানের এমন সুযোগ পাওয়া যায় যে, অস্বাভাবিক ও অস্বাস্থ্যকর পরিবেশের म्रिं ना क'रत् थहे कारज़ मधा मिर्स्ट ठारक श्रिसाज़नीस मिक्सा मिख्सा याट शारत थतर

# শিশ্র অভিজ্ঞতার প্রকারভেদ ও অভিজ্ঞতালয় শিক্ষা

विफान्तरम् किन् काल कत्रा कत्रा नानाचारव व्यक्तिका नाच कत्रा भारत। সাধারণতঃ তিনভাগে তার এই অভিজ্ঞতার ভাণ্ডার ভাগ করা যায়ঃ—

(১) লৌকিক বা সামাজিক অভিজ্ঞতা অর্থাৎ অন্যের সঙ্গে মিশে সে যে অভিজ্ঞতা লাভ कदत (रयमन मलनन्थ रथलाथ्ला, रन्णान, रमलारम्गा)।

- (২) বস্তু-সাপেক্ষ অভিজ্ঞতা (যেমন বাগানের কাজ থেকে, প্তুল খেলা থেকে, ধোওয়া মোছা থেকে, ছবি অংকা, প্তুলগড়া, কাগজ কাটা, রায়া করা, ফুল তোলা সাজান-গোছান প্রভৃতি থেকে)।
- (৩) পুস্তকলব্ধ অভিজ্ঞতা (যাকে বলা চলে Second-hand বা হাতফেরতা অভিজ্ঞতা) যার মুলে তার নিজ্ঞ বলতে বিশেষ কিছুই নাই। পুস্তকে যে সকল অভিজ্ঞতার কাহিনী বর্ণিত থাকে তার অনেক কিছুই শিশুর নিক্টতম জগতের বিষয়বস্তু নয় বলেই তার পক্ষে এই সকল অভিজ্ঞতাকে নিজ্ঞ করতে এত বেগ পেতে হয়। এবং বেগ পেতে হয় বলেই তার পুস্তকের ভাষা পর্যন্ত মুখ্যন্থ করা ছাড়া গত্যন্তর থাকে না।

ন্ব-পরিকল্পিত প্রাথমিক বিদ্যালয়ে তাই শিশ্র স্কোমল স্কন্ধ থেকে প্সতকের অথথা গ্রুভার লাঘব ক'রে তাকে কাজের মাধ্যমেই অভিজ্ঞতালাভের স্থোগ দেওয়ার বিষয় চিন্তা করা হয়েছে। যেমন তক্লীর চাক্তি খুলে গেলে দণ্ডটিকে গরম ক'রে চাক্তিটিকে লাগাতে হয়; গরমে প্রত্যেক জিনিষের আয়তন প্রসারিত হয় এবং শৈত্যে সংকুচিত হয়। তক্লী মেরামত করতে গিয়ে শিশ্র সেটা আবিষ্কার করবে।

जन्दन्धञ्चनानी (

िर्मात् विश्विष्ठारिक भ्रम्भू मंत्र्र विनिय्न विश्विष्ठ । यदारिक रहि पिर्स मिल्रू थी सात्राय हिन् थ्राविष्ठ रहि थाकर्द ; वामार्मित भित्रकिल्य छेष्मारमात भित्रकिष्य कार्क किर्या किर्या किर्या किर्या मिल्रान्त्र किर्या विश्विष्ठ किर्या किर्या मिल्रान्त्र किर्या मिल्रान्त्र किर्या मिल्रान्त्र भ्रम्य स्था विश्विष्ठ किर्या किर्या मिल्रा मिल्रा किर्या मिल्रा किर्या मिल्रा किर्या मिल्रा किर्या मिल्रा किर्या किर्या किर्या मिल्रा किर्या किर्या किर्या मिल्रा किर्या किर्य किर्या किर्य किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्य किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्या किर्य किर्या किर्य किर्य

- (১) শিশ সূতা কাটার পর সেই সূতা 'অটেরনে' জড়ায়। এক তার সূতা ৪ ফুট লম্বা; দশ তার সূতা কত ফুট হবে?
- (২) চরকার বড় চাকাটা একবার ঘ্রলে ছোট চাকাটা ৫ বার ঘোরে; ছোট চাকাটা একবার ঘ্রলে টাকুটা যদি ২২ বার ঘোরে তবে বড় চাকাটা একবার ঘ্রলে টাকুটা কতবার ঘ্রবে? এইসব সমস্যার সমাধান করতে গিয়ে শিশ্র গণিত শিক্ষা হবে। এমনিভাবে শিশ্র কাজের মধ্য দিয়ে সে যে অভিজ্ঞতা সপ্তয় করবে, শিক্ষককে তার সাহাযোই বিভিন্ন বিষয়গ্রিল শিক্ষা দিতে হবে।

স্তরাং অন্বন্ধপ্রণালীতে শিক্ষা হল শিশ্র প্রাত্যহিক অভিজ্ঞতা সম্প্র শিক্ষা। পুরাতন পদ্ধতির শিক্ষায় শিশ্র জীবন ও পাঠশালার পাঠ্যক্রমের মধ্যে স্গভীর ব্যবধান রচিত হয়েছিল। কিন্তু ব্নিয়াদী শিক্ষা জীবনকেন্দ্রিক।

প্রেই বলা হয়েছে যে শিশ্র প্রাত্যহিক অভিজ্ঞতা বিচিত্র এবং প্রত্যেকটি অভিজ্ঞতা প্রেরণাস্বর্প হয়ে বহু সমস্যা উপস্থিত করে, বহুমুখী আগ্রহ (interest) ও কৌত্রল জাগরিত করে এবং বহু কর্মের উত্তেজক হয়। শিক্ষক তার মধ্যে সেইগ্লিকেই বেছে নেবেম যা তিনি শিশ্র ব্যক্তিত্ব বিকাশের অনুক্ল ও জীবনপথের পাথেয় হবার উপযোগী বলে মনে করবেন। শিক্ষকের কাজ হল নিবাচন ও নিয়ন্ত্রণ এবং তা তিনি করবেন উপযোগিতা, প্রয়োজনীয়তা ও আনন্দদায়কতার ভিত্তিতে।

দৈনন্দিন অভিজ্ঞতা ও কাজের মাধ্যমে শিশ্র স্বাভাবিক আগ্রহ ও কৌত হলকে কেন্দ্র ক'রে যে সকল তথ্যাদি শিক্ষা দেওয়া চলতে পারে, শিক্ষক সেইসবের দিকেই দ্ভিট দেবেন। অসম্প্র এবং অনুপ্যোগী তথ্যাদি পরিবেশন করবার প্রয়োজন নাই। শিশ্র স্বাভাবিক আগ্রহের সঙ্গে যার যোগ নাই সেরকম তথ্য শিশ্র কাছে বিরক্তিকর এবং শিশ্বকে তা শেখাতে গোলে তার মানসিক বদহজমের সম্ভাবনা আছে যেমন প্রাতন পন্ধতির প্রাথমিক শিক্ষায় হয়েছিল।

৬।৭ বংসরের শিশ্ব কাজ ক'রে যে আনন্দ পায়, উপকরণ নিয়ে নাড়াচাড়া করতে করতে তার যে অনুভূতি হয় এটাও একটা কম শিক্ষা নয়। স্বাভাবিকভাবে সেই কাজ থেকে সাহিত্য, ইতিহাস, অঙক প্রভূতি পাঠ্যবিষয় যদি না আঙ্গে তবে জোর ক'রে সেগ্রাল টেনে আনার কোন প্রয়োজন नारे। रेयमन—िंगम् कारठेत भग्निकः वाज थ्यक थक्छा स्थलाघत रेजती कत्र । स्याछा একটা কাঠের হাতুড়ি দিয়ে সে মনের আনন্দে পেরেক ঠুকে যাচ্ছে। এতে কি তার কোন শिक्स, त्कान छानेरे लाख श्रष्ट ना? माश्मर्लिगीत ठालना थ्यरक मात्रीतिक छेत्रिण, र्लरतक ঠুকতে গেলে কি কি অসুবিধার সম্মুখীন হতে হয় এবং কেমন ক'রে সে অসুবিধা দুর করতে रसे (१९८ तक दि वास, वक्षाम मिरस दितिस यास, जामाना विमक, उमिक, रत्ने राजूि এসে ব । হাতে আঘাত করে ইত্যাদি)—এ সকলও ত তার নিজের অজ্ঞাতেই শিক্ষা হয়ে যাছে। किन्जू विधारने यिष जाजू १ शारी विषय काठे विवाद कार्य क हैठार्गिन ज्यात नित्क निम्मूत मरनारयाश जाकर्या एत एकी करतन ज्य एक एक वार्थ राज পারে এবং শিশ্র পক্ষেও বিরক্তিকর হতে পারে। স্থির আনন্দে সে যখন মশগুল ঠিক সেই সময়ে কতগুলি তথ্য শিখতে তার ভাল লাগে না। বিভিন্ন প্রকারের কাঠ নিয়ে কাজ করার অভিজ্ঞতা থেকে সে নিজেই যখন কাঠের প্রকারভেদ বুঝতে পারে, তখনই হল সেই শিক্ষা দেবার উপ্যুক্ত সময়। স্তরাং ছাত্রের শারীরিক ও মানসিক ব্দিধ্র দিকে লক্ষ্য রেখে তার স্বাভাবিক আগ্রহ অনাগ্রহকে উপেক্ষা না ক'রে কাজকে পাঠ্যবিষয়ের সঙ্গে দ্বাভাবিকভাবে যুক্ত করতে হবে; শিশুর স্টি করার আকাজ্য় এবং কাজের মধ্যে দিয়ে সেই আকাঙক্ষার যে পরিপ্তি সেইটাই যেন প্রধান লক্ষ্ণীয় বিষয় হয়। এই কাজের সঙ্গে পাঠ্যবিষ্য়ের যে যে জিনিষ স্বাভাবিকভাবে আসে শিক্ষক সেইগ্রলিরই আলোচনা করবেন, वन्तार्शातक वन् वन्ध श्रमाली श्रीत्रशत कत्रत्व।

नित्म्न किछादि এकि काछरक छेललक्षा क'रत मिन्न कि विश्वित विस्त्र मिक्स एउसा स्वर्छ लारत छात थकि नम्ना एउसा रंग। वला वार्न मिक्स विस्त्र मिन्न व्यान छ स्वाधान छेलत निर्वंत कत्त्व। नीर्क व्यानमा विमान स्वर्थ प्रथम मुद्दे स्वर्भीत मिन्न ता विद्यामा विमान कता'रक कम्प क'रत कि कि कत्रक थवर मिथरिक शास्त्र छारम ह'ल (म्हान, काल थवर मिन्न स्वर्थाण प्रथिक जन्मारत मिक्स विस्त्रात शिक्त शिवर्य कर्ति कर्ति कर्ति कर्ति विस्तरात शिक्त शिवर्य शिवर्य करित कर्ति हिम्स करित विस्तरात शिक्त शिवर्य करित करित हिम्स हिम हिम्स हिम

প্রস্তুতি।—কিভাবে কাজ করতে হ'বে অর্থাৎ বাগানটিকে কিভাবে তৈরী করতে হ'বে, কোথায় কোন গাছ দিতে হ'বে, কোন সার দিতে হ'বে, কিভাবে গ্রু-বাছুরের উপদ্রব থেকে গাছগুলিকে রক্ষা করা যেতে পারে সে সম্বন্ধে আলোচনা দ্বারা স্থির করা।

कर्म १९५६ ।— एड लिप्स स्वा वाशान्त आस्वा जिल्ला मान्य हिंदि स्वा क्षित स्व क्षित स्व क्षित स्व क्षित क्षेत्र क्षित क्षेत्र क्षित क्षेत्र क्षित क्षेत्र क्षित क्षेत्र क्षित क्षेत्र क्षित क्षेत क्षित क्षित

कि कि 'विसस कि कि एउस एउस एउस एउस एउस ।—श्रासालनीय कान कि करात श्रित य मानित्रक श्रुत्त श्रुत्त अर्सालन, वह कारात मासार एडल्यास्त्रात एन कि करात श्रुत् व मन्दिन मम्मात छेन्छन हे एल (रियम—भार एपाका लाग्र्ल, भारा म्हित्स जाम्रात श्रुक्त वाक् कार्र वाक करात वाक करात वाक करात जामान त्रूप 'वाष्ट्र' ना हे एल) जात मासारित निर्द्ध जाम्रात श्रुक्त माहासाक करात वाक करात

(খ) মাতৃভাষা।—প্রস্তুতির সময় আলাপ আলোচনার মারফং ছেলেমেয়েরা মনের ভাব স্ক্রপট ভাষায় প্রকাশের দ্বাভাবিক স্যোগ পাবে। কাজের দৈনন্দিন হিসাব রাখতে শিশুকে কিছু না কিছু লিখতে হ'বে। যে ঋতুতে বাগান করা হচ্ছে সেই ঋতুর ফুল-ফল-প্রাকৃতিক

শোভা সম্বন্ধে গল্প কিংবা কবিতা ছোটদের পড়ে শোনান যেতে পারে কিংবা তা'রা লিখতে পড়,তে সক্ষম হ'লে নিজেরাও পড়,তে পারে এবং দ্ব'চার লাইন কবিতা বা প্রবন্ধ নিজেরা রচনা করতে পারে।

- (গ) অঙক।—বাগানটি দৈঘোঁ, প্রদেহ কত হাত ছেলেমেয়েরা সেটি নিজেরাই মাপতে
  শিখ্বে। হাত এবং গজ সম্বন্ধে এর থেকে ধারণা হ'বে। ২০ হাত লম্বা বাগানের এক
  হাত অন্তর যদি সার হয় তবে ক'টা সার হ'বে, প্রত্যেক সারেতে কটি ক'রে গাছ দেওয়া যাবে,
  মোট ১৮টি সারেতে কতগুলি চারা বসান হ'ল ইত্যাদি অঙক সম্বন্ধীয় ধারণাও তারা বাগানের
  কাজ করতে করতেই সণ্ডয় করতে পারবে। গাছটিকে মাপার জন্য স্কেলের ব্যবহারও শিশ্ব
  নিজ্ব প্রয়োজনের তাগিদেই শিখবে আশা করা যায়। উৎপন্ন ফসল ওজন করা, তার মূল্য
  নির্গণ করা প্রভৃতি দ্বারাও তা'রা ব্যবহারিক অঙকর সঙ্গে পরিচিত হ'বে।
- (ঘ) ইতিহাস, ভূগোল ইত্যাদি।—গ্রামের কিংবা সহরের অন্যান্য বাগানে কি লাগান হচ্ছে সেটাও শিশুরা নিজেরাই দেখে আস্বে। চাষীরা উৎপন্ন দ্রব্যগর্বা কিভাবে কোথায় বিক্রী করে, কোথায় হাট বসে এবং হাটে অন্যান্য কি কি জিনিষ বিক্রী হয় ছেলেমেয়েরা হাটে গিয়ে (নিকটে হ'লে) সে সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা লাভ করতে পারে। এমনি ক'রে বিভিন্ন মানুষ ও তাদের জীবিকা, বিভিন্ন বস্তু ও তাদের উৎপত্তিস্হান সম্বন্ধে ৬।৭ বৎসরের শিশুরা যে অভিজ্ঞতা লাভ করবে তাকে ভিত্তি ক'রেই তাদের ইতিহাস ভূগোলের জ্ঞান গড়ে উঠ্তে পারে।
- (৬) প্রকৃতিপরিচয়, বিজ্ঞান, শরীরচচা ইত্যাদি।—শিশ্রা বাগানের কাজে প্রকৃতির সঙ্গে ঘনিষ্ঠ পরিচয়ের যে স্যোগ লাভ করবে 'প্রকৃতি-পাঠ' জাতীয় কোন প্রতক পড়ে তা' লাভ করা অসম্ভব। বীজ থেকে অংকুরোদ্গেম, অংকুর থেকে চারাগাছ এবং ক্রমশঃ তার ব্দিধ, ফুলে ফলে তার সম্দিধ—সব কিছুই শিশ্র কাছে প্রকৃতির অনন্ত রহস্য নিয়ে আসে; ক্রমশঃ শিশ্র প্রাকৃতিক নিয়মের সঙ্গে পরিচিত হয় প্রকৃতির সঙ্গে নিবিড় পরিচয়ের মধ্য দিয়ে। স্ন্নিয়িত্রত হ'লে, প্রাকৃতিক নিয়মের সঙ্গে এই পরিচয়ই তার বিজ্ঞানশিক্ষার প্রথম সোপান হতে পারে।

বাগানের কাজে (যেমন—জল দেওয়া, আগাছা তোলা, ছোট ছোট কোদালি দিয়ে মাটি কোপান ইত্যাদি) ছেলেমেয়েদের স্বাভাবিক অঙগঢালনার প্রচুর সুযোগ আছে এবং মুক্ত বাতাসে ও খোলা হাওয়ায় ছেলেমেয়েরা কাজ করলে বৃষ্ফ-শিশুর মতই যে তারা সবল সতেজ প্রাণচণ্ডল হয়ে ওঠার সুযোগ পাবে সে সম্বন্ধে প্রত্যেক শিক্ষকই বোধ হয় একমত হবেন।

অনুবন্ধপ্রণালীর উপরোক্ত উদাহরণ থেকে যেন শিক্ষক মনে না করেন যে সব 'বিষয়ই' পর্যায়ক্রমে কোন একটি কাজকে উপলক্ষ্য ক'রে শিক্ষা দেওয়া যাবে। 'পাঠ্যবিষয়ের' বহিভূতি গুণাবলীর স্বতঃস্ফুর্ত প্রকাশ (যেমন—সহযোগিতা, প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের প্রতি অনুরক্তি, রুচিবোধ ও রুচিবিকাশ ইত্যাদি) এইর্প কোন কাজকে উপলক্ষ্য ক'রে যেমন হ'তে পারে, তেমনি কতকগুলি 'পাঠ্যবিষয়'কে স্বাভাবিকভাবে তার সঙ্গে যুক্ত করা অযৌক্তিক হ'বে না।

পाठाविषरात जविछाजाण मन्दिर रय कथा भरत वला राहर छेभरताक कर्मकिन्छक मिक्सा जात ध्रमान मिल्दा। भार जल मिर्फ मिन्द मिन्द भार जल प्रति । भार जल मिर्फ मिन्द मिन्द भार जल प्रति ध्रमान मिन्द । भार जल मिर्फ मिन्द मिन्द भार जिला प्रति भार प्रति प्रति भार प्रति ।

#### পুস্তকহীন শিক্ষা

ন্তন প্রণালীতে প্রাথমিক বিদ্যালয়ের প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীতে ছবির বই ভিন্ন অন্য কোন বই থাকবে না। প্রচলিত প্রথায় প্রথম শ্রেণী থেকেই বই পড়ার দিকে রীতিমত জোর

দেওয়া হয় এবং দ্বিতীয় শ্রেণীতে অনেকগ্রিল প্রস্তকই পড়তে হয়। প্রথম দ্বই শ্রেণীতে বই না থাকলে শিশুর শিক্ষা কিভাবে অগ্রসর হবে এ সম্বন্ধে অনেক শিক্ষক এবং অভিভাবক চিন্তিত হয়ে পড়বেন। কিন্তু যদি শিশুকে মুখে মুখে ছড়া বলতে—আবৃত্তি ও विष्त्र क्रवल मिथान यास निज्ञकात्वर थेवत वलाठ वला रस जार प्राप्त के उक्ता केति के कि বাচনভঙগী অভ্যাস করতে, জিহনার জড়তা কাটিয়ে উঠতে শিখবে। সঙেগ সঙেগ শ্বসমভারও বাড়বে। এতে তার ভাষাশিক্ষা হবে। তাছাড়া পুস্তক পাঠের অত্যাবশ্যক সোপান হিসাবে वर्णानत श्राह्म जनम्बीकार्य। य मिम् जान क'रत निर्द्धत मरनत जावरे श्रकाम कतरा শिখेल ना कि क'रत जामा कता यात्र रम, रम जानात मरनत जाव मिठिकजार व्यस्त भातरत? সহজ সরল কতকগুলি ছন্দোবন্ধ ছড়া কিংবা কবিতা যদি তাকে ছন্দের দিকে লক্ষ্য রেখে मू (थ मू थ मिथा मा या या वित्र शत्रवं काल मि भावनीन ज्येगीर किवा भएर भावत वर्ष वाँमा क्या याय। मुम्लिए एकारिए छायाय प्र यीप श्थाम निर्देश मत्ने छाव श्रकाम করতে পারে তবেই আশা করা যায় যে সে পরে প্রতক পাঠ ক'রে তার ভাব ও ভাষা হৃদয়ঙগম করতে পারবে।

তবে এটা ম্নে রাখা প্রয়োজন যে, শিশ নিজে না পড়লেও শিক্ষক নিজে প'ড়ে তাদের শোনাবেন। वरेरम हिंव थारक, शब्ल थारक, किविजा थारक विवेश जा स्थरक जानम लां कता याय्र—প্রথমে শিশ্র মনে এই ধারণা জন্মান দরকার। ক্রমশঃ শিশ্ব নিজে না পড়তে পারলেও वह नित्र ছवि प्रचेरण ठाहरव, निष्क्क मरान्त्रात का इ श्वरक वहराय गुल्म न्त्राण ठाहरव धवर পরিশেষে নিজেই নিজের কৌত্তল ও আকাঙখার তাগিদে পড়তে চাইবে।

শুধু ভাষা শিক্ষার বেলাতে নয়়, অন্যান্য বিষয়বস্তুও এইভাবে প্রথমে পুস্তকের সাহায্য ছাড়াই আরম্ভ করা যেতে পারে এবং ক্রমশঃ প্রতকপাঠের আবশ্যকতা সম্বন্ধে শিশুকে সজাগ

অন্যের লিখিত প্তৃত্ক, অন্যের ভাষা পড়ার প্রের্ব শিশ্ব নিজেই নিজের প্তৃত্ক প্রস্তুত करत निर्ण शातरत। रेयो रूप ठात 'लिथात वह' प्रिणात जातम् रूप रस् रस् रिकिविकि मिरस এবং ক্রমশঃ এই হিজিবিজিই অহ্নরে রূপ পরিগ্রহ করবে। এমনিভাবে তার পড়ার বই হবে;— ছবি এ কে ছবি কেটে কাগজে সে টে নিয়ে স্ব্রু হবে তার্ পড়ার বই; জন্তু জানোয়ারের ছবি, পাখীর ছবি কেটে নিয়ে তার নিজের খাতায় সে টে নিয়ে তৈরী করবে সে 'ছবির বই', 'পাখীর वहें। निर्द्धत वहेंगे यार् जत्नात् वहेर्यत मर्डिंग मिर्ग ना याग्र जात क्रना रम निर्धाण जाहेरव निर्द्धत नाम— धर्मान क'र्त प्रवाणाविकणारव जानन्त्रमस् शतिरवर्गत णिठत पिरस्, रथलात मधा দিয়ে সে ধাপে থাপে এগিয়ে যাবে লেখাপঞ্চার দিকে; আর তখনই সে তার ভিতরে আনন্দ भ<sup>क</sup>्रां भारत, न् जन न् जन जारनं शिन जारतं भ क्रां भ रात जार प्राप्त ।

# পাঠ্যসূচীর অবিভাজ্যতা

শিশ্র কাছে বাংলা, অঙক, ইতিহাস, ভূগোল প্রভূতির প্থক সতা নেই ; সে যা শেখে তাকে সে 'লেবেল,' মেরে, মনের মধ্যে আলাদা ক'রে সাজিয়ে রাখে না। ছোট শিশুকে সেই-জन्य बालामा बालामा क'रत- এটা ইতিহাস, এটা ভূগোল, এটা বাংলা—শেখানর প্রয়োজন হয় না। অথচ আমরা আজ পর্যন্ত তাকে ইতিহাসের ঘণ্টায় ইতিহাস, ভূগোলের ঘণ্টায় खूरंशाल— <u>এইভाবে পড়তে শিখিয়ে আসছি।</u> ইতিহাসের গলপ শ্বনতে শ্বনতে সে ভূগোলের हैशा जानता शास्त्र, जडक निधरण शास्त्र, न्याम्हानौजित म्'ठात कथा रजस्म निर्ण शास्त्र। শিক্ষকের জন্য ক্রমশঃ পাঠ্যবিষয়ের ভাগাভাগির প্রয়োজন হলেও প্রথমদিকে এই বিভাজ্যতার कानरे श्राज्ञालन नारे वदः वकरे मिक्क वकरे त्यानीत्व वकरे त्रमत्य हावत्मत त्रीं जन्यायी विভिन्न कारणत वायण्या कतरण थवः विভिन्न विस्तरा मिक्स मिरण शारत्न।

# देमनीन्यन कार्यत्र ही

নুতন ব্যবস্থায় দৈনিক ৪ ঘণ্টা শিশ্বদের বিদ্যালয়ে থাকার কথা। বর্তমান ব্যবস্থায় শিশুরা এর চেয়ে কম সময় বিদ্যালয়ে থাকে; স্বতরাং প্রশ্ন হতে পারে শিশ্বরা—বিশেষতঃ

৬।৭ বংসরের শিশুরা—এতক্ষণ বিদ্যালয়ে থাক্তে চাইবে কি না এবং এতে তাদের উপর জুলুম করা হবে कि ना। কিন্তু এই চার ঘণ্টার মধ্যে লিখন পঠনের জন্য মাত্র ১ই ঘণ্টা निमिषे जारह; वाकी १६ घणा शास्त्र काल, टिनिष्क काल, त्यनायुना, विकिन अन्ति वाकुराय वासि हरत। अंतीका केरत प्रथा शिष्ट यि, निम्हिक छात केरत कार्फ किरवा त्वधान्यान्यात्र नानित्य मित्व त्म जारज यज्ञा मत्नात्यान मित्ज नात्त, निरक्षत धूनीमा काक क्तरा फिरल धमन कि পড़रा फिरले एन जात करा वानक रिक्ष मनः मरा क्तरा केतरा भारत। সুতরাং নূতন প্রাথমিক বিদ্যালয়ে যখন পড়ার ছলে খেলার এবং কাজের ব্যবস্থাই বেশীক্ষণের জন্য হবে, তখন শিশ্ব তার স্বনির্বাচিত কাজ কিংবা খেলায় বিরক্তিবোধ না ক'রে আনন্দই दिनी शाद वदः जत्नक नमा जातक राज क'रत काल थातक रित्न जानरा रदा। विमानसात গ্ণ্ডীর মধ্যে শিশ্বকে যতখানি স্বাধীনতা দেওয়া সম্ভব সেট্বকু দিতে হবে। কাজের न्वाधीनजा, जाज्ञ कार्णत न्वाधीनजा, त्थलाधुलात न्वाधीनजा, किन्जात न्वाधीनजा—स्मार्छ कथा স্ব্প্রকারের স্বাধীনতার ভিত্তি যেন প্রাথমিক বিদ্যালয়েই স্থাপিত হয়। এই স্বাধীনতা উচ্চ্ভখলতার পর্যায়ে উঠলে তা যে অন্য সকলের বিরক্তির ও স্থতির কারণ হয়, শিশু নিজেই তার তাৎপর্য উপলব্ধি করতে শিখবে এবং তখন শ্ভখলা রক্ষার জন্য শিক্ষককে আর বিশেষ চিন্তিত হতে হবে ना। তবে কিছু গোলমাল হওয়া স্বাভাবিক এবং ছোট শিশুদের পক্ষে भू भ नौत्रवाय काल कता वाश्वावादिक ववः वार्वावाद्या किन्तू श्राह्म राज्य से नौत्रव ও সুশ্ভেখলভাবে চলতে হয়, সে শিক্ষাও তারা বয়সের সঙেগ (যেমন যেখানে তারা নিজেরাই कान ने ने जा प्रिंगित वारमाजन कत्रत्व, किश्वा वना कान वन को त्न वावच्या कत्रत्व (प्रधात) উপলব্ধি ক'রে সেই অনুসারে নিজেদের চালিত করতে শিখবৈ এবং শিশু ক্রমশঃ বুঝতে शात्रात काथार धवर कथेन कथा वलरा ह'रव जात कथन नीत्रव थाक्रा ह'रव।

#### শिশ्रुत जानन्म ଓ जाश्र

काल किश्वा थाल किश्वा शिं याचे हाक ना किन, प्रविवे निम्द्र वानत्मत मूल प्रकों यात वाता विकास प्रामित प्रिके तथि वाथि हिन निम्द्र वािक हिन प्रिके तथि विकास यात विकास वि

ग्रिश्वलाद्धा।—जरनरक मरन कतरण शासन निग्दिक जवाय श्वायीनण मिरल स्म ज्वाया, विकार म्रिश्वलाद्धा। किन्तू श्वायीनणात शित्वर्ण करोत ग्रिश्वलाद मर्था द्वाया हरा यरण शास। करोत मर्था द्वायाल एक जर्म स्थाया स्थाया

সহজে আশা করা যায় না। দৈনন্দিন কার্য স্মৃশ্ভেখলভাবে পরিচালনের জন্য শিক্ষক কয়েকটি কথা মনে রাখতে পারেন—

- (5) অতিরিক্ত শৃঙখলা কিংবা শান্তিরক্ষার জন্যও তিনি যেমন কঠোরতা অবলম্বন করবেন না তেমনি অতিরিক্ত শৈথিলা প্রদর্শন দ্বারা শিশ্বদের অবাধ্য কোলাহলপ্রিয় দুবিনীত হতে সহায়তা করবেন না।
- (६) त्य्वित्र मृध्यवाद्या व्यवसार किन्तू वक्याव छिप्पमा नयः विष्य वक्षा छिपाय माव। छिप्पमा रुथसा छिठि छेत्रवेवत वावरात मिक्सा पिथसा ववः यादि वहे छेत्रवे वावरात मिक्सापात्मत वावण्या कता यास वादकर मृध्यवा ववा यादि पाति। वात येव कर्वात्रवार व्यवस्वन कता राक ना रकन वादि यिप वावरात्त्रत रकान क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा वात मा विष्य वादि ना विष्य ना विषय ना विष्य ना विषय ना विष्य ना विषय ना विष्य ना वि
- (०) প্রত্যেক শিক্ষকই শ্রেণীকক্ষে কোন বিশ্তখলা দেখা দিলে সেদিকে শ্রেণীর দৃষ্টি আকর্ষণ করবেন এবং সে সম্বন্ধে আলোচনা ক'রে শ্রেণীর মত নিয়ে সিদ্ধান্তে উপনীত হবেন। যেমন—পূর্বদিনে ছেলেমেয়েরা মেজে মাটি দিয়ে নোংরা ক'রে রেখে গিয়েছিল—এ রকম হলে কি অসুবিধা হয় এবং কি করা উচিত? এই ছেলেটা কাঠের কাজ করতে করতে সেই কাজ ফেলে স্তো কাটা দেখছে এবং গোলমাল করছে—স্তো কাটার দলের এতে অসুবিধা হছে। এ রকম করা কেন অনুচিত? এই ছেলেটা কাল পকেটে ক'রে মার্বেল লুকিয়ে নিয়ে বাড়ী গিয়েছিল। সে আজও মার্বেলটা আনেনি। তাতে মার্বেল খেলোয়াড়দের একটা মার্বেল কম পড়েছে। এখন আমাদের কি করা উচিত? এমনইভাবে দৈনন্দিন শ্রেণী পরিচালনার কার্য থেকে যে সকল সমস্যার উভ্তব হবে সেইগুলি থেকেই শৃঙখলারক্ষার অনেকগুলি মূলনীতি ছাত্রদের সংভ্যু আলোচনা ক'রেই নির্ম্বারণ করা যেতে পারে।
- (৪) অনেক ক্ষেত্রে শিশ্রা নিজেরাই শ্ভখলারক্ষার জন্য আইন প্রণয়ন ক'রে নিতে পারে—যেমন:—
- (क) গোলমাল করলে অন্যের অস্ববিধা হয়—অতথব গোলমাল করা ভাল নয়।
- (খ) অন্যের কাজের সময় তাকে বিরক্ত না করাই ভাল।
- (গ) তোমার কাজ হয়ে গেলেই অন্যকে হাতিয়ার দিয়ে দিও।
- (घ) काछ रात्र शिल्ल घत श्रीतृष्कात क'रत रतस्था थवश छिनियशत शू ছिर् रतस्था।
- (७) ना वरल द्यनीत जिनिस निरम्न रगरन जरनात जन्दिश रम।
  - নিত্য ন্তন সমস্যা থেকেই এ সকলের সমাধানও তারা নিজেরাই খ°ুজে পেতে পারে যদি শিক্ষক সক্রিয়ভাবে তাদের সাহায্য করেন এবং ত°ার মতামত ব্যক্ত
  - (৫) শিক্ষক বিশ্তখলার সম্ভাবনাকে পূর্বাহেই যথাসম্ভব এড়ানর চেণ্টা করবেন।
    যেমন,—শিশ্রা রং দিয়ে কাগজের উপর আল্র কিংবা ঢে°ড়সের ছাপ
    দেবে। তিনি রংএর বাটি তাদের কাছে রেখে আল্ল আনতে গেলেন।
    ইত্যবসরে কয়েকটা শিশ্র রংএর বাটিতে আভগুল ডুবিয়ে তাই দিয়ে ছাপ
    দেতে লাগল। রং কাপড়ে লাগল, মুখে লাগল। দােষ কার? যদি কারও
  - (७) स्य गाञ्चि अवसानकत जा गातीतिक द्याक वा ना द्याक जा वर्जनीत्र।— गिन्दूरक गाति तिक गाञ्चि एए एए प्रा प्रताद किना जा निरस श्राच्या गिन्दूरक कान ना कान प्रमस जियास प्राप्त । गातीतिक गाञ्चि प्रताद वर्जनीयः कान जान जान प्रमस गिन्द्यास प्राप्त श्रक्ष जात्र गाञ्चि प्रताद वर्जनीयः वर्जनीयः वर्जनीयः प्रमुद्ध जान प्रमा प्रमुद्ध प्र

त्निरं रिष्टेखनारे व्यत्नक प्रमय जात्क माफ्ति (१८७ रया। म्यूज्याः माफ्ति यिष जात्क मिर्लि रया विद्या मिर्म्यू जात्व विद्या प्रम्यु क्रिक्ति क्रिक्त विद्या क्रिक्ति क्रिक्ति हे रित हे जा रित यिष्ट क्रिक्ति विद्या क्रिक्ति क्रिक्ति क्रिक्ति क्रिक्ति विद्या विद्या क्रिक्ति विद्या व

শিশু নিজেই নিজের শিক্ষক।—কাজের মাধ্যমে যেখানে শিক্ষার ব্যবস্থা, সেখানে শিশ কেই কাজ করতে দিতে হ'বে, শিক্ষক থাক,বেন তার পশ্চাতে, অলক্ষ্যে। আদর্শ কর্ম-কেন্দ্রিক বিদ্যালয়ে শিক্ষকের স্থান পরোক্ষ, শিশ্বই প্রত্যক্ষ। শিশ্ব কাজ করবে আপন মনে; সমস্যার সম্মুখীন হ'বে তখনই কেবল সে শিক্ষ্কের তাকে ডাকবে বা ত"র কাছে আসবে। শিক্ষকের সময়ে হাতের কাজ পরিচালনা করা এবং লিখন-পঠনে সহায়তা করা সম্ভব। নিজে নিজেই শিক্ষালাভ করবে। শিক্ষক তাকে সহায়তা করবেন মাত্র। চিরাচরিত প্রথায় আমরা যদি শিশুকে আমাদের মতই মনে করি এবং আমাদেরই কথা, আমাদেরই অভিজ্ঞতার কাহিনী তার কাছে সবিস্তারে বর্ণনা করি, তবে আমরা পুরের ভুলেরই পুনরাব্তি করব। শিশু তার শিশুদেহ শিশুমন দিয়েই সমসত কিছু দেখতে ও শিখতে শিখুক, নুতন নুতন তথ্য আবিष्कात केत्रक ; आमता जारक मूर् महक्ष्ठिकारल माशासा कतात छना थाक् वे निक्क रयन এই कथािं जूल ना यान,।

উৎসব অনু ভানের মাধ্যমে শিক্ষা।—আমাদের নিজস্ব কৃষ্টির ছাপ যেন শিশুর সরল मत्न शंकीत दिशालां कत्रा भारत विदेश काठीय कीवरन ठात श्रासाकनीया काथाय विदेश किन. সে সম্বন্ধেও শিশ্ব যেন ক্রমশঃ জিজাস্ব হয়ে ওঠে। উৎসব অনুষ্ঠানগুলির প্রকৃত তাৎপর্য কি. कि श्रकारत रमण् नितक भानन कता छिठिछ, जात त्थरक जामार्मित कि निक्रभीय जारह. किछारन কুসংস্কার্মুক্ত ক'রে সুরুচিসম্মত উপায়ে সেগুলি পালন করা যায় শিক্ষক সেদিকেও দুড়ি मित्वन। ज्वानीय छेश्नेव जन्छात मिन्द्रापत नित्य त्याश प्रथमा, ज्वानीय त्या अर्डाठिए जारमत निरम याथ्या, धर्माल्थ निष्मात जजावनाक ज्रुश विस्तुना कत्र ह'रव। निन्द्रा উৎসব क्রल किভाবে উৎসব-প্রাভগণটিকে রুচিসভগত উপায়ে সাজান যায়, किভাবে সৌজন্য. শিষ্টাচার, আন্তরিকতার সঙেগ নিমন্তিত অতিথিদের অভার্থনা করতে হয়়, কিভাবে যথানিয়মে विवर यथात्रमार्य कार्यम् हो जन्मारत काल जातम् ७ लास कत्र रस् वर्ष वर्ष कर्षा मार्मित जनगा गिक्सनीय। श्रेंगिल शांलभार्ना न्जन प्रिकेण भी पिरा प्रति जारिक क्रिकेश উপায়ে পालन कतरा लिখान विवेश जात थिएक अर्जीला नामाजिक तीजिनीजि, देजियान, जृत्याल, কথা, গান, গলপ প্রভৃতি অনুবন্ধপ্রণালীতে শিক্ষা দেওয়া যেতে পারে। এইভাবে পুরাতন व्यथारक न जन प्रिक्षिण्डेशी निरंत्र युष्धात प्रत्रंश प्रिया मिथाल जारे श्वरकरे मिम् ज्ञानक कि िम्थरण शारत। वात वर्मान क'रत विम्रालयि श्रा छेठे, राज शार्मत शारमत शारम्बत् श, कृषि-সম্মেলনের কেন্দ্র; সেখানে এসে অভিভাবকগণ নিজেদের শিশুদের আমন্ত্রণে আমন্ত্রিত रस्य जारम् ज्ञानियाः नम्यत्थ वक्षा म्लच धात्रा नित्य त्यरं लात्रत्य वरः रेष्टा क्रत्ल निर्ज्याः তाদের নির্দোষ আমোদে যোগ দিতে পার্বেন।

विष्णालस्य भगणान्त्रिक कौवनयातात्र छिछि श्रिणिके रत।—िम्म छिवसारण स्य प्रमास्य वाप्त कत्रत्व जात्र प्रम्यत्य स्य जात्र मास्यि वार्ष्ट थवर जात्र छेपत जात्र व्यिकात्रथ वार्ष्ट स्पर्ट सात्रात्त प्राप्ति रत् थर्थ विष्णालस्य स्थान । छिवसार कौवत्म सोधि । छित्रात्त मास्य वामास्य वर्णमान मिस्स-वावण्यास्य वामता मिर्छ प्रात्तिनः किन्त्र वामास्य छूल् । किन्त्र वामास्य हिल् । विष्णालस्य हाष्ट्र प्रमास्य छित्र । विष्णालस्य विष्णालस्य । विष्णालस्य छात्र विष्णालस्य विष्णालस्य । विष्णालस्य वामास्य वामास्य । विष्णालस्य प्राप्ति विष्णालस्य प्राप्ति । विष्णालस्य प्रमास्य वामास्य वामास्य । विष्णालस्य प्रमास्य प्राप्ति ।

निर्छादम् मधा थिएक निर्धात्व क्रि. जात वापिम शान क्रि. विशे जात कार्छत ममाद्यां क्रि. विशे जिस्ति क्रि. जात क्र. जात क्रि. जा

#### উৎপाদনাজ্যক শিল্প

প্রশ্ন হতে পারে শিশ্বরা যে কাজ করবে তা যদি শ্বধ্ব উপকরণের অপচয়ই হয়, প্রস্তুত प्रत्यात रकान मूलारे ना थारक, তবে कर्णान जामारमत ग्रेतीय रमम এই जनाउसत जना जर्थ জুগিয়ে যেতে পারবে? প্রথম দুই বংসরে অর্থাৎ ৬1৭ বংসরের বয়সে শিশ্ব কিছু छे १ के इत्य क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्र क्रिक क्र कार्यित সমালোচনা করতে শিখবে এবং উন্নততর নৈপুণ্যলাভের জন্য সচেণ্ট হ'বে। বৎসর বয়সে সে যতটুকু নৈপ্রণ্য লাভ করবে তাতে ক'রে আশা করা যায় যে সে এমন কাজ করতে পারবে যার কিছুটা ব্যবহারিক মূল্য আছে; প্রস্তুত দ্রব্য বিক্রয় দ্বারা ঐ দ্রব্যের ক্রাচামালের দাম উঠে আসবে, কিছু লাভও হতে পারে; বিক্রয়লব্ধ অর্থ বিদ্যালয়ের উন্নতির জন্য ব্যায়ত হতে পারে। শিশু যাতে ক্রমশঃ উন্নততর নৈপুণ্যের দিকে এগিয়ে যায় সে বিষয়ে শিক্ষক সর্বদা দ্ভি রাখবেন। শিশু যে কাজ করবে সে কাজ যাতে সুন্দর এবং রুচিসঙ্গত হয় এবং প্রয়েজনে আসে সেদিকৈ শিক্ষকের সজাগ দৃষ্টি থাক্বে। প্রথম অবশ্য শিশুদের বিশেষ মূল্যবান উপকরণ দেওয়া সম্ভব হ'বে না। সেইজন্য অনাবশ্যক এবং পুরাণো জিনিষপত্র (যথা পুরাণো কাগজের বান্স, খবরের কাগজ, প্যাকিং বান্স, দেশলাইয়ের খালি বান্স, পুরাণ কাপড়, পাড়, টিনের বান্স, ছে'ড়া মোজা, খেলনা ইত্যাদি) দিলেও তাই দিয়েই ছোট শিশ রা অনেক জিনিষ তৈরী করতে শিখতে পারে। বয়স ব্দিধর সঙেগ সঙেগ শিশুদের প্রয়োজনীয় দ্ব্যপ্রস্তুতির শিল্প-সাম্গ্রী দেওয়া যেতে পারে এবং প্রস্তুতদ্রব্যের আর্থিক म्लां भूत दनगौ ना थाक त्व निम्नूता त्रिश्लि निष्ठत्र श्राष्ठात वर विमाला स्तर श्राष्ठात ব্যবহার করতে পারে।

#### শিক্ষক-সভা

कर्माकित्मुक विष्णालायं कर्म मृत्ती थर शाठा-मृत्ती शिवर्ण माया थर मिर्म स्था थर सिंखाल माया थर किलाव थर त्या कर्म स्था थर किलाव थर त्या कर्म माया थर कर्म माया थर किलाव थर त्या कर्म माया थर कर्म माया थर किलाव थर त्या कर्म माया थर कर्म करा करा थर करा करा करा थर करा थर करा करा करा थर करा

#### শ্ৰেণীকক্ষ

द्रिन्सामी विम्रान्तस्त त्युं निक्क वर्ष्णात्य व्यक्तिक छित्रा छितिक यात्व मूर् किनि कत्स्त्र म्याक्तिक त्युं किन्ता क्ष्मा क्ष

একটি বান্স রাখা বাগুনীয়। প্রতি কক্ষে আসবাবপত্র রাখার আলমারি কিংবা দেরাজ থাকলে রোজ রোজ কেন্দ্রীয় ভাণ্ডার থেকে জিনিষপত্র আনবার প্রয়োজন হয় না। তবে প্রত্যেক শ্রেণীতে আলাদা ক'রে যাত্রপাতি দিতে গেলে প্রচুর যাত্রপাতির দরকার—সেটি একটি সমস্যার বিষয়।

শ্রেণীকক্ষে ভারী ভারী আসবাব থাক্রে সেগ্রেলিকে সরিয়ে কক্ষটিকে কাজের ঘরে পরিণত করা পরিশ্রমসাধ্য হবে এবং ছোটদের পক্ষে সেগ্রেলিকে টানাটানি করা সম্ভবও নয়। স্তরাং শ্রেণীকক্ষের আসবাবপত্র ছোটদের উপযোগী এবং হালকা ধরণের হওয়া অত্যাবশ্যক। এগ্রিলেক প্রয়োজনমত ছেলেরাই ঘরের এককোণে সরিয়ে রাখতে পারবে এবং ঘরটিতে হাতের কাজ করার মত যথেট স্থান পাবে।

#### পরিচ্ছন্নতা

শুধু শেণীকক্ষের নয়, সর্বপ্রকার সংযম ও পরিছ্মতার দিকে শিক্ষকের সতর্ক দৃষ্টি থাক্বে এবং শিক্ষক এ বিষয়ে শিশুদের সম্মুখে আদশ্বির্প হ'বেন। বিদ্যালয়, তংসম্পর্কিত আসবাবপত্র এবং অন্যান্য যাবতীয় বস্তু শিশুদেরই—এ ধারণা একবার শিশুদের মনে সুস্প্টর্পে জাগিয়ে দিতে পারলে শিশুরা ঐ সকল বস্তুর প্রতি মমতাশীল হ'বে এবং সেগুলি যাতে নন্ট না হয় তংপ্রতি তাদেরও লক্ষ্য থাকবে।

বিদ্যালয়ের পরিবেশকে পরিচ্ছন্ন রাখা শিশ্বদের শিক্ষারই একটি অত্যাবশ্যক অঙ্গ। সঙ্ঘব্দধভাবে পরিচ্ছন্নতার কাজ করার জন্য সমস্ত শ্রেণীর জন্য স্পতাহে একটি নির্দিষ্ট সময় রাখা যেতে পারে। শ্রেণীকক্ষের পরিচ্ছন্নতার ভার প্রত্যেক শ্রেণীর নিজস্ব।

ব্যক্তিগত পরিছেন্নতার দিকে শিক্ষকের দ্বি অবশ্যই থাক্বে। পোষাক পরিছেদের পরিছেন্নতাই যথেন্ট নয়; দেহের পরিছেন্নতাও যেন শিক্ষক বিশেষভাবে লক্ষ্য করেন। নাক, কান, চোখ, নখ, দশত, তুক, চুল পরিজ্বার রাখা প্রত্যেক শিশুর অবশ্য কর্ত্তবা। প্রত্যেক দিন বিশ্রামের পূর্বে হাত মুখ ধোওয়ার সময় শিক্ষক একটু নিদেশ দিলেই শিশুরা এ বিষয়ে একটি অত্যাবশ্যক এবং স্বাস্থ্যকর অভ্যাস আয়ুত্ত করতে পারে। শিশু স্নান করেছে কিনা, না ক'রে থাকলে কেন করেনি শিক্ষক সে সম্বন্ধে তাকে প্রশ্ন ক'রে জানতে পারেন। প্রয়োজনবোধে শিক্ষক তা'কে স্নান করিয়েই দেবেন।

#### व नियाणि विष्णाल एयत कार्डित धन्त्र भारि ଓ উপকরণ

বিভিন্ন হাতের কাজের প্রয়োজনীয় যন্ত্রপাতি ও উপকরণের তালিকা যথাস্থানে দেওয়া হ'ল।
এ প্রসঙ্গে উল্লেখ করা যেতে পারে যে প্রত্যেকটি ছেলেনেয়ের জন্য পৃথক যন্ত্রপাতির ব্যবস্থা
করা সম্ভব নয়, প্রয়োজনও নয়। একটি শ্রেণীতে কাটাকুটি করা কিংবা সেলাই করার জন্য
প্রত্যেক ছাত্র-ছাত্রীর একটি ক'রে কংচির দরকার হয় না; ৩০ জনের জন্য ৬টি কংচি হ'লেই
কাজ চলতে পারে, একজনের কাজ শেষ হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে সে অপরকে কংচিটি দিয়ে দেবে
এবং আবার প্রয়োজন হ'লে চেয়ে নেবে।

শিশ দের ম্ল্যবান উপকরণ দেওয়া সব সময় সম্ভব হবে না। এদিক দিয়ে শিক্ষকের প্রত্যুৎপল্লমতিত্ব থাকা বিশেষ প্রয়োজন। প্রাণো বাতিল করা জিনিষ, ছেওা জিনিষ (যেমন—খবরের কাগজ, কাগজের বান্স, দেশলাইয়ের বান্স, প্যাকিং বান্স, জ্বার বান্স, খেলনা,

खाला जाला, जित्तत वाला, निर्मान, त्वांजन, वार्नित जिन, निर्मातति जिन, निर्माति विन, न

#### व्यक्तिक प्रवाशिका

অভিভাবকদের সঙ্গে মাঝে মাঝে বিদ্যালয়ের সমস্যা এবং উন্নতি-অবনতি সম্বন্ধে আলাপ আলোচনা করা শিক্ষকদের একটি প্রধান কর্তব্য। এজন্য মাসে একদিন সভা আহনন করা যেতে পারে, সেখানে অভিভাবকগণ তাদের ছেলেমেয়েদের উন্নতি-অবনতি সম্বন্ধে শিক্ষকদের সঙ্গে আলোচনা করার সুযোগ পাবেন এবং শিক্ষকগণও তাদের কাছ থৈকে জানতে পারবেন তাদের ছাত্র-ছাত্রীরা শিক্ষাকে ব্যক্তিগত ও পারিবারিক জীবনে কতখানি প্রতিফলিত করতে পারছে। কাজের উপকরণ সম্বন্ধেও অভিভাবকগণ বিদ্যালয়ের অনেকখানি সাহায্য করতে পারেন।

#### একই শ্রেণীতে এক কিংবা একাধিক শিক্ষক

প্রচলিত রীতিতে বিভিন্ন 'বিষয়' পড়ানর জন্য বিভিন্ন শ্রেণীতে প্রথক প্রথক শিক্ষকের ব্যবহৃহা আছে। যিনি সাহিত্য পড়ান, তিনি বিভিন্ন শ্রেণীতে সাহিত্যই পড়ান; যিনি অঙক শিখান, তিনি বিভিন্ন শ্রেণীতে ঐ একই বিষয়ই বংসরের পর বংসর শিখিয়ে যান। অবশ্য প্রয়োজনবোধে একই শিক্ষককে বিভিন্ন শ্রেণীতে বিভিন্ন বিষয় পড়াতে হয়। কিন্তু গোটা বংসরের জন্য একই শেক্ষকের হাতে ন্যুস্ত থাকে না। নব-পরিকল্পিত ব্যবহৃহায় ব্নিয়াদি বিদ্যালয়ে এই শেষোক্ত নিয়ম স্বভাবতই চাল্ল হবে। এই নিয়মের স্বপক্ষে নিম্নোক্ত যুক্তি দেখান যেতে পারেঃ—

- (5) একই শিক্ষকের উপর একটি শ্রেণীর ভার থাকলে শ্রেণীর ফলাফলের জন্য একমাত্র তাঁকেই দায়ী করা যাবে এবং শিক্ষকের কৃতিত্বের পরিচয় সহজেই মিলবে।
- (২) বিভিন্ন ছেলেমেয়ের উন্নতি-অবনতির হিসাব রাখা একজনের পক্ষে যতখানি স্বিধাজনক, বিভিন্ন শিক্ষকের পক্ষে ততখানি নয়।
- (৩) শিক্ষকের সঙেগ শিশুদের সহজ পরিচয়ের ফলে ক্রমশঃ একটি মধুর সম্বন্ধ গড়ে ওঠার সম্ভাবনা আছে এবং শিক্ষকের চরিত্রের ছাপ শিশুর চরিত্র গঠনে সহায়ক হ'বে ব'লে আশা করা যায়।
- (৪) পাঠ্যস্চীতে অবিভাজ্যতার প্রতি জোর দিতে গেলে, বিভিন্ন বিষয়ে ছাত্রের উন্নতি সম্বন্ধে শিক্ষকের সঠিক ধারণা থাকা প্রয়োজন; নতুবা একই বিষয়ের প্ররুক্তি এবং পুনর্লেখ হওয়ার সম্ভাবনা আছে। একই শিক্ষকের হাতে ভার থাক্লে তিনি প্রত্যেকটি ছাত্রের প্রয়োজন জান্তে পারবেন এবং সেই অনুসারে তা'কে পরিচালিত করতে পারবেন।
- (৫) শিক্ষক একই বিষয়ে পাঠদানের একঘেয়েমি থেকে রক্ষা পাবেন।

অবশ্য উপরের যুক্তিগুলির বিপক্ষেও অনেক কিছু বলা যেতে পারে; যেমন কোন বিষয়ে শিক্ষকের অসম্পূর্ণ জান থাকলে তার হাতে সেই বিষয়ের ভার ছেড়ে দেওয়া নিরাপদ নয়। কিলু আশা করা যায় যে প্রাথমিক বিদ্যালয়ের বিভিন্ন বিষয় পরিচালনা করার ক্ষমতা প্রত্যেক পিক্ষকেরই থাকবে। প্রাথমিক বিদ্যালয়ের হাতের কাজ পরিচালনার মোটামুটি শিক্ষাও প্রত্যেক শিক্ষকেরই থাকবে ব'লে আশা করা যায়। সঙ্গীত, বিজ্ঞান কিংবা শ্রীরচ্চার ব্যাপারে শ্রেণীর শিক্ষক বিশেষজ্ঞ শিক্ষকগণের সাহায্য নিতে পারেন।

স্বাবধা হলে এক বংসরের কার্যের শেষে শিক্ষক একই ছাত্র-ছাত্রার দলকে উপরের শ্রেণীতে নিয়ে যেতে পারেন, এবং সেই শ্রেণীর শিক্ষার ভার নিতে পারেন। এইভাবে একই শিক্ষকের উপর একদল ছেলেমেয়ের গোটা প্রাথমিক শিক্ষার ভার অপিত হ'লে শিক্ষকের দায়িত্ব, কৃতিত্ব এবং ছাত্র-ছাত্রীর ক্রমিক উন্নতির হিসাব রাখা সহজ হয় এবং শিক্ষকও এক্ষেয়েমির হাত থেকে নিস্তার পান।

विधारन निष्क्करक विकर्षे प्रतर्क कर्ता श्राह्मित ये कित येन रिक्स कर्ति विख्या विकास विका

#### रेपनियन कार्यप्र, ही

প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীর জন্য নিম্নপ্রকার কার্যস্চী হ'তে পারে। কিন্তু শিক্ষক মহাশ্র মনে রাখবেন যে প্রয়োজন অনুসারে কার্যস্চীর পরিবর্তন করা যাবে। আরেকটি লক্ষণীয় বিষয় এই যে শিশ্রা যেখানে স্বৈচ্ছিক কাজ করবে সেখানেও তা'রা ইচ্ছা করলে, গল্পের বই পড়তে, ছবি দেখতে কিংবা অঙক করতে পারবে এবং এর্প ইচ্ছা করা অস্বাভাবিকও নয়। ছাত্র-ছাত্রীরা যদি মিলিতভাবে কোন বিশেষ উদ্দেশ্যম্লক কাজ করতে আরম্ভ করে, তবে সেদিনের কিংবা পরবর্তী দুই এক দিনের কার্যস্চীর রদবদল করা যেতে পারবে।

১০-৩০—১০-৪০—সমবেত প্রার্থনা, বিশেষ ঘোষণা, ইত্যাদি।

50-80—50-৫0— श्वत वला ७ ज्यम्बत्य जात्नावना धवर त्यभीत काछ (5),

১০-৫০—১১—'মন্ত্রী' নির্বাচন, স্বাস্হ্যপরীক্ষা এবং রিপোর্ট পেশ করা (২)।

১১—১২—স্জনাত্মক কাজ (ছবি অংকা, মাটির কাজ, কাগজ কাটা, পুতুল খেলা, নাটকের সাজসরঞ্জাম তৈরী করা, কবিতা লেখা, গলপ লেখা, খেলনা তৈরী করা ইত্যাদি)।

১২—১২-৩০—পঠন, লিখন ও অঙক (প্রয়োজনবোধে একাধিক দলে ভাগ ক'রে)।

১২-৩০—১—জলখাবার, হাতমুখ ধোওয়া, বিশ্রাম।

১—১-৪৫—শিল্প কাজ (কাঠের কাজ, স্তাকাটা, ব'শ-বেতের কাজ, চামড়ার কাজ, বাগানের কাজ ইত্যাদি)।

১-৪৫—২-১৫—লিখন পঠন ও অঙ্ক (প্রয়োজনবোধে একাধিক দলে ভাগ ক'রে)।

২-১৫—২-৩৫—পরিবেশ পরিচিতি (বাইরে বেড়াতে যাওয়া ও তংসম্পর্কে লোকজনের চলাফেরা, যানবাহন, গাছ-গাছড়া, বাড়ীঘর, জন্তুজানোয়ার সম্বন্ধে কৌত্হল উদ্দেক করা)।

६-७৫—७—नाह, शान, रथलाध्ना, **इ**.छि।

3

দ্রষ্টব্য:--(১) শ্রেণীর কাজ বল্তে আসনপাতা, তারিধ বদলান, ফুল সাজান, নাম ডাকা ইত্যাদি বুর্তে হ'বে।

(২) প্রয়োজনবোধে ১৫ মিনিট করে দুইবার বিশ্রামের সময় দেওয়া যেতে পারে।

#### ছাত্র-ছাত্রীর উন্নতির পরিমাপ

শিক্ষক-শিক্ষিকা ছাত্র-ছাত্রীর উর্মাতর পরিমাপ নিম্নবর্ণিত ছকে রাখতে পারেন। প্রাথমিক শেষ পরীক্ষা উঠিয়ে দেওয়া হ'লে ছাত্র-ছাত্রীর উর্মাতর পরিমাপ রাখা শিক্ষকের অবশ্য কর্তব্য হবে এবং তারই উপর নির্ভার ক'রে ছাত্র-ছাত্রীকে উচ্চতর বিদ্যালয়ে ভর্তি করা চলবে। এই পরিমাপ প্রতিমাসেই করতে হবে এবং ছাত্র-ছাত্রীর সর্বাঙ্গীণ উর্মাতর প্রতি লক্ষ্য রেখেই এই উর্মাতর পরিমাপ করতে হবে, শুধু পাঠ্য বিষয়ের উর্মাত লক্ষ্য করলেই চলবে না।

**प्रिया शिराहर रा भाषात्रिकः हात-हातीरमत मर्था गठकता मुहेलन धुवरे वृष्धिमान वरा** শ্তকরা দ্ইজন খুবই কম বুল্ধিব্রিসম্পন্ন। সাধারণ বুলিধব্রিসম্পন্ন ছাত্র-ছাত্রীর সংখ্যা শতকরা ৫০ জন। উহার কিণ্ডিং উদ্ধের শতকরা ২৩ জন এবং কিণ্ডিং নিম্নে শতকরা वना २० छन। व्यवशा हात-हातीरक यथारन वाहारे क'रत रनअसा रस ना मिथारनरे साठाम हि वह निरंम थाएँ ; जनाव थाएँ ना। जाधात्र ना वह निरंम जन जारत नतीकात कलाकल ছওয়া উচিত। শিক্ষকণণ পাঠ্যবিষয় এবং অন্যান্য লক্ষ্ণীয় উন্নতির দৈনিক কিংবা সাপ্তাহিক হিসাব রাখবেন; নতুবা মাসান্তে লিখতে বসলে অনেক কথা ভুলে যাবার সম্ভাবনা থাকবে। দৈনিক উন্নতির পরিমাপ কির্পে রাখতে হবে, তারও একটি ছক দেওয়া গেল্—

### ছাত্র-ছাত্রীর উর্লাতর পরিমাপ (ক— ৪ পণচটি অক্ষর দ্বারা উন্নতি নির্ধারণ)

प्राधातकार ५०० हान-हानीत घरभर

व्यम्पूनाजा, विम्पूप्थजा वा याथाथा)।

वानान कणगूलि न् एन मक् मिथरह।

भाषात्राधः ५०० धाव-धावातं म्रासा—	
第2 在图像是一位外,但可以为10 min	শ্তকরা।
ক (উচ্চতম)	8
ય	٥٤
<b>1</b>	00
E Table Christian Committee Committe	২0
	٠ ۶
नाम—	জন্মের তারিখ—
অভিভাবকের নাম—	ভতির তারিখ—
ठिकाना—	শ্রেণী—
মাসে উপস্থিত ছিল্—	
আর্থিক, সামাজিক, সাংস্কৃতিক অবস্থা—	
অভিভাবকের পেশা—	
পরিবেশ—	
ভাইবোনদের মধ্যে শিশ্রুর স্থান—	
শারীরিক বিকাশ—	
(১) কোনও অসুখ হ'য়ে থাকলে তার নাম—	
(६) है का त्नल्या श्राह किना—	The state of the state of the
(৩) ডাক্তারের রিপোর্ট' ও প্রতিবিধান—	
(৪) তারিখ—উচ্চতা——ওজন—গ্রন্থি	ท โข <b>ะ</b> สก์ส
(৫) সাধারণ স্বাস্থ্য—অসুখ্—প্রতিবিধান।	
(প্রত্যেক শিশ্বের বংসরে অন্ততঃপক্ষে চারবার স্বাস্থ্য	श्रुवीका करा हेरिक
्रिया क्षाप्त के प्राप्त के दिल	A Library Control of the Control of
णातिथ - উक्रांत्र - श्री जिस्स के अर्डिक छहा जह जाति । जाति का जाति । ज	તાલમાત્ર તાલમાત્ર
मानाणा विभावसाल हा प्राच्यात्रहें।	रा—णङक (कि कि बिरश

রচনা—অঙক (কি কি শিখেছে-

#### <u>ৰুচিবিকাশ</u>

তারিখ——সঙ্গীত——চিত্রকলা——সাজসঙ্জা—কবিতা লেখা——
তাহার গুণাবধারণ—সোন্দর্যবোধের বিকাশ।

#### শিল্পকার্যে উন্নতি

তারিখ—সময়—কি কি জিনিষ তৈরী করেছে—কার্যের গুণাগুণ।
দলবন্ধভাবে কি কি করেছে—

#### वाक्तिवान्त्र्वक भूगावली

- (১) পরিষ্কার পরিচ্ছন্নতার প্রতি লক্ষ্য— ব্যক্তিগত— সামাজিক—
- (২) কাজের প্রতি আগ্রহ।
- (৩) আত্মবিশ্বাস।
- (8) देश्य ।
- (৫) সহযোগিতা।
- (৬) সামাজিকতা।
- (৭) বিশ্বাসভাজনতা।
- (৮) पाश्चित्वाथ।
- (৯) সু-অভ্যাস।
- (५०) नौिं जिया।

- (১১) নিজের প্রতি, সঙ্গীদের প্রতি, ব্যুস্কদের প্রতি মনোভাব ও আচরণ।
- (১২) পর্যবেশ্বণ শ্ব্মতা।
- (১৩) মৌলিক চিন্তাশক্তি।
- (১৪) আবিষ্কার করবার বা স্টি করবার স্ক্মতা।
- (১৫) বিচারশক্তি।
- (১৬) মনঃসংযোগ।
- (১৭) দ্নেহপ্রবণতা।
- (১৮) নিভ'ীকতা।

# বুণিধর পরিমাপ (আনুমানিক)—

#### কি কি বিষয়ে আগ্ৰহঃ—

भन्ठवा।—अरंग्राजन जन्याग्री कि कि वावन्या जवलम्यन कता रंग्राष्ट्र थवः वात कलाकल।

প্রধান শিক্ষকের স্বাক্ষর ও তারিখ।

# (রেকর্ডিং এর নমুনা)

### शारोत ऋमणा नित् शरणत नम्ना

·	<b>a</b> )	গ	খ	ক
পাঠ বুঝ। যায় না ।	থেমে থেমে পড়ে, ভাল বুঝতে পারে না ৷	পড়া নির্ভুল কিন্ত থেমে থেমে পড়ে।	একটানা নির্ভুল পড়তে পারে, বুঝতেও পারে।	অতি উত্তম পাঠ, পুকাশতদি স্থাপর, বুঝে পড়তে পারে।

#### হাতের লেখা

		1100% 00141		
8	घ	গ	খ	क
কুৎসিত লেখা।	বিশুী, অপরিকার, অসম হস্তাক্ষর।	লেখা পরিকার।	খুব পরিকার, অক্রের সমতা।	অক্ষরের সমতা, পরিচছনুতা, সৌন্দর্য্য, ক্রততা।
সামাজিকতা				
& 	य	গ	*	क
একা থাকতে ভালবাসে।	ঝগ্ড়াটে, মিশতে পারেনা।	সাহচর্য্য ভালবাসে।	সব সময় সজীদের সঞ্চে থাক্তে চায়।	অন্যের সাহচর্য্যে অত্যন্ত আনন্দ পার, বন্ধুদের বাড়ীতে ডেকে আনে।
Maria Proces		मनः <b>प्र</b> स्याश		
3	য		Far arthur	

**************************************	घ	গ	খ	क
অমনোযোগী, চিন্তা না করে সিদ্ধান্তে আসে।	সহজেই চিত্ত বিক্ষিপ্ত হয়।	সাধারণভাবে কাজে মনোনিবেশ করে।	यत्नात्यांशं द्वशीक्षः स्राप्ती ।	একাগ্র <b>অ</b> ভিনিবেশ।

### পরিছন্নতা

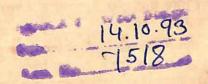
3				
	4	গ	খ	7
সব সময় নোংরা থাকে, পরিকার পচিছনুতার ভাব পছন্দ করে না।	দৃষ্টি আকর্ষণ কর্লে পরিকার থাকে, নিজে কিছু পরিকার থাকে, আশপাশের পরিচছনু- তার প্রতি সজাগ নয়।	পরিচছনুতার দিকে দৃষ্টি আছে। অন্যেরা যাতে পরিকার থাকে	পারচছনুতার দিকে সজাগ। পরিবেশকে পরিচছনু রাখতে স্বত্ত্ব বৈজ্ঞানিক দুটিভাষী	জিক পারচছনুতার প্রতি বেশ সন্ধার। পরিচছনতার দিকে

# শিক্ষক ও পল্লীসংস্কার

#### উপসংহার

प्रमा वाल न्वायीन। न्वायीन प्रमांत न्वायीन नागितिक मृष्ठित पारिष्व वाल श्रायिन मिम्स्टिन । ताष्प्रेत वापमा वन्यायी जिन रदन गणिति विन्वामी वर्ष माराया कत्तन अवजिकि मिम्दिक गए जूना जूनिक माराया कत्तन अवजिकि मिम्दिक गए जूना मार्गित के तेता। वामामाना कत्ना, वाष्ट्रिन नार्जितमीन, नेन्दिन्याया, न्वायीनिक गणितिक के दिन वामामाना कत्ना, वक्षणा मार्गितिक के दिन वापमाना कर्ना, वक्षणा मार्याया कर्ति । विभावपारिक प्रमाया कर्निक प्रमाया कर्निक मार्गित के प्रमाया कर्निक मार्गित कर्णा विकास प्रमाया कर्निक मार्गित कर्णा विकास परिवास कर्णित कर्णा विभावपार कर्णा विभावपार परिवास विभावपार परिवास कर्णा विभावपार व

BHA J. I. E.





# षिठीय जध्याय

# শারীরিক শিক্ষা

# (ক) ভূমিকা ও শিক্ষাপদ্ধতি

"Rhythm is certainly a fundamental factor in human development. Children of a few months will beat time with a marked rhythm and the sense of rhythm is apparently at its height at about three years of age and if not cultivated, it may be lost."

এই স্বাভাবিক ছন্দকে অব্যাহত রেখে শিশ্বদের জন্য এমন কোন ব্যায়াম-কৌশল নির্বাচিত ক'রতে হবে যা শিশ্বপ্রবৃত্তির পরিপ্রক হবে; তার পক্ষে ভারস্বর্প হবে না।

আমরা সার্বজনীন শিক্ষাপর্ধতির কথাই ভাবছি—স্বতরাং ভারতবর্ধের মত বিশেষ ক'রে পশ্চিমবঙ্গের মত আর্থিক সমস্যাপনিড়িত দেশের সাধারণ শিশ্বর কথা মনে রাখলে আমরা প্রমন কোন ব্যায়াম-কৌশলের কথা ভাবতে পারি না যা ব্যয়বহুল ব্যাপার। এজন্য শিশ্বদের ছন্দোবন্ধ অভগস্ঞালনের প্রতি দ্ভি রেখে আমাদিগকে এমন কতকগুলি কাজ ও সাধারণ খেলার কথা ভাবতে হবে যা তাদের অভগপ্রত্যভেগর বিকাশসাধনের সহায়ক হয়।

मिन्द्र यि जानत्मत प्रदेश काल करत जर एमरे कारलत गर्था जाएनत हिन्मामय ज्ञान क्रांचन ज्याच्छ थारक। ज्ञान लाल क्रांचिक क्रमणात क्रांचिक क्रमणात ज्ञान ज्ञान क्रांचिक क्रमणात क्रांचिक क्र

व' ছाড़ा थमन कठकण्डि एथलाय्ला ও অঙগপরিচালনার व्यवस्था थाका চাই যাতে जानत्मत्र मथा मित्र मिन्द गतीदात श्रीष्ठ ७ जन्क विकास घाँदे भारत। मृथ जाहे निकास हो प्रति श्रीष्ठ । मृथ जाहे विकास हो प्रति भारत । मृथ जाहे विकास प्रति भारत हो कि श्रीष्ठ श्रीष्ठ । माथ जाहे विकास प्रति भारत हो हो हो हो हो है । स्वाप हो हो हो हो हो है । स्वाप हो हो हो हो हो है । स्वाप हो हो हो है । स्वाप हो है । स्वाप हो हो है । स्वाप हो । स्वा

স্বেদর ও স্তাম হয়, স্নায়য়ণ্ডলীর ক্ষিপ্রতা জন্মায় ও জীবনীশক্তি বৃদ্ধি পায়, এর সঙ্গে তার সামাজিক কর্তব্যবোধ, সহযোগিতাম্লক মনোভাব, দেশাল্লবোধ, নেতৃত্বক্ষমতা, জয়-পরাজয়ে খেলোয়াড় জনোচিত লন্ভেজিত মনোভাব, আল্পসম্লম বোধ ও সাধ্তা, প্রভৃতি মানবোচিত গুণগুলির বিকাশসাধনের দিকে যথোচিত দৃষ্টি দিতে হবে। রাষ্ট্রীয় পতাকা অভিবাদন উপলক্ষে তালে তালে চলা ও অন্যান্য অভগসপ্যালন ব্যবস্হার মধ্য দিয়ে শারীরিক ব্যায়ামের সঙ্গে সঙ্গে শিশ্র আদেশপ্রীতি, দেশাল্লবোধ প্রভৃতি সদ্গুণের বিকাশ ঘটবে। তা ছাড়া আট থেকে দশ বংসরের শিশ্বেদের জন্যে এমন কতকগুলি খেলার ব্যবস্হা করা চলে যাতে শিশ্র দৈহিক ব্যায়ামের সঙ্গে প্রবেশ ক্ষেতা, আচরণ করবার ক্ষমতা ও অনুকরণ করবার ক্ষমতা বৃদ্ধি পায়। যথা—

- (क) मिकात कतात जन्त्र १ रथला—स्नोष्ट्रात्ना, १ महान्धायन, वन्मी कता, १ लायन।
- (খ) নিক্ষেপ করা ও ধরা, কোনও বদতু একদলের নিকট হ'তে অপরে লুফে নেবে—
  'রুমাল চুরির'' মত খেলার ব্যবস্থা রাখা যায়।
- (গ) বিভিন্ন জীবজন্তুর চালচলনের অনুকরণমূলক ব্যায়াম।
- (ঘ) দৌড় ও ঝাপসংযুক্ত খেলাধ্লা।

10

ড্রিল—এই বয়সের ছোট ছেলেমেয়ের উপযুক্ত নয় কারণ ড্রিলের মধ্যে আনন্দ, কল্পনাশক্তি, অনুকরণ ও অভিনয়শক্তির সাথ কতা ঘটে না ও শিশ্বকে অত্যধিক শ্ভখলায় ভারাক্তান্ত করে।

व्यासा ७ त्थलाय्ला प्रमास थालि भारस थाका छ जा वासार साम प्रति ७ छ विष्यপ্রধান দেশের পক্ষে ইহা সর্বাংশে সমীচীন ও স্বিধাজনক বটে। ইজের কিংবা হাফপ্যাণ্টই এ বিষয়ে সর্বাপেন্দা উপযুক্ত হবে (মেয়েদের জন্য ইজের এবং কুর্তা বা ছোট ফ্রক)।
১৮ বংসরের শিশ্র একসঙ্গে ২০ মিনিটের বেশী ব্যায়াম না করা ভাল। ৯-১০ বংসরের
শিশ্র প্রতিবারে আধ্যণ্টা ব্যায়াম করতে পারে। প্রতিদিন বা একদিন অন্তর একদিন ব্যায়াম
ব্যবস্থা রাখা উচিত। শিক্ষক মাতৃভাষায় ব্যায়ামের আদেশ দেবেন, শিশ্রদের আদেশগ্রিল
এমন হওয়া ভাল যেন তারা আদেশ শ্রেই প্রতিপালন করতে পারে—যেন সব সময় দেখিয়ে
দেওয়ার প্রয়োজন না ঘটে। তবে অবশ্য শিক্ষকও শিশ্রদের সঙ্গে সঙ্গে ব্যায়ামভঙ্গী করবেন
যেন শিশ্রা ভুল প্রান্তি শ্র্ধারয়ে নিতে পারে। ব্যায়ামের সঙ্গে অঙগস্ভালন এমন দ্বত
হওয়া চাই যেন শিশ্র শ্বাস-প্রবাসের কার্য প্রত হয় ও ঘাম বের হয়, কারণ তা না হ'লে
ব্যায়ামের উদ্দেশ্য সমপ্রণ সিন্ধ হবে না। ব্যায়ামগ্রিলর মধ্যে যথোচিত আগ্রহ গতিশীলতা
স্কির জন্য শিক্ষক তার কল্পনাশক্তি ও প্রত্যুৎপয়ব্রিধর সন্ব্যবহার ক'রে কাল্পনিক গল্পের
সঙ্গে অঙগভঙ্গীযুক্ত অভিনয় ক'রলে ব্যায়ামের সঙ্গে কল্পনাশক্তি বাড়ে। এর্প ব্যায়াম
ছোটদের (৬-৭) খ্রই উপযুক্ত হ'বে।

বৃদ্ধে জলসেচন কাজে ছন্দ ও ক্ষিপ্রতা সৃষ্টি ক'রে রচনাত্মক কাজের সংখ্য ব্যায়ামের সংযোগ ঘটানো যায়। ছন্দ রাখবার জন্য চলার তালে তালে ছড়া বলা যায়, যথা—

এক দুই তিন চার
প্রাচ ছয় সাত আট
নয় দশ এগারো বারো
তের চোদ্দ পনর ষোল
সতের আঠার উনিশ কুড়ি

এক দুই তিন
চার পণচ ছয়
সাত আট নয়
দশ এগারো বারো
তের চোন্দ পনের

জমিতে দিয়েছি সার মাটি করেছি পাট এইবারে বীজ পাড়ো তারপরে জল ঢালো উঠবে চারা দিয়ে তুড়ি।

নিড়ানীটা নিন্ কর্ন ঘাসের ছয় গাছের জোর হয় পাতা বড়ো বড়ো বাড়বে তর তর।..... ইত্যাদি

দৈহিক ব্যায়ামের সঙেগ কিভাবে কল্পনাশক্তি ও স্নায়ুর ক্ষিপ্রতাব্দিধ সম্ভব করা যায় তা নীচের উল্লিখিত ব্যায়াম-পরিকল্পনায় বুঝা যাবে। খেলাঘরে ৬ বছরের শিশুরা সমবেত হয়েছে। শিক্ষ্ক মহাশ্য় বললেন, "দৈত্যের মত বিরাট হও," প্রমুহুতেই বললেন, "মাটির সঙেগ মিশে যাবার মত ছোট হও।" এভাবে "নদীর মত চওড়া হও," "স্তার মত সরু হও", "লাঠির মত সোজা হও," "ই দুরের মত ছোট হও", "ফুলের মত ফুটে পড়ো", ''কু'ড়ির মত হও।'' এই আদেশগুলি পালনের ভেতর দিয়ে শিশুর ছন্দোবদ্ধ অভগঢালনাই শুধু হ'বে না, তাদের কল্পনাশক্তি প্রকাশভঙিগমা প্রভৃতি আয়ত্ত ইবে এবং প্রচুর পরিমাণে কৌতুক ও আনন্দ অনুভব ক'রবে। এর সঙেগ সঙেগ তারাও বলবে, ''দেখুন দাদা, আমি দৈত্যের মত লম্বা হ'য়েছি, আমি কুঁড়ের মত ছোট হ'য়েছি'' ইত্যাদি এবং এর ফলে তাদের ভাষাজ্ঞানও বাড়বে। "ঘুম থেকে উঠ", "ঘুমাও", "চিবাও" প্রভৃতি আদেশ দিয়ে তাদের रेमनियन काछकंम भू लित जन् कतर्गं वां यां कत्रारमा याय। कल्यनामां वक्षे विक्रिक সাহায্যে সম্যক বোঝা যাবে। শিক্ষক মহাশয় গ্লপ স্রু করলেন। ''এক দেশে এক রাজা ছिल्लन, তिनि খूव लम्बा ছिल्लन थवः लम्बा लम्बा शा रिक्ल ठलराजन।" व्यमिन एडल्लासराया শिक्षक भशागरस्त्र ठेकूफिर्क तालात में लम्या हरस शा रिक्ट मूत् कत्रा । भिक्षक भशागस আবার বললেন, "তার যিনি রাণী ছিলেন তিনি রাজার চেয়ে একট্র ছোট ছিলেন আর একট্র ছোট পা ফেলে চলতেন''। সঙেগ সঙেগ শিশ্বা দেহ সংক্চিত করল, পদক্ষেপও হুস্বতর করল। শিক্ষক মহাশ্য় তারপর বললেন, রাজপুত্র ছিলেন ছোট আর ছোট ছোট পা ফেলে চলতেন। সঙ্গে সংজ্প স্বাই নীচু হ'য়ে খুব ছোট ছোট পা ফেলে চলতে স্ব্রু ক'রে দিল। শিক্ষক শহাশ্য় বললেন, একদিন রাজা তাঁর খুব বড় ঘোড়ায় চড়ে ম্গ্য়া করতে গেলেন, তার ঘোড়া খুব लम्या कप्रत्म ठलरा लागरला जर्मान प्रकरल लम्या लम्या शा रक्षरल ছूठरा लागल। अहे-ভাবে শিক্ষক মহাশ্য় বললেন "রাণী তার চেয়ে একট ছোট ঘোড়ায় চড়লেন। সে ঘোড়া ছোট কদমে চলতে লাগল"—সঙেগ সঙেগ শিশ্রা অন্করণ করতে লাগল। শিক্ষক আবার বললেন, যেমন ত°ারা চলতে লাগলেন, পাখীরা এগাছ হ'তে ওগাছে পালাতে লাগল। ज्ञकटल शाशीत मण जास्त्रा वमलारण गुत् कतल। भिक्षक वलटलन, जाता धका रेप्तूतरक পালাতে দেখল একটা বিড়ালকে ম্যাও ম্যাও ক'রে যেতে দেখল। শিশ্রা তখন ই দুর বিড়ালের মত ক'রে চলে বেড়াতে লাগল। রাজার ঘোড়া ঝরণা পার হ'ল আঁস্তে লাফ দিয়ে, त्रागीत ह्याड़ा वकरें वड़ लाक निरम शात रल। ताड़ श्रह्म ह्याड़ा थूव वड़ लाक निरम शात रल। मिन्द्रा यथाकरम् एहाउँ, भावादि ७ लम्या लाक प्रति। श्रद्ध त्रोका, तानी ७ ताकशूव क्लान्ठ र'रस रंगलन। मिन्द्रा क्लान्ठ र'रस घ्मिरस প्रात छान कत्रत।

Jy.

এইভাবে গলপাভিনয়ের মধ্যে ব্যায়াম শিশুদের মনোজ তো হবেই, এটা তাদের স্বাভাবিক क्षिथ्रा, य्वनमाक्ति, कल्पनामाक्ति, ভाষाक्षान ७ मन्द्रप्रम् वत्राव। वर्शाव्यक्ति प्रदेश निम्तू ता कठक गूनि श्राचि विधिवण्य त्थला तथलात। धरेग्रील तथलात समरस् जाता राम খেলাটির বিধি ঠিকমত মেনে চলে, তা শিক্ষক মহাশ্য় দেখবেন এবং ধীরে ধীরে যাতে তাদের মধ্যে খেলোয়াড় জুনোচিত মনোভাব ও শ্ৰেখলাবোধ জাগ্ৰত হয় তা দেখবেন। रथला याद्य जांज मीर्घ त्रमस ना हटल छाउ छाटक प्रथए र'दा। रथलवात त्रमरस रथएलासाए-দের মধ্যে বন্ধুভাব অটুট রাখবার ও সঙ্গীদের গুরুতর আঘাত হতে রক্ষা করবার মনোভাব জাগ্রত থাকে তা শিক্ষককৈ দেখতে হবে। অন্যায় ক'রে বিপক্ষের নিকট হ'তে সুবিধা আদায় করা, বিপক্ষকে ফুণাকি দিতে চেণ্টা করা, হেরে গেলে ভুজ্নোৎসাহ হওয়া, অথবা জিতলে গ্রে স্ফীত হওয়া, অখেলোয়াড় জনোচিত মনোব্রিভ, শিশ্বদের এগ্রিল বজন করার প্রতি অবহিত ताशटण श्रदा रथलात त्रमरहा मिन ता रयन निक न्यार्थ वार्थ महा प्रता प्रतार क्यार्थ वर्ष क'रत प्रतार আর দলের দ্বার্থের চেয়ে সত্য ও ন্যায়কে বড় ক'রে দেখে তার শিক্ষা দিতে হবে। কারও नियम्ब वा व कि घछेटल प्र निरक्षदे स्थन वा न्वीकात करत धत्रकम मरनाखाव न्या क्रिक हरत। त्मीषु बंेन्त्र, त्थलाथुला প্রভৃতি বিষয়ে শিশ্বণ আহত হ'তে পারে—এজন্য প্রাথমিক সাহায্যের ব্যবস্থা থাকা চাই। আঘাতজনিত ক্ষ্তের স্কুচিকিৎসার প্রাথমিক ব্যবস্থাও করতে हरत किन्छू त्रामाना वाघारक वात्रक ह'रल हलरव ना। रयन निमाता म्ह इस नामाना वाघारक

শিশুদিগকে নিয়মানুবর্তিতা সম্বন্ধে সজাগ করা শিক্ষকের অন্যতম কাজ। এই শিক্ষা যাতে শিশুরা ভালভাবে লাভ করতে পারে এবং বয়োব্দির সঙ্গে সঙ্গে শিশুদের অধিকতর নিয়মানুবর্তিতার শিক্ষা হয় এর্প খেলা দিতে হবে। তাদের নিয়মানুবর্তীও করতে চেণ্টা করতে হবে। তারা খেলায় যত মতুই থাকুক না কেন শিক্ষক মহাশয় যেই 'খেলা শেষ' আদেশ জানাবেন তারা যেন আদেশ পালন করে তা দেখতে হবে।

बरेणात काछ ७ थिलात मर्था मतीत्तर्तं ज्ञुण्या प्रमा ७ प्रान्त ए प्रान्थ प्रभावत्त्र प्रमा ७ प्रान्थ प्रभावत्त्र प्रमा १ प्रान्थ प्रमा १ प्रमा

# (খ) শারীরিক শিক্ষা সম্বন্ধীয় নির্দেশ

ভূমিকা।—শিশ্বদের শরীরচর্চার পাঠ্যক্রম (syllabus) ঁ তৈয়ারী করবার সময়ে नर्वपारे এটा न्मत्र ताथा श्रासाखन य जा' informal रात, कान अत् अनमनीय श्रेत দুশু করিয়ে শ্রীরচর্চা শিক্ষা দিতে গেলে শিশুর স্বভাবজাত গতিভঙগী ও হন্দ ব্যাহত হয়, কাজেই শরীরচর্চার ভেতর দিয়ে তাদের স্বাভাবিক গতিকে উন্নীত করবার জন্য যথাসম্ভব স্বাধীনতা শিশুদের দেওয়া প্রয়োজন। দৌড়ান, লাফান, বলছে ড়া, তে তুলবিচির থলির प्याता লোফাল্ফি খেলা, সি°ড়িতে ওঠা ইত্যাদি কাজগুলি শিশু স্বভাবতঃ ক'রতে এত ভালবাসে যে এর পরিবর্তন করা বিধেয় নয়। কাজেই শরীরচর্চার শিক্ষা তাদের স্বাভাবিক কাজ কর্মের উপর ভিত্তি ক'রে দিতে হবে এবং শিক্ষক বা শিক্ষিকা শিশ্বর কাছে এটা অতি সহজ ও স্বাভাবিকভাবে উপস্থিত করবেন। শ্রীরচর্চার মধ্য দিয়ে নিঃশব্দে থাকবার অভ্যাসও শিশুদের ক্রমে শিহ্মা দিতে হবে। কারণ শিহ্মাজগতে এর প্রয়োজন খুব বেশী। বর্তমানে আমাদের যে শিক্ষাপ্রধতি প্রচলিত আছে, তাতে শ্রীরচর্চার স্থান অতি নগণ্য। যে সম্সত বিদ্যালয়ে এর ব্যবস্থা আছে তাও অপরিমিত এবং উপকার না হ'য়ে অপকারই তাতে হয়ে থাকে। বর্তমানে যে সমস্ত বিদ্যালয়ে শ্রীরচর্চা শিক্ষা দেওয়া হয় তাতে স্পতাহে এক দিন বা দুই দিন ক'রে ছাত্র-ছাত্রী শ্রীরচর্চা ক্রবার সুযোগ পায়। স্তাহে একদিন বা দুইদিন ৪০ বা ৪৫ মিনিট শরীরচর্চার ঘণ্টা না দিয়ে দৈনিক ১৫ থেকে ২০ মিনিট শরীরচর্চা শিক্ষা দেওয়া বাস্থনীয়।

वारामाण्डणी नम्बत्य जात्र थकि कथा वनवात जाष्ट य यणप्त नम्ज्व निग्रामत मूल वाराप्त वाराप्त वाराप्त वाराप्त वाराप्त वाराप्त वाराप्त करान छिण्छ ; जार्छ जार्म न्याप्त्र छ्या छ्या छ्या वार्म करान छिण्छ ; जार्छ जार्म न्याप्त छ्या छ्या छ्या वार्म वाराप्त वाराप

শिक्षक गिक्षिका गिगूज वर्राप्र थर्र प्वारम्शत छेलत ने त्रा दार्थ वार्रासित लाठेणां विका প্रम्णूण क'त्रावन। विमानार निर्माण या प्वाम्प्रालिका। (Health card) । त्राथा प्रवाण जातक विगमण्डात छानार प्रवा। विश्वित वर्राप्त छ विश्वित लित्रात्त शिल्लानिण गिगूज छना विश्वित श्रकारत वार्राम ७ थ्या । गिक्षक, गिक्षिकार छानार प्रवा। यमन विष्ठित एक्ता यथि लित्रा यथि लित्रा व्याप्त क्रिका थाना थ्या । यथि लित्रा वार्राम वार्षिक लित्रा वार्राम ने पिर्म जाता प्रवा क्रिका वार्राम क्रिका वार्राम ने प्रवास क्रिका वार्राम ने प्रवास क्रिका वार्राम लित्र होता प्रवास क्रिका वार्राम लित्र वार्मिक लित्र वार्राम विश्वित वार्राम विश्वित वार्राम वार्रा

কোন শ্রেণীতে কিরকম ব্যায়াম দেওয়া যেতে পারে তার কোন বাধাধরা নিয়ম নাই।
এটা শিশুর হ্মতা, পূর্ব অভিজ্ঞতা, উৎসাহ আকাঙহ্মা, আগ্রহ, পরিবেশ, অনুসন্ধিৎসা ও
অভিরুচির উপর নির্ভার করে। তবে এই উৎসাহ, আকাঙহ্মা জাগাবার জন্য শিক্ষক পরিবেশ
রচনা করতে পারেন—যথা বল, তেতুলবিচির থলি, রঙীন ব্যাণ্ড বা ফিতে বাজনা ইত্যাদি
দেখে এইসব জিনিষ দিয়ে খেলবার আগ্রহ শিশুদের স্বভাবতঃই হয়।

विफालिस्त श्रथम धवर ण्विणीस स्थानीत जर्थार ७ रंख ७ वर्णत वस्प्रक मिम् प्लित कित्रकम स्वरान्त वाग्राम ७ स्थान प्रिश्वा स्थाल शार विस्तर शाराम विस्तर शाराम विस्तर शार विस्तर विस्तर विस्तर शार विस्तर विस्तर विस्तर विस्तर विस्तर विस्तर विस्तर विस्तर विष्तर विस्तर विद्य विस्तर वि

७ र'टा ४ वरमत वसम्क मिन्द्रामत स्वाधाम् कि ५৫ र'टा ५० मिनि अर्थन् अणिमिन वासाम मिक्स प्रथम रयटा शासा

- ২। পরিচালিত খেলা।—(ক) দ্বিতীয়তঃ শিশ্র অনুকরণপ্রিয়, কাজেই এমন খেলা তাদের দিতে হবে যে তারা সেই জিনিষ অনুকরণ ক'রে আনন্দ লাভ ক'রতে পারে। লক্ষ্য রাখতে হবে যে, যেন এই জাতীয় খেলায় তাদের শরীরের বড় বড় মাংসপেশীসম্থের কাজ হয়, যথা বুক, পিঠ, হাত, পা, কোমর প্রভৃতি স্হানের মাংসপেশীসম্থের কাজ হওয়া প্রয়োজন। তেতুলবিচির খলে, বল ছেণ্ডা, লোফাল্রফি করা, 'বাউন্স'' করা, ছব্ডিয়া আবার ধরা ইত্যাদি দ্বারা ব্যায়াম করান যেতে পারে।
- (খ) বাঘের মাসী, ই॰দ্র-বেড়াল, বড় প্রুল, ছোট প্রুল, বনের রাজা, গাড়ী চালান, চাকা চালান, মাছ মাছ, সিংহ মশাই সিংহ মশাই ক'টা বেজেছে প্রভৃতি তাড়া করার ছোট ছোট খেলা করান যেতে পারে।

म् ' वकि एथला त्र वराधरा मि असा र वा

ছোট পুতুল বড় পুতুল।—গঠন।—একটি নিরাপদ চকের রেখা বা দড়ির লাইনের পিছনে ছেলেমেয়েরা থাকবে, মাঠের অন্য প্রান্তে একটি চৌকো বা গোল চিহ্নিত চ্ছান বাঘের মাসীর জন্যে নির্দিষ্ট আছে। শিক্ষক আগে নিম্নলিখিত ছড়াটি শিশুদের শিখিয়ে নেবেনঃ—

''ছোট পুতুল বড় পুতুল হাসে হা হা খুণচার মধ্যে বাঘের মাসী ধরতে পারে না।।''

वहें हणां विन्तात प्रमयं गिक्स्तित नेजत थाकर य हिल्लाम्यात यन "हणां भूर्जूनं" वलट चूर्व हणां हयं, वर वर्ष भूर्जून वलट ये वर्ष हं रेट भारत लाहें हयं। गिक्स विकित गिम्पूर्ण वार्यत माप्ती व'रल िहिन्छ धरत भागीरवन, वर वहें हणां विल्या वलट गिम्पूर्णत वार्यत माप्तीत घरतत गिर्क यार्यत नार्यत माप्तीत घरतत गिर्क यार्यत वार्यत माप्तीत घरतत गिर्क यार्यत वार्यत माप्तीत घरतत गिर्क यार्यत वार्यत माप्ती लाहा ना करत लिक्स लाक्तिय ह हणां वर्ष हर्य हर्ष वलट थाकर्यत वार्यत माप्ती लाहा करताह लाहा ह्रां निताभम लाहेर्य हला यार्य। वार्यत माप्ती कार्यक यार्यत यार्यत माप्ती लाहा करा वर्षा यार्यत यार्यत माप्ती हें रेट हर्यान लाहा करा हरेरा। यार्यत यार्यत माप्ती हें रेट हर्यान लाहा करा हरेरा। यां हिल्ला प्राचा वार्यत माप्ती हें रेट हर्यान लाहा लाहा हरेरा। यां हिल्ला प्राचा करा हिल्ला भारत वार्यत वर्ष हर्षा मिष्ट वार्या प्राचा वार्यक यां वार्यक मार्या वार्यक यार्या पर्यात वार्यक यार्या पर्यात वार्यक मार्या वार्यक वार्या पर्यात वार्यक वार्यक वर्ष यां पर्यात वार्यक वर्ष यां पर्यात वार्यक वर्ष यां वार्यक मार्या वार्यक वर्ष यार्य। हर्षात वार्यत वर्ष यां वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष यां वार्यक वर्ष यार्य। वर्ष वार्यक वर्ष यार्या वार्यक वर्ष यार्य। वर्ष वार्यक वर्ष यार्या वार्यक वर्ष यां वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष यार्य। वर्ष वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्यक वर्ष यार्य वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष वार्यक वर्ष वार्यक वर्यक वर्ष वार्यक वर्यक वर्यक वर्यक वर्यक व्यायक वर्यक वर्ष वर्यक वर्यक वर्यक वर्यक वर्यक वर्यक वर्यक

''লেজ ধরা'', ''বন্য ঘোড়া'', ''হাত ছে ওয়া'' ইত্যাদি জাতীয় দলীয় খেলা এই বয়সে দেওয়া চলতে পারে।

- (গ) সহজ দলীয় নাচ, কর্ম-সংগীত ( Action song ), গানের খেলা, ছন্দ ও তালের সংখ্য খেলা প্রভৃতি এই বয়সে শিশুদের উপযোগী, যথা।—
  - (५) हासीत वर्षा धला दत.....
  - (২) মোরা নাচি ফ্রলে ফ্রলে দ্রলে দ্রলে.....

(0)	छर्थ शश्रात वारक मामल
(8)	म्म किछ निर्ण न्रिंग कि स्य नाक जाना देश देश नाम देश हैं।
(0)	1 11 (1316) 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
(&)	वामि छ्य क्रव ना छ्य क्रव ना
(9)	পেষি তোদের ডাক দিয়েছে—আযবে চলে আম আম
	1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1
(0)	विभारक विभारक छात् छात् शाश
(20)	आर्ज जामार्म्पत इ. वि. दं बार्ड बार्ज बामार्ग्य इ. वि.
(55)	वाय ज्या ज्या जार नाति वाद्य व्याप्त व्यापत
Attention	

উপযুক্তি কর্ম-সঙ্গীত (Action song) কয়েকটি দুটোল্ডম্বরূপ দেওয়া হ'ল। এই বয়সের উপযোগী আরও ন্তন কর্ম-সংগীত তালিকাভুক্ত করবার বা বাদ দেবার স্বাধীনতা শিক্ষক শিক্ষিকার থাকবে এবং ছড়াতে সুর সংযোগ ক'রে তিনি ছড়াকে শিশুদের হৃদয়গ্রাহী ক'রে তুলতে পারেন।

- (ঘ) সণতার।—নিশ্বাস নিয়ে ঠণই জলে ডুব দিয়ে জলের নিচে মুখ রেখে নিশ্বাস विम्रालर्येत दिश स्मर्थ रेजामिए भिक्क भिम्रुमित प्रशालर्येत ज्ञालिस मिर्ये निर्व
- ৩। नियमान यामा খেলা।—প্রথম শ্রেণীর শেষের দিকে এবং দ্বিতীয় শ্রেণীতে অন্য খেলাও ব্যায়ামের সভেগ সভেগ দশভাবার, বসবার এবং শোবার সুষ্ঠু ভঙগীর উপর একটা একট্ব করে জোর দিতে হবে। নিয়মিত খেলার গঠনও একট্ব একট্ব ক'রে শিক্ষা দিতে হবে। निग्तू ता लारेरन मंग्राट निथर প्रथरम मिष्त प्राशास्या ଓ ठेक वा हूरनत लारेरनत प्राशास्या শেখাতে হবে। ক্রম্শঃ হুণটতে ঘুরতে গোল করতে শিখবে। লাইন শিখলে, সেই লাইনেই হাত थरत पूरे शान्त्र पूरिणि निम् देमोर्ड अरम राज धतलार रिंगाल रहत। भारतेत हात स्कारन চারটি লাইন বা দড়ি দিয়ে ঘর চিহ্নিত ক'রে শিশ্বদের সেই ঘরে ভাগ ক'রে দিয়ে ঘর বদল করতে শেখাতে হ'বে। ছোট ছোট লাফ দিয়ে এই সময় তারা ঘুরতে শিখবে এবং দিক সম্বন্ধে কিছুটা জ্ঞান তাদের দিতে হবে। এই ব্য়সে তাড়াতাড়ি দৌড়ে এসে দণড়ান, হঠাৎ থামতে बलालें थायरा शाजा रेजापि कालगू निम्तू प्तत क'तरा शाजा ठारे।

ब्राणा विकासी।—''স্থি' मामा'', ''হালে, ना, খা'', ''ভগবান হে'' প্রভৃতি ব্রতচারী নাচ গান এই বয়সে আরম্ভ করা যেতে পারে।

খেলাধ্লার সরঞ্জাম। — নিম্নলিখিত খেলার জিনিষ তৈয়ার করবার জন্য শিক্ষক শিশ্বদের উৎসাহিত कें'রবেন এবং প্রয়োজনবোধে সাহায্য क'রবেন।

- (১) বল—কর্ (cork), ছোবড়া, প্রেল মোজা, টুকরা উল বা নেকড়া প্রভৃতি
- (২) न्यान्ड प्राकृति शाकृ प्याता टेल्ती कता यास।
- (৩) স্কিপিংএর দড়ি পাড় বিনুনি ক'রে বংশের হাতল দিয়ে তৈরী হ'বে।
- (8) छित्न वालि छ'रत तु क'रत निरम हारकत काछ ठल्रात।
- (७) वंशम वा त्वछ छाल कं त्व प्रमान कं त्व नित्ल लाकावाव काळ ठलत्व, लाठि एथला শিক্ষা দেওয়া যাবে। এছাড়া শিক্ষক খেলার সরঞ্জাম নিজে ভেবে শিশ্বদের प्याता जा टेजरी कित्रस्य त्नरवन ; ज्य जारक मरन त्राथरं ह'त्व स्य जा स्थन

# (গ) স্বাস্থ্য-শিক্ষা

ভূমিকা।—আমাদের সমাজজীবনে স্বাস্থ্য বিষয়ে অনভিজ্ঞতা ও স্বাস্থ্য-বিধি পালনে অবহেলার পরিচয় পদে পদে দেখতে পাওয়া যায়। সেইজন্য আমাদের দেশে গড়পড়তা পরমায় মাত্র পর্ণচিশ বংসর এবং শিশ্মত্যুহার সভ্যদেশগুলির মধ্যে সবচেয়ে বেশী।

वार्यानक निका-वावण्याय दिश्य । मानिक न्याण्याकर नक्यावा निकार जिल विकार विवार विकार निकार निकार निकार । मानिक न्याण्याकर निकार निकार निकार । मानिक निकार निकार निकार । मानिक निकार निकार निकार । मानिक निकार निकार निकार निकार निकार । मानिक निकार नि

বহুল অভিজ্ঞতার ফলে দেখা গেছে যে শিশুদের স্বাস্থ্যশিষ্ধা ব্যবহারিক এবং অভ্যাস-মূলক হলে, তবেই যথার্থ ফলপ্রদ হয়। তাছাড়া, শিশুরা সদ্পদেশে যত না শেখে, তার চাইতে বেশী শেখে মহং উদাহরণে।

শিক্ষক ও শিক্ষয়িত্রীগণ শুধু বাধা-ধরা ক্লাসের ঘণ্টাতে স্বাস্হ্যবিধিগুলি আউড়ে গেলে চলবে না—তাদের নিজেদের জীবনে ঐ নিয়মগুলি নিষ্ঠার সঙ্গে পালন করতে হবে এবং তাদের নিদেশিমত সকলে যাতে ঐগুলি ঠিক ঠিক পালন করে, তাও দেখতে হবে। শিশুদের নিজেদের স্বাস্হ্যশিক্ষাও হবে কর্মকেন্দ্রিক স্বাস্হ্যবিধি পালন, স্বাস্হ্যকর অভ্যাস গঠন এবং সেই বিষয়ের আলোচনার মধ্য দিয়েই তারা স্বাস্হ্যশিক্ষা লাভ করবে।

त्रवाश्चा-भित्रम्था ।— न्वाश्चािविधान ठिकमण भाषिण वृष्ट किना ण प्रिथ्वात छना श्वाञ्च मिन्दू नारम् विक्थािन श्वाश्चा-भित्रम्था थाकर्व— विवे तकम श्वाश्चाभ्यात वक्षि नम् ना वहे ज्यारात्रत राय प्रवाश्चा व्या वाय्या य मृ ध्र भित्रम्य ठित्री करते ७ भ्राण करत्रे भिक्षरक्त पासिक राय व्या वाय्या य मृ ध्र भित्रम्य ठित्री करते ७ भ्राण करत्रे भिक्षरक्त पासिक राय व्या व्या विषय व्या भ्या विषय विवेश विवेश

- সাফাই।—(১) ব্যক্তিগত, এবং (২) সামাজিক সাফাই অর্থাৎ পরিচ্ছন্নতাই সকল স্বাস্থ্যের ভিত্তি। স্তুতরাং স্বাস্থ্যশিক্ষার প্রথম এবং প্রধান কথাই হবে সকলপ্রকার পরিচ্ছন্নতা রক্ষা।
- (১) প্রথম শ্রেণী থেকেই শিশুদের পরিজ্বার পরিজ্বার হতে শেখাতে হবে। কেবলমার উপদেশের দ্বারা এ শিক্ষা দেওয়া যায় না,—হাতে নাতে করে' দেখাতে হবে।
- (क) प्राधातण प्रतिष्ठत्र । गिम् प्रति साथा, ठूल, कास, कान, नाक, म् लेठ, किछ, शाठ, पा उ नथ प्रतिष्कात আছে किना प्रथं रदि। प्रतिकात रक्त विद्या अथम प्रतिकात रिक्ट मिम् के निर्द्ध मिम् के प्रति प्रति क्षेत्र कार्य प्रति विद्या विद्
- (খ) স্নান।—স্নানের প্রয়োজনীয়তা এবং, বিশেষ করে, আমাদের দেশের গরম ও সাধারণতঃ ধ্লিময় আবহাওয়ার মধ্যে প্রত্যহ স্নান ও হাত পা প্রভৃতি ধোওয়ার আবশ্যকতা যে কত বেশী তা শিশুদের ভাল করে বুঝিয়ে দেওয়া দরকার। গরমের সময়ে, অথবা খেলাধুলা করে' ঘাম বেরোবার পরে, কিভাবে, কতক্ষণ পরে ও কেন' গা ধুয়ে ফেলা অথবা শুকনো কি ভিজে

গামছা দিয়ে রগড়ে মুছে ফেলা আবশ্যক তা তাদের খুব ভাল করে বুঝিয়ে দেওয়া উচিত।
ভিজে গা ভাল করে' না মুছলে, অথবা ভিজে কাপড়ে বেশীক্ষণ থাকলে ঠাণ্ডা লাগতে পারে,
একখাও বলা প্রয়োজন। প্রয়োজনবোধে শিক্ষক মহাশয় ছেলেমেয়েদের স্পতাহে অন্ততঃ দুদিন
তেল মাখিয়ে, গা রগড়িয়ে স্নান করিয়ে দেবেন। অপেফাক্ত বড় ছেলেমেয়েরা তার কাজে
সাহায্য করবে।

- (গ) কাপড় চোপড়।—এর পরেই আসে পরিজ্বার ও পরিচ্ছন্ন জামা কাপড়ের কথা। এক্ষেত্রেও হয় তো প্রথমে শিক্ষক মহাশয়কে শিশুদের জামা কাপড় সাবান দিয়ে ধুয়ে হাতে নাতে কাপড় কাচার পর্ম্বাত দেখিয়ে দিতে হবে। কিন্তু দু একদিন পরেই শিশুরা নিজেরাই উৎসাহের সভেগ নিজেদের কাপড় কেচে নেবে।
- (ঘ) স্বাভাবিক প্রক্রিয়া। সল্মু নাদি ত্যাগ ও শৌচাদি প্রক্রিয়ার স্বাভাবিক প্রয়োজনীয়তা শিশুদের বুবিয়ে দিতে হবে। বেগ চেপে রাখার অপকারিতা এবং কোণ্ট পরিক্লার রাখার আবশ্যকতা তাদের জানা উচিত। যেখানে সেখানে মলমু নাদি ত্যাগ করলে সৌন্দর্যহানি ছাড়াও অন্যান্য কি কি অসু বিধা ঘটতে পারে এবং বিশেষ করে, কি কি রোগ ছড়াবার সম্ভাবনা থাকতে পারে তাও তাদের জানিয়ে দেওয়া প্রয়োজন। বিদ্যালয়ে সুব্যবস্হা রেখে শিক্ষক মহাশয় শিশুদের সদ্ভাসে গঠনে সহায়তা করবেন।
- (২) সামাজিক।—কেবলমাত্র নিজে পরিচ্ছয় থাকাই যে যথেন্ট নয়, সমস্ত পরিবেশটিকেই নির্মাল ও সন্দর করে তুলতে হবে, এই বোধ শিশুদের মনে জাগানো চাই। একবার শিশুদের মধ্যে এ বিষয়ে সচেতনতা ও সৌন্দর্যজ্ঞান জাগিয়ে তুলতে পারলে শিক্ষক মহাশয়কে মোটেই বেগ পেতে হবে না। উৎসাহের সঙ্গে শিশুরা এগিয়ে এসে সব কাজ করবে। বলা বাহুলা, প্রত্যেকটি শিশুর বয়স এবং সামথ্য বুঝে তাকে কাজের ভার দিতে হবে। নিন্দতম শ্রেণীর শিশুরা সবচেয়ে হালকা কাজগুলি করবে।
- (क) বসবার জায়গা ও শ্রেণীকক্ষ।—শিশ্রা প্রত্যেকে নিজ নিজ বসবার জায়গা, ব্যবহার করবার জিনিষপত্র প্রভৃতি পরিষ্কার পরিষ্ক্র রাখতে যাতে সচেষ্ট হয় সে বিষয়ে বিশেষ মনোযোগ দিতে হবে।
- (খ) विषान स्व उ প্রাঙগণ।—সম্পূর্ণ শিশ্বশুণ জনীটিকে কয়েকটি ছোট ছোট দলে ভাগ করে' প্রত্যেক দলের উপরে বিদ্যালয়ের বাড়ী, উঠোন ও চারিধার পরিক্লার পরিছের রাখার ভার দেওয়া ভাল। এতে শ্রমবিম্খতা দ্র হবে এবং শ্রমে শ্রন্থা বাড়বে;—এ দ্ইটি বাংলাদেশে একান্ত প্রয়োজন।

(ঘ) আবর্জনা।—আবর্জনাদি কিভাবে আমাদের কাজে লাগতে পারে তাও শিশুদের জানা উচিত। একটা বড় গর্ত খ্রুড়ে তাতে সমস্ত আবর্জনা ফেললে এবং পরে সেগুলি পুড়িয়ে ফেললে কেমন করে' সেই ছাইটাকে সার হিসাবে ব্যবহার করা যেতে পারে এগুলি হাতে-কলমে করিয়ে শিশুদের শিখিয়ে দিতে হবে।

পাড়াগণায়ে কি করে ''ঘূণ্য ও অস্পৃশ্য'' মলমূত্রকে অতি সহজে মূল্যবান সারে পরিণত করা যায় সে শিক্ষা দেওয়াও প্রয়োজন।

#### খाদा ও পानीय जल

(क) जल।— आभारित ग्रहीरत भर्था जलत প্রয়োজন कि এবং कठ तकम ভাবে आमता मिरे गिरिया सिर्गेर प्र मस्वत्य गिर्मा प्रति जाना प्रति । कि कि जिलाद ग्रहीत्रभ्या प्रति वावर्ष जल दित्र या स्ति । वावर्ष प्रति वावर्ष जिलाद वावर्ष जल दित्र या स्ति । वावर्ष वावर्ष वावर्ष जिलाद वावर्ष वावर्ष जल वावर्ष वावर्य वावर्ष वावर्ष वावर्य वावर्य वावर्ष वावर्ष वावर्य वावर्य वावर्ष वावर्ष वावर्य वावर्य वाव

জল সাধারণতঃ কিভাবে দুষিত হয় তা তাদের জানাতে হবে এবং ছোট শিশ্রা যাতে জল দুষিত না করে এ বিষয়ে বড়দের দুটি রাখতে শেখাতে হবে।

ময়লা পশ্চিল জল এবং পরিষ্কার জলের মধ্যে কি পার্থক্য তা শিক্ষক মহাশ্য নানাবিধ চিত্রের সাহায্যে শিশুদের বোঝাবেন। যদি সম্ভবপর হয় তাহলে একটি অপুবীক্ষণ যক্ত্র জোগাড় করে প্রত্যেক শিশুকে ঐ দুরকম জলের পার্থক্য স্বচক্ষে দেখিয়ে দেবেন। ময়লা জলে একট্ব ফটকিরী বা নির্মালী ফল ঘ্যে ছেড়ে দিলে কেমন করে' সমস্ত ময়লা তলায় চলে' যায় এবং তারপরে, উপরের থিতোনো জলটাকে খুব সাবধানে অপর একটি পাত্রে ঢেলে কিছুক্ষণ ধ্রে ফোটালে রোগ্বীজাণুগুলিকে মেরে ফেলা যায়, এটা সহজেই শিশুদের সামনে হাতে-কল্যে করে' দেখানো যেতে পারে।

शामा ।—शामा नम्यत्थि निन्द्रम्य मत्त मत्त किष्ट्रो थात्रा थाका श्रासाछन। यस छ न्यात्र्यात्र छे प्रायाणी भूष्मिकत, छे। छेका, न्यात्र्या छे न्यात्र्या छे प्रायाणी भूष्मिकत, छे। छेका, न्यात्र्या छे न्यात्र विद्याणनी स्थात् छे प्रयाणनी स्थात् प्रयाणनी स्थात् प्रयाणनी स्थात् छे प्रयाणनी स्थात् हे प्रयाणनी स्थात्र हे प्रयाणनी स्थात् हे प्र

খাবার পূর্বে ও পরে ভাল করে হাত মুখ ধোওয়া প্রয়োজন এবং খাবার জায়গাটি ভাল করে পরিকার রাখা দরকার।

শিশ্বদের ধীরে ও স্কৃতভাবে খাদ্যদ্রব্য ভাল করে' চিবিয়ে খেতে শেখাতে হবে। খাবার সময়ে অতিরিক্ত জল খাওয়া যে অনিষ্টকর তাও তাদের বলে দেওয়া উচিত।

যতদ্র সম্ভব প্রতাহ একই সময়ে খাওয়া উচিত। লোভের বশে অতিরিক্ত খাওয়া অনিষ্টকর; তাড়াহুড়া করে' খেলে সে খাবার ভাল হজম হয় না; এই সকল বিষয়ে শিশুদের শিক্ষা দিতে হবে। বিদ্যালয়ে যদি প্রত্যহ আহারের ব্যবস্থা থাকে তাহলে তো ভালই। না হলে অন্ততঃ মধ্যে মধ্যে কোনও উপলক্ষ্য করে' সমবেত ভোজনের ব্যবস্থা করতে হবে এবং সেই সময়ে হাতে-কলমে খাওয়া সম্বন্ধে সদভ্যাস গঠন করাতে হবে।

মুক্ত বায় ও খেলাধ্লা।—খেলা শিশ্বদের প্রাভাবিক বৃদ্ধির পরিপোষক একথা আমাদের সব সময়ে মনে রাখতে হবে। খোলা হাওয়ায় স্ব্লর, পরিছেল স্থানে ও নিরাপদ গণ্ডীর মধ্যে তাদের নির্মিত খেলার ব্যবস্থা থাকা প্রয়োজন। শ্রেণীকক্ষে অনেকক্ষণ একইভাবে বঙ্গে থাকা তাদের শারীরিক বৃদ্ধির ও মান্সিক স্থৈরে অন্তরায়।

সোজা হয়ে না বসে' কুঁজো হয়ে বা এককাত হয়ে বসা; এক পায়ে দাঁড়ানো; একদিকে অনেক বই বহন করা; খুব ঝাঁকে পড়া বা লেখা প্রভৃতি অভ্যাসগালি যে অনিউকর তাও শিশাদের জানা উচিত। চলা ও বিশ্রামের সান্দর ও সাসমঞ্জস ভংগীগালি ছবির সাহায়ে দেখিয়ে দেওয়া যেতে পারে। বলা বাহাল্য যে শিক্ষক মহাশয়ের নিজের ভঙগী সাড়া প্রয়োপ্রয়োজন।

বিশ্রাম ও নিদ্রা।—প্রথম শ্রেণীর শিশুদের জন্য অন্ততঃ, দুপুর বেলায় বিদ্যালয়ের মধ্যেই কিছু শ্বণ বিশ্রামের ব্যবস্থা থাকা প্রয়োজন।

कर्त्स ७ भित्रयास प्राप्टित रय ऋिं इस, विद्याम ७ निष्ठास ठा वर् वाःर्म भूति इस। व्यामाप्ति प्राप्टित व्यामाप्ति प्राप्टित व्यामाप्ति प्राप्टित व्यामाप्ति प्राप्टित व्यामाप्ति प्राप्टित व्यामाप्ति प्राप्टित व्यामाप्ति व्

রোগ ও চিকিৎসা।—বলা বাহুলা প্রথম দুই শ্রেণীর শিশুদের রোগ বা চিকিৎসা সম্বন্ধে বিশদ জান দেওয়া সম্ভবপর নয়। তথাপি অতি সাধারণ কয়েকটি রোগ এবং তার প্রতিষেধক ব্যবস্থা সম্বন্ধে কিছুটা তাদের বলা যেতে পারে। সংক্রামক রোগ হলে বা গ্রেহ কোন সংক্রামক রোগী থাকলে ছাত্রদের বিদ্যালয়ে আসতে নিষেধ করতে হবে, এবং এই ব্যবস্থা কেন দরকার তা তাদের বুঝিয়ে দিতে হবে।

সাবান ও গরম জল, ফিনাইল, টিংচার আয়োডিন প্রভৃতির উপকারিতা ও ব্যবহার শিশ্বদের সাধারণভাবে শেখানো উচিত। কোথাও সামান্য কিছু ছড়ে' বা কেটে গেলে এই সব জিনিম কিভাবে ব্যবহার করতে হবে তা তাদের হাতে-কলমে শেখা দরকার। জলপটি বা গ্রম সেংক দিয়ে কেমন করে সামান্য সামান্য চোট আরাম করা যেতে পারে তাও তাদের জানা দরকার। প্রত্যহ প্রত্যেক শ্রেণীর একটি-দুটি শিশ্বকে "চিকিৎসক" নির্বাচিত করে এইসব কাজ ও অন্যান্য শিশ্বদের দাত, নখ, চোখ প্রভৃতি দেখার ভার দিলে সুফল পাওয়া যায়। পেন্সিল মুখে দেওয়া, আঙগুল চোষা, দাতে নখ কাটা, নাকে বা কানে কিছু ঢোকান প্রভৃতি অভ্যাস্থিল যে কত অনিক্তর তা শিশ্বদের শেখাতে হবে। বিদ্যালয়ে কিছু আয়োডিন, বেনজীন, তুলো, পরিক্তার নেকড়া, ছুরি, কাচি ইত্যাদি প্রাথমিক চিকিৎসার অতি সাধারণ জিনিমগুলি জোগাড় করে রাখা একান্ত প্রয়োজন।

পরিশিণ্টে শিশ্বদের স্বাস্থ্য-পরিচয়পত্রের একটি নম্না দেওয়া হল। বলা বাহুল্য এ বিষয়ে অভিভাবকদের সঙ্গে সহযোগ রক্ষা করা একাল্ড প্রেয়াজন। প্রথমে কাজটি কিছু কঠিন বলে মনে হতে পারে। কিল্ডু, যেহেতু পিতামাতাও শিশ্বর যথার্থ কল্যাণকামী, শিক্ষক মহাশায় যদি ঠিকভাবে অগ্রসর হতে পারেন, তাহলে শিশ্বর পক্ষে কল্যাণকর যে কোনও কাজে শিশ্বর পিতামাতার সহায়তা নিশ্চয়ই পাবেন।

# স্বাস্থ্য-পরিচয় পত্র 🚿

			6		
শিশুর	नाम	मद्मनी	ठिकाना {	রান্ত। পাড়া	
			1	গ্ৰাম	
	বিষয়	প্রথম পরীক্ষা	দিতীয় পরীকা	তৃতীয় পরীক্ষা	বিশেষ মন্তব্য।
পরিফা	র পরিচছনুতা ব্যক্তিগত ও সামা	াজিক তাং	তাং	• তাং	
51	সাধারণ স্বাস্থ্য	34.04.0			
21	ওজন (সের বা পাউও)	1		ATT BUILD IN	
01	উচ্চতা (ইঞ্চি)				
8 1	কান (কানপাকা, কান থেকে পূ'জ পড়া ইত্যাদি,				
œ I	সদ্দি, কাশি প্রভৃতি	•••			•••
61	খোস, চুলকানি প্রভৃতি		•••	•••	
91	অন্য কোন পীড়া		(****	***	
41	শাধারণ স্বাস্থ্য			•••	
৯।	মানসিক স্থৈৰ্য				•
501	<b>ट्सनाटमना</b>	••• • • • • • •		(energy and	
551	খেলাধুলায় আগ্ৰহ				
<b>5</b> 21	শিক্ষকের অভিমত		•••	•••	
	পুধা	ন শিক্ষক	পুধান শিক্ষক		শুধান শিক্ষক

অভিভাবকের জবাব বা মন্তব্য

# वृठीय जध्याय

# (ক) সামাজিক শিক্ষা

গৃহ পরিবারে অপর পণচটি ভাইবোনের সঙেগ বাস ক'রে শিশুরা সামাজিকভাবে বাস করতে শেখে। পিতামাতা এই বিষয়ে অভিজ এবং তংপর হলে গৃহ পরিবারে সামাজিক শিক্ষা ভালই হয়। কিন্তু অনেক সময়েই দেখা যায় যে অজ্ঞতা, দারিদ্রা এবং সময়াভাববশতঃ পিতা মাতা শিশুর সুশিক্ষা লাভের উপযুক্ত পরিবেশ গড়তে পারেন না।

ছয় বৎসরের শিশ্বদের সাধারণ নীতিবোধ না জাগলেও উপযুক্ত পরিবেশ পেলে তারা ব্যক্তিগত বাস্তব জীবনে ভদ্র এবং সংযত আচরণ করতে শেখে। শিক্ষকের সর্বদা মনে রাখতে হবে যে, এই বয়সের শিশ্বা প্রধানতঃ দ্টোল্ড এবং উদাহরণ দ্বারা শেখে। গ্রে অথবা বিদ্যালয়ে যদি শিশ্বা সর্বদা ক্-দ্টোল্ড দেখে তা হ'লে শিক্ষকের সহস্র সদ্পদেশ ব্যথ হয়ে য়য়।

ज्ञान प्रमास प्रथा यास त्य यिष्ठ निम्द्रापत प्रवीपा प्रकारक्या वलत् वर्ष प्राय् जाहत्त क्रवा ज्ञेत्र प्रथा यास त्य यिष्ठ निम्द्रापत प्रवीपा प्रकारक्या वलत् वर्ष प्रिष्ठामाणा निर्द्धता प्रवीपा प्रकारक्या वत्यन ना ज्ञेष्या प्रकार प्रवीपा प्रकार प्रवीपा प्रकार व्यापत प्रवास प्रवास वर्ष प्रवास वर्ष ज्ञेष्ठ ज्ञात विष्ठ प्रवास वर्ष व्यापत व्यापत प्रवास वर्ष व्यापत व्या

বলা বাহুল্য যে, এই সকল ক্ষেত্রে নীতিশিক্ষা বা সদ্পদেশের বিন্দুমাত্র প্রভাব শিশ্বর জীবনে প্রকাশ পায় না। প্রাথমিক বিদ্যালয়ের শিশ্বকে সামাজিক শিক্ষা দিতে হলে সর্ব-প্রথমে শিক্ষক মহাশয়কে তার নিজের আচার আচরণ সম্বন্ধে সতর্ক হতে হবে। এবং তংপরে শিশ্র গ্রের সঙেগ যোগ স্থাপন ক'রে তাহার পিতামাতার সহযোগিতা লাভ করতে হবে।
শিশ্রা গ্রেহ সকল সময়ে কু-দ্টান্ত দেখতে থাকলে হয়ত শিক্ষক মহাশয়ের সকল চেণ্টা
ব্যর্থ হয়ে যাবে।

(১) উপযুক্ত দ্টান্ত এবং পরিবেশ পেলে বিদ্যালয়ের প্রথম শ্রেণীর শিশ্রাও ক্রমে সকলের সঙ্গে ভদ্র এবং স্ক্রের আচরণ করতে শিখবে।

শিক্ষকমহাশ্য়, পিতামাতা, অতিথি অভ্যাগত এবং অন্যান্য য°ারা বয়সে ও অভিজ্ঞতায় বড় তাদের প্রতি যে শ্রুথা ও সম্মানপূর্ণ ব্যবহার করতে হয়, ত°াদের কথা যে শ্রুনতে হয় এসব শিশ্বদের শেখাতে হবে।

অতিথিসংকারের যে উন্নত আদর্শ ও দ্টোল্ড ভারতের জাতীয় জীবনে প্রচলিত ছিল,
তাকে আবার জাগিয়ে তুলতে হবে।

जामार्गित रिंग जिस्क प्रमास रिंग यास या छें वर्ण ते ज्येरा ज्येन्य प्रिताद्वर मिन्य रिंग जिस्स वर्ण ते येर पित्र रिंग वर्ण ते यथ पित्र प्रमास केंद्र रिंग केंद्र रिंग वर्ण पित्र रिंग वर्ण पित्र यथ पित्र प्रमास केंद्र रिंग वर्ण वर्ण केंद्र रिंग वर्ण केंद्र रिंग वर्ण वर्ण केंद्र रिंग रिंग केंद्र रिंग रेग केंद्र रिंग रेग केंद्र रिंग रेग केंद्र रे

এই সকল বিষয়ে শিক্ষক মহাশয়ের নিজের আচরণের গুরুত্ব খুবই বেশী। তিনি নিজে যদি দেশ ও সমাজের সকলের প্রতি শ্রুপ্থাসম্পন্ন না হতে পারেন, তা হ'লে কখনই ছান্রদের শ্রুপ্থাবান হতে শেখাতে পারবেন না। প্রেই বলা হয়েছে যে নিছক সদুপদেশ ও প্রুক্তারের দ্বারা নীতিশিক্ষা দেওয়া যায় না। বরগু শিক্ষক মহাশয় যদি শিশুদের শ্রুপ্থা ভালবাসা অর্জন করতে পারেন, তা হ'লে তার দুটোল্ড অনুসরণে শিশুদের আচার ব্যবহারের উন্নতি হ'তে পারবে।

(২) সমবয়সী ভাইবোন বা বन्ধুদের সঙ্গে স্ক্রর আচরণ শিশ্বদের শেখাতে হবে। আনেক সময় দেখা যায় যে অন্যে তার প্রতি যে রকম আচরণ করলে শিশ্বা স্ক্র্র বা ক্র্মুধ হয় তারা নিজেরা অপরের প্রতি অন্বর্গ আচরণ করে। যদি আলাপ আলোচনার প্রারা তাদের নিজেদেরকে অপরের স্থানে কল্পনা করে নিতে শেখান যায় তা হ'লে নিজেদের দোষটি উপলব্ধি করবার পঙ্গে স্ববিধা হয়। শিশ্বদের পরস্পরের মধ্যে যাতে বিদেষ বা প্রতিযোগিতার ভাবের পরিবর্তে পরস্পরের প্রতি প্রীতি এবং সদিছা থাকে সে বিষয় সর্বদা সতর্ক থাকতে হবে। নিজের কোনও আচরণের প্রারা শিক্ষক মহাশয় কখনও যেন একটি শিশ্ব বিরুদ্ধে অপর একটি শিশ্বর হিংসা বা দেব্য জাগ্রত না করেন।

উপযুক্ত দৃষ্টান্ত দেখলে এই ব্য়ুসেই শিশুরা নিজেদের হিংসা, দ্বেষ, ক্রোধ ও লোভ অনেকটা সংযত করতে শিখবে। ঝগড়া বিবাদ না ক'রে প্রুস্পরের সহযোগিতায় বন্ধুভাবে কাজ করতে শিখবে।

(৩) প্রেই বলা হয়েছে যে প্রাথমিক বিদ্যালয়ের উচ্চতম শ্রেণীর শিশ্রা শিক্ষকের সাহায্যে নিজেদের সামাজিক বিধি-নিষেধগুলি নিজেরাই গঠন করতে পারে। প্রথম ও

িবতীয় শ্রেণীর শিশ্রা নিজেরা নিয়ম গঠন করতে না পারলেও নিয়মগ্রিলর সার্থকিতা ব্রিয়ে দিলে তারাও ব্রুবতে পারে। এই ব্রিয়ে দেওয়া খুবই প্রয়োজন। না হলে নিয়ম রক্ষায় তাদের সহযোগিতা পাওয়া যাবে না। উদাহরণস্বর্প বলা যেতে পারে—

- (क) ভদ্র ও নম্র আচরণ সকলের পক্ষেই সুবিধাজনক।
- (খ) প্রয়োজনীয় জিনিষপত্র যথাস্থানে গ্রছিয়ে রাখার অভ্যাস খ্বই ভাল। তা হ'লে প্রয়োজনের সময় অযথা বিপন্ন হতে হয় না।
- (গ) পরস্পর সহযোগিতায় কাজ করলে সকলেরই সুবিধা হয় এবং কাজটিও ভাল হয়।
- (घ) जिंक काल ठिंक जमस कराल धरः जमस नणे ना कराल निर्लात् ज प्रितिथा रस, कार्ला भन राज।
- (७) व्यथा हीश्कात क'रत कथा वलल व्यथा व्यवत व्यवत कथात मर्था कथा वलल कारता कथारे रंगाना यास ना।
- (b) সভाর মধ্যে गृङ्थला রক্ষা ना করলে সভার কাজ পণ্ড হয়।
- (ছ) খাবার সময়ে নিয়মান বৃতিতা না রক্ষা করলে খাবার বিঘা জন্মায়। যে যখন আসে সেই হিসাবে সারিবন্ধ হয়ে দ াড়ালে এবং নিজের পালার জন্য থৈয় সহকারে অপেক্ষা করলে সকলেরই স্বিধা হয়। অন্যথায় এমন গণ্ডোগোলের স্থিট হতে পারে যে সকলেরই খাওয়া পণ্ড হ'তে পারে।
- (জ) ধীরে ধীরে নিঃশব্দে এবং ভদ্রভাবে খেতে শেখা উচিত, না হলে নিজের এবং অপরের অসুবিধা হয়।
- (ঝ) নিজেদের ব্যবহারের পাঠ্যপ্রতক, খাতা, অন্যান্য বই ইত্যাদি বন্ধুভাবে সকলের সংখ্যে ভাগাভাগি ক'রে ব্যবহার করলে সকলেরই স্ববিধা হয়।
- (এ) অসত্য বাক্য ও অসাধ আচরণ একাধারে অত্যন্ত গহিত এবং অস্বিধাজনক, কারণ যে এরকম আচরণ করে কেউ তাকে বিশ্বাস করতে পারে না।

বলা বাহুল্য যে এইরকম বিধি-নিষেধের কোনও একটি সম্পূর্ণ তালিকা দেওয়া সম্ভবপর
নয়, এবং অধিকসংখ্যক বিধি-নিষেধ প্রস্তুত করাও উচিত নয়। প্রত্যেকটি নিয়মের
প্রয়োজনীয়তা শিশুদের সঙ্গে আলোচনা ক'রে শিক্ষক মহাশয় তাদের দিয়েই তাদের নিজেদের
নিয়মাবলী গঠন করিয়ে নেবেন।

# (খ) সামাজিক ও পৌর শিক্ষা

ভূমিকা।— ব্নিয়াদী শিহ্নায় শিশ্র ব্যক্তিত্ববিকাশের দিকেই শ্র্দ্ দ্র্টি দেওয়া হয় না। যাতে সে ভবিষ্যাং সমাজের উপযুক্ত নাগরিক হয়ে গড়ে উঠতে পারে সেদিকেও লহ্যা রাখা হয়। বলা বাহ্লা যে কতকগ্লি প°্থিগত উপদেশ দিয়ে শিশ্কে নাগরিক ক'রে তোলা যায় না।

কাজের মাধ্যমে শিক্ষার ব্যবস্থা হওয়ায় বুনিয়াদী বিদ্যালয় শিশ্বদের পক্ষে একটি ছোট-খাট সমাজ হয়ে দণড়ায়। শ্রেণীর শ্ঙখলারক্ষা, আসবাব সংগ্রহ ও তার যত্ন করা, হিসাব রাখা, শ্রেণীর পরিচ্ছনতা রক্ষা, পানীয় ও (সম্ভব হলে) জলযোগের স্বাবস্থা করা, উৎসব অনুষ্ঠান ও পরিচালন, রোগীর শ্র্য্যা, অতিথির স্পরিচর্যা প্রভৃতি কাজ এই সমাজের সম্মুখে স্বাভাবিকভাবে আসে।

শিক্ষক ও শিশ্বসমাজ।—এই শিশ্বসমাজ গণতান্ত্রিক আদর্শে পরিচালন করা হয়।
প্রত্যেক শিশ্ব এই সমাজের সক্রিয় সভ্য। শিক্ষক সমাজপরিচালনে যুক্তি ও উপদেশ প্রদান করেন বটে—শুধ্ব "আদেশ" দিয়েই তিনি তা পরিচালন করেন না। শিশ্বদের গণতান্ত্রিক মতামতেই তা পরিচালিত হয়—তিনি সেই মতামতকে স্বনিয়ন্ত্রিত করেন। প্রত্যেক শিশ্ব এই সমাজ পরিচালনে নিজ মতামত ব্যক্ত করতে পারে। তারাই বিভিন্ন কাজ চালাবার জন্য তা'দের ভেতর হ'তে এক একজনকে নির্বাচিত করে'। ঐ নির্বাচিত শিশ্বকে মন্ত্রী বলা হয় যেমন—শ্রেণী মন্ত্রী, প্রধান মন্ত্রী, সাফাই মন্ত্রী, স্বাচ্হ্য মন্ত্রী ইত্যাদি। এই 'মন্ত্রী' কথা ব্যবহারের তাৎপর্য এই যে এর ন্বারা শিশ্ব তাদের প্রাণ্ড কার্যভারকে যথোচিত মর্যাদা দিতে শেখে এবং যে ভবিষ্যৎ সমাজের জন্য তা'রা প্রস্তুত হ'চ্ছে সেখানে ''মন্ত্রী' ক্ষমতা ও সম্পদভোগী অর্থে ব্যবহৃত না হয়ে ''সেবক'' অর্থেই যাতে ব্যবহৃত হয় তার ভিত্তিও এই শিক্ষার মধ্যে স্থাপিত হ'চ্ছে।

भन्ती' निर्वाष्ठन।—'भिन्त'भण्डली वा निर्वाष्ठिन मर्त्या स्था निर्वाष्ठिन स्था स्था जानम् १ को कृत्य कर्राय मार्रियुवाये छा छा इर्य — जा त्र श्वान्ति मार्रियुवाये छा छा इर्य — जा त्र श्वान्ति मार्रियुवाये छा छा हिन्दि मार्रियुवाये छा छा हिन्दि मार्रियुवाये छा छा हिन्दि मार्रियुवाये छा छा स्था हिन्दि स्था

ভোটদান-পদ্ধতি। ব্য়স ও অভিজ্ঞতা বৃদ্ধির সঙ্গে নির্বাচনে ভোটদান-পদ্ধতির পরিবর্তন করা যায়। প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীর পক্ষে হাত তুলে ভোট দেওয়ার ব্যবস্হাই ভালো। বড়দের জন্য 'ব্যালট'' ব্যবস্হা করা যায়। পঞ্চম শ্রেণীতে ''এককস্পর্বশাল ভোট'' (Single transferable vote) ব্যবস্হা করা যেতে পারে।

প্ররূপ নির্বাচন ব্যাপারে উৎসাহ থাকা বাস্থনীয়, কিন্তু যাতে মিখ্যা ও কুৎসা প্রচার, ধবংসাত্মক স্মালোচনা, বিশ্ভখলা প্রভৃতি না ঘটে সেদিকে শিক্ষক দ্যি রাখবেন।

মন্ত্রীর সংখ্যা ও কাজ।—শ্রেণী ও বিদ্যালয়ের প্রয়োজনে নিম্নমত মন্ত্রিপদ স্ভি করা যায়।

১। শেণী মন্ত্রী।—এর কাজ হ'বে শ্রেণীর শৃঙখলা রক্ষা—শ্রেণীর কাজের জন্য আসবাব প্রভৃতির ব্যবস্থা করা ও তার যত্ন নেওয়া, শিশুদের সাথায়ে শ্রেণীর শৃঙখলা রক্ষার জন্য নিয়ম রচনা করা ও সকলকে সেগুলি মান্য করার প্রতি অবহিত রাখা, উপস্থিতি, অনুপ্রতির হিসাব রাখা ইত্যাদি।

শ্রেণীর শ্রেখলা রক্ষার নিয়মগুলি সহজ হওয়া দরকার—আর নিষেধাত্মক শব্দ অপেক্ষা আনুজাত্মক শব্দ থাকাই ভালো। বেশী বিধি-নিষেধ স্থিট না ক'রে কয়েকটি সহজ আচরণ-যোগ্য নিয়ম মাধ্যমে শ্রুখলা রক্ষার শিক্ষা একটা বড় শিক্ষা। সেদিকে যথোচিত দ্রিটি দিতে হ'বে। কয়েকটি নিয়মের উদাহরণ এখানে দেওয়া গেল—

- (১) "थरक यदव कथा कय़, जना मदव सोन त्रा।"
- (২) 'আগেভাগে নাহি যাবো, পালার জন্য সব্র সব।"

শ্রেণীমন্ত্রী শ্রেণীর শ্রেখলারক্ষা ও আসবাবপত্র গ্রেছিয়ে রাখার ব্যাপারে অন্য শিশুদের সহযোগী মনোভাব স্থাটির দিকেই যাতে সচেট হয়, আইনের কড়াকড়ি না খাটায়, সেদিকে শিক্ষক দ্বিট দেবেন। অবশ্য ক্ষেত্রবিশেষে কোন কোন শিশুর জন্য কঠোরতার প্রয়োজন ঘটতে পারে—তখন শ্রেণীমন্ত্রী সেই শিশ্বর আচরণের প্রতি বিচারসভার দ্বিট আকর্ষণ করবে।

- २। त्राकारे मन्त्री।—व्नियामी मिश्चाय श्रथम शाठेरे त्र्यं रस श्रीतष्काय श्रीतष्क्रतण र'एए—"नत्रे जानिम त्राकारे एत त्र्यं रहाणि राम्याः" श्राण्या प्रिणानस ७ जात जारवण्येनीय ज्ञात्रीत ज्ञात्र कराल, श्रीत्रष्क्रतण त्रम्यत्य वरे श्रथ्य प्रिणेत त्रार्थकण त्रराखरे त्वाचा यात्। व्नियामी विपानसर्क ग्र्यं "त्राक्ष्यं त्राथलारे ज्ञात्र त्राः त्राण्या त्राया व्याप्ता विपानसर्क शाणाण राम्या व्याप्ता व्याप्ता विपानसर्क व्याप्ता व्याप
- ত। শিলপ মন্ত্রী।—এই কাজের জন্য ভারপ্রাপ্ত শিশ্ব বিভিন্ন শিলপ সংক্রান্ত সরঞ্জাম রক্ষা, বিতরণ ও সংগ্রহের দায়িত্ব নেবে। শিলপ সংক্রান্ত হিসাব রাখবে। সরঞ্জামাদির যাতে অপচয় না হয় সে দিকে দ্ভিট দেবে। মাল ফ্রিয়ে গেলে আমদানির ব্যবস্হা করবে। প্রয়োজন ব্রলে, বিভিন্ন শিলপ কর্মের জন্য প্থক মন্ত্রী নির্বাচন করা যেতে পারে।
- 8। উদ্যান মন্দ্রী।—কৃষি জীবনের পক্ষে একান্ত প্রয়োজনীয়—এজন্য জীবনকেন্দ্রিক বুনিয়াদী শিক্ষায় কৃষিকে যথেউ গুরুত্ব প্রদান করা হয়়। বলা বাহুল্য শিশুরা বাগানের কাজ নিজেরাই করবে। কৃষি মন্দ্রী এই কাজ পরিচালনা করবে। সে সময় পত্রিকা (Timetable) রচনায় অংশ গ্রহণ করবে। কৃষিকাজের জন্য দল ভাগ করবে—কাজের পরিকল্পনা করবে—সরঞ্জামাদির ব্যবস্থাপনা করবে ও রক্ষণাবেক্ষণ করবে—সারের ব্যবস্থা করবে—সাফাই মন্দ্রীর সহযোগিতায় আবর্জনা হ'তে সার তৈরী করবে—উৎপন্ম সক্ষীর হিসাব রাখবে ও বিক্রয় বা বিতরণ করবে—বীজ সংরক্ষণের ব্যবস্থা করবে। সে অবশ্যই একা এই সব কাজ করবে না—তার পরিচালনাধীনে অন্য শিশুরাও অংশ নেবে।
- ৫। त्र्वाच्छा मन्त्री।— वृनिसामी विमान्तर स्तार्गत विनिक्ष्मा जर्मिस स्तार्गत প্রতিরোধ-वावच्छात প্রতিই বেশী দৃষ্টি দেওয়া হয়। এজন্য শিশ্বদের স্বাস্থ্যরক্ষার প্রাথমিক নিয়মগ্র্লি মান্য করানো অবশ্য প্রয়োজন। স্বাস্থ্য মন্ত্রী এই কাজ পরিচালনা করবে। কেউ অস্ক্রুছ হয়ে পড়লে তার প্রাথমিক চিকিৎসা ও শুশুষার ব্যবস্থা করাও স্বাস্থ্য মন্ত্রীর কাজ। স্বাস্থ্য মন্ত্রী শিক্ষক ও শ্রেণীর শিশ্বদের সাহায্যে স্বাস্থ্যরক্ষার নিয়মগ্র্লি বিধিবৃদ্ধ করবে ও সেগ্রিল রক্ষা করা হচ্ছে কিনা সে বিষয়ে সজাগ দৃষ্টি রাখবে।
- ७। খान्य मन्त्री।—नाथात्व व निम्नाणी विन्याणार रेम्निन्म वाशात्त्र व्यवस्था नाथ थाकरण थात्त्र, किन्यू मिम् एम्ब नाशित्रक मिम्नात्र क्रमा ७ वानन्म विथात्मत क्रमा मार्च मार्च मार्च मार्म प्राप्तिक राम्मामान्निक राम्मामान्निक राम्मामान्निक व्यवस्था विधान्त्र क्रमा मार्च मार्च क्रमामान्निक राम्मामान्निक व्यवस्था विभागत्त्र मार्च धान्य व्यवस्था विभागत्त्र व्यवस्था विभागत्त्र व्यवस्था विभागत्त्र व्यवस्था विधान, विभागत्त्र मार्चित्र व्यवस्था विधान, व्यविभागत्त्र मार्चित्र मार्चित्र व्यवस्था विधान, व्यविभागत्त्र मार्चित्र मार्च मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्च मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्चित्र मार्च मार

- 9। সময় মন্ত্রী।—বুনিয়াদী বিদ্যালয়ে সময়ানুবর্তিতা রক্ষার উপর পুরুত্ব দেওয়া হয়। এজন্য এই কাজের ভারও একজন মন্ত্রীকে দেওয়া ভালো। সে শ্রেণীকে সময়ানুবর্তী করার চেন্টা করবে। কোনও বিশেষ অনুষ্ঠানের সময় সঙ্কেত প্রদান প্রভৃতি কাজ তাকেই করতে হ'বে। সময়ের অপচয় নিবারণ ব্যাপারেও তাকে সচেন্ট হ'তে হ'বে। যথাসময়ে যাতে শ্রেণীর কাজ স্বুরু হয় এবং শেষ হয় তারও দায়িত্ব নিতে হবে সময় মন্ত্রীকে।
- ৮। উৎসব मन्त्री।—ব नियामी শিক্ষায় উৎসবের এক বিশিষ্ট স্থান আছে। উৎসবকে শিক্ষণীয় করার কাজে পরিকলপনা, প্রয়োগ ও বিচার—এই তিনটি ব্যাপারেই যথেষ্ট যত্ন নিতে হয়। এই সব কাজ একজন মন্ত্রীর দায়িত্বে করার ব্যবস্থা থাকা খুবই ভালো। উৎসব মন্ত্রী উৎসবের যথেষ্ট পূর্ব হতে প্রস্তৃতির ব্যবস্থা করবে, সময়-পত্রিকা রচনার ব্যবস্থা করবে, বিভিন্ন উৎসবাঙ্গের সংযোগ স্থাপন করবে—সেই উদ্যোগী হ'য়ে সাফাই মন্ত্রী, খাদ্য মন্ত্রী, শ্রেণী মন্ত্রী প্রভৃতির সহায়তা নিয়ে উৎসবকে পূর্ণ রূপ দেবে এবং উৎসবে সৌন্দর্য ও চার্কলার সংযোগবিধান করবে।
- ৯। অতিথি মন্ত্রী।—অতিথি অভ্যাগতদের প্রতি শিষ্টাচার প্রদর্শন শিষ্টার বিশিষ্ট অঙগ হবার যোগ্য। একাজের জন্য একজন অতিথি মন্ত্রী নির্বাচন ক'রতে পারা যায়। সে অতিথির যথোচিত সম্বর্ধনার ব্যবস্থা করবে—ত'ার স্ক্রিধা অস্ক্রিধার প্রতি দৃষ্টি দেবে—আবশ্যক হ'লে, ত'ার খাদ্য ও শয়নব্যবস্থা করবে।

এছাড়া সমগ্র বিদ্যালয়ের জন্য একজন প্রধান মন্ত্রী থাকা ভালো। এ°র কাজ হবে বিভিন্ন শ্রেণীর যৌথ ব্যাপারগুলি পরিচালনা ও মীমাংসা করা। বিদ্যালয়ে ছাত্রসংখ্যা বেশী হ'লে, আবাসিক বা আধা-আবাসিক হ'লে, সমগ্র বিদ্যালয়ের বা ছাত্রাবাসের জন্য এইরকম কেন্দ্রীয় মন্ত্রীর সংখ্যা বাড়ানো যায়।

বিচার সভা।—সমগ্র বিদ্যালয়ের জন্য একটা বিচার সভা থাকার প্রয়োজন। এটিও শিশুদের ভোটেই গঠিত হ'বে। এর গঠন ব্যাপারে শিক্ষক মহাশয়ের যথেন্ট কুশলতা প্রদর্শন করা চাই। কোনও শিশুর বিসদৃশ আচরণ নিয়ন্ত্রণ করার জন্য এই বিচার সভার সহায়তা গ্রহণ খুবই প্রয়োজন। এজন্য শিক্ষক মহাশয় দেখবেন বিচার সভার সভাগণ যেন বিশেষ উদ্যোগী হয়।

## (গ) আনন্দ উৎসব

व्निम्नामी निष्माम छे९मवान्षानिक निष्मामानिक छेनाम हिमादि धर्श कता रसि । वानत्माश्मव वर्षामिक रमिन् का वान्यानिक वान्यानिक वर्षामिक वान्यानिक वान्यानिक वान्यानिक वान्यानिक वान्यानिक वान्यानिक वान्यानिक वान्यानिक विद्यानिक विद

िष्मक्षिण यथन विमालिय जानत्माण्मत्वत जार्याक्षन कत्वत्न ज्यन छेम्द्रित कथाण्वि स्त द्रायद्यन। जार्या जार्य मन् द्रायद्यन य जन्नुकानम् ने तक्ष्माय छ जात मम्मान्य मिम्द्र्यत्व मिम्द्र्यत्व क्ष्मा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा ज्ञा क्ष्माय्वन य जन्नुकानम् ने त्रायद्यन य जन्माय्व मिम्द्र्यत्व क्ष्माय्व क्ष्माय क्ष्माय्व क्ष्माय्व क्ष्माय क्ष्मा

অনুষ্ঠানস্কী রচনায় উৎসবের উদ্দেশ্য সর্বদা মনে রাখতে হ'বে। অনুষ্ঠানস্কী প্রস্তুতকালে দেখতে হ'বে যেন—

- (১) অনুষ্ঠান দ্বারা শিশুদের ও গ্রামবাসীর কৃষ্টিগত নৈতিক ও সামাজিক মান উন্নত
- (५) এ यसन मिम्द्रापत कार्ड जानन्ममायक रया।
- (७) वायवार्ला ना रय।
- (8) जन् छानिहत प्याता रयन थत উल्पन्या प्राधिण च्टा शास्त्र।

শिक्षक लक्षा ताथरवन राम छेश्मवर्ण् लिए विकर्धरास्मी ना जारन। रक्नना ठा'र'ल वर्ण् लि म्णू क्ष व्यावशीन व्यास मात पर्यविभिष्ठ र'रव। छेश्मवरक मास्त्वामिष्ठि क्रवर र'लि ठात छन्। मास्त्र प्रविद्या प्रतिकार प्रतिकार मास्त्र प्रविद्या प्रतिकार प्रतिकार

যেতে পারে। কিন্তু সব সময়েই ব্যয়বাহুলা ও বাহ্যাড়ম্বর বর্জন করতে হ'বে। শিলপ ও চিত্র প্রদর্শনী দ্বারা শিশুদের ও গ্রামবাসীদের শিলপ ও চিত্রকুশলতাকে উৎসাহ দেওয়াই মুখ্য উদ্দেশ্য হ'বে।

সঙগীত ও অভিনয়ের উদ্দেশ্যও তেমনি কেবলমাত্র আনন্দ উপভোগ হ'বে না। এতে যাতে শিশুরা ও গ্রামবাসিগণ শিক্ষালাভ ক'রে ও কলাকৌশল অর্জন করতে পারে তা দেখতে হ'বে। এগুলিতে যাতে শিশুরা ও গ্রামবাসিগণ-ই প্রধান অংশ নেয় সেদিকে নজর রেখে আয়োজন করতে হ'বে। যদি সম্ভব হয় তবে বিনা বা স্বল্প বেতনে কুশলী অভিজ্ঞের সাহায্য নেওয়া যেতে পারে। কিন্তু এ আবার দেখতে হ'বে যেন ঐ অভিজের কলাকুশলতাই আমাদের একমাত্র বিবেচ্য হ'য়ে না ওঠে। ঐ ব্যক্তির আচরণ কোনও মন্দ প্রতিক্রিয়ার স্থিট না করে—এটাও দেখা প্রয়োজন। সঙগীত ও অভিনয় নির্বাচনকালে শিশুদের ও গ্রামবাসীদের বোধশক্তির দিকে লক্ষ্য রেখে নির্বাচন করতে হ'বে। চিত্র, সংগীত ও অভিনয়ের মধ্য দিয়ে আনন্দ পরিবেশনের স্থলে এমন কোন কিছু না থাকে যা' নৈতিক ও কৃষ্টিগত উন্নতির পরিপন্থী। শিলপ-প্রদর্শনী সহায়ে বিদ্যালয়ের ও গ্রামের শিলেপাদ্যমকে উৎসাহ দেওয়া হ'বে—শিহ্না-মুলক প্রাচীরপত্র প্রস্তুতি থেকে প্রদর্শনী পর্যত নানাভাবে শিক্ষাপ্রদ হ'বে—ব্যায়াম প্রদর্শনী দ্বাদ্যাচচার উৎসাহ স্থিট করবে এবং সংগ্রহ প্রদর্শনী প্রকৃতিপাঠ—বিজ্ঞান থেকে সুরু করে প্রত্নতত্ত্ব, ভাস্কর্য অবধি শিক্ষার ক্ষেত্রকে বধিতি করবে। এ ক্ষেত্রেও শিশ্র ও গ্রামবাসীর গ্রহণক্ষমতা ও আর্থিক সামর্থ্যকে দ্ভিপথে রাখতে হ'বে। ব্যায়াম নিবীচনকালে শিশুর দৈহিক সামথোর দিকে নজর দেওয়া প্রয়োজন। এ সর্বদাই মনে রাখতে হ'বে যেন কোন ক্ষেত্রেই এই উৎস্বায়োজনের মধ্যে শিশুর প্রতিযোগিতাম্লক মনোভাব না আসে। কোনও শিশ্র উৎসাহের আধিক্য অন্য কোন শিশ্র স্বাভাবিক বিকাশকে ব্যাহত না করে সে-ও দেখা প্রয়োজন। ব্যক্তিগত কৃতকার্যতার জন্য যেন প্রস্কার দেওয়া না হয়।

পরিশেষে—কোনও উৎসবান্তান যেন জাতিগত বা শ্রেণীগত ঘৃণার উদ্রেক না করে সেদিকে শিক্ষক নজর দেবেন। কোনও বিশেষ রাজনৈতিক দলের ভাবধারাপ্ত উৎসবের অন্তান না হওয়া বাছনীয়।

পৌষপার্বণ, শ্রীপণ্ডমী, নবায়, চৈত্রসংক্রান্তি প্রভৃতি বাংলার স্প্রিচিত উৎসব। বিদ্যালয়ে এগুলিকে শিক্ষণীয়ভাবে করা যেতে পারে। পৌষপার্বণে বিভিন্ন শস্যশীর্ষ সংগ্রহপ্রথাকে প্রকৃতিপাঠের সহায়কর্পে ব্যবহার করা যায়। ন্বানের পর্বে শারের ফুল সংগ্রহ ও নবায়ের দিন তাতে অগ্নিসংযোগ বর্ণ্ধমান ও বীরভূম জেলায় সুপ্রচলিত শিশুকৌতুক। একে গণনা শিক্ষার ও সংখ্যামূলক অঙকশিক্ষাদানের উপায় হিসাবে ব্যবহার করা যায়। এর সজ্জা-বিন্যাস সাহায্যে শিশুদের শিল্পীর কুশলতা অর্জনে উদ্বুদ্ধ করা যেতে পারে। विमान द्रा मूर्जि भूजा वर्जन करा छे िछ। किनना थ जना धर्मावलम्बी एमर श्री प्रम्यावरात-বিরোধী। শৈশুরা যদি গৃহে বা 'পাড়ায়' কোনও ম্তি'প্জার ব্যবস্থা করে তবে তা'তে তाप्पत वाक्षा पिक नय। किनना नाना तकरमत नामा किन मिक्स मिन्द्रता धत मक्ष দিয়ে পেতে পারে। শিশ্রা নিজ হাতে মূর্তি তৈরী করতে পারলেই ভাল হয়। শিশুদের আনন্দকে অব্যাহত রেখেও শিক্ষক দেখবেন শিশুরা যেন কেবল আনন্দের জন্যই উৎসব ও এই ম্তিপ্জা না করে, তারা যেন কিছু শিখতে পারে। চৈত্রসংক্রান্তি প্রভৃতি কয়েকটি উৎসবে এমন অনৈক প্রথা আছে যা নিষ্ঠুরতাব্যঞ্জক ও কৃষ্টিবিরোধী। শিশ্রা যাতে এ সকল প্রথান্-শীলনে প্রবৃত্ত না হয় শিক্ষক শিশুদের মধ্যে সেরুপ মনোভাবের সুষ্টি করবেন। এক্ষেত্রে শিক্ষককে বিচন্দ্রণতার সঙ্গে অগ্রসর হ'তে হবে যেন শিশুর বা অভিভাবকগণের মনে বিরোধী প্রতিক্রিয়া না আসে। । প্রেণিক্ত ঋতুউৎসবগর্ণি ছাড়া বৃষ্ধরোপণ বা বর্ষেণৎসব, নব বর্ষেণৎসব, উত্তরায়ণ উৎসব প্রভৃতি করা যেতে পারে। অনুষ্ঠানস্চী এমনভাবে রচনা করতে হ'বে যাতে শিশুরা প্রাকৃতিক ঘটনাবলীর সঙেগ সুপরিচিত হ'তে পারে ও তাদের বৈজ্ঞানিক তথ্যানুশীলন-প্রবৃত্তি জাগ্রত হয়।

"বোশেখ মাসে বৃদ্ধে জলদান", জলসত্র প্রদান প্রভৃতি প্রথাকে সার্থক ও শিক্ষণীয়ভাবে ব্যবহার করা যায়। পৌষ উল্লাস প্রভৃতি প্রচলিত সাম্হিক রন্ধন ও ভোজন উৎসবকেও শিক্ষাপ্রদভাবে করা যেতে পারে। অন্যান্য উৎসবেও রন্ধন ও একত্র ভোজনের আয়োজন করা যায়। আবাসিক নয় এমন বিদ্যালয়ে এর্পভাবেই শিশ্বদের খাদ্যবিজ্ঞান শিক্ষার স্বযোগ দেওয়া সম্ভব হ'তে পারে। এই রন্ধন ও ভোজন ব্যাপারে বিলাসিতা ও খাদ্যসামগ্রীর অপব্যবহার না হয়, শিশ্বরা অমিতভোজন না করে, শিক্ষক সেদিকেও নজর রাখবেন। সাম্প্রদায়িক ও জাতিগত বিভেদ প্রথাও এতে বর্জন করতে হ'বে।

পশ্চিমবঙ্গের বালিকাদের মধ্যে গোকল নামে একটি ব্রতানুষ্ঠান আছে। এই অনুষ্ঠানের ভেতর দিয়ে গ্হপালিত পশ্র প্রতি শিশ্বদের মমত্ববোধ জাগাতে পারা যায় এবং এ সমস্ত পশ্ব সম্বন্ধে তাদেক জানদান করাও সহজ হয়।

রান্দ্রীয় উৎসবান ভানের ভেতর দিয়ে আমরা শিশ দের রান্দ্র ও সমাজের প্রতি কর্তব্য সম্বন্ধে সচেতন করতে পারি। শিশ দের ও গ্রামবাসিগণের রান্দ্রীয় ও সামাজিক শিক্ষার জন্য এগ লির একান্ত প্রয়োজন। পতাকা অভিবাদন, সমবেত স্তোকাটা, সমবেত সাফাই, বৃষ্ধরোপণ প্রভৃতি এই শ্রেণীর উৎসবান ভানে হ'তে পারে।

মহাপুরুষ ও কৃতি ব্যক্তিদের জন্ম ও ম্ত্যুতিথি উদ্যোপন দ্বারা শিশুদের চেতনা ও জ্ঞানার্জন-দ্প্হা জাগ্রত করা যায়। বুদ্ধ, মোহম্মদ, য্নশুখ্ট, রামকৃষ্ণ, বিবেকানন্দ, वीटिए ना, तामरमार्न ताय श्रष्ट्रि भराभूत् यगरणत स्मत्रान प्रांत प्रांत प्रकल धर्मत প্রতি শ্রুধা আনতেও পারা যায়। ঐতিহাসিক ও ভৌগোলিক শিক্ষারত একটি স্বাভাবিক अप्रेडिमिका त्रामा कता मम्डव र'एठ भारत। विভिन्न धर्मभूत्र म्पत्गान छोटन धर्मीय कृषि অন্যায়ী অনুষ্ঠানসভজা ক'রে ও ঐ উপলক্ষ্যে বিভিন্ন ধর্মমতে বিশ্বাসী সদ,ব্যক্তিগণের সভেগ रिया एमत नाकार शतिक्य करित्य धर्मिवस्य निया प्राप्त प्रिकेट के जीत कता याय। शान्धीकी, त्रवीन्प्रनाथ, मूजायान्य, प्रगवन्यू, श्रक्षान्य, श्रकृति ताष्ट्रे ও সমाজদেবক मश्म,-व्यक्तिश्रालं त्रम्यत्वान् कारने मधा पिरस्थ जन्द्र प्रशास्य मिन्द्रिक छान ७ जाम्मिनिका जर्जरने नूरयाश मिर्ट र'रव। এই नव जन् छोरन मश्री नूर्यरमत मिन्द्रवाधा नतल ववर नरिक्षण জীবনী ও তাদের কর্মপরিচয়সম্বলিত চিত্র, আলেখ্য প্রভৃতিকে অনুষ্ঠানের অঙগ হিসাবে वावशां कता यास। छे शाप्तत कीवरनत विस्मय विस्मय घोरेना व्यवस्थित त्रिक कविका, সঙগীত বা অভিনয় অনুষ্ঠানকে অনেকখানি সাফল্যযুক্ত করতে পারে। এই উপলক্ষ্যে অপেক্ষাকৃত বয়স্ক শিশ্রা তাদের রচনা পড়তে ও আব্রিভ করতে পারে। চিত্র ও আলেখ্যও শিশুরাই করবে। অনুকরণশীল শিশুরা এ থেকে অঙকন করবার ও লিখবার আকাঙক্ষা অজনি করবে। শিশুদের বয়স, তাদের অভিজ্ঞতা ও জানের পরিধি-বৃদ্ধির সঙ্গে তাল রেখে অতি পরিচিত মহদ,ব্যক্তিগণের স্মর্ণান্ স্ঠান থেকে স্বর্ ক'রে ক্রমে অপেক্ষাকৃত কম পরিচিত-গণের জন্ম ও মৃত্যুতিথি পালনের ব্যবহৃতা করতে হ'বে। এই সব অনুষ্ঠানে যে সকল श्रमणनी, जांछन्य श्रष्ट्रांण्य जार्याजन कता र'रव रमण्यां रयन धमन रस यारण छेकण्य त्यांनीत শिশ ता এই সব মহাপ त यामत ভৌগোলিক ও ঐতিহাসিক পরিবেশের বৈশিষ্ট্য হ্দরভগ্ম করতে সমর্থ হয়।

উৎসবে যে অভিনয়, আবৃত্তি ইত্যাদি থাকবে সেগুলো এমন হওয়া উচিত যাতে এগুলি কোনও মানবগোষ্ঠীর প্রতি শিশুকে বীতশ্রুধ না করে। কৌতুক-অভিনয় সম্বন্ধে একথা ভালভাবে মনে রাখা উচিত। কেননা সাধারণতঃ কৌতুকস্টির জন্য কোনও অগুলের অধিবাসীর বা কোনও বিশেষ সম্প্রদায়ের আচার-আচরণকে বিকৃত ক'রে দেখান হয়। এতে শিশুন্মনে সংশিল্ট মানব-গোষ্ঠীর প্রতি অশ্রুধা আসতে পারে। তাই এদিকে লক্ষ্য রাখা প্রয়োজন। বিভিন্ন স্থানীয় উৎসব উপলক্ষ্যে যে মেলা হয়ে থাকে শিশুরা যাতে সেখানে স্শৃত্থলভাবে যায় শিক্ষক সেদিকে দেখবেন। শিশুরা এই সমস্ত মেলায় কিছু কিছু জনসেবার কাজও করতে পারে।

এই প্রসঙ্গে কতকগুলি উৎসবের নাম ও তাদের উদ্যোপন দিনের তারিখ দেওয়া হ'ল।
বলা বাহুল্য, যে সকল বিদ্যালয়ে এই সব কয়টি উৎসবই যে অনুষ্ঠিত হবে এমন কোনও বাধ্যবাধকতা নাই। পরিবেশের প্রতি লক্ষ্য রেখে শিক্ষক এগুলির মধ্যে কোন, কোন,টির অনুষ্ঠান
করা চলে তা ঠিক করবেন—

- (५) नववर्ष छेश्तर-- ५ला देवणाथ।
- (২) মোহম্মদ জয়নতী—
- (৩) রবীন্দ্র জয়ন্তী—
- (8) दूष्य शूर्णिया—देवणाथी शूर्णिया।
- (৫) বর্ষামঙ্গল—আষাঢ়ের প্রথম স্পতাহ (ব্রুরেরপণ স্পতাহ)।
- (७) রাখীবन्ধन উৎসব—ভাদ পূর্ণিমা।
- (৭) স্বাধীনতা দিবস—১৫ই আগন্ট।
- (b) জন্মান্টম**ী**—ভাদ্র কৃষ্ণান্টম্ী।
- (৯) গান্ধী জয়ন্তী—হরা অক্টোবর।
- (So) নবার উৎসব—অগ্রহায়ণ মাস।
- (১১) নেতাজী জন্মতিথি—২৩শে জান্যারী।
- (১২) গণতন্ত্র দিবস—২৬শে জানুয়ারী।
- (১৩) মহাআজীর তিরোধান দিবস—৩০শে জান য়ারী (সর্বেদিয় দিবস)।
- (১৪) वित्वक भूगा पिवम माघी कृष्ण मण्जमी।
- (50) वीलक्षी याघी मुक्ता लक्ष्मी।
- (১৬) কদ্তরবা স্মৃতি দিবস—২২শে ফেব্রুয়ারী।
- (১৭) জাতীয় দণ্টাহ—৬ই হইতে ১৩ই এপ্রিল।

এ ছাড়া বিদ্যালয়ের বৌদ্ধিক মান যদি উন্নত হয় তবে নিচের উৎসবগ্র্লি সমগ্র বিদ্যালয়কে নিয়ে বা শ্রেণীগতভাবে পালন করা যেতে পারে। এতে ক'রে শিশ্বমনকে বৃহত্তর আদর্শ ও ঐতিহাসিক পটভূমিকায় নিয়ে যাওয়া যাবে—

- (১) রামমোহন জন্মদিন—১০ই মে।
- (২) সিরাজ জন্মদিন—৩রা জুলাই।
- (७) दिन्तवन्थ ७ जाहार्य ताय न्यूरिं दिन- ५७३ छ न।
- (8) মাইকেল স্মৃতি সিবস—২৯শে জুন।
- (c) তিলক স্মৃতি দিবস—১লা আগন্ট।
- (७) महावीत मिवम— ५५२ थिल।
- (१) तामकृष जयन्ती—५०र माघ।
- (b) किठना असन्ती—कान्भूनी श्रिमा।
- (৯) शुद्भुरशाविन्य अन्यामन— २७८म फिरमन्दत्र।
- (১০) বিদ্যাসাগর স্মৃতি দিবস—১০ই শ্রাবণ।
- (১১) वीजर्तावन्म जन्मिम्न-১৫ই जाग्छ।
- (১২) বঙ্কিম স্মৃতি দিবস—২৬শে চৈত্র।
- (১৩) क्रम् (পরিবর্তনশীল)।
- (১৪) गुड, क्वारेड भूगा मुक्तवात।
- (५৫) मिराजी उरमय— छाप्र में का ठजूथी।

#### অন্যান্য উৎসবের তারিখ—

- (১) প্রাতৃ দ্বিতীয়া (রাখীবন্ধন)—কার্তিকী শত্রু দ্বিতীয়া।
- (২) দীপালি উৎসব—কাতিকী অমাবস্যা।
- (৩) চৈত্র সংক্রান্তি—বংসরের শেষ দিন।

# **म्बूर्य** व्यथाग्र

# সৃজনাত্মক কর্ম

द्विन्यामी श्रार्थामक मिश्चालयुश्विलिक कर्मर्किन्युक करेत शर्फ जूलरा रेटल श्रथम स्थली स्थलके मिन्द्वित्व वर्ष्वित्व विविध्व कांक कर्त्रवार व्यवकां । अन्तर्याश मिर्ठ रुद्धा रिक्त कांक कर्त्रवार व्यवकां । अन्तर्याश मिर्ठ रुद्धा रुप्वेत । कर्मर्किन्युक मिश्चार म्लन्गैिज्युलि अन्यत्व तर्या वर्ष विराय व्यवस्य व्य

विष्टात विकि कथा वर्ष ताथा छाल य म्र्रां म्र्रांच्य कर्म वल्ला ये प्रांच्या व्याप व

किन्जू श्रयान कथा ठाउँ नया। ज्ञानाज्ञक कर्मात मरा जिस्स क्रम निम्दू अर्यातक्ष्णमानिक, कल्लनामानिक छ विकादमानिक विकाम रया; ठाता ज्वायीननाद ववर जन्माना निम्दूर्णत ज्ञाना जिल्लाक प्रकल्प क्रिक्श कर्मात्र अर्थाणिकाय काल कर्माण ग्राप्त विकाश छ जासिक्षान क्रिक्श विकास विकाश विकास विकास

শিক্ষক মহাশয়কে সমরণ রাখতে হবে যে, শিলপকর্ম এবং স্তেনাজ্মক স্বাধীন কর্ম এক
নয়। প্রাথমিক বিদ্যালয়ে শিলপ শেখবার ব্যবস্থা থাকবে। শিলেপর মাধ্যমে অনুবন্ধ
প্রণালীতে অন্যান্য বিষয়ও শিক্ষা দেওয়া যাবে। উপরন্তু, প্রত্যহ শিশ্বদের এমন কিছুক্ষ্ণ
সময় দিতে হবে, যে সময়ে তারা স্বাধীনভাবে কোনও স্কোনাজ্মক কাজ করবে।

প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীর শিশুদের শিল্পকার্যকেও কতকটা স্জনাজুক কর্মের মধ্যে দেখতে হবে। তার মূল্য বিচার করতে হলে দেখতে হবে শিশুর জীবনে সেই শিল্পের দ্বারা কি উদ্দেশ্য কতখানি সাধিত হল। শিশুকাল থেকে সমস্ত কর্মের মূল্য টাকা, আনা, প্রসায় বাজার দর ক্ষে বিচার করলে, শিক্ষকের ও শিশুদের জীবনের দ্বিভঙগী আয়। ছোট শিশুদের স্জনাজুক কর্মের মধ্যে খেলার স্থান অতি উচ্চে। তাদের জীবনে কাজই খেলা এবং খেলাই কাজ। শিশুরা খেলতে ভালবাসে বলেই যে কেবল তাদের খেলতে দিতে হবে তা নয়। খেলার মধ্য দিয়ে তাদের দৈহিক ও মানসিক সকল প্রকার উন্নতি

हत। प्रध्यवन्थ रथलात मथा मिर्स जार्मत प्रामाजिक रिक्ता जार्थिक हता। प्रमाणिक रथलात मथा मिर्स जार्मत कल्पनामिक्त विकाम हता, जार्मत जार्वि ७ जन्जू जित्र ज्ञिनाथन हता। मिर्म प्राप्त ज्ञिना प्रमाणिक प्रभाव क्रिया ज्ञिन प्रमाणिक प्र

প্রাথমিক বিদ্যালয়ের শিশুদের জন্য বহুবিধ স্জনাত্মক খেলার ব্যবস্থা করবার কথায় শিক্ষক মহাশয় যেন মনে না করেন যে, ন্তন ধরণের শিক্ষাপশ্ধতি বহুব্যয়সাধ্য। খেলনার ম্ল্যের উপরে খেলার ম্ল্য নির্ভর করে না। বরও ম্ল্যেবান তৈরী খেলনার চাইতে শিশুদের স্জনীশক্তিকে জাগিয়ে তোলে বহুবিধ খেলনা তৈরীর উপকরণ, যথা বালি, মাটি, আঠা, কাগজ, কাচি, কাঠি, কাঠ, পেরেক, হাতুড়ি, কাপড়, ছুচ, স্তো, রং ও তুলি। খালি শিশি, বোতল, বাক্স, টিন, কোটা, দেশলাই বা সিগারেটের প্যাকেট এবং কার্ডবার্ড পেলে শিশুরা মহা আনন্দে নানা জিনিষ তৈরী ক'রে খেলা করে এবং ক্রমে বয়োব্দিধ ও অভিজ্ঞতা বাড়ার সঙ্গে সঙ্গে তাদের হাতের কাজের মধ্যেও নৈপ্ণাের পরিচয় পাওয়া যায়। সেই সময়ে তাদের উপযুক্ত কোন শিলপকাজ দিলে তারা শিখতে পারে।

প্रেহি বলা হয়েছে যে, অনেক স্জনাত্মক কর্ম শিশ্রা সংঘবদ্ধভাবে করতে পারে। ছয়, न्नाज वंश्नरत्त्रत मिम् जरशक्षा जाठे, नयं, मम् वंश्नरत्त्रत मिम् एम्त मस्या मलवण्यजाद काक क्रवात ক্ষমতা ও উৎসাহ বেশী দেখা যায়। এই সকল project যেন শিক্ষক মহাশয় অনিচ্ছুক भू त्वा भू छना चूक कार्य ଓ project এর कथा वला रल। भिभू त्मत निरक्ततम् छे । वर्षः छेश्म् का जन्मात्तरे जातां कांक कत्रत्। जारमत मारायाकाती वर्षः वन्यः रिमार्व मिक्क মহাশ্য় স্কল স্মঞ্টে উপস্থিত থাকবেন। প্রয়োজন হলে তাদের কার্যকলাপে তিনি সহায়তা করবেন এবং শিশ্বদের কৌত্রলোদ্দীপক বিষয়টির মধ্য দিয়ে তাদের স্বাভাবিক জ্ঞানস্প্হার সাহায্য নিয়ে তাদের নৃত্ন বিষয়ে শিক্ষা দেবেন এবং বিভিন্ন শিল্পশিক্ষার ভিত্তিস্হাপন করবেন। উপযুক্ত একটি project এর মধ্য দিয়ে একাধারে মাতৃভাষা, অঙকশাস্ত্র, लूरिंगाल रेजामि वैर मिक्षा जधनंत रूट भारत वर कार्टित कार्स, भावित कार्स, कार्म उ कार्ड-বোর্ডের কাজ, স্টুটিশিল্প প্রভৃতি শিলেপর গোড়াপত্তন হয়। এই সকল শিক্ষা শিশুদের দ্বাধীন ও দ্বাভাবিক আগ্রহকে কেন্দ্র করে বলে শিক্ষার ভিত্তি দ্চেভাবে দ্বাপিত হয় এবং পাঠ্যবিষয় ও শিল্পুকার্যের প্রতি শিশ্বদের আকর্ষণ ও ঔৎস্ক্র ব্রুদ্ধি পায়। উচ্চতর শ্রেণীতে वर्थे अत्रवर्णी क्षीवरन यथन ठाता वेत्र मस्या रय कान्छ वकि भाराविषय वा इन्जिनिक्नत চর্চা করে, তখন তার শিক্ষা এত দুত অগ্রসর হয় যা অন্যথা সম্ভবপর হত না।

# (ক) চিত্ৰকলা

প্রাতন শিক্ষাব্যবস্থাতে শিক্পশিক্ষা বিশিষ্ট স্থান না পেলেও, আমাদের বর্তমান প্রাথমিক শিক্ষাব্যবস্থায় তা অপরিহার্য বলে গণ্য হয়েছে। পাশ্চাত্যদেশে এর প্রচলন অনেক দিন আগে থেকে আরুদ্ভ হ'য়ে গেছে। সেখানে তার ফল যা পাওয়া গেছে তা ভবিষ্যতের শিক্ষাক্ষেত্রে খুবই আশাপ্রদ। পূর্ববর্তী শিক্ষার ভেতর যে নীরসতা ছিল যা শিশুমনকে কিছুতেই আকৃষ্ট করতে পারত না, শিল্পের মাধ্যমে শিক্ষায় তা' অনেক আকর্ষণীয় ও জীবনত হ'য়ে উঠেছে। এতে যেমনি শিশুর মনের বিকাশ হয়, তেমনি সে মনের ভাব প্রকাশ করার সুযোগ পায়। সুতরাং শিক্ষকের পক্ষে শিশুর প্রকাশভঙ্গীর ভেতর দিয়ে শিশুকে জানবার এ এক বড় সুযোগ, কেননা সেখানে তার মানসিক বিকাশের স্বচেয়ে বেশী পরিচয় পাওয়া যায়।

শিশুর কাছে কর্মনিরপেক্ষ শিক্ষার খুব বেশী মূল্য নেই। সে জ্ঞান সণ্ডয় করে প্রধানতঃ কাজ করার জন্য। শিল্প হচ্ছে এক রকম সূজনাত্মক কাজ। এই সূজনাত্মক কাজের ভেতর দিয়ে সে যেমন তার নিজের মনের ভাব ব্যক্ত করে তেমনি নিজেকে ভবিষ্যতের জন্য প্রস্তুত করে।

শिশ ता प्रवाविष्ठः है जार ७ जार्दिश्यविष् । प्रजानाञ्चक कार्ज, विश्वि क'रत हिंद जीकात राज्य किरान प्रवाद कार्य जारा जार ७ जार्दिश्य जारा एवं । प्रवाद केर्य केर्य जारा जार ७ जार्दिश्य कार्य किरान किरान किरान विध्य स्थर जारा जार्य वे वासा-विध्य स्थर जारा जार्य वे वे वे वासा-विध्य स्थर जाराय जाराय केरा जाराय केराय केरा जाराय केराय केरा जाराय केराय केरा जाराय केराय केरा जाराय केराय केरा जाराय केर

श्रुविर वना श्राहरू य मिम् ता वार्यश्रियण ठारे ठाएमत वाकात ए छाता কেবলমাত্র প্রকৃতির অনুকরণ করে না—তাদের অনুভূতিকে তারা তাদের ছবিতে প্রাধান্য দেয়। যেমন ধরা যাক ''মানুম''। শিশুরা সর্বদাই মানুমের মাথাটা স্বচেয়ে বড় অংকে শ্রীরের जूलनाय। किनना जारमत कारक माथात भूत्यु भवराहरा रवभी। जारमत यूकि जन्मारत मान्य प्रवराहर प्रवकाती काज्जालि । भाषाणी पिरस करत। स्म राज्य पिरस स्पर्थ, मूथ দিয়ে খায়, কথা বলে ও কান দিয়েই ত শোনে। শিশু এখানে মানুষ অণকার সময় নিজকে कल्पना करता । जारे जात वर्ष माथायुक मानुस प्लाय कि यिन वर्तन रय ना ठिक रस्निन, তবে তিনি শিশুর মন বোঝেননি; শিশুকে তুলর নিজের মনের মতন কাজ করার জন্য জোর कরছেন। এটা মূনে রাখতে হবে যে শিশ ছবি অংকবে তার নিজের অভিজ্ঞতা দিয়ে। তার নিজের অভিজ্ঞতাই তাকে ভবিষ্যতে বাস্তবৈর দিকে নিয়ে যাবে।, স্তরাং শিশুকে ছেড়ে দিতে হবে তার নিজের মত কাজ করতে। বিনা স্বাধীনতায় কোন স্জনাত্মক কাজ হ'তে পারে না। তবে কি শিহ্মকের কিছু করবার নেই? তিনি কি কেবল দশকিমাত্র? তা মোটেই নয়। তিনি হ'বেন শিশুর অন্প্রেরণা ও তার সবচেয়ে বড় সহায়ক। ত'াকে কাছে পেয়ে শিশু সাহসে ভর দিয়ে সব ক'রে যাবে। তিনি দেখবেন শিশুর কাজে যেন কোনও জিনিষের অভাব না হয়। তিনি দেখবেন কি কি জিনিষ পেলে শিশ আরও ভাল ক'রে নিজের মনের মত ক'রে স্নিউ করতে পারে, কেমন ক'রে জিনিষ ঠিকমত ব্যবহার করতে হয়, কিসে জিনিষের অপত্য় কম হয় ইত্যাদি। তিনি হয়ত দেখলেন যে উজ্জেবল রঙ পেলে শিশ্ বেশী আনন্দের সঙ্গে কাজ করতে পারে। অথবা দেখলেন বড় ক'রে অণকবার সুযোগ দিলে আরও ভাল ফল পাওয়া যায় ও চোখের পক্ষে তা ক্ম স্কৃতিকর; কিরক্ম পাত্রে রঙ গুলতে গেলে রঙ পড়ে নন্ট হবার সম্ভাবনা কম, তারপর তুলি কিভাবে ধরতে হ'বে, ইত্যাদি।

উৎসাহ পাওয়া শিশ্বদের পক্ষে বিশেষ দরকার। শিলেপর ক্ষেত্রে একথা বিশেষভাবে প্রযোজ্য। তবে সমসত জিনিষটা হ'বে পরোক্ষভাবে। কেননা যদি তারা তাদের কাজ সচেতন অবস্থায় ক'রে, অথবা তাদের কাজ করবার সময় যদি সজাগ করিয়ে দেওয়া হয় তা হ'লে তাদের স্ক্রির মধ্যে তাদের অত্নিহিত আরেগ কখনও প্রকাশ পায় না, খানিকটা কৃত্রিম হ'য়ে যায় জয়বা স্রেনাল্মক প্রেরণা তখনকার মত চলে যায়। যেমন দেখা গেছে শিশ্ব আপন মনে

काल क'रत ठटलटा कि इस् वनन, "वाः! कि म्मूम्त हिव रट्ह"। जिन अमारमा क'रत रस् उर छिरमाहिए करात एको करटन, किन्तू मिमू रार्ष मिला ७ मार्किए र'रस एन जार जात अकारमा विद्या र'न। अमारमा करा जान, किन्तू रम यथन निविक्तिए काल करहा जयन नस, भरत करा जान। वाम्जिक रकवन मिमून रम्रत रम्रत रकन, वजरान रवाराज वक्या थारो। जाजित यथन जजाममा मार्क् जानास जयन यि जाता जविष्ठ रस काल करण यास, जारमत मार्क् जात राम्माहिए करा यास, जारमत मार्क् जात राम्माहिए करा यास, जारमत मार्क् जात राम्माहिए करा विकास यथन वास्ति हैं साम्माहिए करा विकास विकास विद्या मिम्माहिए करा विकास वि

পূর্ব কথায় ফিরে আসা যাক। কিভাবে শিশুকে অনুপ্রাণিত করতে হ'বে তার কোনও সুনিদিটি নিয়ম বে'ধে দেওয়া যায় না। প্রথমেই দেখতে হ'বে সেই পরিবেশ শিশুর হ্বাধীন আত্মপ্রকাশের উপযোগী কিনা। বলা বাহুলা এটি বহুল পরিমাণে নির্ভর করবে শিক্ষকের ব্যক্তিত্বের উপর এবং খানিকটা নির্ভর করবে সাজসক্তা ও জিনিষপত্র, যা দিয়ে তারা কাজ করবে তার উপর। কাজ করার জিনিষপত্র যদি চিত্তাকর্ষক হয়, তা হ'লে তারা অনেক বেশী উৎসাহ দেখায়। বাস্তবিক জিনিষপত্র কাজের উপযোগী যদি না হয় তা হ'লে প্রাণ ঢেলে কাজ করা যায় কি করে? তবে এর কোন মানে নেই যে জিনিষপত্র বহু-মূলা হ'তে হ'বে। কম দামেও উৎকৃষ্ট জিনিষ হ'তে পারে শিক্ষক যদি নিজে কন্ট ক'রে তৈরী করে দেন। যেমন তুলির কথা ধরা যাক। শন্ত, পাট অথবা ছাগলের বা যে কোনও জন্তুর লোম অথবা খেজুরগাছের ডাল দিয়েই বেশ ভাল তুলি হ'তে পারে। সবিশেষ কৌশল প্রণালী পরে উপাদান সম্বন্ধে বলবার সময়ে ব্যাখ্যা হ'বে। গহুড়ো সস্তা রঙ কিনে নিয়ে রঙ তৈরী করা যেতে পারে। শিশুদের কলপনাশক্তি যাতে আরও বৃদ্ধি পায় তার জন্য ভাল জিনিষ দেখা, ভাল ভাল গলপ ও রূপকথা ও বর্ণনা খুবই দরকারী।

শ্রেণীকক্ষের দেওয়ালের ছবি যতদ্র সম্ভব তাদেরই অণকা হওয়া উচিত। তাতে তাদের উৎসাহ বাড়বে আর তারা বুঝবে যে তাদের কাজের একটা সামাজিক মূল্য আছে।

শিলপ বা চিত্রকলা সম্বন্ধে সাধারণভাবে জানবার বিষয়গুলি বিবৃত করা হ'ল; এখন শিশুর বিভিন্ন বয়সের পর্যায়ে কি ক'রে শিলপ বা চিত্রকলা শিশুর আগ্রহ ও ঔৎসুক্যকে কেন্দ্র ক'রে শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী শিক্ষাদানে অগ্রসর হ'বেন তার মোটামুটি খসড়া নিম্নেদেওয়া হল। যে শিক্ষাপ্রণালী নিচে বিবৃত করা হ'বে তাকে একান্ত ব'লে ধ'রে নিলে শিক্ষক ভুল করবেন। মনে রাখতে হ'বে যে শিশুর আগ্রহই মুখ্য। তার আগ্রহকে কেন্দ্র ক'রেই শিক্ষককে ত'ার শিক্ষার ধারা নিধারণ করতে হ'বে।

#### (b-b) वंश्प्रतित भिग्युषित वंशिकात देविभक्ति

এই বয়সের অনেক আগেই যদিও হিজিবিজি অংকার সময় বিগত হয়েছে তবুও তারা
এই বয়সেও বাদতবধর্মণী ছবি অংকার বিষয়ে কিছুমার উল্লেখযোগ্যভাবে এগোয়নি। তখনও
তাদের মন এবং প্রকাশভঙগী সম্পূর্ণ দ্ব-কেদ্রিক। সাধারণতঃ ৪ থেকে ৫ বংসরের
শিশ্বদের অংকা ছবির বিষয়বদতু আমরা চিনতে পারি। উদাহরণদ্বর্প ধরে নেওয়া হংছে
একটি মানুষ। শিশ্ব একটি গোল রেখা এংকে মানুষের মাথা ব্রিয়েছে। দুটো বিন্দু
দিয়ে চোখ ব্রিয়েছে। আঙগুলগুলি করেছে কয়েকটি সরল রেখার সম্ভি। মানুষের
দেহে নেই বললেই হয়। একটি সরলরেখা মাত্র। এই যে প্রকাশভঙগীর ধারা তাকে

"Schema" বলা হয়। এই "Schema" দিয়েই সে মানুষ অগকার প্রথম অভিজ্ঞতা লাভ ক'রে। স্তরাং যখন একটি শিশু বারে বারে একরকম অঙকণ করে তখন জানতে হবে যে তার নিজের অভিজ্ঞতায় নিজেস্ব প্রকাশভঙগীর উপর তার আস্হা এসেছে। আবার যখন সে তা পরিবর্তন ক'রে অন্য নৃতন রকম "Schema" আয়ন্ত করে তখন ব্রুতে হ'বে যে সে আর পুরাতন "Schema" দিয়ে সন্তুউ হ'তে পারছে না; কারণ তার নৃতন অভিজ্ঞতার দরুণ নৃতন প্রকাশভঙগীর ও নৃতন "Schema" র প্রয়োজন উপলব্ধি করছে। তার অভিজ্ঞতা যেমন পরিবর্তনশীল তেমনি সঙ্গে সঙ্গে তার "Schema" ও পরিবর্তনশীল; তবে অঙকনে বিষয়বস্তু তাদের পক্ষে অপেক্ষাকৃত কম পরিবর্তনশীল, ও বংসর থেকে আরম্ভ করে যে কোন বয়স পর্যন্ত ছবি অগকার বিষয় বস্তু খুব বেশী বদলাবে না। সেই মানুষ বা গাছ অথবা বাড়ী যা তাদের পরিবর্তন পরিবর্তিত হ'বে। কেননা প্রেই বলেছি শিশুরা অগকে যা দেখছে তা নয়, যা সে অভিজ্ঞতা দিয়ে লাভ করেছে তাই।

অভিজ্ঞতা লাভ যে সব সময়ে বহির্জাগৎ থেকেই হয় তা নয়। নিজের দৈহিক (Kinaesthetic, haptic or somatic) অভিজ্ঞতাও হ'তে পারে। এই কারণেই দেখা যায় ৪ খেকে ৬।৭ বংসর পর্যানত শিশ্ব ছান্দিক রেখার প্রতি ঔৎস্কার ও আগ্রহ থাকে। এই সময় ছন্দ্র-রেখার (Rhythmic pattern) সাহায্যে খুব তাড়াতাড়ি অক্ষর লেখা শেখান যায়। যেমন ধরা যাক "ব" "ত" অথবা "ড" ইত্যাদি কয়েকটা বিশেষ অক্ষর ও তাদের আকৃতি যা সামান্য অদল-বদল ক'রে অন্য অক্ষর তৈরী করা যেতে পারে। এই অক্ষরগ্রিল শিশ্বরা সমস্ত কাগজটিতে অগকবে। একই অক্ষর বারে বারে এক যাবে। তারপর দুই অক্ষরের মাঝের স্থানগ্রিল রঙ দিয়ে ভরে দিতে হ'বে। বলা বাহুলা এরকম "প্যাটার্ণ" অগকতে অন্য কিছুর সাহায্য না নিয়ে খালি হাতেই অগকতে হ'বে।

এখানে একটি বিশেষ কথা মনে রাখতে হ'বেঃ এইর্প ''প্যাটার্ণ'' অাকার উদ্দেশ্যের মধ্যে আকৃতির সৌন্দর্য বৃদ্ধিই হ'বে মুখ্য আর অক্ষর হ'বে সেখানে গৌণ। কিন্তু গৌণ হ'লেও অক্ষরের ছবির মধ্য দিয়ে এমন একটা ছাপ রেখে যাবে যে শিশ্ব অক্ষর হিসাবেও তাকে সম্পূর্ণ আয়ত্ত করে নেবে।

त्र प्रम्यत्य न्जन करत वलवात किছ्र र तिर। शिश्ता यथन जूलि पिरम किश्वा "स्ममन" দিয়ে রঙ লাগায় তখন তারা নিজেদের কল্পনাতে যে রঙ পছন্দ করে সেই রঙ ব্যবহার ক'রে। यमिও এ রঙের সঙেগ বাস্তবের কোনও মিল থাকে না। উজ্জবল রঙ তারা পছন্দ করে। এ বয়সে তারা রঙ মেশানোর "কৌশল" ভাল করে জানে না ও অমিত্রিত রঙই বেশী পছন্দ करत। कार्य णिमिश्चि तर्छत छेड्छ्वणा जारमत कार्छ जरनक रवगी नसन्भू न्थकत्। সাধারণত শিশ্রা লাল রঙ পছন্দ করে ও বেশী ব্যবহার করতে চায়। অনেক শিক্ষাবিদ্ मत्न करत्न रय तर्छत পছल्पत एण्डत पिरम कात कि श्रकृष्ठि ठा जाना यास। किन्छू धत्रकम প্রকৃতি নিধারণ বিজ্ঞানের পর্যায়ে ফেলা যায় না। কেননা বিভিন্ন রঙ পাশাপাশি সংস্হাপন कत्रता मिम्-मत्न त् प्रम्यतम् धात्रणात्वात्थत्रे भित्रहरः भाउरा यारा। উদारत्भवत्भ वला मिल। रज्दापत मर<sup>®</sup>श रस्छ नान दिन पिथारक, किन्तू नीरनत मर्छश नान मानास ना। স্তরাং এসব রঙকে বিচার করতে গেলে তার পাশ্বস্থ রঙটিকে দেখতে হ'বে যে তার সঙ্গে 🤟 मानाच्छ किना। मिनाइ এत् १ त् प्रशांत मधा थारक मिना नमान त्रुताय मन्दर्भ भित्रम् भाउया साय। मिम्द्रमेत्र इतिराज जारमत जावन्दारनत धात्रा नम्बर्न्थ किছ जारलाहना कत्ररवा না ; কেননা এটা অত্যত ন্ত্রিস হ'বে। তবে এট কু জানলেই হ'বে যে তাদের কাছে ছবিতে দ্র ও নিকট ব'লে কিছু নেই। যেটা তাদের কাছে আকর্ষণীয় হয় সেটাকেই তারা বড় ক'রে অ'াকে ও প্রাধান্য দেয়। ধরা যাক একটি ছবিতে দ্রে একটি গাছে ফুল ফুটছে অথবা मृद्र किं जाकर्स नीय जिल्ला जारह। व्यक्तम हिंत यपि निम् जारक ठर्त रह क्लिंगिरक अर्थिकाकृष्ठ वष् करत जाकरव ७ जात हिवरिष्ठ क् निर्क शाक्षाना प्रति।

#### শিক্ষা-প্রণালী

৬বংসরের শিশুদের শিহ্মা-প্রণালী কি হ'বে তা পরের ভূমিকা হ'তে ज्ञानको जन्मान के'त्व त्निष्या याय्र। श्रवि वला श्राह रेय म्रुक्ताञ्चक कार्याद्व জন্য পরিবেশই মুখ্য। শিশুকে এ অবস্থায় বেশী কিছু বলতে হয় না। আপনা আপনি সে কাজ ক'রে যায়। অণকার সরঞ্জামগুলি সর্বদাই তার হাতের কাছে থাকা চাই। সরঞ্জামগুলিকে সর্বদাই এমন পরিক্লার পরিচ্ছন্নভাবে রেখে দিতে হ'বে যে শিশু তা দেখলেই কাজ করতে ইচ্ছুক হ'বে। বর্ণনার উপর নির্ভর করে শিশুর আ°কার ইচ্ছা श्य ना। भूजताः वर्णना क'रत जाप्नत कन्ननामिक्कि वाजान स्वराज नारतः किन्तु जा एथरक খুব दिना कल जाना कता यादि ना। निन् मादि मादि शरू निम्हरकत नाशया চাইতে পারে; কিন্তু শিশুকে নিজের ধারণা অনুযায়ী অংকতে দিতে হ'বে। অনেক শিশু ছবি আ°क्, তে তার নিজের মতকে আমল দিতে চায় না ও নিজে চিন্তা করতে চায় না এবং সহজপন্থা হিসাবে শিক্ষকের কাছ থেকে ইঙ্গিত নিয়ে কোনরকমে কাজটা সমাধা করতে চায়। শিক্ষকের সেই দিকে বিশেষ নজর রাখতে হ'বে। অনেক সময় দেখা যায় যে শিশু শিক্ষককে জিজেস করে. ''মান্টার মশাই: বাড়ী কেমন দেখতে হয়''? অথবা 'বাড়ীর ছবি কিভাবে আ°কে"? তখন শিক্ষকের উচিত তাকে বলা, "তুমি কি রকম বাড়ী দেখেছ" অথবা "ওই বাড়ীটা দেখ কি রঙের ও কি রকম দেখতে"। চেন্টা করতে হবে যে সে যেন নিজের অভিজ্ঞতা থেকে আ°কে, নিজের অভিজ্ঞতাকে কাজে লাগায়। শিক্ষক তার হাবভাবের মধ্য मिर्स द्विरस एएटन—"এইত আমি রুয়েছি তোমাদের সাহায্য করার জন্য। কিন্তু **তার** वार्ण रांगता वक्वात निर्फ किया क'रत प्रथ"—यारा प्रथ किया कतल भारत।

৭ বংসরের শিশ্ররা যদি কখনও গল্প থেকে আ°কতে চায় তাহ'লে সে বিষয়ে শিক্ষক তাকে যথেণ্ট উৎসাহিত করবেন। যে অবস্হায় সাহায্য করলে শিশ্র আরও এগিয়ে যেতে পারবে সেই অবস্হায় শিক্ষক শিশ্বকে অতি অবশ্য ইঙিগত দিয়ে সাহায্য করবেন।

#### সরঞ্জাম

ছেলেমেয়েদের ছবি অণকার জন্য কি সরঞ্জাম উপযুক্ত তা ভাল ক'রে চ্হির করতে হ'বে। সরঞ্জাম এমন হ'বে যে তা নিয়ে কাজ করা সুবিধাজনক হয় এবং কাজের ফলটা ভাল হয়। সাধারণতঃ দেখা যায় যে বড় তুলি দিয়ে শিশুরা কাজ ভালভাবে করতে পারে ও তাতে ফলও তাড়াতাড়ি পাওয়া যায়। এরজন্য বড় কাগজ যা স্বচেয়ে স্ত্তা (সাধারণতঃ স্বচেয়ে স্ত্তা কাগজ হচ্ছে News-print) অথবা খাকি Packing এর কাগজ উপযোগী। পুরাতন খবরের কাগজও উপযুক্ত, তবে তার উপর অণকতে গেলে এমন রঙ ব্যবহার করতে হ'বে যাতে ছাপার অক্ষরগুলি ঢাকা পড়ে যায়; যেমন মাটির রঙ; গৈরিক মাটি, এলা মাটি ইত্যাদি। রঙিন খড়িও বেশ ভাল। সিমেণ্টের মেঝেতে খড়ি দিয়ে অথবা শেলট অথবা ব্ল্যাকবোর্ডে খড়ি দিয়ে আ°কা বেশ ভাল। কাগজে আ°কার জন্য পেন্সিল অথবা ক্রেয়ন অথবা Pastel ব্যবহার করা যেতে পারে, তবে প্রথমেও তুলি ও রঙ দিয়ে আ°কা যায়। তার ফলও সময়ে সময়ে বেশ ভাল পাওয়া যায়।

भागित तु वावशात्त्र उपराशी कतात्र छित्र तौि वाहि। श्रथ्य तु जू वित्त छत्त छित्र तौि वाहि। श्रथ्य तु जू वित्त छत्त छित्र तौि वित्त तौि छत्म त्राह्य । छित्र त्राह्म श्राह्म श्राह्म श्राह्म । छ्यन छल क्ला क्ला कित्र ज्ञान प्राह्म प्राह्म नित्त हैं वित्त वाहित कित्र वित्त वित्त

- ১। গৈরিক মাটি (গিরিমাটি, মেটে লাল)।
- ২। এला माणि (क्जाकारम रल,प्प)।
- 0। शिष्ठिं याणि (डेंब्ज्व्ल रल,(म)।

- 8। ভূষা कालि (काल)।
- ৫। त्रक्षा (त्रामा)।
- ७। রবিন ह्रुवार्ड (नील त् या कान् द्रायात जना वावर्ण रया)।
- १। जिन्मू त (उड्डावन नान)।

আজকাল সহরে রঙের দোকানে এই সকল রঙ Packet এ পাওয়া যায়। নিন্দে কোন কোনটির ইংরাজী নাম দেওয়া হ'লঃ—

- (5) Lemon chrome;
- (२) Emerald green;
- (3) Lamp black;
- (8) Zinc white;
- (c) Ultra marine;
- (b) Vermillion;

এই প্যাকেটের রঙগুলির ঔজ্জবল্য অন্যান্য রঙের চেয়ে বেশী। সবচেয়ে ভাল হয় যেখানে কোন কুমোর বা পট্রয় থাকে; তারা কি ক'রে রঙ প্রস্তুত করে তা তাদের কাছ থেকে জেনে নিয়ে সস্তায় রঙ তৈরী করতে পারা যায়।

द्र प्रश्मित्त वरे वस्ति एलाम्परास्त हिविष्ठ भूव धर्माक्षन रस् ना। व्यवस्य प्रमार् विरम्पर्य जाता तक्ष प्रश्मित्यान वाध्य प्रमार्ज भारत। किन्जू प्रमार्भ प्रमारामात कोज्यात्र क्रमार्थ क्रमार्थ प्रमार्थ क्रमार्थ क्रमार्थ क्रमार्थ व्यवस्य क्रमार्थ क्रमार्थ व्यवस्य क्रमार्थ क्रमार्य क्रमार्थ क्रमार्थ क्रमार्थ क्रमार्थ क्रमार्थ क

#### र्जू वि

शानिक हो। ता वकि व राम्य कारित मा का तम काल क'रत रव स्थ निरं हा ता निरं हो निरं हो निरं ही निरं ही निरं ही निरं ক । চি দিয়ে ডগাটি ছে টে নিলে বেশ ভাল তুলি হ'বে যে রক্মভাবে ঘর চুনকাম করবার সময়ে চুন লাগানোর জন্য তুলি তৈরী করা হয়। সেইরকম একটি তুলি শিশুদের দেখালে তারা সুন্দরভাবে তুলি তৈরী ক'রে নেবে। খেজুরের ডাল কেটে একটু চে চৈ নিয়ে তার ডগাটা একট ছে চি নিলে তুলির মত হ'য়ে যায়। সহরের দোকানে ভাল তুলি পাওয়া যায়। ঐগুলি ছেলেমেয়েদের ছবি আ°কবার জন্য বিশেষভাবে তৈরী। তার নাম Hog-hair brush; বলা বাহুল্য যে শিশুদের ব্যবহারের জন্য এই তুলি খুব উৎকৃষ্ট। এর ডগাগুলি বেশ মোটা ব'লে এইগুলি শিশুদের বিশেষ উপযোগী। প্রথমতঃ স্কা তুলিগুলি এই বয়সের শিশুদের চোখের পক্ষে ক্ষতিকর। দ্বিতীয়তঃ স্কা তুলিতে दिना बें उट्ठें ना उ साठा मान पंउया याय ना। मिन्यू ता दिनी क' तत तह वावशात कत्र চায় ও মোটা ক'রে দাপ দিতে চায়। ব্যবহারের পর, তুলিগুলি সঙেগ সঙেগই ধুয়ে स्क्लाट र'त्व, ना र'त्व नके र'रा यात्व। तिक्षन थिए, त्क्यून वा Pastel नम्बतन्थ उत्स्थ করবার বিশেষ কিছুই নাই, কারণ এগুলির ব্যবহার সোজা। পেন্সিলের চেয়ে ক্রেয়ন **ा**ल, कात्रन थ्र मार्ग थून घन ७ উम्बान । थ हाड़ा शाह शाहड़ा थ्यक तड शाउऱा यात পারে এবং এই জাতীয় রঙ সংগ্রহ করা শিশুদের কাছে খুবই আনন্দজনক। শিক্ষককে भंू क वात कतरण श्रव भतिरवासत भरका कि के भाउसा यास किना। भिक्क प्रभावन कि ত র পক্ষে পাওয়া সম্ভব, ও কি নয়। তবে তিনি যাই সংগ্রহ কর্ন না কেন তাই দিয়েই শিশু যেন আ°কে, কারণ যে ভাবেই হোক, শিশুকে তার প্রকাশ করবার সুযোগ দিতেই रदा े जा ना र'त्न जात जान श्रकारमत अथ तुम्स राम्न यादन धनः जात कित्यार জীবনে প্রতিফলিত হবে।

# शक्षप्त जभ्याय

# শিল্পকাজ

## (ক) ভূমিকা

न्जन প्राथमिक निकार्यकार प्रज्ञा रहार प्रज्ञा किंच् किं किं कें कें ति निक्निकाल क्रिक्ष क्रि

गिगात क्रमव्रिध

প্রথমতঃ শিশ্ব থাকে আজুকেন্দ্রিক, নিজ্ব প্রয়োজন ছাড়া বহিঃ-প্থিবীর কোন অথই তার কাছে থাকে না। নিজের খাওয়া, শোওয়া, নিজের খেলনা, নিজের মা-বাবা-ভাই প্রভৃতি নিতান্ত প্রয়োজনীয় এবং নিকটন্থ বন্তু ছাড়া সে আর কিছুই চেনে না, জানে না। ক্রমশঃ দৈছিক ব্লিধ্র সঙ্গে সঙ্গে সে নিজেকে এবং অতি কাছের পরিবেশকে চিনতে শেখে। কিন্তু এই চেনার ম্লেও যদি তার নিজ্ব প্রয়োজনের কোন তাগিদ না থাকে, তবে সে চেনার কোন মূল্য তার কাছে নেই। সেইজন্য রঙীন খেলনাটি, রবারের বলটি তার কাছে যত মূল্যবান বড়দের বাঙ্গা পেউরা, বাসন-কোসন, ঝুড়ি বাণি তার কাছে তত মূল্যবান নয়। শিশ্ব তাই তার ঈণ্সিত প্রবাটিকে পণ্ড ইন্দ্রিয়ের দ্বারা অনুভব করার চেণ্টা করে। খুব ছোট শিশ্ব হাতে যে কোন জিনিষ দিলেই সে তা মুখে প্রবার জন্য আগ্রহশীল হয়ে উঠে। পরে হয়তো তার ন্বাদে কিংবা কাঠিন্যে মধ্র কিছু না পেয়ে ফেলে দেয়। যে কোন নৃতন বন্তু দেখলেই তার সম্বন্ধে জানবার প্রবৃত্তি শিশ্বর

निगात म्रिडिडशी

निठाश्र (साजनीय वर्ष्णू प्रम्वत्थ खान, निर्द्धत च्राध्य छात्र रेष्ट्राय नियन्त (स्यम्त प्रतिष्ठ था) वर्ष निक्षण्य प्रतिदिश्य छाना—वर्षे यथा ७ १७ वर्षात् शिर्म् प्रति प्रति छाना—वर्षे यथा ७ १७ वर्षात् शिर्म् प्रति वर्षे थार्क। प्रति वर्षे प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति वर्षे थार्क। प्रति वर्षे प्रति प्रति वर्षे प्रति वर्षे वर्षे प्रति वर्षे वर्षे

দৈহিক ও মানসিক ব্ৰিথ সময়সাপেক

শিশ্র শারীরিক বৃদ্ধি যেমন সময়সাপেক তার মানসিক বৃদ্ধিও তেমনি সময়সাপেক। ছোট শিশ্র যেমন অনিবার্থ কারণে বড়দের মত ছুটতে পারে না, তেমনি বড়দের দেওয়া অর্থও মানসিক অপরিপ্রভার জন্য তার কাছে নিতান্ত অর্থহীন। 'ক'চের জাসটি নিও না',

'ভाইকে মেরো না', 'ওখানে যেও না',—ইত্যাদি বিধি-নিষেধের গণ্ডীর ভেতরে শিশ্ব থাকতে চায় না। তার কোত্তল তাকে সেই গণ্ডীর বাইরে যেতে প্রেরণা যোগায়। আমরা দেখে শ্নে বিরক্ত হই। কিন্তু সহান্ভূতির দ্ভিতে দেখলেই আমরা ব্রুতে পারি, যে বিধি-নিষেধের বেড়াজালের ভেতরে আমরা শিশ্বকে বে'ধে রাখতে চাই, তা তারই মঙগলের জন্য হলেও সে তার তাৎপর্য ব্রুতে পারে না। সে স্বাধীনভাবে নিজস্ব প্রয়োজনের তাগিদে সব কিছু যাচাই করে নিতে চায়; অন্যের আরোপিত ম্ল্য, অন্যের মাপকাঠির মাপ তার মনঃপ্ত হয় না; তাই সে অবিরাম প্রশ্ন ক'রে যায়,—'কেন?', 'কেন এ করব?', 'কেন তুমি আমাকে মারলে?', 'কেন পাখীরা ওড়ে?' 'কেন জলে মাছ থাকে?' 'কেন আগ্বনে হাত দিলে হাত পোড়ে?' ইত্যাদি। সে এই 'কেন'-র মোখিক উত্তর শ্বনে সন্তুষ্ট হতে চায় না, সে চায় প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা। তাই সে জ্লাস ভাঙেগ, বই ছে'ড়ে, ফ্ল তোলে, আবোল-তাবোল বকে, কাল্পনিক খেলায় মেতে ওঠে। মোটকথা সে খেলার ছলে অভিজ্ঞতা সঞ্চয় করে, বস্তুকে প্রথমে ইন্দ্রিয় দিয়ে এবং পরে মন দিয়ে গ্রহণের চেন্টা করে।

#### কর্মের মধ্য দিয়ে অভিজ্ঞতার বিস্তার

শিশ্র শিক্ষাব্যবস্থায় তাই তার অভিজ্ঞতার প্রসারের চেন্টা করা সর্বতোভাবে কর্তব্য।
যা কিছু মানসিক সন্ধয় তা শিশ্র পক্ষে বস্তু-নিরপেক্ষ হতে পারে না। জ্ঞানকে বাস্তবের
ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত ক'রে গ'ড়ে তোলাই বিজ্ঞানসম্মত এবং শিশ্র মনোবিকাশের
প্রয়োজনসম্মত।

# কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষা বনাম প্র্থিগত শিক্ষা

তাই শিলপকাজের ভেতর দিয়ে শিক্ষা পুস্তককেন্দ্রিক শিক্ষা অপেক্ষা সুফলপ্রস্ট হওয়ার সম্ভাবনা বেশী। সকল প্রকার শিক্ষার মূলেই শিক্ষণীয় বিষয়ের প্রতি আগ্রহ বড় কথা। কাজের মধ্যে শিশুর আগ্রহ স্বাভাবিক, স্তরাং কর্মকেন্দ্রিক শিক্ষাব্যবস্থা প<sup>ত</sup>্থিগত শিক্ষাব্যবস্থা (যাতে শিশুর প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতালম্প জানের কথা কমই থাকে) হতে উন্নততর হবে ব'লে আশা করা যায়।

উপরের আলোচনা হতে প্রতিপন্ন হয় যে, শিশুর দৈহিক বৃদ্ধির জন্য যেমন অপেক্ষা করতে হবে, তার মানসিক বিকাশের জন্যও তেমনি ধীরভাবে অপেক্ষা করা ছাড়া গত্যন্তর নেই এবং উভয়ই সময়সাপেক্ষ। স্তুতরাং শিশুর উপযোগী দৈহিক খাদ্যও যেমন স্পরিক্তিপত হওয়া উচিত, তার মানসিক পরিপ্র্ভির জন্যও তেমনি স্পরিক্তিপত তথ্যাদির সমাবেশ প্রয়োজন। এই পরিক্তপনায় কাজের স্থান অতি উচ্চে হলেও কাজও স্ব্যবস্থিত হওয়া উচিত। যে কাজ শিশুর দৈহিক বৃদ্ধির সঙ্গে তাল রেখে চলতে পারবে না, সেকাজ শিশুকে করতে দিলে তার দৈহিক সামথ্যে কুলোবে না; (যেমন, চার বছরের শিশুকে ছাটি ছাইচে স্তো পরাতে দিলে সে তা পারবে না, তার কারণ ঐ বয়সের শিশুরে দ্রিক্তির ততদ্বর পরিপ্রভি হয় নি) তাকে রগাদা চালাতে দিলে, কাটারি দিয়ে কাটতে দিলে, সাধারণ বাটালি ব্যবহার করতে দিলে, সে শারীরিক অপরিপ্রভার জন্যই তা করতে পারবে না। স্তুতরাং শিশুর স্বাভাবিক পরিবেশের মধ্যেও তাকে স্তুভাবে পরিচালনা ক'রে সহজ হতে ক্রমে কঠিন কাজে অভ্যস্ত করিয়ে অগ্রসর হতে হবে।

সেইজন্যই ৬ হতে ৭ বংসর ব্য়সের শিশুর কাছ থেকে প্রাপ্তব্য়স্কের নিপ্ণতা আশা করা ভূল। জোর ক'রে, অনেক কসরং ক'রে দ্ব' একটি কাজ তাকে নিপ্ণভাবে করতে শিক্ষা দেওয়া যেতে পারে বটে, কিন্তু সেক্ষেত্রে অন্যদিকে তার অগ্রগতি ব্যাহত হবার সম্ভাবনা থেকে যাবে।

#### হাতের কাজ

श्राथिमक निष्मा পরিকলপনায় হাতের কাজ ব'লে যা কিছু निष्मा দেওয়া হোক না কেন, নিশ্র স্বাভাবিক পরিপুণি, তার দৈহিক সামর্থা, তার আগ্রহ প্রভৃতি বিষয়ের দিকে লক্ষ্য রেখে তার ব্যবস্থা করতে হবে। হাতের কাজে শুধু হাতের নয়, তার মধ্যে সমগ্র দেহ ও মনের ক্রমব্দির যাতে সুযোগ থাকে সে বিষয়ে লক্ষ্য রাখতে হবে। কাজের মধ্যে যদি সমস্যার উদ্ভব হয় এবং নিশ্রু যদি নিজে সেই সমস্যার সমাধানে সচেউ হয়, তবে তা তার চিন্তাশক্তির বিকাশের সহায়্তা করবে।

সাধারণতঃ, হাতের কাজের মধ্যে স্তাকাটা, কাপড়বোনা, কাগজ তৈরী, চামড়ার কাজ, কাঠের কাজ, বাশ-বেতের কাজ, মাটির কাজ এবং স্থানীয় কোন কুটীর শিল্পের কথা চিল্টা করা যেতে পারে। ৬।৭ বংসরের বালক কিংবা বালিকা নিপ্পতার সঙ্গে এর কোনটি যে করতে পারবে না এ সম্বন্ধে সকলেই একমত হবেন। কিন্তু ঐ সকল কাজের প্রত্যেকটিকেই যদি শিশুর বয়সের ও সামর্থের উপযোগী ক'রে শিশুর সামনে উপস্থিত করা যায়, তবে সে সাগ্রহে সেট্কু তো শিখবেই, অধিকন্তু বড়দের দেখাদেখি আরও উন্নত ধরণের কাজ শিখতে আগ্রহ প্রকাশ করবে।

#### হাতের কাজের ক্রমোর্মাত

৫-৫ই বংসর পর্যাবত ছেলেমেয়েরা কাদা, মাটি, বালি, পুরাণো কাপড়, ছোট ছোট টিনের বাঙ্গা, কাঠের টুকরা প্রভৃতি যা কিছু পায়, তা দিয়েই কোন কিছু গড়ার চেণ্টা করে। এ সময়ের আগ্রহ ফ্রিক, মূহুর্ত পূর্বে যে খেলায় সে সমস্ত প্রাণমন ঢেলে দিয়েছিল, পর্মুহুতেই সেদিক হতে তার মন অন্য কিছুতে নিবন্ধ হয়ে যেতে পারে। কোন নির্দিণ্ড কিছু গড়বার চেণ্টা সে করে না; উপাদান নিয়ে নাড়াচাড়া করতে করতে একটা কিছু হয়ে গেলে সে তার একটা নাম দিয়ে বসে, বাস্তব জগতে তেমন বস্তুর অস্তিত্ব কোন প্রাণ্ডবয়স্করও হয়তো অজ্ঞাত।

উপাদান নিয়ে এমনিভাবে নাড়াচাড়া করার সার্থকতা এই যে, এইভাবে শিশ্ব তার ইন্দ্রিয়ান্ভূতি ও প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার বিস্তার করবার সুযোগ পায়। হাতের মাংসপেশী, হাত এবং আঙগুল ক্রমে শক্তি সন্তয়ের সুযোগ পায়, চোখ ও হাতের সংযোগ সাধিত হয়। উপাদানের প্রকৃতি সম্বন্ধে এবং এর সম্ভাব্যতা সম্বন্ধেও সে প্রত্যক্ষ জ্ঞান সণ্ডয় করে।

এই ব্য়ন্সের কাজকে খেলার পর্যায়ে ভিন্ন অন্য কোন পর্যায়ে ফেলা যায় না। সে হিসাবে এই সকল কাজ শিশুর ইচ্ছান্সারে করতে দেওয়াই সঙ্গত; শিক্ষক সহান্ভূতির সঙ্গে শিশুর এই খেয়াল চরিতার্থ করবার সুযোগ দেবেন এবং প্রশংসার কার্পণ্য করবেন না। ৬ হতে ১১ বংসর ব্য়স পর্যান্ত বালকবালিকার স্থায়ী কিছু করবার বা গড়বার ইচ্ছা ক্রমশঃ ব্দিধ পেতে থাকে এবং উপাদান ও উৎসাহ পেলে এই ইচ্ছাই তাকে নিপুণতর কাজের দিকে এগিয়ে নিয়ে যায়।

শিশ্বেক ইচ্ছামত কাজ করতে দেওয়ায় যে বিপদ নেই, তা বলা চলে না। তাকে দেখিয়ে না দিলে সে নীচু ধরণের কাজ ক'রে যাবে এবং যে সকল শিশ্ব নিজের কাজের সমালোচনা নিজে করতে পারে না, তাদের কাছে নিক্ট ধরণের কাজই উংকৃট কাজ ব'লে মনে হতে পারে। ক্রমশঃ ঐর্প কাজেই তারা অভাস্ত হয়ে যেতে পারে, কিন্তু একট্ব সাহায়ফ করলেই হয়তো তারা এর চেয়ে অনেক উয়ত ধরণের কাজ করতে পারত।

এমন অবস্থায় শিক্ষক কতকগুলি ছেলেমেয়ের সামনে তাদেরই ব্যবহৃত উপাদান নিয়ে যদি উন্নত ধরণের কাজ ক'রে দেখান তা হ'লে তারাও নিজেদের কাজের উন্নতি করার চেষ্টা করবে।

অনেক সময় শিক্ষক ছেলেমেয়েদের উন্নততর প্রণালীতে (যেমন প্রণালী তারা শিখতে পারে) কাজ করা দেখিয়ে দিতে পারেন। উদাহরণস্বরূপ বলা যেতে পারে যে, ছেলেমেয়েরা মাটির জিনিষ তৈরী করার পরেই রোদে দিয়ে শুকিয়ে নিতে চায় এবং অনেক ক্ষেত্রেই প্রগুলি ফেটে যায়। শিক্ষক যদি মাটি প্রস্তুত ক'রে নেওয়ার প্রণালী দেখিয়ে দেন এবং খেলনো প্রস্তুতের পর ছায়ায় শুকিয়ে নেওয়ার উপদেশ দেন (কিংবা নিজে ক'রে দেখিয়ে দেন) তবে ছেলেমেয়েরা প্রভাবে কাজ করতে শিখবে এবং ব্যর্খতার হাত থেকেও নিস্তার পাবে।

সকল প্রকার হাতের কাজেই কিছু না কিছু নিয়মকানুন আছে এবং কাজের যন্ত্রপাতিও আছে। প্রথম হতেই ছেলেমেয়েদের যন্ত্রপাতির ব্যবহার করার কৌশল আয়ত্ত করাতে হবে—যেমন, বুনানি শিখতে হলে টানার স্তার একটির উপর দিয়ে এবং একটির নীচ দিয়ে পড়েনের স্তা পরাতে হবে, অথবা, মাটি দিয়ে পতুল গড়তে হলেই সে মাটিকে জলে ভিজাতে হবে এবং তার মধ্যেকার কঠিন অংশগুলিকে বেছে বাদ দিতে হবে। পরবতী অধ্যায়ে বিভিন্ন শিলেপর কথা বিশেষ ভাবে আলোচনা করা হয়েছে।

হাতের কাজ সম্বন্ধে কোন স্ক্রিন্তিত কার্যক্রম দিহর করতে গেলে শিক্ষক কয়েকটি প্রধান বিষয়ে লক্ষ্য রাখ্যবনঃ—

- (क) হাতের কাজের যে নিয়মকানুন আছে, তারই মধ্যে ছেলেমেয়েদের যথাসম্ভব স্বাধীনতা দিতে হবে।
- (খ) যদিও একটি সুনিদিপ্ট ধারা অনুসারে ছেলেমেয়েরা হাতের কাজ শিখবে, তবু তারই মধ্যে তাদের এইটাকু স্বাধীনতা দিতে হবে যে, তারা যেন তাদের মনোমত জিনিষ গড়ার সুযোগ পায়।
- (গ) সহজ হতে কঠিন প্রণালীতে যেতে হবে; এতে দক্ষতার ক্রমবিকাশ হবে এবং শিক্ষার্থী যথাসম্ভব কম বিপর্যয়ের সম্মুখীন হবে। প্রথমেই কঠিন কাজে হাত দিয়ে বিফল হওয়ার চেয়ে সহজ কাজ হতে আরম্ভ ক'রে ক্রমশঃ কঠিনের দিকে অগ্রসর হওয়াই সমীচীন। যেমন, প্রথমেই যদি ছেলে-মেয়েদের চরকায় স্তাে কাটতে দেওয়া হয় তবে তারা স্তা বের করতে অনেক বিপর্যয়ের সম্মুখীন হবে, সেক্ষেত্রে প্রথমে চরকা না দিয়ে প্রথমে তক্লী দেওয়াই যুভিযুক্ত।

#### উপকরণ

विष्णुण प्रत्यां म्ला।— श्रथम श्रथम ७।१ वर्ष्मतं एएलामासं स्य जिनिस श्रण्ण कत्ततं, वाजातं जातं कान म्ला र'ति व'ल जामता जामा कत्ति भाति ना। मृत्यातं मित्क मृष्णि त्राथ । प्रका जिन्म क्राण एएल मिम् त भित्यम् ज्यातं भित्रमान वृष्टिसं जना जात्क विष्णे भित्यम् क्रान्त एक्षेत्र क्रान्त स्य प्रत्याभ जात्क वाद्यतं कार्णतं माधाम प्रवास प्रवास क्रिक्त क्रांत व्याभ व्

निठान्ठरे 'ছেলেখেলা'। এখন থেকে সে या कत्रत, স্নির্মন্ত্রিত এবং স্পরিকল্পিত হ'লে তা'র কিছুটা মূল্য হ'বে, এদের হাতের তৈরী জিনিষ ব্যবহারযোগ্য হবে এবং বিক্রয় কর্লে অন্ততঃ ক'াচা মালের দাম উঠে আসবে ব'লে আশা করা যায়। এই ব্রুসের ছেলেমেয়েরা ১২থেকে ১৬ নম্বরের স্তা কাট্তে পারবে; চট ব্নতে, ছোট গামছা (টানা দিয়ে দিলে) ব্নতে পারবে; প্লাইউড, থেকে খেলনা কাটতে এবং তা রঙ করতে পারবে; সন্জী ক্ষেতে গাছ লাগাতে, জল দিতে, ছোট ছোট নিড়ানি দিয়ে আগাছা উঠাতে এবং গাছের যত্ন করতে পারবে। এই রকমের ছোট ছোট কাজ যা তাদের শারীরিক সামথ্যে কুলায়, তাই তাদের কাছে আশা করা যায়, তার বেশী নয়।

#### निश्रमान् र्वार्जा, व्यथावनाय, देश्य

कार्फ़त एं एवं किरा थे हैं प्रकल भूभावलीत विकास ये एका प्रवाशिक हरत, सिक्षरक्त सूर्थिन प्रित्र हैं प्रित्मिता है हैं प्रवाशिक हरते हैं प्रवाशिक है प्रवाशिक हैं प्रवाशिक हैं प्रवाशिक हैं प्रवाशिक हैं प्रवाशिक है प्

#### योथ पाश्चित्रवाध

रयोथलार मासिज् গ্রহণ করা এবং পরদ্পর পরদ্পরকে সাহায্য করার প্রয়োজন কাজের ভেতর দিয়ে যেমন গড়ে ওঠে, অন্য কোন ক্ষেত্রে তেমন সম্ভব হয় না। বাগানের কাজে কিংবা অন্য কোন বড় কাজে যেখানে অন্যের সাহায্য প্রয়োজন—তেমন দ্হানে দায়িত্ববোধ জাগান'র সম্ভাবনা প্রচুর এবং দায়িত্বহীন ছেলেমেয়েও অন্যের সমালোচনা শ্রুনে নিজেকে সংশোধন করার জন্য সচেষ্ট হ'তে পারে।

#### कार्ड्य माधारम निकामान वा जन्दन्ध्यनानी

সাহিত্য, অঙক, ইতিহাস, ভূগোল প্রভৃতি পাঠ্যবিষয় কাজের মাধ্যমে অনেকখানি শেখান যেতে পারে। শিশু যা হাতে গড়ল বা করল সে সম্বন্ধে মৌখিক কিংবা লিখিত বর্ণনা করতে বললে, নিজর অভিজ্ঞতা থেকে তা বলা কিংবা লেখা তার পক্ষে অনেকটা সহজ হ'বে। কিন্তু যে বিষয়ে তার বাস্তব অভিজ্ঞতা নেই, সে সম্বন্ধে বলতে কিংবা লিখতে দিলে, সে প্রতকে লেখা অন্যের অভিজ্ঞতারই প্ররাব্যত্তি করতে বাধ্য হয়। এটা তা'র সমরণশক্তির পরীষ্মা ভিন্ন আর কিছু নয়। প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার উপর যদি ভাষা কিংবা অঙ্কের জ্ঞান প্রতিষ্ঠিত হয়, তবে পরবর্তী কালে তা'র চিন্তার স্কুপউতা আসবে এবং ভুল হ'বার সম্ভাবনা কম থাকবে। সেইজন্য হাতের কাজকে কেন্দ্র ক'রে শিক্ষা দিলে সে যে শুধু একটি প্রয়োজনীয় শিল্প সম্বন্ধেই অভিজ্ঞতা লাভ করবে তা নয়, তা'র মানসিক বিকাশের প্রথপ্ত এতে অনেকখানি প্রশস্ত হ'বে বলে আশা করা যায়।

#### উদাহরণ

উৎসবাদি উপলক্ষে ছেলেমেয়েরা আনন্দের সঙ্গে অনেক হাতের কাজ করে। এই উপলক্ষে তারা অনেক কিছু শিখতে পারে। যেমন—'প্বাধীনতা দিবস' পালন করতে তা'রা এই সব জিনিষ নিজেদের হাতে তৈরী করতে পারবে—

- (১) পতাকাদণ্ড তৈরী করতে পারবে;
- (২) স্তা কাটতে পারবে;
- (৩) ঐ স্তা রঙ করতে পারবে;
- (৪) ঐ রঙগীন সূতা দিয়ে জাতীয় পতাকা বুনে নিতে পারবে;
- (৫) কয়েকটি জাতীয় সঙ্গীত শিখতে পারবে।
- (৬) (উচ্চতর শ্রেণীতে) বিভিন্ন দেশের জাতীয় পতাকার ছবি আঁকতে পারবে;
- (৭) জাতীয় পতাকায় বিভিন্ন বর্ণসমাবেশের তাৎপর্য শিখতে পারবে;
- (৮) নিয়মতান্ত্রিকভাবে জাতীয় পতাকা উত্তোলন, অভিবাদন, অবন্মন এবং সংরক্ষণ করতে শিখবে;
- (৯) কুচকাওয়াজ শিখতে পারবে; এবং এই উপলক্ষে—
  - (ক) দেশাত্মবোধক কবিতা মুখস্থ করতে পারবে;
  - (थ) शान रमथा উপলক্ষে शानि लिएथ निराण्ड हारेर्द;
  - (গ) মহাত্মা গান্ধী, রবীন্দ্রনাথ, চিত্তরঞ্জন, জওহরলালের বাল্যজনীবন শ্বনতে এবং পড়তে চাইতে পারে;
  - (ঘ) অন্যান্য দেশের জাতীয় পতাকা অণকতে গিয়ে ঐ সকল দেশের সম্বন্ধে কিছু ভৌগোলিক জ্ঞানও আয়ন্ত করতে পারবে;
  - (৬) স্বাধীনতাপ্রাণিত প্রসঙ্গে প্রাধীন ভারতের অবস্থা সম্বন্ধে কিছু ঐতিহাসিক তথ্যাদিও শিখতে পারবে;
  - (চ) প্রসঙগক্রমে অনুরূপ আরো কিছু (যেমন খবরের কাগজ থেকে ছোটদের উপযোগী প্রবন্ধ, কবিতা ইত্যাদি) পড়তে পারবে।

বিভিন্ন শ্রেণী অবশ্য এই উপলক্ষে বিভিন্ন কাজ করবে, কারণ খুব ছোটদের কাছ থেকে এর স্বগ্রিল কাজ আশা করা ভুল হ'বে। মানসিক ও দৈহিক সাম্থ্য অনুযায়ী কাজের বিভাগ ক'রে দিলে প্রত্যেকেই নিজ নিজ কাজ করতে পারবে ব'লে আশা করা যায়।

#### वन् वन्धञ्चनानौत विश्रम

जन्मजाद जन्दन्मञ्चलानीरक जन्द्रमत्न कराल लाज जर्मि ऋणि रुउग्नातर प्रमणादानी विद्या स्थाप प्रवाणादिकजाद स्थाप प्रकल ज्थापि क्रिक्षा स्थाप प्रवाणादिकजाद स्थाप प्रकल ज्थापि क्रिक्षा स्थाप प्रवाणादिक, ज्ञाप प्रवाणादिक, ज्ञाप ज्ञाप ज्ञाप प्रवाणादिक, ज्ञाप प्रवाणादिक, ज्ञाप प्रवाणादिक, ज्ञाप क्राप्ता ज्ञाप क्राप्ता क्राप्

 পুস্তকের স্থান

কেবলমাত্র কাজকে কেন্দ্র ক'রে সকল প্রকার শিক্ষা দেওয়া সব সময়
সম্ভব হয় না। প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার আওতায় যেট কু পড়ে, তা ছাড়াও শিশ কে অনেক
কিছ শিখতে হ'বে। সের্প ক্ষেত্রে কলপনার আশ্রয় নিতে হ'বে, কিন্তু সেখানেও কালপনিক
বস্তুর যথাসম্ভব বাসতব রূপ দিলে তবে শিশ র পক্ষে তা সহজে গ্রহণ করা সম্ভব হয়।

'रिमालस' मम्यत्थ कान मिम् तरे वाम्जव जिल्ला रें ए भारत ना यज्यन भर्यान्ज मि 'নগাধিরাজ'কে প্রত্যক্ষ করছে; সের্প ক্ষেত্রে মেঘ দেখে ছোট টিলা কিংবা পাহাড দেখেই শিশু ঐ সম্বন্ধে একটি ধারণা করতে বাধ্য হ'বে। ছবি, ম্যাপ, মডেল প্রভৃতির প্রভৃত ব্যবহার সেইজনাই শিক্ষাবিজ্ঞানসম্মত। হাতের কাজের মধ্য দিয়ে, পরিবেশের ভৈতর দিয়ে শিশু वामार्थित या किं लार्थ, ठा कथनरे भूम्ठाक लिथा छार्थात मे मू मू क्थल ७ मू भित्रकिन्नि इ'रा शारत ना वतर निर्ध ना ताथरन जरने कथारे जूरन याउसात निर्णानना रियर यास। দেইজন্য প্রথম দুই একবংসর নির্দিণ্ট কোন পুস্তক না থাকলেও পরবতী কালের জন্য পুস্তকের প্রয়োজন আছে। প্রথম দুই বৎসর তা'র অভিজ্ঞতাকে কেন্দ্র ক'রেই সে লিখতে পটতে শিখবে এবং প্রয়োজনের তাগিদও তাকে অনেক সময় লিখতে পড়তে প্রেরণা দেবে र्यमन नाम लिए ना ताथल थाण किश्वा ছবি किश्वा छेती छिनिस शित्रस याउसात সম্ভাবনা আছে। গলপ শুনে, কবিতা শুনে, ছবি দেখে সে ছবির বই, গলেপর বই পড়তে চাইবে এবং যখন সে দেখবে তারই অভিজ্ঞতার কাহিনী প্সতকেও লেখা আছে, তারই প্রিয় গল্প ও কবিতা পুসতকে স্থান পেয়েছে, তখন সে স্বাভাবিকভাবেই পড়ার দিকে আকৃষ্ট হ'বে। সুতরাং যে শিশুর অভিজ্ঞতার গণ্ডী যতখানি প্রশস্ত, তার পক্ষে শিক্ষালাভ ততটা সহজ হয়: वरें वात्ना कारजंत माधारम य जिंछका जर्जन कता याम्र, जात हालरे मत्न म्लक रास लाज সেই জন্য, শিশুকে কাজ করার প্রচুর সুযোগ দিতে হবে এবং সে যেন সুযোগের সদ্ব্যবহার করে তা দেখতে হবে।

#### উপসংহার

প্রথম ২।১ বংসর (অর্থাৎ ৬।৭ বংসর পর্যন্ত) শিশুকে যথাসম্ভব স্বাধীনভাবে কাজ করতে দিতে হবে। এই বয়সে হাতের কাজের খ<sup>2</sup>ুটিনাটি বিষয় জোর ক'রে শেখাতে গেলে ঐ কাজের সম্বন্ধে শিশু বীতরাগ হয়ে উঠতে পারে। তার শারীরিক পরিপুণ্টির দিকে লক্ষ্য রেখে কাজের নির্দেশ দিতে হ'বে।

- (১) তবে শিশ যদি কোন কৌশল আয়ত্ত করার জন্য আগ্রহান্বিত হয়, এবং ঐ কৌশল আয়ত্ত করতে যদি তার শারীরিক স্থতির সম্ভাবনা না থাকে, তবে তা'কে সহজ কৌশলগুলি শেখান যেতে পারে। ক্রমশঃ দৈহিক ও মানসিক ব্দিধর সঙ্গে তাল রেখে তাকে অন্যান্য কঠিনতর প্রক্রিয়াগুলি শেখান সম্ভবপর হবে।
- (২) একসঙেগ অনেকগুলি কোশল শিখতে না দিয়ে একটি অতি সহজ প্রক্রিয়া থেকে আরম্ভ করা যেতে পারে। যেমন—পাতার চাটাই বুনতে সহজ সেলাইয়ের পদ্ধতিতে একটির উপর দিয়ে এবং একটির নীচ দিয়ে পাতা পড়ানর পদ্ধতি প্রথমে শেখান উচিত। ঐ প্রক্রিয়া আয়ত্ত করার পর, ২টির উপর দিয়ে, দুইটির নীচ দিয়ে এবং ক্রমশঃ ৩টির উপর এবং ৩টির নীচ দিয়ে বুনানি শিখান যেতে পারে।
- (৩) শিশুকে যে কাজই দেওয়া হোক না কেন, অলপ সময়ের মধ্যে কাজটি শেষ হওয়া চাই এবং তৈরী জিনিষ সকলকে দেখানর সুযোগ দেওয়া চাই (এই উদ্দেশ্যে মাঝে মাঝে ছোটদের ছাতের কাজের 'প্রদর্শনীর' ব্যবস্থা করা যেতে পারে)। একটি কাজ শেষ করতে বহুদিন লেগে গেলে, শিশুর ধৈযাচ্যুতির সম্ভাবনা আছে এবং এর জন্য শিশুকে দায়ী করা চলে না।
- (8) ছেলেমেয়েরা যাই করুক না কেন, কি উদ্দেশ্যে, কেন করছে, সে সম্বন্ধে তাদের স্কুপন্ত ধারণা থাকা উচিত।

- (৫) প্রত্যেকটি কাজ—তা যত ছোটই হোক, না কেন—যেন বৈজ্ঞানিকের দৃষ্টিভঙগী নিয়ে সুষ্ঠুভাবে বিশ্লেষণ ক'রে দেখার শিক্ষা শিশুকে দেওয়া হয়। খাপছাড়া, দায়িত্ব-হীন, অর্থহীন কাজের স্থান শিক্ষায়তনে নাই।
- (৬) স্থানীয় হস্তশিল্পের কাজ দেখানর জন্য ছোটদের নিয়ে ঐ সকল কারিগরের বাড়ী গিয়ে তাদের কার্যপ্রণালী দেখাতে হবে এবং তাদের জীবন্যাত্রা, উপার্জন ইত্যাদি সম্বন্ধে যদি বালকবালিকা জিজ্ঞাস্ক্রহয়, তবে তাদের প্রশেনর উত্তর দেওয়ার যথাসাধ্য চেণ্টা করতে হ'বে।
- (৭) যে সকল উপকরণ কেনা হ'বে, তার খরচের হিসেব রাখতে হ'বে এবং প্রত্যেকটি তৈরী জিনিষে কতখানি ক°াচামাল ব্যবহার করা হ'ল, কত ঘন্টা পরিশ্রম করা হ'ল এবং তার কত খরচ পড়ল, তারও হিসেব রাখতে হ'বে।
  - (b) १ वश्मत थएकरे वालकवाणिकाता शास्त्र कारलत मिर्नालिश ताथरा निथरत।
- (৯) ওরা কোন কাজে বেশী অনুরক্তি এবং উন্নতি দেখায় শিক্ষক সে বিষয়ে লক্ষ্য রাখবেন এবং ত'ার দিনলিপিতে উন্নতি অবনতি সন্বন্ধে মন্তব্য লিখে যাবেন।
- (১০) গ্রুস্থালীর কাজে যে সকল জিনিষের প্রয়োজন, নিত্যপ্রয়োজনে যে সকল জিনিষ সচরাচর ব্যবহৃত হয়, বালকবালিকা নিজস্ব প্রয়োজনে যে সকল জিনিষ প্রস্তুত করতে চায়, আগে সেই সকল জিনিষ প্রস্তুত করানই শেখাতে হ'বে।

বিলাস-সামগ্রী প্রস্তুত করার কৌশল প্রথম থেকেই শেখানর কোন সার্থকতা নেই। তবে প্রাত্যহিক প্রয়োজনের অতি ক্ষুদ্র জিনিষটিতেও যাতে সৌন্দর্যবোধ ও র্চিবোধের পরিচয় পাওয়া যায় সেদিকে লক্ষ্য রাখতে হ'বে।

## (খ) কাতাই শিল্প

কর্ম কৈন্দ্রিক ব্যবস্থায় কোন কাজকে শিক্ষার মাধ্যম করতে হলে বিবেচনা করতে হবে কাজটি শিশ্বর দৈহিক, মানসিক ও নৈতিক বিকাশের স্থায়ক কি না? এ ছাড়া উৎপাদনের দিক হতেও কাজটির উপযোগিতা বিচার করা যেতে পারে। এই সব বিচারে কাতাই শিল্পকে শিশ্বশিক্ষার একটি মাধ্যম হিসাবে গ্রহণ করা খুবই ঠিক হয়েছে।

काणार्चे मिल्न वात्तकण् वि शिक्ष्यात्रमन्ति छ विजित्त व्यात्मत मिन्तूत मात्रीतिक छ मानिक विकारमत छेन्द्रयाणी विजित्त शिक्ष्या निर्वाचन कता याय। काणार्चे मिल्न वात्र्विक शिक्ष्या निर्वाचन कता याय। काणार्चे मिल्न वात्र्विक शिक्ष्य मिल्न न्या थर काणार्चे मुन्न न्याता क्वित्यमात 'न्याकाणां' वात्यान रय ना। देशा क्विन्यूक मिल्न्यमिष्टे। ज्वाता हाय रेंट विक्वत्यम न्यान्य र्यान्य काणार्चे मिल्न्य वाल्ल हिंग् ज्वाता हाय, ज्वाता व्यानाः न्याता काणाः वाल्ल वाल्ल वाल्ल वाल्ल शिक्ष्य वाल्ल शिक्ष्य वाल्ल वाल्ल अल्ल निर्वाचन वाल्ल वाल्ल शिक्ष्य वाल्ल वाल

वर्षे मिल्लिछित मर्था मिक्सालाए ज्ञ मम्लावना श्राप्त । मिल्लिछ यर्थे वालिक श्वास मिन्न वकिछ मिर्ल्लिए मर्था मिर्स नानात्ल मश्या मिर्स नानात्ल म्हासक मिर्ल्लित मर्म्लिए वाल्य। विकास मिन्न क्रम्त्र मिन्न क्रम्त्र मिन्न क्रम्त्र वाल्य। व्याप्त क्रम्त्र क्रम्त्र वाल्य। क्रम्ता वाल्य। वा

গ্রাম-সভ্যতার বিকাশসাধন বুনিয়াদী শিক্ষাপ্দধতির একটি লক্ষ্য। এদিক হ'তেও

উপরোক্ত যুক্তিগুলিকে শিক্ষক সম্পূণুভাবে অনুধাবন করতে পারলে কাতাইএর মাধ্যমে
শিক্ষা দেওয়া সাথকি হ'বে। কাতাইকে শিশুর নিকট যতদ্র সম্ভব মনোজ্ত ও শিক্ষাপ্রদ

করতে চেণ্টা করতে হ'বে। কোন কাজকে শিশ্র উপর জোর ক'রে চাপিয়ে দিয়ে তার শ্রম স্থমতাকে ভারাক্রান্ত ও চিত্তকে নিরানন্দ করা উচিত হ'বে না। আবার একথাও মনে রাখা প্রয়োজন যে স্কোশলে ও নিষ্ঠার সঙ্গে পরিচালিত করতে পারলে শিশ্র শিক্ষাগত অগ্রগতি ও আনন্দের পরিপোষকভাবেও কাতাই শিল্পকে যথেণ্ট উৎপাদনাত্মক করা যায়।

কাতাই শিল্পের মাধ্যমে শিক্ষা দিতে হ'লে কার্পাস উৎপাদন হ'তে বন্দ্রবয়ন পর্যাত শিক্ষা দেবার প্রয়োজন হ'বে। স্তুবাং কার্পাস উৎপাদন সম্বন্ধেও শিক্ষকের উপযুক্ত জান থাকা প্রয়োজন। এখানে প্রথমতঃ তুলো ও তুলোর চাষ সম্বন্ধে সংক্ষেপে কিছু বণিত হ'ল।

प्राधात्विण्डः आमता वालिम्, शिष्ट श्रृष्ट्रिण्डं छता निम्नूल णूला वावरात कित वदः वस्त्रित छता कार्याम णूला वावरात कित। वहाष्ट्रां आकन्म श्रृष्ट्रिण शाह थ्यत्क्ष णूला शिष्ठ्रा यास, किन्णू निम्नूल णूला वा आकन्म णूला रेरेण मूणा रस ना। कात्रव वम्न णूलात आश्रा हिए, किरुप्त विदेश वत आश्रा कार्याम प्राण्ट्रां आश्रा आश्रा हिए, किरुप्त विदेश वत आश्रा कार्याम प्राण्ट्रां आश्रा हिए, विदेश कार्याम प्राण्ट्रां कार्याम प्राण्ट्रां कार्याम प्राण्ट्रां कार्याम प्राण्ट्रां कार्याम प्राण्ट्रां कार्याम प्राप्ट्रां कार्याम कित्र प्राप्ट्रां कार्याम कित्र वार्याम कित्र मार्याम कित्र कार्याम कित्र मार्याम कित्य मार्याम कित्र मार्याम कित्र मार्याम कित्

देगाथ देजा मार्म नाधात्र कार्माम कार्य कता र'रा थारक। कार्म कार्णीय कार्माम वार्मित्र-कार्जिक मारम कार्य कता र'रा थारक। विषायि ५८ मण ॥ मण जूला भाउसा स्यस्त भारत। वीक वंश्वास भारत वीक प्राप्त भारत करन स्था कि कार्य देश करने कि विषायि के स्था विकास स्था स्था

कार्পात्र छालछारव श'ल ७।१ मात्र १ व श'ठि जूला शाख्या या था था कार्शात्र छाल क'रत ना शाकला छिठि नस। वर छालवात त्रमरस मूथना शाजा वा मसला जूलात त्रांत पाठ छिठि नस। वर छालवात त्रमरस मूथना शाजा वा मसला जूलात त्रांत पाठ छिठि ना यास प्रिमित्क मूणि ताथि श'व श'क कतात छे व जिल हा छिरस भे छा करात छे त्रमू हा वी नत्र मात्रथानक रतात हिल्ल १ व हो है कता यास ना विश्व कार्शात छानछार ना मूकाल छाल त्रांत वा छाल कार्य है श'र ना विमित्क थासा तर्थ कार्यात हिल्ल श्रांत छ त्रांत है प्रांत वा वा छाल कार्य है श'र ना विमित्क थासा दिखा कार्यात प्रांत प्र

প্রথমতঃ শিশুদিগকে সুতোকাটা ও ধোনা তুলো থেকে পাঁজ করতে শিক্ষা দিতে इ'रव। मिक्क निर्क मुरानिका । अपक रेजरी एम्पार थाकरवन। क्रा का मिम्पूमरन সংক্রামিত হ'বে। প্রথম প্রথম শিশুকে খালি তকলী কখনও ডান হাতে, কখনও বাম হাতে घुताতে দিতে হ'বে। অঙগুপ্ত ও তর্জনী বা মধ্যমার সাহায্যে অভ্যাস করবে। তকলী यू तात्नात नमरम वक्नाम कठवात धाति निम्नक वक, मूरे क'रत भू नरि थाकरवन। द्वंश थकि निर्मिष्ठ मात्र थल थता याक ३० त्मरकण थकमरम घूतारा भातरल जारक त्र एका कार्के मूज् करा पाउँ रात । श्रथम किनी मिन्दी हे प्रेत रोकिस वक शाल वकिं करत शाक एपरत, जात वक शारा वकिं क'रत छानरत वरेखारत भूत कतरा शारत। তकलीत नाहारेट ५० जात्र थक 'किल', ८० जात्र ५ 'नाही', ৮ 'नाहीटण' जास 'मून्डी', 8 कृ त वक 'ठात' थरें छार्व म् एठा ठूलवात नियम मिक्स मिर्छ र'रव। करल मिम् ता श्ना मिथरिं भारत्य ७ मर्डिंग मर्डिंग जना खान्छ लाख कर्रिं भारत्य। मत्अक्षारम् नाम, माभ, छजन, थाज्छान, छाल मन्प विচात, म्जात जहक, शाक, ममजा, मिछ मम्यत्युष्ठ धीरत धीरत छानलाछ क्तरेत। फ्विणीय स्थानीत स्थित फिर्क यथन एकजीरण मुर्ण काछा आयरछ आमर्व ७थन চরকা वा वन्य छिटकाट मूरण काछेट मिथर वव वाल यूनकीट जूला स्थाना जलाम करि वात्रम् कत्रतं भात्रत वरण वाना कता याय। विमानत्यत श्रद्योक्षनीय प्रवापि यलपूत সম্ভব বিদ্যালয় হ'তে উৎপন্ন করবার চেন্টা করতে হ'বে। তুলো উৎপাদন, বস্ত্রবয়ন, সরঞ্জাম তৈরী প্রভৃতি কাজ বিদ্যালয়ে বা স্থানীয়ভাবে ক'রে নেওয়াই ভাল। আমরা स्वावलम्बन वलाउ मूर् व्यार्थिक मिकछार ध्रव ना। अत्रक्षामभू लि यउम् त सम्ख्य स्वन्ध वारम ७ म्हानीम छे अक्तर् हें एक के रत राख्यात कि की कत्र हरते। विदः याक का विकान-সম্মত ও কলাত্মক দ্ভিট দিয়ে প্রস্তুত করা হয় সেদিকেও দ্ভিট দিতে হ'বে। গ্রামে সহজ-লভা কাঠ, বা°শ, বেত, তালপাতা, খেজ,রপাতা, খড়, ঘাস প্রভৃতির সাহায্যে আবশ্যকীয় সরঞ্জামের অনেক কিছু তৈরী করা সম্ভব। এই সম্সত সরঞ্জাম প্রস্তুতের মাধ্যমে আমরা শিশুদের নানাভাবে সম্বায় সম্বশ্ধে জান দান করতে পারি। সর্ঞাম বিষয়ে বিস্তারিত জানের জন্য সেই সম্বন্ধে বই ও প্রীক্ষাকার্যের প্রয়োজন আছে মনে রাখতে হ'বে। শিক্ষকের নিজের মধ্যে জান আহরণ ও পরীক্ষা করার মনোভাব থাকা চাই, সেটাই ছাত্রদের মধ্যে সংক্রামিত হ'য়ে তাদের জানান্বেষী করতে পারবে।

কাতাই কার্যের জন্য অতি আবশ্যকীয় কতকগুলি সরঞ্জামের প্রয়োজন হ'বে; এর মধ্যে অধিকাংশগুলি স্বল্পব্যয়ে স্থানীয় চেণ্টায় উৎপন্ন হ'তে পারে। নিম্নে একটি তালিকা দেওয়া হ'লঃ—

(১) वनवात जानन, (২) ज्ला ताथवात बार्नि, (७) ज्वनीत वाझ, (८) भाँक कड़ावात जावतन, (८) मण्डी, (७) जूनाइ, इती ७ धन्क, (१) वानध्नकी, यूष्ध ध्नकी ७ मधाम ध्नकी, (७) ज्ला धानात ठाठाइ, (৯) भाँक भिर्षेष्ठ ७ भाँक काठि, (५०) न्नाइ भाँकी, (५৯) दक्तकी, (५২) म् जा भाकानत क्रा ठतकी अर्छाठ नतक्षाम, (५७) ज्वनी, जाठावन, ठतका, नाठाइ, (५८) म् जा माभात निक्ति ७कन, (५८) म् जात मिक्ति माभा नतक्षाम, (५७) इ जादत यन्त्रभाठ ५ मामा वामने वा मिन्नू ती जाठ करात्रकथाना धन्ह ठेकठीक ठाउठ ६ थाना।

প্রয়োজন অনুসারে উপযুক্ত সংখ্যক সরঞ্জাম সমস্ত বুনিয়াদী বিদ্যালয়ে থাকা একান্ত দরকার। শিশুদের তুনাই, ধুনাই, স্তোকাটা প্রভৃতি প্রগতি সম্বন্ধে হিসাব ও লেখ (graph) রাখলে তাদের ক্রমোন্নতি বোঝা সহজ হ'বে। উচ্চতর শ্রেণীতে তারা উৎসাহের সঙ্গে নিজ নিজ কাজের হিসাব, ডায়েরী, প্রগতি-লেখ ও শ্রেণীর প্রগতি-লেখ রচনা করবে। উন্ধৃতি ব্যহত হ'লে কারণ অনুসন্ধান ও তার প্রতিকারে যত্নশীল হ'বে। এখানে কিভাবে হিসাব রাখতে হ'বে ও প্রগতি-লেখ তৈয়ার করতে হবে তা দেখান হ'ল। প্রতি স্পতাহে ঘন্টায় গতি একটি ছক কাগজে চিহ্নিত ক'রে উক্ত প্রগতির একটি লেখ ও দেওয়া হ'ল। অনুরূপভাবে ওটাই, তুনাই, ধুনাই ইত্যাদিরও লেখ রাখা যায়।

নিম্নলিখিতভাবে শিক্ষক ছাত্রদের কাজের হিসাব রাখতে পারেন। শিক্ষক উচ্চ শ্রেণীর ছাত্রদের দিয়ে এইভাবে হিসাব রাখবার আবশ্যকীয় ছক কেটে দিতে পারেন—

#### ১। কার্পাস চয়ন হিসাব

তারিখ	<b>ठसन</b> गमग्र	কার্পাস পরিকার সময়	কার্পাসের ওজন	বিভাগ — উৎকৃষ্ট	করণ অপকৃষ্ট	শুখানর পর ওজন	ওটাই পর প্রাপ্ত তুলার তুলার	<b>म</b> त्र	मूना	মন্তব্য
100				10.0	107,34	14.				

### ७० विक प्राप्ति ।

তারিধ	পরিকার সময়	ওজন	ওটাই সময়	তূলার ওজন	বীজের ওজন	শতকরা তুলার পরিমাণ	কার্পাসের জাতি	ভাঁশের দৈর্ঘ্য	মন্তব্য
A									

# । তুনাই

	তারিষ
69.2	কাৰ্পাস
अभूब	ওটাই
<b>न्या</b>	90 ना थ
743	ক্ষুৱাৰ
ग्रथा	পাঁজের
ওজন	গাঁভের
*5	96
3	তুনাই প্ৰমতি
ধনুক <mark>পুনাই</mark> বা হাতে	ঞ্চীতি
# & &	

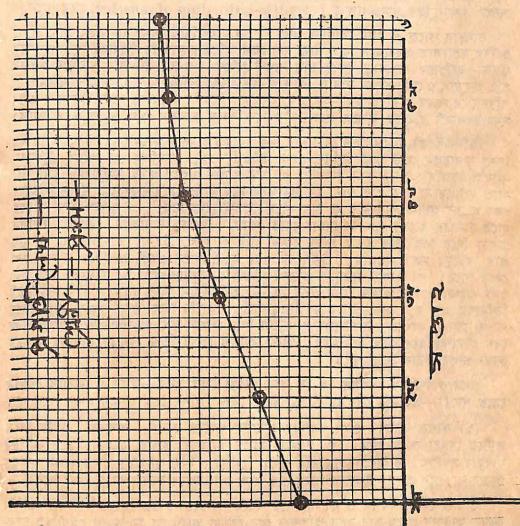
म् द्वाका

		GIAN	ļ
	পাঁ	জর	ওজন
	नग्र		cit
	69		উৎপত্ন সূতা
	তার		लुं
	ওজন		
		2000	\$ <sub>e</sub>
		অপচ্য	
	মোট হি	পাঁত সাব	জর
	वात्रन	1	2
100	গুন বুন		প্ৰা
	<b>ग</b> ग्र	!	गुट्छा
	<u>이</u> 화		জ্বভান
	সময়		G
	60	Ide	akta)
	<b>य</b> ख रा	1	

	তারিখ
	তুলার ওজন
	পেঁজার সময়
	পাঁজ করবার সময়
	পাঁজের সংখ্যা
	পাঁজের ওজন
	ৰাছানি তুলার ওজন
	ফেরৎ তূলা
	অপচয়
	মোট তুলার হিসাব
	এক তোলায় পাঁজ সংখ্যা
,	তি ২ ঘণ্টায়
	4
	खिया

# কাতাইয়ের ক্রমোর্নাত হিসাব (প্রগতি লেখ দ্রন্টবা)

<b>সপ্তাহ</b>	সময়	তার	ঘণ্টায় গতি	মন্তব্য
১ম	২ঘণ্টা	20	১০ তার	and the state of
२ग्र	এঘণ্টা ১৫মিঃ	88	১৪ তার	
৩য়	২ঘণ্টা ৪৫মিঃ	00	১৮ তার	
8থ	ত্ৰণ্টা	৬৬	২১ তার	
	এমণ্টা	৬৯	২৩ তার	图 发现 数 10 100
৫ম ৬ৰ্চ	२घण्टा ७०मिः	60	২৪ তার	



حسيند سور عدف (فية = ١٠٠٠)

#### (গ) চামড়ার কাজ

প্রাথমিক (নিম্ন বুনিয়াদী) বিদ্যালয়ে চামড়ার কাজ কেন, কখন ও কেমন ক'রে শেখাব

স্কান।—প্বেথি বলা হয়েছে যে শিশ্ব সব সময়ে একটা কিছু করতে চায়—কাজ তার জীবনের সবচেয়ে বড় স্থান অধিকার ক'রে থাকে। নানারকম কাজের ভেতর দিয়ে সে বিভিন্ন অভিজ্ঞতা লাভ করে। হাতে কলমে কাজ করবার ও শেখবার জন্যে তার একটা স্বাভাবিক আগ্রহ থাকে। কাজের ভেতর সে যথেও আনন্দ পায় এবং নিজেকে প্রকাশ ক'রতে চায়। বিশেষ ক'রে যেসব কাজে হাতিয়ার (Tools) ব্যবহার ক'রতে হয় সেসব কাজে তার কাছে আরও মনোযোগ ও আকর্ষণের বিষয় হ'য়ে দশড়ায়। প্রত্যেক কাজের ভেতর দিয়ে শিশ্ব জিনিষ তৈরী করবার ক্ষমতা হ'য়ে থাকে। হাতিয়ার ব্যবহার ক'রলে তার দেহের পেশীগ্রির সামঞ্জ্যপূর্ণ বিকাশ (Co-ordination of muscles) হ'য়ে থাকে।

চামড়ার কাজে ঐ রকম বৈশিষ্ট্য আছে। এর মধ্যে দিয়ে শিশু নানারকম জান, গুণ, ও নিপুণতা লাভ করবার সুযোগ পায়; নানারকম হাতিয়ার ব্যবহার করবারও সুযোগ পেয়ে খাকে—হাতিয়ার নাড়াচাড়া ক'রে তার যথেষ্ট অভিজ্ঞতা বাড়ে; পরিষ্কার পরিছের কাজের প্রতি অনুরাগ ও সৌন্দর্যজ্ঞান জন্মায়; কাজ ক'রতে ক'রতে বিভিন্ন আকার, আয়তন, পরিমাপ ও পরিমাণের সঙ্গে পরিচিত হয়—অনুরাগ, একাগ্রতা ইত্যাদি বাড়বারও যথেষ্ট সুযোগ ঘটে। সমবায়প্রণালী ব্যবহার ক'রলে প্রয়োজনীয় নানাবিষয়ে জ্ঞানদান করা সম্ভব হ'তে পারে।

প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীতে কি কি কাজ দেওয়া যেতে পারে—কখন ও কিভাবে শেখান থেতে পারে।—এই দুই শ্রেণীতে চামড়া দিয়ে কোন জিনিষ তৈরী করান সম্ভব হবে না।

(১) কাগজ কাটা।—প্রথম অবস্থায় প্রানো খবরের কাগজ শিশুকে কণাচি দিয়ে কাটতে দেওয়া যেতে পারে। সে ইচ্ছেমত কাণিচ চালিয়ে কাগজ কাটবে—এতে কাণিচর ব্যবহার সম্বন্ধে তার হাতে কলমে জ্ঞান হবে। গোড়াতে হয়ত সে সোজাভাবে কাগজ কাটতে পারবে না, তবে অভ্যাসের সঙ্গে সঙ্গে তার পক্ষে সোজাভাবে কাগজ কাটা সম্ভব হবে।

তারপর মোটা কাগজ ও কা°িচ দিয়ে তাকে কাটতে দেওয়া যেতে পারে। এরকম কাগজ কাটবার সময়ে তার নতুন অভিজ্ঞতা হবে কেননা আগে সে যে কাগজ কেটেছিল তার-চেয়ে এ কাগজটা মোটা। এখানেও তার খানিকটা অভ্যাসের দরকার হবে।

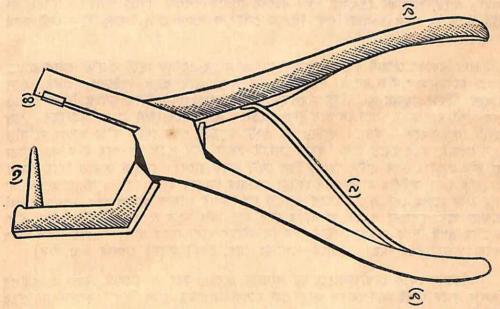
তারপর পেন্সিল ও ফ্টর্ল দিয়ে কাগজের ওপর সোজা দাগ টেনে সেই দাগের ওপর কাঁচি দিয়ে কাটবে। সোজা দাগ টানা ও ঐ দাগ অনুসারে কাটতে গিয়ে তার আরও নতুন অভিজ্ঞতা এবং কাগজ কাটবার অভ্যাস হবে।

কণিচি দিয়ে কাগজ কাটায় খানিকটা অভ্যুদ্ত হলে শিশুকে একটা নির্দিণ্ট আকারের (যার নমুনা দেওয়া হবে) কাগজ সমান ক'রে কাটতে বলা যেতে পারে। এতে আকার, আয়তন ইত্যাদির সঙ্গে তার পরিচয় হওয়ার স্যোগ হবে। কি ক'রে একটা নির্দিণ্ট আকারের কাগজ কাটা যায় সে সম্বন্ধেও তার ধারণা হওয়ার সম্ভাবনা আছে। তাকে এরকম কাজ করবার স্যোগ দিতে হবে।

সোজা লাইনে কাটবার অভ্যাস হবার পর শিশুকে গোলাকার, ত্রিকোণাকার ইত্যাদি কাগজ কাটতে বলা যেতে পারে।

এই ধরণের কাজের মধ্য দিয়ে শিশুর মাংসপেশীর সুসমঞ্জ বিকাশেও সাহায্য হবে।

- (২) जाठा मिर् काश्र रा प्ला प्ला प्ला प्ला प्ला प्ला प्ला काश्र क
- (৩) কাগজে ফুটো করা ও সেলাই করা।—কাগজ বা চামড়া ফুটো করবার যন্ত্রের সঙ্গে শিশুকে প্রথমেই পরিচিত করান যেতে পারে। ফুটো করার যন্ত্র (punching machine) কি রকম তার ছবি নিচে দেওয়া হলঃ—



(১) হাতল—এক হাতে দুটি হাতল একসঙেগ চাপতে হয়—হাতলের শেষের দিকে চাপ দিতে হয়।

(২) দিপ্রং—হাতল চেপে ছেড়ে দিলে আবার যথাস্থানে আসবার জন্যে দিপ্রংয়ের দরকার।

(৩) ব্লেড—হাতল চাপলে ব্লেডটি নিচের প্ল্যাটফর্মের সংস্পর্শে আঙ্গে এবং চামড়া বা কাগজ ফুটো হয়।

(৪) প্ল্যাটফর্ম—এর ওপর কাগজ বা চামড়া (যা ফুটো করতে হবে) রাখতে হয়। যে কাগজ বা চামড়া ফুটো করতে হবে তার নীচে অন্য মোটা কাগজ বা চামড়া দিয়ে নিতে হয়, তা না হ'লে ক্লেড প্ল্যাটফর্মের সংস্পর্শে বেশী এলে ক্লেডের ধার নন্ট হবার আশঙ্কা আছে।

এই यन्त्र किलादि वावरात कत्रात रस् किलादि वावरात कर्ना रस्क ध्रियस किना किलादि प्राचित्र क्रिया वावरात कर्ना क्रिया प्राचित्र विकास क्रिया वावरात कर्ना क्रिया प्राचित्र विकास विकास क्रिया विकास विता विकास वि

এইভাবে কাগজে ফুটো করবার পর বিভিন্ন আকারের কাগজ কেটে নির্দিণ্ট স্থানে সোজা লাইনে ফুটো করতে শিশুকে দেওয়া যেতে পারে। নির্দিণ্ট আকারের কাগজে নির্দিণ্ট স্থানে, সোজা লাইনে ও সমান দুরত্বে ফুটো করবার অভ্যাস খানিকটা হ'লে সেলাই করা শেখান যেতে পারে।

প্রথম ধরণের দেলাই ক'রতে গেলে স্তো বা দড়ির একদিক ফ্টোর নীচে থেকে ওপরে তুলতে হবে—আধ ইণ্ডি মত ঐ স্তো বা দড়ি ওপরে ডান ধারে লাইনের বরাবর ফেলে রাখতে হবে। স্তো বা দড়ির অন্যদিক ফ্টোর ওপর দিক দিয়ে নিচের দিকে আনতে হবে—আনবার সময় ওপরে যে আধ ইণ্ডি স্তো বা দড়ি আছে সেটা চেপে দিতে হবে—এতে একটা ফেণ্ড হবে—এইভাবে একটার পর একটা ফ্টোর ওপর থেকে নীচে স্তো বা দড়ি এনে সেলাই ক'রে যেতে হবে—এর্প সেলাই করলে ক্রমে প্রে যে আধ ইণ্ডি মত স্তো বা দড়ি ফ্টোর ওপর লাইন বরাবর ছিল সেটা ঢেকে যাবে। সেলাই ক'রতে গিয়ে স্তো বা দড়ি যখন ফ্রিয়ে যাবে তখন জোড়া দেওয়ার দরকার হবে। যে ফ্টোতে স্তো বা দড়ি শেষ হয়েছে সেই ফুটো থেকে প্রের্ মত সেলাই আরম্ভ ক'রতে হবে—এখানে লক্ষ্য রাখতে হবে প্রানো স্তো বা দড়ির শেষ অংশ এবং নতুন স্তো বা দড়ির প্রথম অংশ ফ্টোর ওপর দিকে সোজা লাইনে যেন সেলাইয়ের মধ্যে ঢেকে যায়। এভাবে সেলাইয়ের সময় জোড়া দেওয়া হয়। এভাবে কাগজের লেস্ তৈরী ক'রেও সেলাই করা যায়।

অভিজ্ঞতা থেকে দেখা গিয়েছে যে কাগজে ফুটো করা ও সেলাই করা এ বয়সের শিশুর কাছে খুবই আনন্দদায়ক কাজ এবং যথেন্ট আগ্রহের সঙ্গে শিশু একাজগুলো ক'রে থাকে।

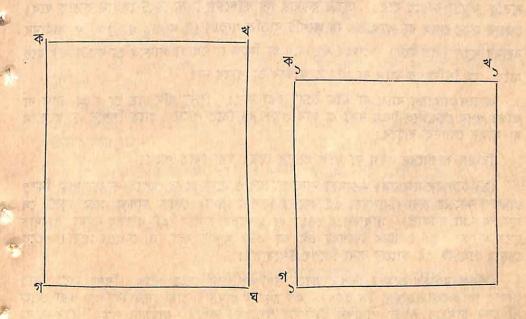
(8) विख्त बाकारत कागळ काछा ও नजा वा ছবি बांका।—अपछ नम्ना जन्नारत काछि पिरा पाछा कागळ निर्षिण वाकारत नमान करेत काछर पिरा पाछा कागळ निर्षिण वाकारत नमान करेत काछर पिरा काछर पिरा पाछा कागळ नम्ना परण भारत। किखार नम्नात नमान करेत काछर शारत किश्वा नम्नाछा परण निरा प्रचे मान कागळ उन्हें कागळ काछर नारत कागळ काछर नारत कागळ काछवात नम्ना परण निरा प्रचे मान वा बाव किया पर्मा कागळ काछर नारत नार्मा वा बाव किया वा किया कागळ वा किया व

णात र्जा जिल्ला रहा। ति निर्देश निर्द

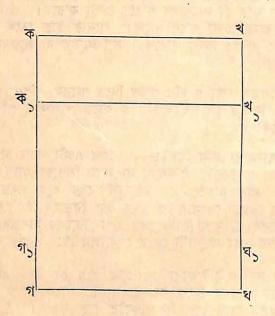
প্রয়োজনবোধে শিক্ষক নঙ্গা ও ছবি এ°কে দিতে পারেন—শিশ্ব তার ওপর রঙ দিতে পারে। তা হ'লেও শিশ্বর সৌন্দর্যান্ভূতি ও কাজে পরিষ্কার পরিচ্ছনতা পরিপ্রিষ্টিলাভ করবার স্থোগ পাবে।

(৫) काগজের ব্যাগ বা থালি তৈরী।—কাগজের একটা ব্যাগ বা থালির নমুনা শিক্ষক শিশ্র কাছে উপিন্থিত ক'রবেন। ঐ নমুনা অনুসারে শিশ্রকে ব্যাগ বা থালি তৈরী ক'রতে বলা যেতে পারে। মনে রাখতে থবে নমুনাটি যেন খুব সহজ হয়। প্রথমে শিশ্র নমুনাটী হাতে নিয়ে দেখবে কোথায় কি আছে এবং কিভাবে তৈরী করা হয়েছে। তারপর ঐ নমুনাটির চারদিকের পরিমাপ (আঙগুলের বা ফুটরুলের সাহায্যে) নিতে চেন্টা ক'রবে কিংবা মোটা কাগজের ওপর নমুনাটি ফেলে পেন্সিল দিয়ে চারদিকে দাগ দেবে।

ব্যাগ বা থলির জন্য দুই টুকরো কাগজের প্রয়োজন হয়—একটি বড় আর একটি ছোট। বড় কাগজটি ওপরের দিকে কতকটা বাড়তি থাকে যাতে ভ°াজ ক'রে ব্যাগ বা থলিটা বন্ধ করা যায়—ছোট কাগজটি পকেটের কাজ করবে। ঐ রকম দুটো কাগজি শিশ্ব কাটবে—দেখতে হবে চার্নিক যেন সমান হয়।



দুটো কাগজ এমনভাবে কাটতে হবে যাতে চওড়া সমান থাকে—লম্বা বড় ও ছোট হবে। বড় কাগজের ওপর ছোট কাগজে এমনভাবে বসাতে হবে যাতে গ য এর ওপর গ $_5$  য $_5$  সমানভাবে পড়ে। ছোট কাগজের তিনদিকে (ক $_5$  গ $_5$ , গ $_5$  য $_5$  ও খ $_5$  য $_5$ )  $\frac{1}{8}$  ইণ্ডি জারগার আঠা দিতে হবে—ওপর দিক (ক $_5$  খ $_5$ ) খোলা থাকবে স্তুবাং আঠা দিতে হবে না। আঠা দিয়ে লাগাবার পর ব্যাগ বা থালর চেহারা কেমন হবে নিচে দেখান গেল:



बाठा निरंत छाड़ा एए आतं भंत कर्षां कर्तात यन्त निरंत हार्तिक साछा नारेत छ भरान म्या क्रिया कर्तात भंत कर्षा कर्तात भंत कांगि कर्ता कर्षा करिया कर्षा कर्षा करिया कर्षा करिया करिया

এভাবে সাধারণ ব্যাগ বা থলি তৈরী করা যায়। শিশ্ব যদি চায় তা হ'লে ব্যাগ বা থলির ওপর পেন, সিল দিয়ে নক্সা বা ছবি এ°কে রঙ দিতে পারে—তাতে শিশ্বর কাছে ব্যাগ বা থলির সৌন্দর্য বাড়বে।

বিভিন্ন আকারের ব্যাগ বা থলি এভাবে তৈরী করা যেতে পারে।

(৬) চামড়ার ব্যবহার।— চামড়া নানা রক্মের ও নানা রঙের দেখতে পাওয়া যায়, কিন্তু চামড়ার কাজের জন্য (বিশেষতঃ এই বয়সের শিশ্র জন্য) কোন চামড়া সর্বোংকৃষ্ট সে সম্বন্ধে বলা দরকার। সাধারণতঃ ভেড়া বা ছাগলের চামড়া এই কাজের জন্য ব্যবহার হ'য়ে থাকে। এই চামড়ার বিশেষত্ব এই যে এটা খুবই নরম ও দেখতে সাদা। তবে ভেড়ার চামড়াই এই কাজের জন্য বিশেষ উপযোগী।

বিভিন্ন রকমের চামড়া শিশ্বর কাছে উপস্থিত করা যেতে পারে—শিশ্ব হাতে নিয়ে দেখতে পারে কোন চামড়া কি রকম। যত রকমের চামড়াই তার কাছে উপস্থিত করা হোক না কেন চামড়ার একটা সাধারণ বৈশিষ্ট্য সে লক্ষ্য কর্বে—চামড়ার দুই পিঠের মধ্যে একপিঠ খুবই মস্ণ আর এক পিঠ খুসখসে। মস্ণ পিঠটা লোমের দিক  $(Hair\mbox{-side})$ 

ও খসখদে পিঠটা মাংসের দিক (Flesh-side)। শিশ্ব বিভিন্ন চামড়া সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা লাভ ক'রে চামড়ার পার্থক্য ব্বতে পারবে। মোটা চামড়া কাটা বা তাতে কোন কাজ করা এই বয়সের শিশ্ব পক্ষে কঠিন। তাছাড়া চামড়ার ওপর কোন কাজ ক'রতে গেলে চামড়াটা সাদা হ'লে ভাল হয়। বাজারে যেসব চামড়া কিনতে পাওয়া যায় তার অধিকাংশই রঙগীন এবং মোটা। এসব কারণেই ভেড়া বা ছাগলের চামড়া এই কাজের উপযোগী হবে।

চামড়ার সঙ্গে শিশ্র পরিচয়ের বেলায় সমবায় প্রণালীর সাহায্যে শিশ্কে ভেড়া বা ছাগল সম্বন্ধে কতকটা জানদান করা যেতে পারে। অবশ্য এই বয়সের শিশ্ প্রায় প্রত্যেকেই ভেড়া বা ছাগল দেখেছে এবং ওগুলো সম্বন্ধে বাস্তব অভিজ্ঞতাও শিশ্র থাকা সম্ভব। শিশ্র বয়স ও মানসিক স্থমতা অনুযায়ী সমবায় প্রণালীর ব্যবহার ক'রতে হবে — এখানে লক্ষ্য রাখতে হবে শিশ্র যে জান লাভ করবে তা যেন স্বাভাবিকভাবে আসে। ভেড়া বা ছাগল থেকে কি উপায়ে চামড়া কাজের জন্য প্রস্তুত করা হয় সে বিষয়ে এই বয়সের শিশ্কে বোঝান সম্ভব হবে না।

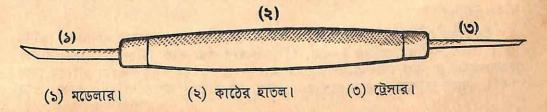
চামড়ার কাজ ক'রতে হ'লে কিভাবে চামড়া কাজের উপযোগী ক'রতে হয় তা শিশুকে দেখান যেতে পারে। কেন এইরকম করা দরকার তাও শিশুকে বুঝিয়ে দেওয়া যায়। দোকান থেকে যখন চামড়া কিনে আনা হয় তাতে ময়লার দাগ, কাটার দাগ, ভাজ ইত্যাদি থাকে; ওগুলো প্রথমে দুর করা দরকার।

প্রথমে তুলো বা নর্ম কাপড়ের টুকরো ঠাণ্ডা পরিষ্কার জলে (জলের সঙ্গে একটু Oxalic acid মিশিয়ে নিলে আরও ভাল হয়) ভিজিয়ে চামড়ার মস্ন পিঠ বেশ ভাল ক'রে ঘসতে হবে। যখন চামড়ার সমস্ত অংশ ঘসা হ'য়ে যায় তখন কাঠের বেলুন দিয়ে রুটী বেলার মত নিচ থেকে ওপর ও ওপর থেকে নিচে এইভাবে চামড়ার চার্নিক বেলতে হয়। যত বেলা হবে ততই চামড়ার মস্ণ পিঠ থেকে ময়লা, কাটার দাগ, ভাজ ইত্যাদি দুর হয়ে যাবে—চামড়ার ওপর মস্ণ পিঠটা আরও মস্ণ হবে এবং কাজের উপযোগী হবে। চামড়ার কাজ ক'রতে গেলে সর্বপ্রথম এই কাজ ক'রতে হয়।

(৭) চামড়া কাটা ও ফুটো করা।—কা°চির সাহায্যে শিশুকে চামড়া কাটতে দেওয়া যেতে পারে। কাগজ কাটবার সময় শিশু যে যে নিয়ম পালন ক'রেছিল চামড়ার বেলায়ও সেই সব নিয়ম তাকে পালন করতে হবে। বিভিন্ন আকারের ও আয়তনের সমান ক'রে চামড়া শিশুকে কাটতে দেওয়া যেতে পারে। আগেই বলা হয়েছে ভেড়ার চামড়া খুবই নরম এবং এই বয়সের শিশুর পক্ষে কাটা কঠিন হবে না। শিশু আনন্দ ও উৎসাহের সঙ্গে এই কাজ ক'রবে।

চামড়া কাটবার অভ্যাস হবার পর চামড়া ফুটো করবার যন্ত্রের সাহায্যে চামড়ায় ফুটো ক'রতে শিখবে। কাগজ ফুটো করবার সময় শিশু যা যা করেছিল চামড়ার বেলায়ও তাই ক'রতে হবে।

(৮) চামড়ার ওপর নক্সা বা ছবি আ°কা ও রঙ করা।—নির্দিণ্ট আকারের চামড়া কাটবার পর প্রবিণিতি নিয়ম অন্যায়ী চামড়া পরিজ্ঞার ও মস্থা ক'রতে হবে। চামড়ার ওপর নক্সা বা ছবি আ°কা ও দপ্ট করবার জন্য একটি যন্তের দরকার। সেই যন্তের ছবি নীচে দেওয়া হলঃ—



চামড়ার ওপর শিশ্র যদি একবারে নঙ্গা বা ছবি আঁকতে চায় তবে ট্রেসারের সাহায্যে চামড়ার ওপর দাগ দিতে পারে। কাগজে পেনসিলের যে কাজ চামড়ায় ট্রেসারের সেই কাজ। চামড়ার ওপর পেন্সিলের দাগ দেওয়া উচিত হবে না কেননা সে দাগ আর উঠবে না। রঙ করবার সময় পেনসিলের দাগ সমস্ত ছবিটাকে বিকৃত ক'রতে পারে। প্রথম অবস্হায় শিশ্র ট্রেসারের দ্বারা চামড়ার ওপর তার ইচ্ছামত ছবি অাকতে পারে। ছবি আঁকার পর মডেলারের সাহাযে। ছবিটা আরও স্পন্ট করতে পারে—ট্রেসার দিয়ে যে লাইনগুলো চামড়ার ওপর দেওয়া হয়েছে ঐ লাইনগুলোর ওপর মডেলারের সরু দিক দিয়ে বে বিল থেকে ডান দিকে) লাইনগুলো আরও স্পন্ট ক'রতে হবে। ছবিতে যে দিকটা একট্র নামিয়ে দেওয়া দরকার সে দিকটা মডেলারের চ্যাপটা দিক দিয়ে চেপে দিতে হবে। হাবিতে বে তা হ'লে ছবিটা বেশ ফুটে উঠবে।

এইভাবে ছবি চামড়ার ওপর তোলার পর রঙ দেওয়ার কাজ ক'রতে হবে। বিভিন্ন রঙ ব্যবহার ক'রলে কি রকম ফল (effect) হয় শিশ্ব আগেই তার অভিজ্ঞতা থেকে লাভ ক'রছে। কাগজে রঙ করবার সময় রঙের গ°ুড়ো জল দিয়ে গুলেলে নিয়েছে, কিল্টু চামড়াতে রঙ করবার সময় রঙের গ°ুড়ো জল দিয়ে গুললে হবে না। চামড়ায় রঙ করবার জন্য ভিন্ন রঙ আছে—তাকে spirit stain বলা হয়। ঐ রঙের গ°ুড়ো দেখিলেটেড স্পিরিট (methylated spirit)এ গুলতে হয়়—স্পিরিটে গোলা রঙ চামড়াকে খ্ব স্কর ও উজ্জবল করে। রঙ য়ত উজ্জবল হবে শিশ্ব ততই আকৃষ্ট হবে এবং রঙের ফল সম্বন্ধে শিশ্ব অভিজ্ঞতা ততই রাড়বে। শিশ্ব চামড়ার ওপর ছবি আঁকবে ও রঙ দেবে।

একটা ছোট মাটির পাত্রে (যেটা খুব ভাল ক'রে পোড়ান ও মস্ণ হবে) সামান্য রঙের গ°ুড়ো দিয়ে তাতে স্পিরিট মেশাতে হয়। রঙ গোলা হ'য়ে গেলে নরম সাদা কাপড়ের টুকরো দিয়ে তুলি বানিয়ে গোলা রঙের মধ্যে ডুবিয়ে চামড়ার উপর যে ছবি আছে তাতে রঙ দিতে হয়। রঙ দেওয়ার কাজটা একটু তাড়াতাড়ি না করলে স্পিরিটটা উড়ে যাবে, আবার স্পিরিট মেশাতে হবে। রঙ করার সঙেগ সঙেগ অবশ্য ছবির রঙ শুকিয়ে যাবে। ছবিতে রঙ দেওয়া হ'য়ে গেলে ক'াচের কাগজ-চাপা (Glass paper weight) দিয়ে রঙ করা ছবিটা এবং তার আসেপাশের স্থান (যা রঙ করা হয়েছে) বেশ ভাল ক'রে ঘসতে হবে—ক'াচের কাগজ-চাপার গোল মস্ণ দিক দিয়ে ঘসতে হয়। ঘসা হ'লে পর চামড়ার ওপর ছবিটা খুব চকচকে দেখাবে।

(৯) পাঠটীকার নমুনা—চামড়ার কাজের মাধ্যমে সমবায় প্রণালীতে শিক্ষাদান— পাঠটীকা।—শ্রেণী—দ্বিতীয়। বয়স—৭-৮ বংসর। বিষয়—কাগজের ব্যাগ বা থলি তৈরী। সময়—৩ দিন (প্রত্যহ ৩০ মিনিট)।

উদ্দেশ্য।—(এই বয়সের শিশ দের পক্ষে সত্যিকার চামড়ার কাজ সম্ভব হবে না— কাগজ দিয়েই জিনিষ তৈরী ক'রতে পারে এবং তাতে চামড়ার কাজের জন্য শিশ কে প্রস্তুত করান যেতে পারে।)

এই কাজ ক'রতে গিয়ে শিশ্ব বিভিন্ন বিষয়ের সঙেগ পরিচিত হবে এবং কোন কোন বিষয়ে প্রয়োজনীয় জ্ঞানলাভ (যেমন পঠন, লিখন ও গণিত) করবার সুযোগ পাবে। এছাড়া স্জনাত্মক কাজ ক'রে শিশ্ব আনন্দ পাবে এবং হাতের কাজের প্রতি তার আগ্রহও বাড়বে।

উপকরণ।—মোটা কাগজ, ক'াচি, আঠা, ফুট রুল, রঙ, তুলি ও কাগজের ব্যাগ বা

উপস্থাপন ও অনুশীলন।—শিহ্নক শিশ্বদের বলতে পারেন, 'তোমরা নানারকম জিনিষ (ছোট শেলট পেন, সিল, খড়ির টুকরো, ছবি, ব্যবহার করা ডাক টিকিট ইত্যাদি) যোগাড় ক'রে পকেটে বা অন্য কোন জায়গায় রেখে থাক—এতে অনেক সময় ওগুলো হারিয়ে যেতে পারে। যাতে হারিয়ে না যায় তার জন্য আমরা কি ব্যবস্থা করতে পারি? আমরা এমন वावञ्चा कत्रत्व भारत वार्ष्ठ जिन्सभ (ला भर्ष्ण ताथा भर्म्म व्यव रया।" वे काजीय कथावार्जात स्था मिर्य मिर्य एपत का प्राप्त वार्ष्य वार्ष्य वार्ष्य वार्ष्य भर्म प्राप्त का प्राप्त वार्ष्य वार्ष वार्ष्य वार्ष्य वार्य वार्ष्य वार्य वार्य वार्य वार्ष वार्य वार्य वार्य वार्य वार्य वार्य वार्य वार्य वार्य व

শিশ্বখন কাজ করছে শিক্ষক তখন লক্ষ্য রাখবেন ব্যাগের আকার, আয়তন ও পরিমাপের সঙেগ শিশ্ব যেন হাতে-কলমে পরিচিত হবার সুযোগ পায়। এইভাবে শিশ্ব গণিত সম্বন্ধে খানিকটা ব্যবহারিক জান লাভ করবে। শিশ্ব কতক্ষণ বা কতদিন কাজ ক'রে ব্যাগ তৈরী ক'রল তা থেকে সে গণিতের জান লাভ করতে পারবে।

কাজ করতে করতে শিশু যেসব অস্বিধা বোধ ক'রল সেগুলোর সমাধানের দ্বারাও
শিশ্র অভিজ্ঞতা লাভ হয়। তার কাজের হিসেব রাখবার জন্যে পঠন ও লিখনের প্রয়োজন
হবে। শিশু কিভাবে কাজ ক'রল তা বলতে গিয়ে সে তার প্রকাশ করবার ক্ষ্মতার পরিচয়
দেবে এবং কতকগুলো নতুন শব্দ বাস্তব অভিজ্ঞতার ভেতর দিয়ে শিখবে। শিশু যা বলবে
তা লিখবে; এতে তার পঠন ও লিখন অভ্যাস হবে।

ব্যাগটি সাজাতে গেলে শিশ্ব তার ওপর ছবি আ°কবে ও রঙ করবে। এই কাজ করতে গিয়ে শিশ্বর সৌন্দর্যজ্ঞান বাড়বে ও কাজটি যাতে পরিজ্ঞার পরিজ্ঞার হয় সেদিকেও সে লক্ষ্য রাখবে।

# (ঘ) হাতে তৈরী কাগজ-শিল্প

वृत्तिसामी विमालसं राठ ठिती काग्र প्रम्नूटित वाक्रा साथरित भारति छाल रस्। काग्र मिल्य मिल्य प्रम्नूटित अर्स भूव छिलि तसं जात मिल्य मिल्य वावरात जनवलरे प्रमार छ कत्र वं त्या थरित प्रमाण विकार प्रमाण वावरित वाधरित जाधरित जाधरित प्रमाण वावरित वाधरित जाधरित वाधरित वाधरित वाधरित वाधरित हिला। वापरित प्रमाण वापरित वाधरित वाधरित

বিদ্যালয়ের জন্য এই শিল্প-ব্যবস্থার যতদরে সম্ভব সাধারণ আসবাব ও গ্রাম্য উপকরণ ব্যবস্থা করাই ভালো। নিম্নলিখিত উপকরণগর্লি হ'লে মোটামুটি কাজ চলতে পারেঃ—

(১) উপকর্ণগুলি সাফ করা ও ভিজানো—মণ্ড গোলা (বিটার) ও পাম্প হ'তে কাগজ তুলবার জন্য চারটা মাঝারি চৌবাচ্ছা বা লোহার পিপে।

- (২) উপকরণগুলি কোটার জন্য ঢে°কি বা হামানদিস্তা।
- (৩) মণ্ড প্রস্তুতের জন্য দ্রাম অভাবে ঢাক,নাযুক্ত কড়াই ও চুল্লী।
- (৪) মণ্ড ঘ°ুটবার জন্য মন্থনী।
- (৫) কাগজ তুলবার জন্য জালিযুক্ত ফ্রেম।
- (৬) কাগজ ছ°াকার জন্য পাতলা অথচ সমান বোনা বস্ত্রখণ্ড—অনেকগুলি।
- (৭) চাপ দিয়ে জল ঝরাবার জন্য প্রেসার, অভাবে ওজন ও দুটী শক্ত লোহার প্লেট।
- (৮) পালিশ করার জন্য রোলার, অভাবে পাথরের শেলট ও শামুক বা শাখ।
- (৯) শুকাবার জন্য নিচু দেওয়াল বা টিনের পাত।

উপকরণ।—(ক) ছেভ্ন কাগজ, তুলা, স্তা, উলো জাতীয় শুকনা ঘাস, পাট, সরু ক'রে চেরা, বংশের (ব্যবহ্ত) খাদি ইত্যাদি।

- (খ) কাপড় কাচা সোডা, ফার, রোজিন, সাবান, কণ্টিক সোডা, অভাবে চূণ ও সোডা, রঞ্জক দ্রব্য প্রভৃতি রসায়নিক দ্রব্য—সাইজিং করার জন্য (ছিদ্রহীন করার জন্য) গ্লু, অভাবে আতপ চালের গ্রুড়ি বা এরার্ট।
  - (গ) কাটবার জন্য ছুরি, কা<sup>®</sup>চি।

বিভিন্ন বয়সের শিশ্রা একরে এই শিল্পটী সম্পন্ন করবে। তাদের বয়স ও যোগ্যতা-ভেদে কাজ বেছে দিতে হ'বে। নিচে তার কিছ্ ইঙিগত দেওয়া গেল। এ ব্যাপারে শিশ্বদের স্থমতা, মানসিক আগ্রহ ও শিক্ষার সুবিধা দেখা হ'য়েছেঃ—

- (५) উপाদান সংগ্রহ।—এই কাজটী ১ম ও ২য় শ্রেণীর শিশ দের উপযোগী। সাফাই কাজের সঙ্গে সম্বন্ধ রেখে এই কাজটি করানো যায়। এ হ'তে তারা নানা জিনিষের নাম শিখবে সংখ্যা গণনা ও ওজন করা শিখবে ও হিসাব রাখার প্রয়োজনের সম্মুখীন হ'বে এই কাজ করার সময় পরিচ্ছয়তা রক্ষার ব্যাপারে সাবধান হ'তে শিখবে। আপাতঃ-দ্বিত অকেজো জিনিষকে প্রয়োজনীয় কাজে লাগাতে শিখবে।
- (७) काशक त्राहेकिः ও पालिम कता।—এकाक्ष २ सं, ७ सं त्यानीत छेपर्याशी। जाता अञ्चल त्या व्याप्त व्याप्त

(৪) খাতা, খাম, চিঠির প্যাড, ঘুড়ি প্রভৃতি তৈরী।—একাজগুলিও ২য়, তৃতীয় শ্রেণীর পক্ষে বেশ উপযোগী। অবশ্য আরও বড়দের সহায়তায় করলে নন্ট হবার ভয় কম থাকে। কাজগুলি আনন্দদায়কও বটে—হিসাব করার সুযোগও যথেন্ট হয় আর রঙিন কাগজের ব্যবহার ল্বারা রঙ চিনতে শেখে—শিল্পবোধ হয়। গণনা ও হিসাব করতেও শেখে। রঙিন কাগজ করার জন্য রঙ নিবাচন, মিশ্র রঙ প্রস্তুত প্রভৃতি কাজে এইর্প ছোট শিশ্বদের সহায়তা নেওয়া ভালো—তাতে তারা আনন্দ পায় আর রঙ চিনতে ও মিশ্র রঙ করতে শেখে।

এছাড়া অন্য কাজগুলি অপেক্ষাকৃত বড় ছেলেরা করবে—অবশ্য ছোটরাও অংশ নিতে পারে তাদের কাজে।

কাগজ শিল্প মাধ্যমে কাগজের গল্প, কি ক'রে মানুষ প্রথমে লিখতে শেখে, কেমন ক'রে অক্ষর ও ভাষার জন্ম হয় প্রভৃতি বিষয়ে কৌতুহল জাগিয়ে প্রাচীন মানুষের ইতিহাস এবং কাগজ শিল্পের বর্তমান অবস্হার সঙ্গে পরিচিত করতে গিয়ে ভূগোল শেখানো যায়।

# (ঙ) মাটির কাজ

স্জনাত্মক কাজের মধ্যে বোধ হয় শিশ্বদের সর্বাপেক্ষা বেশী আকৃষ্ট করে মাটির কাজ। সকলেই হয়তো লক্ষ্য করেছেন যে শিশ্ব কাদা ও বালি নিয়ে খেলা করতে কি রকম আনন্দ পায়। মাটি, কাদা বা বালি হাতে ক'রে চট্,কিয়ে তারা সর্বদাই কিছু একটা গড়তে চেন্টা করে। তারা শ্ব্র র্প দিতেই যে আনন্দ পায় তা নয়, পরন্তু তার মধ্যে যে স্পর্শেন্দ্রের(haptic feeling) আনন্দ আছে তাও তাদের বিশেষ ক'রে আকৃষ্ট করে। কেননা শিশ্বরা জন্মাবধি সবগ্লি ইন্দ্রিয়ের সাহাযে প্থিবীতে ব্রুতে ও জানতে চায় এবং ইন্দ্রিয়গ্লিকে সর্বদাই সক্রিয় রাখতে চায়। বস্তু হিসাবে শিশ্বদের কাছে ইহার আকর্ষণের আর একটা দিক আছে। তা হছে শিশ্বরা ভাঙগা-গড়ার পক্ষপাতী। স্বুতরাং সেদিক দিয়ে মাটির তুল্য বস্তু বোধ করি সংসারে আর নেই। শিশ্বরা যখন মাটি নিয়ে খেলা করে তখন লক্ষ্য করলে দেখা যাবে যে তারা বারবার গড়ছে আর তা ভেঙেগ ফেলছে।

रयमन ছবি আ°काর বেলায় খুব কম বয়সের শিশুরা (২ অথবা ২ বৈংসর বয়সের)
প্রথমে কোন একটা নির্দিষ্ট জিনিষ আ°কে না, শুধু হিজি-বিজি এ°কেই তৃত্ত হয়, তেমনি
মাটির কাজের বেলায়ও প্রথম প্রথম শুধু চটকিয়ে বা এব৻ড়ো থেব৻ড়াভাবে মাটিকে রুপ
দিয়েই হ্লান্ত হয়, কিন্তু বয়সের সঙেগ সঙেগ তা একটা বিশেষ রুপ নেয়। তখন তারা
একটা জিনিষের অনুকরণে গড়ার চেষ্টা করে, যেমন কোন জন্তু, পাখী বা মানুষ। ঘটি,
থালা, ত্লাস ইত্যাদিও করতে তারা ভালবাসে।

পথিত।—অন্যান্য স্জনাত্মক কাজের বেলায় শিশুকে যেভাবে পরিচালিত করতে হবে মাটির কাজেও শিশুকে সেভাবেই পরিচালিত করতে হবে। যতদ্র সম্ভব শিশুরা নিজেরাই নিজেদের কাজ পরিচালনা করবে, তবে সত্যই যেখানে শিশুরা নিজেদের সকল চেন্টা প্রয়োগ করেও পারছে না সেখানে শিক্ষক সাহায্য করবেন।

সর্ঞাম।—সর্ঞাম সম্বন্ধে বিশেষ কিছু বলার নাই, কারণ মাটি প্রায় সব জায়গাতেই পাওয়া যায়; তবে এ কাজের জন্য সবচেয়ে ভাল মাটি হল এ°টেল মাটি অথবা নদীর তলের বা পুকুরের তলের মাটি। মাটিগুলোকে বেশ ভাল ক'রে মেখে ভিজে চট বা কাপড় দিয়ে ঢেকেরেখে দিলে ভাল হয়। এতে তা সব সময়ে ভিজে থাকে এবং কাজের উপযোগী থাকে।

# यर्ष जध्या य

# (ক) গাহস্থ্য বিজ্ঞান

গার্হ বিজ্ঞান বলতে আমরা বুঝি গৃহসম্বন্ধীয় বিশেষ জ্ঞান; সুষ্ঠুভাবে গৃহস্থালি করতে হলে যে সকল বিষয়ে জানা এবং যে সকল কর্তব্য পালন করা উচিত সেই সম্বন্ধে পরীক্ষা ও যুক্তিন্বারা নিশ্তিত শৃঙ্খলাবন্ধ জ্ঞান।

আমাদের দেশে বর্তমানে যে শিক্ষাপণ্ধতি প্রচলিত আছে, তাতে নবম ও দশম শ্রেণীতে কেবল মেরেরা গণিতের পরিবর্তে অন্যতম বাধ্যতাম লক বিষয় হিসাবে গার্হস্থ্য বিজ্ঞান অধ্যয়ন করতে পারে। কিন্তু সাধারণভাবে ছাত্র-ছাত্রীদের এই সম্বন্ধে কিছু শিক্ষা দেবার ব্যবস্থা নাই।

त्र्वाण्टाण्य थवर शार्षण्टा विकासित मस्या नम्बन्धि विचि । निम् कान स्थिक वानकवानिकासित विज धराकिनी थे से प्रि विचया नम्बन्धि विचि निक्ति। निम् कान स्थिक वानकवानिकासित विज धराकिनी थे ये प्रि विचया नम्बन्धित विकासनाएक नम्बन्धित स्थाश स्थाश वर्षा ना वर्षा वर्षाम निम्हालप्धित जारमता क्षित्र वर्षाम वर्षा वर्ष

সাধারণতঃ দেখা যায় যে স্কৃত ও সবল শিশ্রা চণ্ডল হয় এবং খেলা করতে ভালবাসে—বিশেষতঃ সেইসব খেলা যার মধ্যে যথেষ্ট অঙ্গচালনার প্রয়োজন হয়। প্রথম শ্রেণীর শিশ্বদের এই ''খেলা প্রথতির'' দ্বারাই অতি স্বন্ধর ও হৃদ্য়গ্রাহী ভাবে গার্হত্য বিজ্ঞান শিশ্বদের এই ''খেলা প্রথিতর'' দ্বারাই অতি স্বন্ধর ও হৃদ্য়গ্রাহী ভাবে গার্হত্য বিজ্ঞান শিশ্বা দেওয়া যেতে পারে। শিশ্বদের কাছে খেলা এবং কাজের মধ্যে কোনও স্বনির্দিষ্ট সীমারেখা থাকে না। স্বৃতরাং খেলাছলে কাজ ও কাজের ছলে খেলা করে' তারাও আনন্দ লাভ করে এবং সেই স্থোগে শিক্ষক শিক্ষয়িত্রীগণও তাদের শিক্ষা দিতে পারেন। অবশ্য, সব সময়েই মনে রাখতে হবে যে যে সকল কাজ শিশ্বা করবে, সেগ্রাল যেন তাদের ব্য়সের পক্ষে অতিরিক্ত শ্রমসাধ্য না হয়, অথবা তাদের শারীরিক কি মানসিক কোনও রক্ম ক্ষতি যেন না হয়।

শারীরিক ছাতি কেমনভাবে হতে পারে তা সহজেই বোঝা যায়। উদাহরণস্বর্প বলা যেতে পারে যে একটি ছোট শিশ্কে যদি একটি স্ন্য় ছুঁচে স্তো পরাতে দেওয়া হয়, তাহলে তার চোখের ছতি হবার সম্ভাবনা আছে কারণ তখনও তার চোখের পেশীগুলির প্রস্তুতি সম্পূর্ণ হয় নি। তেমনি, যে কাজ শিশ্র সাধ্যের অতীত, সে কাজ করতে বারবার চেন্টা করলে এবং ক্রমাগত বিফল হলে শিশ্র মানসিক ছতি হবার সম্ভাবনা আছে। বারম্বার ভগ্নোংসাহ হয়ে শিশ্রা ক্রমে আজুবিশ্বাস হারিয়ে ফেলে এবং পরে কোনও কাজ করতে অগ্রসর হ'তে দ্বিধা বোধ করে।

এমন প্রশ্ন উঠতে পারে যে বালকদের গার্হ ছিলান শিক্ষা দেবার কোনও সার্থকিতা আছে কিনা। অনেকে মনে করেন যে বালিকারাই যখন উত্তরকালে বধ্রেপে ও গ্রিণীর পে নিজ নিজ গ্রহে প্রতিষ্ঠালাভ করবে, তখন কত স্ক্রেজাবে ও কত অলপ আয়াসে ও অর্থে

স্চার্র্পে সংসার্যানা নির্বাহ করা যায় সে বিষয়ে পার্দশিতালাভ করবার জন্য এই গাহস্তা বিজ্ঞান কেবলমান বালিকাদেরই শিক্ষণীয় বিষয় হওয়া উচিত। কিন্তু, গ্হসম্বন্ধীয় যাবতীয় বিষয়ে সম্পূর্ণর্পে অজ্ঞ এবং অনভিজ্ঞ থাকলে নর্নারী নির্বিশেষে কোনও মানুষেরই শিক্ষা স্ক্সম্পূর্ণ হয়েছে বলে মনে করা যায় না।

তাছাড়া, গার্হস্য বিজ্ঞান যে কেবলমাত্র গৃহস্থালির কাজে স্নিপ্রণ করে তোলে তাই নয়—এর আর একটি দিক আছে—দেটি হল সৌন্দর্যবোধ, সৌন্দর্যজ্ঞান এবং স্বর্চির বিকাশ। স্তরাং বর্তমান বালক, উত্তরকালে যে গ্রুকর্তার আসন গ্রহণ ক'রবে, ভবিষ্যৎ নাগরিকর্পে যে সমাজদেহকে স্বন্ধর ও স্কৃষ্থ করে গড়ে' তুলবার দায়িত্ব গ্রহণ করবে, তার পক্ষেও এই বিষয়টি অবশ্য শিক্ষণীয়।

প্রেই বলা হয়েছে, যে, প্রথম শ্রেণীতে প্রধানতঃ স্কোনাত্মক খেলা এবং কল্পিত পরিস্থিতির মধ্য দিয়েই গার্হস্থা বিজ্ঞান শিক্ষা দেওয়া ভাল। এই সময়ে তাদের কোনও পাঠ্যপ্রস্তক দেবার প্রয়োজন নাই। হাতের কাজ এবং সেই সম্বন্ধে আলোচনার মধ্য দিয়েই শিশ্রা ক্রমে বাস্তবের সঙ্গে পরিচিত হতে থাকবে। শিশ্রা যতই বড় হতে থাকবে, এই সকল আলোচনার মধ্য দিয়েই ক্রমে তাদের প্রয়োজনীয় তথ্যাদি শিক্ষা দেওয়া যাবে।

শিশ্বচিতাকর্ষক এমন কয়েকটি খেলা ও কাজ, যার মধ্য দিয়ে গার্হস্থ্য বিজ্ঞান শেখানো যৈতে পারে, তার তালিকা দেওয়া হলঃ—

- 5। रथला।—(क) প্তুলের বাড়ীঃ এই গৃহটি এতখানি বড় হওয়া প্রয়োজন, যাতে এর মধ্যে একটি সম্পূর্ণ প্তুল পরিবার স্বছন্দে এবং অনায়াসে বাস করতে পারে, এমন কিছোট শিশ্রাও তার মধ্যে ঢুকে খেলা করতে পারে। প্তুলের বাড়ীর পরিকল্পনা থেকে স্বল্ব করে' তার সাজানো, গোছানো আসবাবপত্র সংগ্রহ করা ও তৈরী করা এবং সেটিকে সর্বদা স্করে ও পরিছয় রাখার কাজে শিশ্বদের উৎসাহিত করা উচিত। কৌশলী শিক্ষক প্তুলের বাড়ীর আলোচনার মধ্য দিয়েই ক্রমে শিশ্বদের মনে সৌন্দর্যবোধ ও পরিছয়রতাবোধ জাগিয়ে তুলতে সক্ষম হবেন।
- খে) শিশ্রা বিদ্যালয়ে নিজেদের শ্রেণীকক্ষগুলি পরিজ্নার পরিছেন্ন রাখবে। আসবাব-প্রের ধুলো ঝেড়ে ও ফুল্দানিতে ফুল সাজিয়ে শ্রেণীর সৌন্দর্য বর্ধন করবে। বই, স্লেট ইত্যাদি প্রয়োজনমত ব্যবহার করে আবার যথাস্থানে গুছিয়ে রাখতে শিখবে।
- (গ) শিশুরা যাতে গ্রে তাদের মায়ের কাজে সহায়তা করে, নিজেদের পোষাক, পরিছদ, বই, খেলনা ইত্যাদি নিজেরাই সাজিয়ে গুছিয়ে রাখতে শেখে, সেদিকে দুটি দেওয়া উচিত। এইসব কারণে শিক্ষক এবং অভিভাবকদের মধ্যে বন্ধুত্বের আদানপ্রদান হওয়া বিশেষ প্রয়োজন; উভয়ের সহযোগিতায় শিশুর জীবন সুন্দরভাবে গড়ে' তোলা সহজ হবে।
- ই। রন্থন কার্য।—(ক) একেবারেই প্রথমে শিশুদের প্রকৃত রামার কাজ করতে দেওয়া যাবে না। কিন্তু প্তুলের গ্রুহালির মধ্য দিয়ে যাতে তাদের রামা খাওয়া, পরিবেশন করা, খাবারের জায়গা করা এবং বাসন মাজা প্রভৃতি কাজে কিছুটা অভিজ্ঞতা জন্মায় সেবিষয়ে দৃষ্টি দেওয়া উচিত।
- (খ) বিদ্যালয়ে যদি ছাত্রদের খাবার ব্যবস্থা থাকে তাথলে শিক্ষক এবং বড় ছেলেমেয়েদের সঙ্গে সংখ্যে সর্ব কনিষ্ঠ শিশ্বরাও সাধ্যমত কিছ্ব কিছ্ব কাজ করতে পেলে স্খী হবে।

সাধারণভাবে যদি এই ব্যবস্থা রাখা সম্ভব নাও হয়, তব্ উদ্যানজাত তরিতরকারী সহযোগে মধ্যে মধ্যে বিদ্যালয়ে সকলের একসঙেগ রন্ধন এবং ভোজনের ব্যবস্থা রোখা যেতে পারে। এই সকল রন্ধন কার্যের মধ্য দিয়ে শিশ্বদের সঙেগ চিত্তাকর্মক ও সহজভাবে বিভিন্ন খাদ্যের গ্লাগ্ল, খাদ্য সংরক্ষণের প্রকৃষ্ট উপায়, খাদ্যপ্রাণ তথ্য প্রভৃতি সম্বন্ধে আলোচনা করা যেতে পারে।

- ৩। বাগান করাও গার্হ ছিলনের অত্তর্ভুক্ত একটি বিষয়। প্রবর্তী পরিছেদে এই সম্বন্ধে বিশ্দভাবে আলোচনা করা হবে।
- 8। কাপড় কাচা এবং কাপড় রং করা।—(ক) স্বন্ধরভাবে প্তুল খেলতে গিয়ে শিশ্রা প্তুলের কাপড় কেচে রাখার প্রয়োজন অন্ভব করবে। সাবান, সোডা বা হ্বার দিয়ে কেমনভাবে কাপড় পরিষ্কার করা যেতে পারে সে বিষয়ে শিহ্বা দিলে তারা তা আনন্দের সঙ্গে অনুধাবন করবে। সাধারণ গণ্ডা রঙ দিয়ে কাপড় রঙাতে দিলে তারা আরো আনন্দিত হবে। স্তোর, রেশমের ও পশমের কাপড় কোনটি কেমনভাবে কাচতে, শ্বকাতে, রঙ করতে এবং ইচিতরি করতে হয় এই সবই শিশ্রা কাজের মধ্য দিয়ে অতি সহজেই শিখে নেবে।
- (খ) উৎস্বাদি উপলক্ষে নিজেদের কাপড় ধ্বতে বা রঙ করতে হলে শিক্ষকের সাহায্যে শিশ্বা সহজেই তা করতে পারবে।
- (গ) ক্রমে পরিচ্ছন্নতা সম্বন্ধে শিশুদের একটা স্বাভাবিক প্রীতি জন্মাবে এবং নিজেরাই সচেণ্ট হয়ে' তারা নিজেদের বেশভূষা পরিষ্কার ও পরিচ্ছন্ন রাখতে শিখবে।
- ৫। সেলाই করা।—খেলা ঘরের মধ্যে দিয়ে পুতুলের জামা কাপড় তৈরী করা উপলক্ষ্যে অতি সহজেই শিশুদের সেলাই শিক্ষা অগ্রসর হয়। বড় বড় ছুট এবং রঙীন সূতো বা পশ্মের সাহায্যে তারা মোটামুটি ফে ড় দিয়ে সেলাই সুরু করতে পারে। অলপদিনের মধ্যেই তারা সহজ পদ্ধতিতে চটের আসন অথবা থলি সেলাই করতে পারে। তালপাতার চাটাই বুনতে পারবে, পশ্ম ও কা টার সাহায্যে বুনতে শিখবে, পুতুলের জামাকাপড় তৈরীর মধ্য দিয়ে ক্রমে তারা ছাটকাট ও সেলাই সম্বন্ধে বহু অভিজ্ঞতা সঞ্য করবে এবং নিজেদের জামা সেলাই করবার জন্য প্রস্তুত হবে।
- ৬। শ্রেণীর সাধারণ খেলা ও কাজের মধ্য দিয়েই প্রধানতঃ গার্হাস্থ্য বিজ্ঞান শিক্ষা দেওয়া হবে। বিদ্যালয়ের বিবিধ উৎসব এবং অনুষ্ঠানের সময়ে ব্যাপকতরভাবে শিক্ষা দেওয়া যাবে। মধে মধ্যে গার্হস্থ্য বিজ্ঞানের বিভিন্ন দিকগুলি আনন্দের সঞ্জো শিক্ষা দেবার জন্য শ্রেণীর কাজের মধ্যে কতগুলি প্রক্ষেপ অথবা (project) এর অবতারণা করা যেতে পারে যথাঃ—
  - (১) প जू जू ल त विरस्
  - (६) वनखासन,
  - (७) भूजूल नाठ, रेज्यामि।

व् नियामी निका जीवनकिन्त्रक। जीवनित मध्य जीवर्षमा मध्यन्थय क काज শিশুরা করবে ও তার সঙেগ সঙেগ সে যাতে দৈহিক, মানসিক, নৈতিক ও আধ্যাত্মিক শিক্ষা পেয়ে আদর্শ সমাজের উপযোগী মানুষ হতে পারে এমনভাবে শিক্ষ্ক তাকে ও তার পরিবেশকে নিয়ন্ত্রিত করবেন এই হল বুনিয়াদী শিক্ষার মূল সূত্র। কিন্তু জীবনের সবচেয়ে প্রয়োজনীয় বসতু ''অন্ন'' উৎপাদনের কাজের কিছুটা অন্ততঃ শিশুকে করতে না দিলে জীবনকেন্দ্রিক বুনিয়াদী শিক্ষা অপুর্ণ থেকে যায়। আবার শিশু মনস্তত্ত্বের দিক থেকেও এই কাজ খুবই উপযোগী হ'বে। শিশুর মধ্যে দু'টী প্রবল বিরুদ্ধ প্রবৃত্তি কাজ করে—একটী লালন প্রবৃত্তি আর একটী ধরংস প্রবৃত্তি। আমরা জানি এই সব প্রবৃত্তিকে সম্পূর্ণ লোপ করা যায় না—অবদমন করা যায় মাত্র, কিন্তু তার ফল ভাল হয় না। অবদ্মিত প্রবৃত্তি গোপন পথে নানা অবাঞ্চিত আকারে প্রকট হয়। কাজেই কুশলী শিক্ষকের কাজ হ'বে শিশুদের সংপ্রবৃত্তিগুলির বিকাশ ঘটানো ও অবাঞ্চিত প্রবৃত্তিগুলি যাতে পথ পরিবর্তন ক'রে কোন শুভকর পথে বিকশিত হয় তার ব্যবস্থা করা। কৃষিকাজে একদিকে रयम्न लालन कतात প্রয়োজন আছে আর একদিকে আছে ধরংস করার। শিশু গাছের চারাগুলিকে লালন করবে আর আগাছা, কীটপতঙগ প্রভৃতিকে ধরংস করবে—এই দুঁ' কাজে তার দুরকম প্রবৃত্তি পরিতৃণত হ'বে। আর একদিক থেকেও এর সাথকিতা উপলব্ধি করা যায়। শিশুর কাছে স্বচেয়ে কৌত হলোদ্দীপক রহস্য হ'ছে জীবনরহস্য। একেবারে শিশু याता जाता जीविज ও निर्जीव वश्लुंद शार्थका धतरा शता। जातशत यथन एम पूजिते পার্থক্য বুৰতে শেখে তখন জীবনর্হস্য তাকে স্বচেয়ে বেশী আকর্ষণ করে। জীব জঁগতে এই রহস্যজাল সহজে ছিন্ন করা যায় না। কিন্তু উদ্ভিদ জগতে এর রহস্য অনেকাংশে স্বছ। উদ্যান রচনার মাধ্যমে শিশু এই রহস্য ভেদ করার সহজ সুযোগ পাবে।

উদ্যানে কিরকম ফসল বসানো হ'বে সেই সিন্ধান্তে আসার জন্য শিক্ষক শিশুর স্বাস্থ্য সম্বন্ধেই অধিক দৃষ্টি দেবেন। যেসব সন্জা দিয়ে তাদের খাদ্যকে স্মুম করা যায় সেগুলিই অধিক উপযোগী ব'লে গণ্য হ'বে— বাজারের চলতি দাম বিচার্য হ'বে না। শিশুর সৌন্ধ্যস্পূহা জাগ্রত ও তৃণ্ঠ করার জন্য ফুলবাগানের দিকেও যথেষ্ট দৃষ্টি রাখতে হ'বে। যদি মৌমাছি পালনের ব্যবস্থা বিদ্যালয়ে রাখা যায় তবে তাও রাখতে হবে। মৌমাছি পালন শিশুদের আয়ন্তসাধ্য ব্যাপার এবং শিক্ষা ক্ষেত্রে খুব সহায়ক। এবং মধু শিশুস্বাস্থ্যের পক্ষে খুবই উপযোগী।

শিশুরা শুধু বিদ্যালয়েই উদ্যান রচনা করবে না—নিজ নিজ ঘরেও যাতে উদ্যান রচনায় উৎসাহী হয় সেদিকেও শিক্ষক মহাশয় সচেন্ট হ'বেন। তারা একাজে তাদের অভিভাবকগণের সহযোগিতা করবে বা নেবে এবং উদ্যান রচনার ভেতর দিয়ে অভিভাবক ও শিক্ষকের যোগাযোগ রক্ষা করা যেতে পারবে।

36

माि প্রস্তুতের প্রথম কাজ মািট কোপানো। এটা ছোটদের উপযোগী নয়। শিক্ষক महाम्य, जना महायूक ७ वयुष्क मिम्दूता धकाक करत प्रति। मिम्दूप्तत छेन्या गी हाउँ এবং হালকা কয়েকটি কোদাল রাখতে পারলে তারাও একট মাটি কোপাবে এবং সেই কাজে অসীম আনন্দ লাভ করবে। তবে প্রধানতঃ ছোটরা ঘাস বাছবে, খুরপীতে ক'রে চ্যা माणिक जार्यत छेन्यां कत्रत्, त्नाका माक् वाष्ट्रत, माणिक न्रमान कत्रत्। घान, আগাছা ঝরা পাতাগুলি কুড়িয়ে সারকুড়ে নিয়ে যাবে—সেখানে কম্পোণ্ট সার করার प्रशास्त्रा कत्रत्। हाता रतां प्रभाव कतात कास्त्रा रेठती कता, वीक इकारना, हातात युव रन्थसा, চারা তুলে বসানো, ছোট চারার যত্ন নেওয়া, পোকা মাকড় বাছা, পোকা তাড়াবার জন্য ছाই ছড়ানো, পোকায় খাওয়া গাছের ডাল কেটে ফেলা, ছোট ঝারিতে ক'রে জল দেওয়া, তলার মাটি আল্গা ক'রে দেওয়া—এইগ্রুলি ছোট শিশ্বদের উপযুক্ত কাজ। এর মধ্যেও वाष्ट्-विচात्त्रत श्राह्म र'त। हाता छाँला उ वन्नात्नात् काल जानाि निम् निरं र'त না—আগে অভিজ্ঞ শিশু বা শিক্ষকের সঙ্গে থেকে তাদের একাজ শিখে নিতে হ'বে। পোকা খাওয়া ডাল বাছা ও মাটি খেণড়া ব্যাপারেও তাই। কারণ ঠিকমত করতে না পারলে গাছ মরে যাবে। উৎপন্ন ফসল তোলার কাজে ছোট শিশ্রা আনন্দও পাবে, শিক্ষাও পাবে; তবে একাজও অভিজ্ঞ শিশ বা শিহ্মকের নিকট ভালভাবে শিখে নেওয়া দরকার। কিছু বেশী বয়স্ক শিশ (৩য়, ৪খ বেণা) উৎপন্ন ফসলের ওজন, তা হ'তে কত আয় হ'ল ইত্যাদির হিসাব ভালভাবে রাখতে পার্বে। তারা সময়্মত বীজ সংগ্রহ ক'রে যথোচিত সাবধানতা সহকারে সংরক্ষণ করবে। শিক্ষককে সাবধান হতে হবে যেন শিশুদের উদ্যান রচনা কেবলমাত্র क्त्रल छे॰ शामत्न ना त्र्शान्त्रति इस्। छेम्पात्नत्र न्वां ভाविक श्रीत्रतिर्म शाह्रशाला श्रांतिक् छ রক্ষণাবেক্ষণ ক'রে শিশ্ব প্রকৃতির রহস্য সম্বন্ধে যা জানতে পারবে, কোন প্রকৃতিপাঠ মুখস্থ ক'রে সে জ্ঞান লাভ করা সম্ভবপর হতে পারে না। কৃষিকাজের বিভিন্ন প্রক্রিয়া ও প্রয়োজনীয় সাবধানতা অবলম্বন প্রসঙ্গে কেন সেগুলি করা হ'ছে এই প্রশ্ন শিশুদের মনে জাগিয়ে ठूल हा हारे वा वा प्राहारया निमा ता में जिला, जात छ छिण्छिम-छीतन जम्म्यरन्थ जरनक छान লাভ করবে। তাছাড়া আবহাওয়া, ঋতু পরিবর্তন ইত্যাদি বিষয়ে প্রচুর জানবে ও শিখবে। এক ক্ষতে এক জাতীয় ফসল বারবার না বিসিয়ে প্রায়ক্তম দ্বারা স্ফল পাওয়া যায়, ঠিকম্ত नात ना मिटल कनल वारफ़ ना, छेनामान वित्नरस्त जां कि कि पिछ पात विकृष्ठि घरि, अ পাতার অধিক বৃদ্ধি হ'লে ফলের উৎপাদন কমে—এই সব তথ্য তারা অভিজ্ঞতার মধ্য দিয়ে যাতে শেখতে পারে তার প্রতি অবহিত হ'তে হ'বে। উদ্ভিদের বিভিন্ন অংশের কাজ ফুল হ'তে कल ७ वीज रुअग्रात त्रमा, भू ७ म्यी कूल, कलम वा सा रेजाामि छे जिल कीवरनेत त्रमा जाता करनदव। मृत्यत् व्यस्त शिंठ ७ वार्वशिष्ट्रसा छक् जाता व्यनगुर कानत्व। छिन्छिम ७ জীব জগতের প্রস্পর নির্ভারশীলতা এবং উদ্ভিদের বংশবিস্তার কৌশল অপেক্ষাকৃত ব্যুস্ক

শিশ্রা অন্ধাবন করতে পারবে। কাজের মধ্যেই শিক্ষক নৃতন নৃতন শিক্ষণীয় বিষয়ের नन्धान शार्तन। व विषर् माञ्चलक वक्षा कथा मत्न ताथर दे दिन कान विषर् मिन्द দ্ ভি ভালভাবে আকৃষ্ট হ'বার আগে সে বিষয়ের জ্ঞাতব্য তথ্য শিশুদের সামনে আনা ঠিক नयं। जिल्ला ७ मिक्स यन भागाभागि यात भारत। विजन नाभान हाजा दानीत ভিতরে কিছু কিছু পরীক্ষার ব্যবস্থা রাখা চাই। গাছের বিভিন্ন অংশের আকৃতি প্রকৃতি বুঝাবার জন্য সাধারণ ব্যবচ্ছেদ ও আতস ক ।চ দিয়ে দেখানোর প্রয়োজন হ'বে। অঙকুরোদ্ধাম প্রভৃতি অনুধাবন করার জন্য কণচপাত্রে অঙকুরোদগম, আলোর কাজ বোঝাবার জন্য जन्धकारत कंत्रल वत्रारना वा शाष्ट्रक हाशा एएउसा शुरुवपन व सवात छन्। शाष्ट्रक के हिशा व চাপা দেওয়া, \*বাস প্র\*বাস গ্রহণ ও অঙগার আত্মকরণ বুঝবার জন্য এবং গাছের রস শোষণ ব্রবার জন্য শ্রেণী-কক্ষে প্রীক্ষার ব্যবস্থা থাকা বিধেয়। উদ্ভিদের ও তার বন্ধু ও শ্রু फौरतत मन्दन्थ निरस एहा एहा नाएक लिएथ निम्तू पत्र पिरस अखिनस कताता यास। कृषि-কাজে নিযুক্ত লোক ও উদ্ভিদ নিয়েও প্ররকম নাটক করা যায়। জল, হাওয়া, রোদ, প্তঙ্গ ও উদ্ভিদ—এদের নিয়ে মনোজ শিশ সাহিত্য হয়—নাটক আকারে সেগুলি অভিনয় করলে শিশুদের লথ অভিজ্ঞতা মনে রাখার সহায়ক হয়—তারা সাহিত্য শেখে এবং সৌন্দর্যান ভতি ও जानन পास প্রচর। এর প শিশ সাহিত্য অনেক রয়েছে—শিক্ষকগণ ব্যুস্ক ছাত্রদের দ্বারা रेजरी कित्रा निर्ण भारते। केंत्र भ वकि नािकात वाशान जाम वशान प्रधान प्रधा

वांशारन আছে श्रत्क त्रक्रित प्रकाशि । हासी प्रव प्रथम धक्छी कप्रालत क्ल ठूटन निर्म शिष्ट । তাতে प्रव प्रकाशित भर्ग विरम्भां कांशाला । यात क्ल ठाला श्रां हात शिष्ठ कांशाला प्रभावना आत निरक्षान कि विरम्भ प्रभावनी कांशा आत्र कि विरम्भ व्यवस्थ प्रमावनी के लांशा क्रित विरम्भ व्यवस्थ क्रित कांशा क्रित कांशा क्रित कांशा क्रित करा क्रित करा क्रित कांशा क्रित कांशा मान्यत के प्रत करा हो कां वात वावला जात्म विरम्भ करा करा हो कि निल्ल वात्र कांशा करा कि कांशा करा करा हो कि वात वात्र कांशा करा करा हो कि वात वार्य कांशा करा हो कि वात वार्य कांशा करा हो कि वात वार्य कांशा करा हो कि वात कांशा हो कि वात कांशा हो कि वात कांशा हो कि वात कांशा हो कि कांगा करा हो कि कांगा हो कांगा हो कि कांगा हो कांगा हो कांगा हो कांगा हो कि कांगा हो कांगा हो कांगा है कांग है कांगा है कांग है

কৃষিকাজে যাতে শিশুরা আনন্দ পায় তার জন্য এরক্ম নাটক অভিনয় করা খুবই বিধেয়। এছাড়া বিভিন্ন ঋতুর কৃষি নিয়ে ছড়া কবিতা রচনা ক'রে শিশুদের শেখালে ভাষা জান, সাধারণ জান ও কর্মে আনন্দ ও প্রেরণা স্টিউ করা হ'বে। এ বিষয়ে বহু উৎকৃষ্ট সঙ্গীতও আমাদের ভাষায় আছে।

এছাড়া বিদ্যালয়ের উৎপন্ন ফসল নিয়ে মাঝে মাঝে চড়ুইভাতি প্রভৃতির ব্যবস্থা করা উচিত। এতে শিশুরা প্রচুর আনন্দ ও উৎসাহ পাবে—সামাজিক শিক্ষার সুযোগও পাবে।

यिष ठिकमण मन्द्री निर्यानन कता याग्र ज्या श्रात्र श्रात्र निर्मे निर्मे

কৃষিকাজের ভারপ্রাণত শিক্ষক নিজেকে এই কার্যে অভিজ ক'রে তুলবেন। ক্ষেত ও চারা তৈরী, ফদল বদানো, ফদলের জন্য জমি নির্বাচন, উপযুক্ত দেচব্যবস্থা ইত্যাদি তো জানতেই হ'বে, তাছাড়া প্রত্যেকটি প্রক্রিয়ার অন্তর্নিহিত বৈজ্ঞানিক কারণও ব্রুতে হ'বে। তবেই তিনি এই কাজকে শিশুদের আনন্দ ও শিক্ষার আধার করতে পারবেন। এ সম্বন্ধে শুধু পুর্থিগত জ্ঞানই যথেন্ট নয়, বাস্তব অভিজ্ঞতার প্রয়োজন।

মাটি প্রস্তুতকালে শিক্ষক নিম্নলিখিত বিষয়গুলির উপর লক্ষ্য রাখবেনঃ---

- (২) জমিতে সার ঠিক সময়ে উপযুক্ত পরিমাণে দেওয়া হয়েছে কিনা?
- (७) জল निष्कामात्रत वासावम्य कता शराह किना?
- (৪) আগাছা, খোলামকুচি প্রভৃতি ভালভাবে পরিষ্কার করা হয়েছে কিনা?
- (c) বাইরের উৎপাত থেকে 'হাপর' রক্ষা করবার ব্যবস্থা করা হয়েছে কিনা?
- (৬) বীজ বপন বা চারা রোপন করার পূর্বে চারা বসাবার বা বীজবপন করবার জমির চারপাশে আল বা°ধা, নালী কাটা, জমি চৌরশ করা প্রভৃতি প্রাথমিক কাজগুলি সম্পন্ন হয়েছে কিনা?

চারা প্রস্তুতকালেও কয়েকটি বিষয়ের উপর নজর রাখা প্রয়োজন—

- (১) বীজগুলি টাট্কো ও ভাল জাতীয় হওয়া চাই।
- (২) 'হাপরটি' ঠিকমত তৈরী করে পি°পড়েশ্ন্য করার ব্যবস্থা করা বা, অস্বিধা হলে, টবে বীজ বপন করা উচিত।
- (७) वीक्षवंत्रत्तं त्र उत्रयुक्तं त्रभरां क्रलर्मिन करां, वाष्ट्राम्न प्मथ्या ७ त्रम्यमण वाष्ट्राम्न उत्तर्भक् करतं प्मथ्या विषया विराध निष्य नक्षतं प्मयां अर्थाक्रन। शांत्रतं माणि त्रात्रयुक्तं ७ विक्मण रेजनी ना शत् वाल वाल वाता उत्तर्भ रतं ना। वाता प्रति शतं शतं क्रिल वाल शतं ना। त्रात्र प्रति शतं विराध प्रति विरा
- (৪) ঋতু অনুযায়ী ও স্থের অয়নগতি অনুসারে বিভিন্ন জাতীয় শাক সক্জীর গাছ বিভিন্নদিকে লাগান উচিত। শীতকালে লতান গাছের গোড়া উত্তর্নিকে থাকবে, কারণ ঐ সময়ে গাছগুলি সাধারণতঃ দক্ষিণমুখী হয়। যে সমস্ত গাছ উপরের দিকে বাড়তে থাকে সেগুলি জমির উত্তরে ও পশ্চিমে লাগান উচিত।

চারা রোপণ ও তার তাদ্বরপ্রণালী সম্বন্ধেও বিশেষ দৃষ্টি দিতে হবে। চারাগাছগুলি হাপর থেকে তুলবার পূর্বে উপযুক্ত পরিমাণ জল দিয়ে হাপরের মাটি ভিজিয়ে নেওয়া উচিত। তা হ'লে চারা তুলবার সময়ে চারাগাছের শিক্ড ছি'ড্বার বা পাশের চারা ন্ট হবার ভয় थाকে না। লঙকা, বেগুন প্রভৃতি কোন কোন চারার মূল শিকড়ের খানিকটা অংশ কেটে বসালে গাছের ফলন ভাল হয়। সতেজ ও পুষ্ট চারাই ক্ষেতে বসান উচিত। চারা বসাবার পর ৩1৪ দিন রোদের সময় ঢেকে রেখে ঠা॰ ভার সময়ে ঢাকনি খুলে দিয়ে জল দিতে হবে। মাটির গ্রম অবস্হায় জল দিলে অনেক সময় অপকার হয়। কাজেই বিবেচনাপ্রক চারা-शास्त्र छल प्रथा छेठिछ। খूर प्रकारल ७ प्रन्थात भूति छल प्रित्ल এই আশ्रका शास्त्र না। চারা বসাবার কয়েকদিন পর আবশ্যক্ষত সার প্রয়োগ চলতে পারে। অধিকাংশ ক্ষেত্রে সর্মে বা রেড়ীর খোলই প্রশস্ত। চারাগাছের গায়ে যাতে খোলের গণ্ডা না লাগে সেদিকে দুটি দিতে হবে। খোল পচিয়ে ২।৩ সপতাহ পর জলের সঙেগ গুলে তরল আকারে চারাগাছের গোড়ায় দেওয়া চলে। কা°চা গোবর দেওয়া ঠিক নয়। গোবর না পচিয়ে সারর পে ব্যবহার করলে জমিতে পোকার উপদ্রব বাড়বে। জমিতে সার মিশাতে হাড়ের গ°ুড়োঁ, কম্পোট্ট সার, গোবর, খোল, চুণ ব্যবহার করা বিধেয়। রাসায়নিক সার পরিমাণমত উপযুক্ত সময়ে উপযুক্ত জমিতে ব্যবহার করা যেতে পারে। কোন জমিতে কি সার দিতে হবে সৈ বিষয়ে শিক্ষকৈর বিশেষ জ্ঞান থাকা বাগুনীয়।

मिम्द्रिम् शक्त माक जाजीय ७ नजारन शाह नाशान प्रश्क रदा। किश जाजीय क्षणन, वत्रविते, माक जान्, ताडा जान्, छोसाछो, लाहें म, शान्य, म्ना, वीरें, शांकत, १९ याज जात्य जात्र दिमा जिल्दात्त श्राह्मा श्रीष्ठिकत थामा रिप्ताद्व कीनावामाम, प्रयादिन,

লাগান যেতে পারে। এইগুলি কা°চা অবস্থায় 'স্যালাড' তৈরী ক'রে খাওয়া যায়; এবং তা সুস্বাদু ও অত্যত পুষ্টিকর।

শিক্ষকগণ যদি নিজেদের বাড়ীতে এক একটি কৃষিক্ষেত্র ও ফুলের বাগান সৃষ্টি করেন তবে শিশুদের উৎসাহ ও উদ্দীপনা বাড়বে।

পরিশিষ্টে একটি বিদ্যালয়সংলগ্ন কৃষিক্ষেত্রের নক্সা দেওয়া হল। বিদ্যালয়ের সংগঠন ঐভাবে হলে কতকগুলি স্থায়ী ফলগাছের দ্বারা এবং শাক সন্জীর চাষের দ্বারা বিদ্যালয়ের অনেকখানি আর্থিক সাহায্যের সম্ভাবনা হবে।

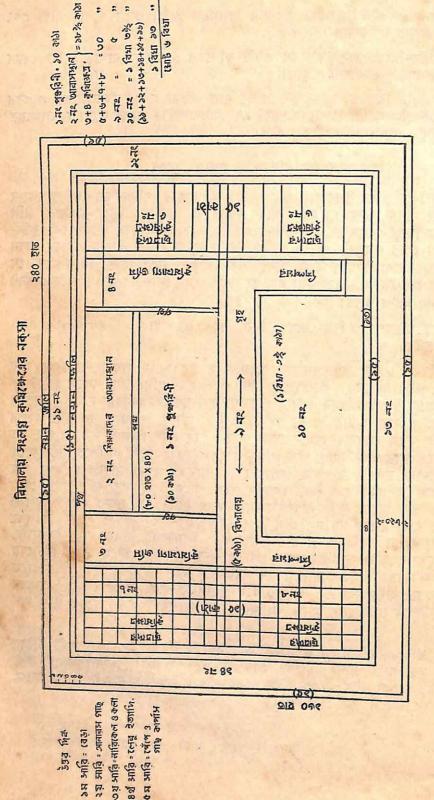
#### विमालयुत्रश्लश्न कृषिएऋत्वत न्ञात विवत्।

এখানে ৬/ বিঘা জমির উপর অবস্থিত একটি বিদ্যালয়ের পরিকশ্পনা ও তৎসংলগন কৃষিক্ষেত্রের নঙ্গা দেখান হয়েছে। হয়ত অনেক স্থলে ঐ পরিমাণ আয়তনবিশিষ্ট জমি পাওয়া যাছে না কিন্তু এখানে যে নঙ্গা দেওয়া হল তাকে অবলম্বন করে ক্ষুদ্রাকারেও কৃষিক্ষেত্র রচনা করা যেতে পারে। এখানে যে যে বিষয়ে দৃষ্টি দেওয়া হয়েছে তা যে কোন কৃষিক্ষেত্রের পক্ষে উপযোগী হবে ব'লে আশা করা যায়। বিদ্যালয়ের আশেপাশে যে জমি থাকবে তা যদি ঠিকমত রচনা করা যায় তা হ'লে যেমন সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি পাবে তেমনই কিছুটা উৎপাদনও বৃদ্ধি পাবে।

নঙ্গায় জমির পরিমাণ ৬/ বিঘা অর্থাৎ দৈর্ঘে প্রন্থে ২৪০ হাত × ১৬০ হাত = ৩৬০ ফুট × ২৪০ ফুট।

জমির চতুর্দিকে ৮ হাত ব্যবধানে দুই পাশে ২ হাত চওড়া ২ হাত গভার ঢালু করে ২টী নয়নজ লি কাটা হয়েছে। নয়নজ লির মাটি ঐ ৮ হাত জমির উপর ফেলে জমিটাকে উ°চু করা হয়েছে। ঐ জমির প্রথম সারিতে বেড়াগাছ লাগিয়ে বেড়া দেওয়া হবে। দ্বিতীয় সারিতে আনারসের গাছ ৪ হাত অন্তর বসাতে হবে। তৃতীয় সারিতে ৮ হাত অন্তর नात्रक्लिशा थवः भाषा कलाशा लाशान या शास्त्र। य श्रमण विष्टल नात्रकलिशा थ्य ना जिथान वात्र पृत्र पृत्र करवत शाष्ट्र वाशान रयरा शादा । ठेवूर्य प्रातिरा भारत भारत কাগজী প্রভৃতি নানা জাতীয় লেবুগাছ দেওয়া যেতে পারে। পঞ্চ সারিতে পেংপের গাছ ७ कार्शास्त्र शाह (या मीर्घ वहत न्हाऱ्गी) वनान खटा शादा। भूयर्त शिं वक्षा द्वरथ বিভিন্নদিকে ছোট বড় গাছের সারি পরিবর্তন করে বসাতে হবে। যে সমস্ত গাছের রোদের বেশী প্রয়োজন, যারা ছায়ায় হয় না, সেগ্লিকে রৌদুমুখী ক'রে বসাতে হবে। তারপর চতুদিকে ৪ হাত চওড়া একটি রাস্তা দেওয়া হয়েছে। শৈক্ষকদের আবাসস্থান, বিদ্যালয়, খেলার মাঠ, পুষ্করিণী ও ফুলের বাগান প্রভৃতির জন্য জমি বাদ দিলে ছাত্রদের চাষের জমি ৩০ কাঠা দিশভায়। প্রতি কাঠায় ৫ জন ক'রে গড়ে কাজ করতে পারে। ১ কাঠাকে ৫ ভাগে ভাগ করলে প্রতি খণ্ড ৬৫ বর্গহাত হবে। নঙ্গাতে ছক কেটে দেখান হয়েছে। **हला रक्तात मृ** विधात जना भारत भारत १थ थाकरव। कारज़रे किष्णु हो हारसद जिल পডবে।

একটি ১০ কাঠার ছোট পুকুর খ ৢড়বার কথা বলা হয়েছে। এর ফলে মাটি উঠিয়ে নিচু জমি উচু করা সম্ভব হবে। চামের জমির উর্বরতা বাড়বে। আবাসস্থলের জন্য প্রয়োজনীয় মাটিও পাওয়া যাবে। এবং হ সপ ও মাছের চাষ করতে পারলে শিশুদের আরো পুণ্ডিকর খাবারের ব্যবস্থা করা যেতে পারবে।



# क्षिकार्यंत्र जना जावनाकीय प्रदेशम ठानिका

(১) ছোট বড় কোদাল—২০ থানা। (২) নিড়ানী ও খুরপী—১০ থানা। (১) জনের ঝারি ও বালতি—১০টা। (৪) ঝুড়ি—১০টী। (৫) দা, কাস্ডে, শীবন, বিদে, মই ছোট আকানের করেকথানা। (৬) ফুনের টব, কাঠের বাক্স (হাপরের জন্য), চালুনী (মাটি চালিবার জন্য) কয়েকটী। জনের টব ২০১টী। (৭) ওজনের জন্য দুঁড়িপারা ও ওজন। ইহা ব্যতীত আবশ্যক্মত সরপ্তাম প্রস্তত রাখতে হবে। (৭) ওজনের জন্য দাঁড়িপালা ও ওজন। ইহা ব্যতীত আবশ্যক্ষত সরঞ্জাম গ্রন্থত রাখতে হবে।

# मश्रम जशाय

# ভাষা শিক্ষা

## ভূমিকা

वर्णमान श्रार्थमिक विफालस्भ लित प्राप्त प्रश्निष्ठ पर निष्क्ष वा निष्क्षित्रवैहे जातन या निष्क्ष लिया निष्का कि जिल्ला प्राप्त के जिल्ला प्राप्त के जिल्ला प्राप्त के जिल्ला प्राप्त के जिल्ला कि ज

कि क'त्र ভाষा শেখাতে হবে তাই বিবেচ্য। कि প্রণালী অবলম্বন করতে হবে, कि कि সুযোগের সদ্ব্যবহার করতে হবে, কিভাবে খেলা ও কাজের মধ্য দিয়ে ভাষা শেখাতে হবে, কি কি সুজনাত্মক কাজের মধ্য দিয়ে ভাষা শেখবার ব্যবস্থা করতে হবে, সে সব কিছুই বর্তমান নৃত্ন শিক্ষা-পরিকলপনায় শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রীর উপরেই নির্ভার করবে। ঠিক কিভাবে কখন কোনটি শিক্ষা দিতে হবে তা আগে থেকে ব'লে দেওয়া সম্ভব নয় এবং কোন শিশু কিসের উপর আগ্রহ প্রকাশ ক'রবে তাও প্রায়ে জানা সম্ভব নয়। অতএব প্র হতেই একটা সুনিদিন্ট পল্থা পালন করবার নির্দেশ দেওয়া চলতে পারে না। তবে, মোটামুটি সাধারণভাবে কোন, ধারা অবলম্বন ক'রে শিশুদের ভাষা শিক্ষা দেওয়া চলে তার একটা খসড়া এখানে দেওয়া যেতে পারে। কিন্তু, শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী এই ধারাকে যদি কলের মতন চালিয়ে যান, তা হ'লে ভুল করবেন, কারণ, সকল ক্ষেত্রে শিশুর আগ্রহ এক নয় এবং শিশুর আগ্রহকে কেন্দ্র ক'রেই আমাদের ভাষা শিক্ষা দিতে হবে, তা' না হ'লে প্রচলিত প্রাথমিক শিক্ষায় যেসব জটিলতা দেখা গিয়েছিল, সেই সব জটিলতা ধারে ধারে নৃত্ন শিক্ষা-ব্যবস্থাও দেখা দেবে।

वरे न्ठात छाया गिकात छेप्पगा रात वाव्यकारगत क्ष्मण त्रिष्य कता। गिग्रापत मर्छ ७ मत् छोराय कथा वलात छेश्मारिठ कत्राठ रात। जाता निर्छापत विख्छण वर्णना कत्रात, शन्थ वलात, निरछापत कार्छत वियर वालाठना कत्रात, प्रणात शाठे करात, छाजीय मार्थित विवर किर्मा विष्य विश्व किर्मा विवर कर्मा कर्मिक गिक्साला छाया गिका वलात क्रिक्म विवर कर्मिक विश्व करात है कर्मिक विश्व कर्मिक कर्मिक कर्मिक कर्मिक कर्मिक करात है करात ह

(5)

ভाষা শিক্ষাদানের পদ্ধতি আলোচনা প্রসঙ্গে একটি প্রয়োজনীয় কথা এখানে বলা যেতে পারে। ইউরোপে এবং আমেরিকায় প্রাথমিক বিদ্যালয়ে পড়াশুনা আরম্ভ করবার পুর্বে শিশুরা "নার্সারি" অথবা শিশু-বিদ্যালয়ে কিছুদিন কাটায় এবং সেইখানে নানা খেলা এবং কাজের মধ্য দিয়ে শিশুদের আত্মপ্রকাশের ক্ষমতাকে বৃদ্ধি করান হয়। এই ভিভির উপর নির্ভর ক'রে শিশুরা পড়াশুনা আরম্ভ করে। কিন্তু, এতদিন প্র্যান্ত বাংলাদেশে,

मिन् ता शिर्मालास धर्मरे ज-जा-क- श्रुष्ठ जातम् करत्र । ध्यन, न् जन निक्षा-शित-कल्शनास नामि ता निन्-विमालास म्यान शाकरला प्रविक्षा स्वाप्त कर्म तामि ते तिमालास कर्म सामि सामि शिर्मा शाकरला प्रविक्ष सिन् तिमालास स्वाप्त निम्न कर्म स्वाप्त ज्ञान स्वाप्त विमालास स्वाप्त निम्न स्वाप्त ज्ञान स्वाप्त स्वाप्त कर्म स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त कर्म स्वाप्त स्वा

প্রথমেই শিশ্বদের কথার জড়তা কাটিয়ে দিতে হবে। শিশ্বরা কথা বলবে এবং যথা-সম্ভব, পূর্ণ বাক্য দ্বারা তারা নিজেদের মনের ভাব প্রকাশ করবে। শব্দের উচ্চারণ যাতে শ্ব্ধ হয় সে বিষয়ে শিক্ষককে অবহিত হতে হবে। যে শিশ্ব মুখের ভাষায় নিজের মনের ভাব ব্যক্ত ক'রে বলতে শেখেনি, সে যে কোনও দিনই লিখিত ভাষায় নিজেকে প্রকাশ করতে শিখতে পারে না সেকথা বলাই বাহুল্য। যখন সে লিখতে শেখে, তখন তার লেখা একটি যান্ত্রিক প্রক্রিয়া মাত্র হয়।

िम्मू ता निर्फार्पत शृर्श्व कथा, জीवनधावण वावण्या, श्कूरल कथा, शार्मित कथा वलव । ७ च वश्मरत मिमू त अरक्ष कथात र्याणार्याण वक्षा क'रत रकान छोनारक धानार्वाशिक छार्व अकाम कता अथरम मम्बन्ध वर्ष्व वर्ष्व ना। अमन कि मिम् रस राज अथरम रक्षान कथारे वलरा छारेंद ना। अरे प्रमास मिक्क वा मिक्स ति मिम् रम्म राव प्रमास कर्ष्व छाल क'रत अति हास क'रत निर्दा । किम् रम्म रम्म विकास कर्ष्व वर्ष रम्म रम्म रम्म रम्म रम्म कर्ष्व वर्ष रम्म वर्ष्व कथा वर्ष्य वर्ष्य छान क'रत अंति यार्त, अवर उपन ठाता मिक्क वा मिक्स राजी प्रमास अपन अपन थान कथा वर्ष्य वर्ष्य हार्य हिम्म राजी किम् रम्म रम्म वर्ष्य वर्ष वर्ष्य वर्ष वर्ष्य वर्य वर्ष वर्ष वर्य वर्ष्य वर्ष्य वर्य वर्ष वर्ष्य वर्ष्य वर्य वर्ष्

প্রথমে শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী শিশ্বর পরিবার, গৃহ, আবেন্টনী, বিদ্যালয় ও গ্রাম সম্বশ্ধে প্রশন ক'রে এক বাক্যের উত্তর সংগ্রহ করবেন। যথা—

- (১) वौना, काल রाতে তুমি कथन थरिय़ ছिल?
- (५) ताम, काल मकारल घूम थ्या छटेरे जूमि कि करत्छ?

এইর্প প্রশেনাতর কিছুদিন বলার পর শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী এমন প্রশন করবেন যাতে স্বসংবদ্ধ দুই তিনটি পূর্ণ বাক্যের উত্তর প্রয়োজন হয়। যথা—

- (১) नरतन, जूमि काल विरक्तल कि कि स्थला स्थलिছिल वल प्रिथ?
- (২) সাধনা, তুমি কাল বিকেলে খেলার পর বাড়ি ফিরে কি কি কাজ করেছিলে?

এই সকল প্রশ্বকে অনুসরণ ক'রে কোনও একটি নিদিষ্টি শিশ্বর সঙগে কিছু ক্ষণ কথা চালাতে পারা যায়। শিশ্বদের স্বাভাবিক আগ্রহ এবং ঔংস্বাক্তবে কেন্দ্র ক'রে কথোপকথন চালালে তাদের নিকট অধিক সহযোগিতা পাওয়া যায়। প্রামে যখন কোনও প্রেলা, মেলা, যাত্রা অথবা অন্য কোনও আনন্দান্তান হয় তখন শিশ্বরা সেই বিষয়ে আলোচনা করতে সঞ্জয় ক'রে আসে, তখন তাকে কেন্দ্র ক'রে অন্য শিশ্বদের কৌত্হল জাগ্রত করা যায়।

(2)

শিশুদের পরিচিত শব্দসমণ্টির মধ্যেই সীমাবন্ধ অবস্থা থেকে কেমন ক'রে শিশুদের আঅপ্রকাশের হৃমতা বৃদ্ধি করা যায়, প্রথম অধ্যায়ে সে বিষয় আলোচনা করা হয়েছে। কিন্তু সঙ্গে সঙ্গে কথোপকথনের মধ্য দিয়ে নৃতন শব্দ শেখানর উপায়সমূহের আলোচনা হয়নি। এখন শিশুদের পরিচিত অনেকগুলি শব্দের মধ্যে দুই একটি ক'রে নৃতন শব্দ কেমন ক'রে শিখিয়ে দিতে হবে, এই অধ্যায়ে তারই উপায় নিবন্ধ হল।

অনেকগুলি পরিচিত শব্দের মধ্যে যদি দুই একটি নুতন শব্দ ঢুকিয়ে দেওয়া যায়, তবে শিশুদের পঞ্চে সেই শব্দগুলি আয়ত্ত করা খুব বেশী কণ্টসাধ্য হবে না।

এই প্রসঙ্গে আর একটি কথা উল্লেখ করা প্রয়োজন। নিম্ন বুনিয়াদী স্তরে শিক্ষ্ণীয় বিষয়গুলিকে বিভাগ ক'রে শিক্ষা দেওয়া চলে না। একটির সঙ্গে আর একটি বিষয় প্রায় সকল সময়েই যুক্ত হয়ে যায়। কারণ শিশুর আগ্রহ কোথায় কিভাবে জাগ্রত হবে তা পুর্বাহ্নে জানা যায় না। এবং শিশুর আগ্রহ, অনুসন্ধিংসা এবং ঔৎস্কাকে অনুসরণ ক'রে শিক্ষাদান করতে হবে।

এই রকম আলোচনার মধ্য দিয়ে ভাষা শেখা যে কেবল একটি ভাষা শেখার ঘণ্টাতেই আবন্ধ থাকবে তা নয়। শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রীকে মনে রাখতে হবে যে, শিশু বিদ্যালয়ের সমস্ত প্রকার কর্মের মধ্যেই মাতৃভাষা ব্যবহার করছে। শিশুর সমস্ত দিনের খেলা ও কাজের মধ্য দিয়ে শিক্ষক তাকে মাতৃভাষা শিক্ষা দেবেন।

### (0)

শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী এই স্তরে, গলপছলে নানা বিষয়ে কথোপকথন করবেন এবং শিশুদের কাছে নানা বিষয়ে গলপ বলবেন। গলপগুলি শিশুদের নিকট খুব আকর্ষণীয় হওয়া চাই এবং সেগুলি এমনভাবে উপস্থিত করা চাই যেন শিশুদের মনোযোগ গলেপর মধ্যে কেন্দ্রীভূত হয়। এক কথায়, গলপগুলি খুবই কৌতুহলোদ্দীপক হওয়া উচিত।

গলপ বলার পরে শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী শিশুদের নিজের ভাষায় গলেপর পুনরুক্তি করতে বলবেন। গলেপর পুনরুক্তির মধ্যে শিশু কথার সঙেগ কথার সামঞ্চ্য খংজে পাবে এবং তাদের কথা বলার মধ্যে অর্থাবোধের ধারা অব্যাহত থাকবে।

গলপ্গুলি নিম্নলিখিত বিষয় অবলম্বন করে হবেঃ—

- (১) রূপকথার গল্প।
- (६) পৌরাণিক গলপ।
- (७) भरतीत गल्भ।
- (8) গাছপালা ও জন্তুর গলপ।
- (৫) मजात (शास्त्राम्मी भक) भन्म।
- (७) অন্যান্য দেশের ছেলেমেয়েদের বিচিত্র গ্লপ।

এই সমস্ত গল্প বলবার সময়ে শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রীকে নানার প ন্তন শব্দের সাহায্য নিতে হবে, কারণ শিশ্র নিজস্ব আবেষ্টনীর মধ্যে যে সকল পরিচিত শব্দ আছে তাই দিয়ে এই সকল গল্প বলা যাবে না। কিন্তু গল্পগ্লি শিশ্র কাছে এতই কৌত হলোদ্দীপক হবে যে অপরিচিত শব্দগ্লি পরিচিত অন্যান্য শব্দের মধ্যে পড়ে পরিচিতের মতই বোধ হবে এবং শিশ্রা আতি সহজেই ঐ ন্তন শব্দগ্লি আয়ত্ত করতে পারবে। রাজা, রাণী, মন্ত্রী, সেনাপতি, কোটাল, রাজপ্র, মন্তিপ্র, কোটালপ্র, দৈত্য, রাক্ষস ইত্যাদি শব্দ শিশ্র কাছে অপরিচিত, সন্দেহ নাই। কিন্তু, শিশ্বদের মনোরাজ্যে কল্পনায় এই সকল শব্দের জন্য একটা আকর্ষণ সর্বদাই বর্তমান থাকে। স্ত্রাং এদের অর্থবোধের জন্য শিশ্বদের মোটেই বেগ পেতে হয় না।

(8)

শिশ দের কয়েকটি কবিতা ও ছড়় ম খুস্থ করাতে হবে। ম খেম খে কবিতা বা ছড়়া ব'লে গেলে শিশ দের পক্ষে ঐ সকল কবিতা বা ছড়়া ম খুস্থ করা মোটেই কটসাধ্য হবে না। মদি ছড়়া বা কবিতা শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী অঙগভঙগী সহকারে শিক্ষা দেন তা হ'লে শিশ রা প্রথমে অতিশয় আনন্দ অন ভব করবে এবং পরে অঙগভঙগী সহকারে নিজেরা আবৃত্তি করতে কোনওর প ক কা বোধ করবে না। নিম্নলিখিত কবিতা বা ছড়ার ন্যায় শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী যে কোনও কবিতা বা ছড়া বেছে নিয়ে শিশ দের শেখাতে পারেন, যথাঃ—

১। ছড়া।—

विष्णे भए छाभूत हे भूत, न'रमस थल वान, भित ठाकूरतत विरस एल जिन करना मान। थक करना ता र्थन वार्डन, थक करना धान, जात थक करना राभाना क'रत वारमत वार्डिसान।

২। কবিতা।-

मित्नत्र जात्वा निर्छ धरवा. मृशि खात खात, আকাশ ঘিরে মেঘ করেছে, **ह**ारम् लाख लाख। মেঘের উপর মেঘ করেছে রঙের উপর রঙ, মন্দিরেতে ক"াসর ঘণ্টা वाजल ए एर, उপाরেতে বিषि এলো बाशमा शाष्ट्रशाला. এ পারেতে মেঘের মাথায় वकरणा माणिक ज्वाला. वामला शाउँ याय भरत् भरत् ছেলেবেলার গান, বিষ্টি পড়ে টাপুর টুপুর न'रम् थला वान।

এই ছড়াগুলি আবৃত্তি করবার সময়ে শিশুদের ছন্দের প্রতি একটা স্বাভাবিক আকর্ষণ জন্মাবে এবং লোকের সম্মুখে কথা বলার ও আবৃত্তি করবার জন্য যে আত্মবিশ্বাস ও সাহসের প্রয়োজন হয়, তা সে লাভ করবে। শিশুর উচ্চারণের জড়তা ধীরে ধীরে কেটে যাবে।

#### (0)

नाउँक र्वाखनस निम्तूपत काष्ट या प्राप्त विद्या निम्तू वा विद्या प्राप्त विद्या प्राप्त विद्या निम्तू वा विद्या विद्या प्राप्त विद्या निम्तू वा वा रामि सा रामि सा रामि विद्या प्राप्त विद्या करता। यथन यह ५ वश्मरत् विम्तू वा वात वाता-मा मालरा हास ना, किन्तू वन्त कान हित्त विद्या नाउँक विद्या नाउँक विद्या स्था निर्म्न विद्या स्था निर्म्न विद्या विद्या विद्या विद्या स्था निष्त विद्या विद्

জন্তু জানোয়ারের সম্বন্ধে নাটকাভিনয় করতেও তারা একেবারে গররাজি নয়। কিন্তু, এই দুই জাতীয় নাটকেরই পোষাক পরিছদ, মুখোস ইত্যাদি তাদের মনোমত হওয়া চাই। এই বয়সের শিশুরা অভিনয়ের উপযুক্ত পোষাক পরিছদ, ঢাল-তলোয়ার, মুখোস নিজেরা তৈরী করতে পারবে না, কিন্তু কি ধরণে তৈরী করতে হবে তারা নির্দেশ দিতে পারবে এবং শিশুদের এই নির্দেশের একটা মূল্য আছে। শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী শিশুদের নির্দেশ অনুসারে এবং তাদেরই সহায়তায় তাদের পোষাক পরিছদ ইত্যাদি তৈরী করে দেবেন। তা ছাড়া গলপকে নাটকে রূপান্তরিত করতেও শিশুদের সহযোগিতা ছাড়া চলবে না। বাসতবক্ষেত্রে দেখা গেছে যে শিশুরা নাটক তৈরী করতে যেসব কার্য্য কর ইঙ্গিত (Practical suggestions) দেয় তা বয়সক ব্যক্তির মাখা হ'তেও সহজে বার হয় না। যা হোক, নিম্নে একটি গলপকে নাটকে রূপান্তরিত ক'রে দেওয়া হল। শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী এইভাবে ছোট গলপকে, শিশুদের সাহায্য নিয়ে, নাটকে রূপান্তরিত করিয়ে শিশুদের দিয়ে অভিনয় করাতে পারেন।

#### রাক্ষস-জয়

#### প্রথম দ্শ্য

রাজপুত্র—ভাই সেনাপতির ছেলে, চল আমরা দুর দেশে বেড়াতে যাই। সেনাপতিপুত্র—আমার তো খুব ইচ্ছে আছে, কিন্তু, তুমি যাবে কি ক'রে? রাজপুত্র—কেন?

সেনাপতিপুত্র—তোমার বাবা কি মত দেবেন?

রাজপুত্র—ত°ার মত আমি নিয়েছি। এখন তুমি যদি যাও তবেই হয়। তুমি তোমার বাবার মত নিয়ে নাও।

সেনাপতিপুত্র—আমিও বাবার মত নিয়েছি। তবে এখন চল—অনেক দুরদেশে বেডাতে যাই।

#### **ज्यिक**ीय प्रा

রাজপুত্র—এ কোন দেশে এলাম? এখানে যে একজনও লোক দেখছি না! সেনাপতিপুত্র—তাই তো—রাস্তায় দেখি লোকজন নাই!

ताजभूव—िक रल ? व काथाय वलाम ?

সেনাপতিপুত্র—ঐ দেখ রাজবাড়ী—চল ভিতরে যাই।

রাজপুত্র—চল।

(তারা ভিতরে যাবার আগেই একটি মেয়ে এসে প্রবেশ করল)

রাজকন্যা—তোমরা কে? এখানে এসেছ কেন?

ताज्ञ शूच — शूमि कि? शांत थ प्रत्म वाक्जन नारे किन?

রাজকন্যা—আমি এ দেশের রাজকন্যা—একটা ভীষণ রাক্ষ্স আমাদের দেশের স্ব লোককে খেয়ে ফেলেছে, শুধু আমায় রেখেছে। তোমরা শিণিগর পালাও, নইলে রাক্ষস

রাজপুত্র—আমি ভিন্ন দেশের রাজপুত্র, আর এই আমার বন্ধু—সেনাপতির ছেলে। कानल खर्म नार, जामता ताम्मनक युप्प रातित्य प्रत !

(প্রচণ্ড আস্ফালন করতে করতে রাক্ষ্পের প্রবেশ)

রাক্ষ্স—কেরে—আমার সঙেগ যুদ্ধ করতে চাইছে! এসো দেখি!

वाजभूत—धामा प्रिं!

(রাজপুত্র ও রাহ্মসের মধ্যে ভীষণ যুদ্ধ হতে লাগল—কিছু হ্বণ পরে রাজপুত্র মাটিতে शर्फ रशल)

त्राक्त्र— एम्थरल एग जामारक राताता प्रश्क नम्।

সেনাপতিপুত্র—আমি এখনও বাকি আছি।

রাক্ষ্স—এসো দেখি—তোমাকে শেষ করছি।

(সেনাপতিপুরের সঙেগ রাক্ষ্সের যুদ্ধ হ'তে লাগল। এবার রাক্ষ্স হেরে গিয়ে মাটিতে পড়ে গেল। ততক্ষণ রাজপুত্রও উঠে পড়েছে। দুই বন্ধুতে মিলে রাক্ষপের অসত্র শস্ত্র

রাহ্মস (মাটিতে হাট্ট্র গেড়ে বঙ্গে)—আমাকে মেরো না—আমাকে হ্নমা কর—দ্য়া ক'রে আমাকে ক্ষমা কর।

রাজপুত্র—আচ্ছা, এবারকার মতন তোমাকে ক্ষ্মা করা হল, কিন্তু, তুমি আর কোনও मिन मानुस स्मरता ना।

ताक्क्ल─ना ना ना ─्रामि व्यात कान्छ फिन मानूस भातत ना !

(দুই হাতে নাক কান মলতে মলতে রাক্ষসের প্রস্থান)

त्राज्ञ एतः चामता थवात प्रतम किरत यारे।

त्राज्ञकन्ता — व्यामि ठा र'त्ल कि कत्रव ? व्यामि कि धकला ध्यान थाकव?

রাজপুত্র চল, তুমিও আমাদের সঙেগ আমাদের দেশে যাবে চল।

পড़ाর জন্য প্রস্তুত্বীকরণ হিসাবেই যে শুধু নাটক অভিনয়ের মূল্য আছে তাই নয়, नाउँक जिल्ना कत्रत्व मिम्राप्तत कथा वलात छड़िंठा क्रांस क्रांट यात्व वरे मिम्राता ज्वांछाविक उ जावनीन ७६१ ति निक निक वक्कवा श्रकाम कत्रति मिथरव। वह जना, श्री त्यानीत, यथनहें प्रतिथा जथनहें नाठिक जिल्ना कतान छिठिछ। ज्या त्यानीत नाठिक जिल्ना विकास वक्टवा जींठगर प्रामाना थाकरव थवः नाष्टेक स्माटिं वृष् श्रव ना। जा श्रल नाष्ट्रिक साता त्रक्षा कतां मिम् एमत शरक महा हत्व ना। यह मिम् एमत व्याप वाष्ट्र हिन्दि विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र त्रका कतां मिम् एमत शरक महा हत्व ना। यह मिम् एमत व्याप वाष्ट्र हिन्दि विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र विष्ट्र

সকলেই নাটক অভিনয় করবার জন্য উৎসাহিত বোধ করবে, সেইজন্য, নাটকের মধ্যে যতগুলি চরিত্র বেশী দেওয়া যায় ততই ভাল। প্রেন্তি নাটকের শেষে একটি ন্তন দ্শ্য যোগ ক'রে দেওয়া যেতে পারে যে রাজকন্যাকে সঙ্গে নিয়ে রাজপুত্র এবং সেনাপতিপুত্র স্বদেশে ফিরে এসেছেন, এবং তাঁদের দেশের লোকেরা শঙ্খ ও হুলুখর্নি এবং গীতবাদ্য সহকারে তাঁদের অভ্যর্থনা করছে। এইভাবে শ্রেণীর সব কয়টি শিশুকেই নাটক অভিনয় করবার স্থোগ দেওয়া যেতে পারে। তাছাড়া প্রতি একপক্ষকালে একটি ক'রে নাটক অভিনয় করালে, শীঘ্রই সব কয়টি শিশুই অভিনয় করবার স্থোগ পাবে। কারো মনঃক্ষ্ম হলে চলবে না। শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী অবস্থা বুঝে ব্যবস্থা করবেন।

#### (3)

रेिल्प् र्व स्य कर्यकि विधाय विधिष्ठ राय्या प्रमण्ड विधाय शाया विधिष्ठ राय्या प्रमण्ड विधाय शिक् विधाय विधाय विधाय विधाय प्रमण्ड स्वर्ण विधाय व

শিশ্রা বিদ্যালয়ে আসবার পরই নিজেদের নাম লেখা কার্ড থেকে নাম পড়তে শিখবে এবং লিখতে শিখবে। দরজা, জানলা, টেবিল, চেয়ার, বোর্ড, কাগজ, খড়ি, বই ইত্যাদিও লিখিত কার্ড থেকে পড়তে ও লিখতে শিখবে—এইগ্রাল অবশ্য প্রাক্-পঠন ও লিখন ব্যবস্থা। কিন্তু কোনও শিশ্র যদি এই অবস্থাতেই আরো বেশী পড়ার জন্য আগ্রহ প্রকাশ করে, তা হ'লে তার পড়া বন্ধ রাখা চলবে না।

এখন কি প্রণালীতে পড়া ও লেখা আরম্ভ করতে হবে তাই বিবেচ্য। আমরা ''সিলেবাসে'' দেখতে পাচ্ছি যে এই শ্রেণীতে ৪৫০ শব্দ শিশুকে আয়ন্ত করতে হবে। বলা বাহুল্য ৪৫০ শব্দ শিশুকে পড়তে ও লিখতে শিক্ষা দিতে হবে বলেই ''সিলেবাস'' কমিটি এখানৈ নিদেশি দিয়েছেন, কারণ, নিয়মিত কথোপকথন শিক্ষা দেবার আগেই এই বয়সের শिन् 8৫० छि गटमत हारेट जनक दिना गम वावशत कत्र मिट्य ह वटलरे जामता शद নিতে পারি, যদিও এ বিষয়ে বৈজ্ঞানিক গবেষণা করা হয় নি। [এই বিষয়ে বৈজ্ঞানিক গবেষণা চলছে—আশা করি কিছুদিনের মধ্যেই সাধারণ ৬+ বংসর বয়সের শিশুদের পরিচিত শব্দের একটি তালিকা প্রণয়ন করা যেতে পারবে] সে যা হোক, এখন, এই ৪৫০টি শব্দ শিশুকে শিক্ষক কিংবা শিক্ষয়িত্রী কিভাবে পড়তে ও লিখতে শেখাবেন তাই হচ্ছে আসল সমস্যা। প্রত্যেকটি শিশ্বকে একই ভাবে পড়ান চলবে না। যে শিশ্ব যেভাবে আগ্রহ ও ঔৎস্কা প্রকাশ করবে সেইভাবে তার পড়া ও লেখার ধারাকে চালিত করতে হবে। যেদিকেই শিশুর আগ্রহ কেন্দ্রীভূত হোক না কেন, শিশুকে বাক্যক্রমিক শিক্ষা-পদ্ধতি অনুসারে শিক্ষাদান করাই যুক্তিযুক্ত মনে হয়। বাক্যক্রমিক পদ্ধতি মনোবিজ্ঞান-সম্মত এবং এখানে আনন্দের স্থানও প্রচুর। জোর ক'রে অজানা অপরিচিত ও দুর্বোধ্য मन्मरक श्रथमिं वावशां कत्र एपयाने इस ना। वत्र शिर्तिष्ठ ववर प्रश्लावायी मन्म দিয়েই এই প্রণালীতে শেখাতে হয়। বাক্যক্রমিক শিক্ষাপণ্ধতির গোড়ার কথাগুলি এই:—

- (১) বাক্য प्याता পড়া আরম্ভ করতে হবে।
- (६) शार्ठ विष्टित्र वाका थाकरव ना।
- (৩) শব্দগুলি সবই পরিচিত হবে।
- (8) गप्रश्लित श्रूनत् कि थाकर।

এই প্রয়োজনীয় কথাপুলি মনে রেখে এবং শিশুর আগ্রহকে কেন্দ্র ক'রে শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী যদি কয়েকটি পাঠ তৈরী ক'রে নেন, তা হ'লে শিশুকে বিজ্ঞানসম্মত উপায়ে পড়ান যেতে পারবে।

নিম্নে কয়েকটি আগ্রহকে কেন্দ্র ক'রে পাঠ দেওয়া হলঃ—

#### ক

ধরা যাক শিশ নাটি দিয়ে একটি আম তৈরী করেছে। এক্ষেত্রে শিশ র আগ্রহ মাটির আমে কেন্দ্রীভূত। অবশ্য পূর্বতন অভিজ্ঞতার মধ্য দিয়ে শিশ কাঁচা আমের অম্লরস ও পাকা আমের মিন্টরসের সঙ্গে স্পরিচিত। হয়তো বা বিদ্যালয়-প্রাঙগণে একটি আমের গাছও আছে। এর্প ক্ষেত্রে এই ধরণের পাঠ হ'তে পারেঃ—

১ম পাঠ		
এটা কি ? এটা আম।	এটা, কি, আম। এ, ট, ক, আ, ম। া—আ-কার, ি—ই-কার।	
২য় পাঠ		
আম গাছ কই ? ঐ আম গাছ।	গাছ, কই, <u>ঐ</u> গ, ছ, ই, <u>ऄ।</u>	
৩য় পাঠ		
গাছে আম আছে? হ°া, গাছে আম আছে।	আছে, হ, °, —েএ-কার।	

#### 8र्थ शावे

কি রকম আম? কা°চা আম। পাকা আম নাই। রকম, কা°চা, পাকা নাই। র, প, চ, ন।

#### ७म शार्छ

কা চা আম টক।
কা চা আম ভাল নয়।
পাকা আম টক নয়।
পাকা আম ভাল।

টক, নয়, ভাল। ট, ভ, ল।

#### 2

ধরা যাক, অন্য একটি ক্ষেত্রে শিশ্বর আগ্রহ বাগানে কেন্দ্রীভূত হয়েছে। সেখানে পাঠটি নিম্নিলিখিতভাবে হতে পারেঃ—

#### ५म शार्छ

বাগানে চল। বাগান কই? ঐ বাগান। वाशान, हल, करें, थे व, श, न, ह, ल, क, रें, थे। 1—वा-कात, (—थ-कात।

#### **२**ग्र शाठे

বাগানে ফুল আছে। কি ফুল আছে? গোলাপ ফুল আছে।

#### ०ग्र शाठे

আর কি ফুল আছে? বেল ফুল আছে। বেল, আর র।

#### 8र्थ शाठे

रिशालाश कृत्वत त्र्ष कि?
रिशालाश कृत्वत त्र्ष लाव।
रिव कृत्वत त्र्ष कि?
रिव कृत्वत त्र्ष मामा।

त्रङ, लाल, नामा। ङ, न, म

#### ७म शार्च

আমরা বাগান করব। আমরা গাছ প্তুতব। কি গাছ প্তুতবে? ফুল গাছ প্তুতব।

আমরা, গাছ, প<sup>্</sup>তব, করব। ম, প, ত, °।

#### ७ छे शाठे

আমরা মাটি খ্রুড়ব।
কি দিয়ে মাটি খ্রুড়বে?
কোদাল দিয়ে আর খ্রপী দিয়ে মাটি
খ্রুড়ব।

মাটি, খু ভূব, কোদাল, খুরপী দিয়ে ট, খ, ড়, য় ী—ঈ-কার।

#### १म शारे

আমরা খুরপী দিয়ে মাটি খুঁড়েছি। আমরা ফুল গাছ পুঁতেছি।

খ ুড়েছি, প ুতেছি।

#### 9

ধরা যাক শিশ্র আগ্রহ ছবি অাকায় কেন্দ্রীভূত। সেখানে পাঠ নিম্নলিখিত ধ্রণের হতে পারেঃ—

#### ५म शाठे

ছবি আ°কব। রঙ দাও। ছবি, আ°কব, রঙ, দাও

া—আ-কার, ি—ই-কার

ছ, ব, আ, ক, ব, র, ঙ, দ, ও °

#### **२**ग्र शाठे

कि तु हाउ? लाल तु हारे।

कि, हाउ, लाल, हारे ह, रे, ल

#### ०ग़ शाठे

আর কি রও চাও? নীল রও চাই। সবুজ রও চাই।

वात, नौल, नत्ज न, न, ज ौ—न्नेकात, ॄ—डेकात

#### 8र्थ शारे

আর কি চাও? তুলি চাই। কাগজ চাই। ছবি আ°কব।

তুলি, কাগজ ত, গ

#### ७म शाठे

কি আ°কবে? গ্রু আ°কব, ঘোড়া আ°কব আর মানুষ আ°কব।

তিনটি আগ্রহকে কেন্দ্র ক'রে এখানে কতগুলি পাঠের নমুনা দেওয়া হল—প্রথমে মাটির আম, পরে বাগান এবং তারপরে ছবি আ°কা। এই তিনটি আগ্রহ থেকে পাঠ আরম্ভ ক'রে কিপ্রকারে, ক্রমে ক্রমে সমস্ত বর্ণমালা ও স্বরবর্ণ যোগ শিক্ষা দেওয়া যেতে পারে তারই কিণ্ডিং নমুনা দেওয়া গেল। কোন পাঠের ধারা থেকে আবার শিশুর আগ্রহ অন্যত্র কেন্দ্রীভূত হতে পারে তা আগেই বলা হয়েছে। অতএব পাঠ তৈরী যে সম্পূর্ণরূপে শিক্ষকের উপর নির্ভার করবে সে কথা বলাই বাহুলা।

বাকাক্রমিক শিক্ষাপন্ধতি অনুসারে পাঠগুলি রচিত হয়েছে সে কথা পুরেই বলা হয়েছে। এখানে লক্ষণীয় বিষয় হল এই যে, বর্ণমালা থেকে প্রয়োজন অনুসারে বর্ণগুলি নেওয়া হয়েছে এবং স্বরবর্ণ সংযোগও যখন যেটা প্রয়োজন হয়েছে তখনই সেটা করা হয়েছে। তাছাড়া পাঠগুলির মধ্যে প্রত্যেকটি শব্দের যথেষ্ট পুনরুক্তি আছে।

আপাতদ্ভিতে মনে হতে পারে যে বর্ণমালা শিক্ষা না দিয়ে কিভাবে বাক্যগ্লিকে শেখান যাবে? কিন্তু বাদতব অভিজ্ঞতা থেকে দেখা গেছে যে, বাক্যটিকে যদি সমগ্রভাবে আয়ন্ত করার চেণ্টা করান যায়, তবে, শিশ্রা তা অবিলম্বে আয়ন্ত করতে পারবে। অবশ্য বাক্যটি তাদের পরিচিত আবেন্টনী থেকে নিতে হবে। বিভিন্ন বর্ণগ্লির সঙ্গে পরিচয় স্থাপন করতে শিশ্র যে ক্লেশ বোধ হয় তার প্রধান কারণ এই যে অ-আ-ক-খর মধ্যে কোনও অর্থ অথবা আনন্দের দশ্বান সে পায় না। কিন্তু আয়ুফলের মিন্টরুসের সঙ্গে যে পরিচিত সমগ্র আম শব্দটির সঙ্গে পরিচয় স্থাপন করতেও তার কোনও কন্ট হয় না। এই রক্মভাবে,

শিশুদের স্বাভাবিক আগ্রহ এবং ঔৎস্কা অনুসারে শিক্ষা দিলে ক্রমে ক্রমে, তাদের প্রিয় এবং পরিচিত বাক্যের সাহায্যে বর্ণমালার প্রত্যেকটি বর্ণ এবং আ-কার, ই-কার ইত্যাদি যোগ তারা নিজেদের অজ্ঞাতসারেই শিখে ফেলবে।

বাক্য ও শব্দ পরিচয় খেলা সম্পর্কে শিক্ষক নিজেই ক্ষেত্র অনুসারে ব্যবস্থা করতে পারবেন। উদ্দেশ্য হবে বাক্য ও শব্দ পরিচয়। এখন যেখানে ইচ্ছা খেলাকে তিনি পরিচালিত করতে পারবেন।

प्रचान्त्रप्त प्रथम प्रि शार्ठत हार्ति वाका धता याक। 'এটা कि?' 'এটা আম', 'আমগাছ करे?' 'ঐ আমগাছ।'—এই हार्ति वाका विश्व विष्ठ के तर्र विश्व हिंदि। जन्त्रिः श्रिक्ष वेष्ठ विश्व ज्ञाति। अ१० एमें कार्ष्ण ११८ मिन् र्थनात शार्ति, कार्ति कार्य विश्व हिंदि विश्व विश्व हिंदि स्वा । अ१० हिंद स्व । अ१० ह

অলতঃপক্ষে ২৫ হাত দ্রে বাক্য ও শব্দগুলি রেখে তিনি ৬।৭টি শিশুকে প্রত্যেককে এক একটি বিভিন্ন বাক্য আনতে বলতে পারেন। —"কে আগে আনতে পারে"—এই খেলায় শিশুরা কত আনন্দ পাবে তা সহজেই অনুমেয়।

আরো অন্যান্য খেলা দেওয়া যেতে পারে। ছবি দিয়ে বাক্য মেলান, বাক্য দেখে,
শব্দ থেকে বাক্য গঠন ইত্যাদি। এই সমস্ত খেলাতেই ''কে আগে করতে পারে''—এইরকম
ব'লে দিলে শিশ্রা খেলতে অত্যন্ত আনন্দ এবং উৎসাহ লাভ করবে।]

# (৭) লেখা-শিক্ষা

এ পর্যন্ত কেবল পড়ার কথাই বলা হয়েছে। লেখা কোন, সময় থেকে এবং কিভাবে শেখাতে হবে, তাও শিক্ষক অথবা শিক্ষয়িত্রীর জানতে হবে।

िन्मूद्रक विश्वास्त त्राधातात श्रव प्रवेषि कथा आमारमत मतन ताथरण श्रव—

- (১) প্রথমতঃ, যে শব্দ শিশ্বরা শিখবে তার দৃশ্যর্পের সঙ্গে তাদের পরিচয় গভার হওয়া প্রয়োজন।
- (২) ण्विण्येयणः, णिण्या निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात विर्द्धात विर्द्धात निर्द्धात निर्धात निर्द्धात निर्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्द्धात निर्धात निर्धात निर्धात निर्द्धात निर्द्धात न

প্রাক্-পঠন অবস্থায় শিশ্বদের কার্ড থেকে নিজের নাম বার করতে দেওয়া হয়েছিল।
ছবি হিসাবে নিজেদের নাম তারা তখন চিনেছে। দরজা, জানালা, বই, খড়ি ইত্যাদি শব্দও
তারা কার্ডে লেখা ও জিনিয়ে আভা অবস্থায় দেখেছে, এবং সেইভাবে, ছবি হিসাবে চিনেছে।
এখন নিজেদের নাম এবং এই সকল জিনিষণ্বলির নাম তারা ছবি হিসাবে একে বা লিখে

ফেলবে। এই রকম লেখা বা আঁকা অভ্যাসের সঙ্গে সঙ্গে শিশুরা যথেণ্টভাবে হিজি-বিজি কাটবে এবং ছবি অাকবে। হিজিবিজি থেকে অহ্মরের মূলগত আকৃতি বার ক'রে পরে অহ্মরে পরিণত করবার কৌশল শিশুকে দেখিয়ে দিতে হবে, যথাঃ—

হিজিবিজি-

Leeeeee & &

श्थित 

√ रेठाामि वाकृणिशू नि श्रथ्यम त्वत क'तत श्रत मिम् प्रमुद्ध व त क छ ठ व्य रेठाामि व्यक्षत ठाड़ाणां ड्रिंग त्याम त्या श्रात्व। विमादक ह्या व्याक्ष हिमादक 'वावा'', 'भामा'', 'काका'', 'वरे वान'', 'फत्रह्मा स्थान'', वरे मक्ष छ वाकाशू निम्मूता व्याख क'ति रक्तित। वर्षामिक श्रुमत वित्म्वर्याच स्था मित्र व्यक्षत श्रिका रक्ष्य, मित्र व्यक्षत शिक्र रक्ष्य, वर्ष शित्र व्यक्षत शिक्र रक्ष्य। वरे विम्मूची व्यक्षियान स्थाक मिम् त्या व्यक्षत, मक्ष छ वाकाग हिन्द मिम् प्रमुद्ध शिक्ष शिक्ष रक्ष्य। वरे विम्मूची व्यक्षियान स्थाक मिम् त्या व्यव ठाड़ाणां कि निच्य क्षित मिम् त्या व्यव व्यक्षत व्यक्ष

এই রকমভাবে শিশুদের পড়া ও লেখার ক্ষেত্রে আনন্দের মধ্য দিয়ে পরিচালনা করলে শিশুরা এক বংসর কালের মধ্যে ছোট ছোট গলপসম্বলিত ছবির বই নিজেরাই পড়ে ফেলতে পারবে। এই বয়সে যুক্তাক্ষর বর্জন করা বাঞ্ছনীয়। যদিও শেষ দিকে অতি সাধারণ এবং অতি প্রচলিত কয়েকটি যুক্তাক্ষরবিশিষ্ট শব্দ শেখান যেতে পারে এবং এমন সব যুক্তাক্ষর দেওয়া যেতে পারে যাতে সংযুক্ত বর্ণগুলির আকৃতি বিশেষ বিকৃত হয় নি, যথা বৃহস্পতিবার অথবা মঞ্জুরাণী। এই সকল অতি পরিচিত শব্দকে ভেঙেগ বৃহস্পতি, মনজুরাণী ইত্যাদি লিখলেই বরণ্ড পরে শিশুর গোলযোগ লেগে যেতে পারে।

প্রথম শ্রেণীর উপ্যোগী বই হয়তো বেশী পাওয়া যাবে না। এদের পরিচিত আবেউনী থেকে শব্দ এবং ঘটনা নিয়ে শিক্ষক মহাশয় নিজেই যদি এদেরই মুখের ভাষায় এদের জন্য দুই একটি হাতে লেখা বই রচনা করেন তা হ'লে ভাল হয়। এই পুস্তক রচনার কাজে শিশুদের সাহায্য করতে দিলে তাদের কাছে বইয়ের মূল্য শতগুণ বৃদ্ধি পায়। তারা মলাটে রঙ দিতে পারে। গল্প ও ছড়াগুলি নিজেদের সাধ্যানুসারে বিচিত্রিত করতে পারে। দুই একটি বৃদ্ধিমান্ শিশু যদি লিখতে শিখে থাকে, তাদের এই বইয়ের ২।১টি পাতা লিখতে দিলেই সব শিশুর লিখতে শেখার আগ্রহ বাড়বে।

দ্বিতীয় শ্রেণীর শিশ্বদের ভাষা শিক্ষা সম্বন্ধে খ্ব বেশী কিছু বলবার নাই, কারণ, প্রথম শ্রেণীতে যে সকল শিক্ষার স্ত্রপাত এবং ভিভিস্হাপন হয়েছিল, প্রধানতঃ সেইণ্বিতেই দ্বিতীয় শ্রেণীতেও অনুধাবন করতে হবে।

#### (季)

श्र्यम स्थानीरिक स्थ प्रकल छेला व्यवस्थित क'रत निम्मू प्रित स्मोधिक छाया वाण्य श्रिक क्रित स्थान हर्रा हिल ज्वित स्थानीरिक प्रित प्रित हिल्मीरिक स्थानीरिक प्रित हिल्मीरिक स्थानीरिक स्थानीरिक स्थानिक स्थानि

#### (খ)

প্রথম শ্রেণীতে বাক্যক্রমিক শিক্ষাপদ্ধতির বিষয়ে বলা হয়েছে। প্রথমেই বর্ণমালা না শিখিয়ে শিশুদের পরিচিত এবং সুবোধ্য শব্দ দ্বারা রচিত বাক্যের সাহায্যে কেমনভাবে পড়তে শেখান যায় তা বিশদভাবে বর্ণনা করা হয়েছে। প্রথম শ্রেণীতেই এই সকল বাক্যের মধ্য দিয়ে সব কয়িট বর্ণের সঙ্গেই শিশুদের পরিচয় করিয়ে দেওয়া হয়েছে। প্রথম শ্রেণীর শেষাধে শব্দ বিশেলমণ ও শব্দ গঠন ক'রে শিশুরা ক্রমশঃ সম্পূর্ণ বর্ণমালার সঙ্গে গভীরভাবে পরিচিত হয়েছে। তাদের পরিচিত শব্দ দিয়ে লেখা দুই একটি সহজ বইও তারা পড়তে পেরেছে।

কোনও বিশেষ শিশ্র পক্ষে প্রয়োজন হলে দ্বিতীয় শ্রেণীর প্রথম ভাগেও এই শব্দ গঠন ও শব্দ বিশেষণ চালাতে হবে। নানারকম খেলার মধ্য দিয়ে পাঠ অভ্যাস করালে তারা আনন্দের সঙ্গে খুব তাড়াতাড়ি শিখে নেবে। দ্বিতীয় বংসরের প্রথম ভাগ থেকেই শিশ্বদের পঠন ক্ষমতা খুব তাড়াতাড়ি বাড়তে থাকবে, এবং দ্বিতীয় বংসরের শেষে এরা যে কোনও সহজ বই অনায়াসে পড়তে পারবে।

এই সময়ে যে সকল বই তারা পাবে সেগুলি যদি সরল পাঠা, সহজবোধ্য এবং হৃদয়গ্রাহী না হয়, তা হ'লে নিতালত বাধ্য হয়ে তারা কিছুটা পড়তে শিখবে, কিল্কু সেই
পাঠাভ্যাসের মধ্যে তারা কোনও রকম রসাস্বাদন পাবে না। ক্রমে লেখা পড়ার প্রতি তাদের
একালত বিতৃষ্ণা জন্মাবে। পাঠশালায় নিতালত বাধ্য হয়ে তারা কিছুটা লিখবে, পড়বে,
কিল্কু পরবর্তী জীবনে তার আর কোনও চর্চাই তারা রাখবে না এবং ক্রমে তারা তা একেবারে
ভূলে যাবে।

শিশুরা যখন প্রথম দ্বাধীনভাবে পড়তে শেখে সেই সময়ে তাদের হাতে উপযুক্ত বই দিতে পারলে তারা পড়বার আনন্দে এবং জানবার আগ্রহে অনেক পড়ে ফেলবে। এইর্পেকেবল যে তারা পড়তে শিখবে তাই নয়, উপরন্তু লেখাপড়ার প্রতি এমন একটি গভীর অনুরাপ ও আকর্ষণ তাদের মনে জন্মাবে, পরবর্তী জীবনে যা চির্হ্হায়ী হবে, এইজন্য প্রত্যেক্টি প্রাথমিক বিদ্যালয়ে ছোট শিশুদের উপযুক্ত অনেক হ্দয়গ্রাহী বই থাকা প্রয়োজন। শিশুদের উপযোগী বই সংগ্রহ করবার সময়ে তিনটি কথা মনে রাখতে হবে—

- (১) প্রথমতঃ এই বইগুলির ভাষা সহজপাঠ্য হওয়া উচিত। একেবারে প্রথমে যথা- সম্ভব যুক্তাক্ষরবর্জিত বই শিশুদের দিতে হবে। ক্রমে ক্রমে যুক্তাক্ষরযুক্ত বই দিলে তারা পড়তে পারবে।
- (২) কেবলমাত্র ভাষাই নয়, এই সকল বইয়ের বণিতি বিষয়গালিও সহজবোধ্য এবং শিশা চিতাকর্ষক হওয়া প্রয়োজন।

(৩) ছোট শিশ্বদের জন্য রচিত বইয়ের পাতায় পাতায় স্বদর ছবি থাকা উচিত, এবং ছাপার অক্ষরগুলি পরিজ্কার ও বড় বড় হওয়া উচিত।

যে সকল খেলা ও হাতের কাজে শিশ্রা উৎসাহ প্রকাশ করে, তার মধ্য দিয়ে, গলপছলে কেমন করে তাদের পড়তে শেখানো যায় তার বর্ণনা প্রেই কিছুটা দেওয়া হয়েছে। দ্বিতীয় শ্রেণীর শিশ্রা খেলাছলে কিছু শিলপকাজও আরম্ভ করতে পারবে। এই সকল শিলপ সংক্রান্ত আলোচনা এবং দিনলিপির মধ্য দিয়ে একাধারে তাদের কথিত ভাষা, লেখা এবং পড়ার উর্লিচসাধন করা যেতে পারে।

#### (ঘ)

দ্বিতীয় শ্রেণীর প্রথম ভাগ থেকেই শিশুদের নবোন্মেষিত লিখন ক্ষমতার যথেন্ট চর্চার প্রয়োজন। কিন্তু, কেবলমাত্র হৃষ্ঠলিপিও শ্রুতলিপির দ্বারা লেখা অভ্যাস করালে শিশুরা কেবল যান্ত্রিকভাবেই লিখতে শেখে, সহজ মনের ভাবকে স্বাভাবিক ভাষায় প্রকাশ করবার ক্ষমতা তাদের জন্মায় না।

প্রথম থেকেই শিশুদের এমন বিষয়ে লিখতে দিতে হবে, যা তাদের কাছে বাস্তব এবং অর্থপূর্ণ; তাদের দৈনিক জীবনের কাজকর্ম, গান, গলপ, খেলা এবং অন্যান্য অভিজ্ঞতার সঙ্গে যা নিবিড্ভাবে জড়িত। প্রথম থেকেই শিশুদের এমনভাবে লিখতে শেখাতে হবে, যাতে তারা লেখাকে নিজেদের মনের ভাব ব্যক্ত করবার একটি অতি প্রয়োজনীয় প্রণালী ব'লেই বোঝে—কেবলমাত্র একটি যান্ত্রিক প্রক্রিয়া ব'লে মনে না করে।

যতদিন না শিশুরা অনায়াসে লিখতে শেখে, ততদিন হাতের লেখার সৌষ্ঠাবের প্রতি বিশেষ দৃষ্টি দেওয়া চলবে না। কোনওমতে দুই একটি সহজ বাক্যকে রেখায় ফুটিয়ে তোলাই যে শিশুর পক্ষে কণ্টসাধ্য ব্যাপার, তাকে আবার সুন্দরভাবে লিখবার জন্য তাগিদ দিলে বেচারী বিপর্যস্ত হয়ে পড়বে। বরণ্ড, সে যে লিখতে শিখেছে সেইজন্য তাকে প্রশংসা করলে ও উৎসাহ দিলে সে আরো বেশী ক'রে লিখবে এবং ক্রমে তার হস্তলিপির উন্নতি হবে। শিক্ষকের নিজের হস্তলিপি সুষ্ঠু হওয়া অবশ্য প্রয়োজন, কারণ, অনবরত সুন্দর দৃষ্টান্ত দেখলে শিশুরা সহজেই সুন্দরভাবে লিখতে শেখে। যে শিশুরা সুন্দর লিখতে পারে তাদের বিশেষভাবে প্রশংসা করলেও বাকি সব কয়টি শিশুর মনে সুন্দরভাবে লিখবার ইছা এবং চেণ্টা জন্মায়।

দ্বিতীয় শ্রেণীর শেষ ভাগে আমরা আশা করতে পারি যে, শিশুরা তাদের বাস্তব অভিজ্ঞতার মধ্যে যে কোনও ঘটনা অথবা তাদের প্রিয় যে কোনও গল্প বা রুপকথা, শিক্ষকের সাহায্য ছাড়াই, মোটামুটিভাবে, নিজেদের স্বাভাবিক ভাষায় লিখতে পারবে।

# जरेम जभाग

# সহজ গণিত

# শিশু কেন, কথন, কেমন করে, কি গণিভ শিখবে

#### म्राज्या

वर्णमन निम्मू त्मत रखाद व्यक्ष र्मथान रसिष्ट जात जामत श्र विश्व श्र विश्व स्वाप्त विश्व स्वाप्त विश्व स्वाप्त विश्व स्वाप्त विश्व स्वाप्त स्व

नवर्शां किल्लिण श्रार्थामक (निम्न व् नियामी) विष्णालाय श्रित्राला । शाणे क्य नजून प् णि
हु किली किला व्राक्ष व्याक्ष दिन व्याक्ष देव । विश्व के दिन श्रित्र व्याक्ष व्याक्ष व्याक्ष देव । श्रित्र व्याक्ष विष्णालाय व्याक्ष व्याक्ष व्याक्ष व्याक्ष व्याक्ष व्याक्ष विष्णालाय । श्रित्र वा विष्णालाय । विष्णालाय व्याक्ष व्याक्

বিভিন্ন কাজকর্মের মধ্য দিয়ে শিক্ষক শিশ্র শারীরিক ও মানসিক বিকাশের তারতম্য লক্ষ্য ক'রে ব্যক্তিগত বা দলগতভাবে শিক্ষাদানের ব্যবস্থা করতে পারেন। পাঠাক্রমের বিভিন্ন বিষয় পৃথক ক'রে শিক্ষাদানের প্রয়োজন নাই। শিশ্র বিভিন্ন কাজকে ভিত্তি ক'রে একই শিক্ষক একই শ্রেণীতে বিভিন্ন বিষয় অবিভিন্নভাবে শিক্ষাদান করবেন।

#### गिगा कन वहक गिथात

গ্রের বা বিদ্যালয়ের কাজকর্ম করতে হলে হিসেব নিকেশের প্রয়োজন শিশু অনুভব ক'রবে। হিসেব নিকেশ করতে হলে শিশু অঙক শিখবার প্রয়োজন বোধ করবে। তাছাড়া অঙক শেখার মধ্য দিয়ে শিশুর সময়জ্ঞান ও গতি, শুদ্ধতা, পরিকারপরিছন্নতা শ্তেখলাবোধ, আত্মবিশ্লেষণ ইত্যাদি প্রকাশ পাবে।

## गिग् चाइकत कान विषय कथन गिथद

শিশ্র দৈনন্দিন প্রয়োজনীয় বিষয়বস্তু, যেমন বাগানে ক'টা গাছ বা বীজ পেশতা হল, কতজন কাজ ক'রল, কতক্ষণ কাজ ক'বল, কত তার স্তা কাটল ইত্যাদির অবলম্বনে স্বাভাবিক উপায়ে শিশ্র অব্ক শিখবে। যখনই অঙ্কের কোন বিষয় শিশ্র শিখবে তার বারবার আলোচনার প্রয়োজন হবে।

# শিশ্ব কেমন ক'রে অঙক শিখবে

প্রত্যেক শিক্ষকই ইচ্ছে করেন যে তার পাঠদান শিশুর কাছে আকর্ষণের বস্তু হোক।
কিন্তু অঙকর বিষয়বস্তু বিশেষতঃ সংখ্যার দ্বারা গঠিত হওয়াতে এবং কোন কোন স্হলে উপস্হাপনের নুটি থাকায় অনেকের কাছে এই বিষয় নীরস ব'লে মনে হয়। সেজন্য অনেক ক্ষেত্রে
অঙকর প্রতি অনুরাগ থাকে না। যে কোন বিষয় শিক্ষাদান ক'রতে গেলে অনুরাগের
প্রয়োজন। যেখানে অনুরাগ থাকে না সেখানে অনুরাগ স্ভি ক'রতে হবে। শিশুর
দৈনন্দিন কার্যকলাপ, প্র্যবেক্ষ্ণ, অভিজ্ঞতা, হাতের কাজ ইত্যাদির সঙ্গে সম্বন্ধ রেখে অঙকর
বিষয়বস্তু উপস্হাপন ক'রলে অঙকর প্রতি শিশুর অনুরাগ জাগ্রত হ'তে পারে।

#### প্রথম শ্রেণীর পাঠ্যক্রম

- ১। আকার, আয়তন, ওজন, পরিমাণ, সময়, পরিমাপ ইত্যাদি সম্বন্ধে ধারণা লাভ করবার জন্য স্থোগদান।
  - ২। न्वा अव्ह थलात नाराया ८० वर्यन् नः भा भन्ता।
  - ত। দলগতভাবে দুই দুই, তিন তিন, অথবা দশ দশ ক'রে ৫০ পর্যন্ত সংখ্যাগণনা।
  - 8। ৫० পर्यन्ठ नः था किना ७ व्या

Z.

- ৫। যোগ, বিয়োগ ও সমান চিচ্ছের সহিত পরিচয়।
- ७। ১—১०, ১১—২० পर्यन्ठ मः शा गठेन ७ विद्वासन।
- ৭। স্বতঃপ্রবৃত্ত খেলার সাহায্যে ওজনের সংশ্ব পরিচয়, যেমন দোকান দোকান খেলা, বিদ্যালয়সংলগন বাগান থেকে তরিতরকারী উৎপাদন সম্বন্ধীয় ব্যবস্থা—সের, আধ সের, পোয়া ইত্যাদির ধারণা—কাতাই করার সময় স্তার ওজন, যথা তোলা।
- ৮। রৈখিক পরিমাপ—হাত, বিঘত, আঙগুল ও এক গজ বা এক ফুট কাঠির সাহায্যে শ্রেণীকক্ষ, শিশ্বগণের উচ্চতা ইত্যাদির পরিমাপ।
  - ১। সময়ের পরিমাণ—সময়, দিন, স্পতাহ ও মাসের সঙ্গে পরিচয়।
- ১০। মুদ্রা—টাকা, আনা, প্রসা—বাজার করা বা খেলার দোকানের সাহায্যে গণনা শিক্ষা—মুদ্রা কথার প্রকাশ ক'রতে হবে, সংখ্যায় নয়।
- ১১। হাতে না রেখে ২ ঘর সম্বলিত ৫০এর মধ্যে সংখ্যার যোগ ও বিয়েগ—দৈনন্দিন জীবনের ঘটনার সঙ্গে সম্পর্ক রেখে সম্প্যাম্লক প্রশ্নের সমাধান।
  - ১২। সংখ্যা গণনা—যোগ ও বিয়োগ সম্পর্কে বল ফ্রেম বা Abacus এর ব্যবহার।
- ১। व्याकात, व्याय्यन, एकन, भित्रमाण, प्रमय, भित्रमाण रेणापि प्रम्यत्य धातणालाछ कत्रवात क्रमा प्रत्याणपान।—विमालार व्याप्यात व्याप्यात विश्व प्रविवाद व्याप्यात विश्व व्याप्यात व्याप्याप्यात व्याप्यात व्याप्याप्यात व्याप्यात व्याप्यात व्याप्याप्यात व्याप्यात व्याप्यात व्याप्

कथाउ वलर्ज शारत। जावात वत উल्ला कथाउ प्र ज्ञानक प्रमम् व'ल थारक। रामन—वाज़ीरज प्र भूव "कम" छाज त्यारह—जात वाज़ीरज "कम" लाक ज्ञाह रेजािम। जात वाज़ीरज प्र भूव "कम" छाज त्यारह —जात वाज़ीरज "कम" लाक ज्ञाह रेजािम। जात वाज़ी रथरक विमानस "मूर्त "प्र दा "काह" वत्रक्ष थात्रमाउ विमानस ज्ञाह ज्ञाह वाज्ञ व्याक्ष शारत शारत वाज्ञ व्यावस्य क्षेत्र वाज्ञ व्यावस्य क्षेत्र वाज्ञ वाज्ञ वाज्ञ विस्तरस्य प्र शारत शारत वाज्ञ वाज्ञ विस्तरस्य प्र शारत थात्र वाज्ञ वाज्ञ विस्तरस्य प्र शारत वाज्ञ वाज्ञ

একটা কাগজের বাঙ্গে খড়ি, কলমের নিব, কাগজ আটকাবার ক্লিপ প্রভৃতি রাখা যেতে পারে। শিশুকে ঐ জিনিষগুলো মেজেতে সাজাতে বললে যে উৎসাহের সঙেগ একাজ করবার চেষ্টা ক'রবে। জিনিষগুলো যোগাড় করবার সময় মনে রাখতে হবে যে একরকমের জিনিষ যেন একই আকারের হয় যাতে শিশু সহজে একইরকমের জিনিষ সাজাতে পারে। এভাবে বিভিন্ন জিনিষ ও বিভিন্ন আকারের সঙেগ তার পরিচয় হবে।

একটা বাব্সের মধ্যে কতকগুলো ছোট বড় নানা আকারের খেলনা বা কাঠের টুকরো দিয়ে শিশুকে বড় ও ছোট জিনিষগুলো আলাদা আলাদা ক'রে রাখতে বলা যেতে পারে। এভাবেও আকার সম্বন্ধে তার ধারণা হবে।

দুটো সমান আকারের বাঙ্গে একটার মধ্যে ভারী এবং আর একটার মধ্যে হালকা জিনিষ দিয়ে শিশুকে কোনটা ভারী কোনটা হালকা যদি বেছে দিতে বলা যায় তা হ'লে শিশু দুটো বাঙ্গই হাতে তুলে অনুভব ক'রে হালকা ও ভারী সম্বন্ধে ধারণা লাভ ক'রতে পারে।

এমন দুটো কাগজ নেওয়া যেতে পারে যার একটায় অনেকগুলো ফুল বা মানুষের ছবি আর অন্যটায় তার তুলনায় খুব কম ছবি আছে। দুটো কাগজই শিশুর হাতে দিয়ে জিজাসা করা যেতে পারে কোন কাগজে বেশী বা কম ছবি আছে। এতে শিশুর কম ও বেশী সম্বন্ধে জান হতে পারে।

বিভিন্ন মাপের কাঠি, খড়ি, পেন্সিল প্রভৃতি দিয়ে শিশুকে লম্বা ও ছোট সম্বন্ধে ধারণা দেওয়া যায়। এছাড়া শিশুদের একটা সারিতে দ ড করিয়ে কে কার চেয়ে লম্বা বা ছোট জিজ্ঞাসা করলে খেলার মধ্য দিয়ে শিশুরা এবিষয়ে জ্ঞান লাভ ক'রতে পারে।

শिक्षक ध्रकरम् नानाश्रकात (थ्लात व्यवश्रा कत्रा भारतन।

२। न्विकः धवां विद्यात प्राधार ६० वर्षन्व प्रः भाग भाग निष्का।—(क) प्रः भाग वला।
— निष्क्षक निम् दक जिल्लामा क' तर्रि पादन—(১) रामात दाव क्रांति, राम क्रांति, देवानि;
(६) रामात क्रांति हे राम, रामात वाज़ीरिक क्रांति हे रामात है रामात है रामात है रामात वाज़ीरिक क्रांति हत, क्रांति मत्रा, जानाला है रामात वाज़ीरिक क्रांति हत, क्रांति मत्रा, जानाला है रामात वाज़ीरिक क्रांति हत क्रांति पर्वा परिवा क्रांति हिंदी है स्वा विद्या विद

প্রথমদিকে বাস্তব জিনিষ, ছবি, বা কাজের ভেতর দিয়ে সংখ্যার পরিচয় দেওয়া উচিত।
বংলার সঙ্গে পরিচিত হয়ে দিশের যে অভিজ্ঞতা হবে তাতে সে ব্রবে সংখ্যাগ্লো অর্থান্ন্য
নয়—সংখ্যার সঙ্গে বাস্তব জীবনের সম্বন্ধ আছে। 'দেই'' বললে সে যেন ব্রবতে পারে
দেটি জিনিষ, যেমন—দুটি বল, দুটি লাট্রে, দুটি মার্বেল, দুটি আম, দুটি ভাই ইত্যাদি।
"দেই" শিখলে সে যেন 'দ্" পয়সার মুড়ি বা মুড়িক কিনতে পারে—দুটো ফুল বা ফল
আনতে পারে।

মাটির কাজ বা অন্যান্য হাতের কাজের ভেতর দিয়ে শিশ্ব সংখ্যা শিখতে পারে। মাটি দিয়ে খেলনা বা ফল তৈরী করবার সময় ওগুলোর সংখ্যা ব'লতে পারে।

সংখ্যাসম্বলিত ছড়া আবৃত্তি করার সাহায্যে সংখ্যা বলা অভ্যাস করান যেতে পারে।
শিশু কোন কাজ ক'রছে—ঐ সময় সে যদি ছড়া আবৃত্তি করে তা হ'লে কাজটা আনন্দদায়ক

হবে, পরিশ্রম কম বোধ হবে এবং সংখ্যা বলারও অভ্যাস হবে। নিম্নে দুই একটি ছড়ার উদাহরণ দেওয়া গেল—এ জাতীয় ছড়া ব্যবহার করা যেতে পারে—

(5)

थक मूडे मूडे मूडे

हुल कत् सूकी हुडे।

ि कात साद मात

मूखें मि नस बात।

लेक हर बात नस

मूर्य लर्जा ताठ हर।

नाठ बाठे लर्ज साठे।

ने मम वन्द वन्द नम हेन्।

नोक जारक हैन्द हैन्द।

(2)

বাংলা দেশের একটি ছেলে
নামটি স্ভাষ তার,
লুকিয়ে গেল বিদেশ চ'লে
সাত সাগরের পার।
গড়ল সেনা করতে আজাদ
মোদের ভারত ভু°ই

রাসবিহারী জুটল সাথে একে একে দুই। আজাদী দল গুছিয়ে গড়ে

वीत मिल जूरिंद के उंद वीत मिल स्थारन मिर, मामा मिला मात्राठ व'लाय, मूर्य वरक जिन।

রাঘবনে নিয়ে গড়ে আজাদী সরকার সুভাষ বোসের বীর সাখীরা তিনে একে চার।

हार्हे द्रांत वित्र विश्वास वित्र हालान गामन काछ ; वरे दौरतता मिल र'ल हारत वर्ष १ १ है। ভে সৈলে এলো ভীষণ জোর ভীষণ কথা কয়, ছুটিয়ে ঘোড়া আনবে বিজয় পণচে একে ছয়।

শাহনওয়াজ জোরসে এলো স্বুভাষ বোসের সাথ। আরকে তাদের রুখবে বলো, ছয়ে একে সাত।

সৈগল এসে সেনা চালায়
চৌদিকে মার কাট,
বোস নেতাজীর সেনা-দলে
সাতে একে আট।

भीनन जारम भीरत भीरत मूरथ वरन छत्र। मकन वीरत घर्मिम भाकात्र जारि धरक नत्र।

লখখী এল তেজী মেয়ে, বাড়িয়ে দিল যশ। গড়ল কত মেয়ে সেনা, নয়ে একে দশ। মামাদের দরজায় বাঘা থাকে এক; তেড়ে নাহি আসে, নাহি করে ভেক্ত ভেক্ত।

মামাদের প্রকুরেতে
আছে বড় রুই;
পশ্ব আর মাছে মিলে
একে একে দুই।

মামাদের বাগানেতে
চরিছে হরিণ;
দুই পশ্র, এক মাছ—
দু'য়ে একে তিন।

মামাদের রাঙা পর কিবা রূপ তার; তিন পশ্, এক মাছ— তিনে একে চার।

মামাদের বানরের কি মজার নাচ! চারি পশ্ল, এক মাছ— চারে একে প্লাচ।

शाताधरनत पग्छे शाहाण धारत शाहामत्र, वकि काथा शांतरत्र शिल् तरेल वाकि नत्र। शाताधरनत नत्रि शिल् काठेरा शिल् काठे, वकि करि प्रथान श्ल, तरेल वाकि बाछे। शाताधरनत बाछेछि शिल् वंभारता थ्या छाठ, वकि स्था शिल्

রুইল বাকি সাত।

মামাদের সাদা ভেড়া উঠানেতে রয়; প্রাচ প্দা, এক মাছ— প্রাচে একে ছয়।

মামাদের খরগোস
চাটে এসে হাত ;
ছয় পশ্র, এক মাছ—
ছয়ে একে সাত।

মামাদের পোষা মেনি
যেন বড় লাট!
সাত পশ্ব, এক মাছ—
সাতে একে আট।

মামাদের রাজহ°াস পুকুরেতে রয়, পশ্ব, পাখী, মাছে মিলে— আটে একে নয়।

মামাদের চাকরের হয়েছে বয়স, সবে তারে ভালবাসে, নয়ে একে দশ।

(8)

হারাধনের সাতটি ছেলে গেল জলাশয়, একটি সেথা ডুবে ম'ল রইল বাকি ছয়।

হারাধনের ছয়টি ছেলে

চ'ড়তে গেল গাছ,

একটি ম'ল পিছলে প'ড়ে,
রইল বাকি পণচ।

হারাধনের পণচটি ছেলে গেল বনের ধার, একটি গেল বাঘের পেটে, রইল বাকি চার। হারাধনের চারটি ছেলে নাচে ধিন, ধিন, একটি ম'ল আছাড় খেয়ে, রইল বাকি তিন।

शतायत्नत जिनिष्ठ एडल य'त्राठ शिल तुरे, थकि एचल तासाल भाष्ट, तुरेल वाकि पुरे। হারাধনের দুইটি ছেলে মারতে গেল ভেক, একটি ম'ল সাপের বিষে, রইল বাকি এক।

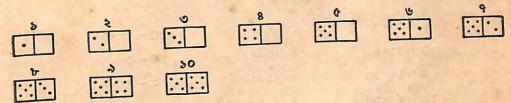
হারাধনের একটি ছেলে ক''দে ভেউ ভেউ, মনের দুঃখে বনে গেল, রইল না আর কেউ!

(श) प्रश्या १९ ७ विथा।— प्रश्या वलात वलाप क्रक्ता विध्यत हत्न प्रश्या-१९ एम्थान स्वत भारत शास हिम्मू विवास प्रति भारत हिम्मू स्वत स्वत प्रति भारत हिम्मू स्वत प्रति भारत प्रति हिम्मू स्वत हिम्मू स्व

দিনপঞ্ছী (ক্যালেণ্ডার) দেখে মাসের তারিখ জানবার সময় শিশ্ব এক থেকে এক<u>ত্রিশ</u> (৩১) পর্যন্ত সংখ্যাগ্রলো পড়তে পারে। বইয়ের প্স্তাসংখ্যা দেখে আরও বেশী সংখ্যা পড়তে পারে।

সংখ্যার ক্রমিক অর্থ শিশু বুঝতে পারলে সংখ্যার দলগত অর্থ তার বোঝা দরকার। কোন জিনিষ একা থাকলে তাকে একটি বলে, পণচটি থাকলে পণচ বলে। এই জান শিশু তার অভিজ্ঞতার ভেতর দিয়েও লাভ করবে। এই অর্থ যাতে শিশুর মনে বন্ধমূল হয় সেজন্য সংখ্যা ছক ব্যবহার করতে পারে—উদাহরণস্বরূপ ডিমিনো পন্ধতি।

#### ডমিনো পৰ্দ্ধতি



শিশ কোন দিন কি কাজ করেছে, কি কি জিনিষ তৈরী ক'রেছে তার হিসেব রাখবার জন্য সংখ্যা লিখবার দরকার হবে। সংখ্যা-বলা ও পড়ার সময় শিশ যে সংখ্যাগুলো শিখেছে সেগুলি সে অঙ্কে ও ভাষায় লিখবে। প্রথমে শিক্ষক বোর্ডে বা মেজেতে সংখ্যাগুলো

পর পর লিখে দেবেন—শিক্ষকের লেখার ওপর দিয়ে শিশ্ব লিখবে। তারপর শিক্ষক কার্ড-বোর্ড দিয়ে সংখ্যাগ্রলো তৈরী করে শিশ্বদের দেবেন শিশ্বা ওগ্রলোর ওপর হাত বোলাবে। সংখ্যা লিখবার জন্য সংখ্যা-লেখা ন্টেনসিল (Stencil) ব্যবহার ক'রলে ভাল হয়।

- (গ) হাতের কাজ ও অঙকশিক্ষা।—হাতের কাজের ভেতর দিয়ে সংখ্যা গণনা শেখান যেতে পারে। যেমন কয় তার সূতা কাটল, কতগুলি পুতুল গড়ল, কয়জন বাগানে কাজ করল, কটা গাছ বসাল প্রভৃতির হিসেবের মধ্য দিয়ে শিশ্ব সংখ্যা গুণতে শিখবে।
- ৩। দলগতভাবে দুই দুই, তিন তিন, অথবা দশ দশ ক'রে ৫০ পর্যন্ত সংখ্যাগণনা।—
  প্রথমাবস্হায় এভাবে গণনা না করলেও চলতে পারে।
- 8। ৫০ পর্যন্ত সংখ্যা চেনা ও লেখা।—এর আগে বলা হয়েছে শিশ্ব পরিচিত জিনিষ, খেলাধ্লা ও হাতের কাজের মধ্য দিয়ে ৫০ পর্যন্ত সংখ্যা কেমন করে বলা, পড়া ও লেখা যায় তা শিখবে। শিশ্ব তার কাজ-কর্মের ভেতর দিয়ে যত বেশী বিভিন্ন সংখ্যার সংস্পর্শে আসবে ও ব্যবহার করবে ততই তার সংখ্যা চেনবার ও লেখবার স্ব্যোগ হবে।
- ৫। र्याण, विरम्राण, ও সমান চিচ্ছের সঙ্গে পরিচয়।—অঙ্কের ব্যবহার শিখতে হ'লে যোগ, বিয়োগ ও সমান প্রভৃতি কতগুলি চিচ্ছের প্রয়োজন হয়। ঐ চিহ্নগুলি দ্হান, সময় সংক্ষেপ করবার জন্য ব্যবহার করা হয়। যোগের বেলায় একের বৈশী জিনিষ বা সংখ্যা একসঙ্গে করলে মোট কত হয় তা মুখে বলতে গেলে চিহ্নের প্রয়োজন হয় না কিন্তু ঐ বিষয়-গুলো লিখে সংখ্যায় প্রকাশ করতে গেলে যোগচিহ্নের দরকার হ'য়ে পড়ে। সেরকম অঙ্ক ক্ষার ভেতর দিয়ে বিয়োগ ও সমান প্রভৃতি চিহ্নগুলোর সঙ্গে শিশুকে পরিচিত করান যেতে পারে।
- ৬। ১—১০, ১১—২০ পর্যন্ত সংখ্যা গঠন ও বিশ্লেষণ।—শিশ হাতের কাজ করবার সময় তার কাজের পরিমাণ সংখ্যায় প্রকাশ করবে। দিনের পর দিন তার কাজের হিসেব রাখবার জন্য সংখ্যার প্রয়োজনবোধ এবং যোগ বিয়োগ ও সমান চিহ্নের ব্যবহার করা দরকার হবে। এই কাজের ভেতর দিয়ে সে সংখ্যা-গঠন ও বিশ্লেষণ শিখবে। শিক্ষক দেখবেন শিশ যেন ১—১০, ১১—২০ পর্যন্ত সংখ্যা গঠন ও বিশ্লেষণের মধ্য দিয়ে সংখ্যাগুলি সম্বন্ধে সঠিক ধারণা করতে পারে। যেমন—

2+0=a	<b>○</b> +₹=0	د=٩-٥٥
0+8=8	8+0=8	٥٥-٥=٩
o+9=50	9+3=50	5−8=¢
55+8=50	8+55=50	55-8=9
>マーキーショ	9+52=55	>>-9=>2
58+6=20	७+58=२०	>b-><=6

रेणां पि

শিশু তার পরিচিত জিনিষের দশটিকে একসঙেগ করে শিক্ষকের সাহায্যে এক দশ এক ১১, এক দশ দুই ১২ ইত্যাদি ক'রে সংখ্যা গুণতে শিখবে। এইভাবে শিশু ১১ থেকে ২০ পর্যন্ত সংখ্যা বিশেল্যণ ক'রতেও শিখবে। প্রথম দিকে শিশু দশ (১০) করা প্র্যোতির সাহায্য নিতে পারে। যেমন ১১ ও ৯ এর যোগ ফল যে ৯ ও ১এ ১০, ১০ আর ১০=২০ (দুদশ) এমনিভাবে বার করতে পারবে। দশটি ক'রে কাঠির গোছার সাহায্যেও এরকম গণনা শিশুকে শেখান যেতে পারে।

- ৭। স্বতঃপ্রবৃত্ত খেলার সাহায্যে ওজনের সঙেগ পরিচয় যেমন দোকান দোকান খেলা, বিদ্যালয়ের সংলগন বাগান হ'তে তরিতরকারী উৎপাদন সম্বন্ধীয় ব্যবস্থা—সের, আধ সের, পোয়া সম্বন্ধে ধারণা—কাতাই করার সময় স্তার ওজন যথা, তোলার সঙ্গে পরিচয়—বাজার করা এ বয়সের শিশ্র কাছে খ্ব আনন্দের কাজ। এটাকে অঙক শেখার উপায় হিসেবে ব্যবহার করা যেতে পারে। এর বৈশিষ্ট্যগুলো নীচে বলা হোল—
  - (১) এর দ্বারা শিশু দোকান থেকে জিনিষপত্র কিনে আনার অভিজ্ঞতা পেতে পারে।
- (২) যে সব জিনিষ দোকানে থাকবে শিশ্ব খেলার ছলে বেচা কেনা ক'রে দোকান সম্বন্ধে অভিজ্ঞতালাভ ক'রতে পারে। এই অভিজ্ঞতা ভবিষ্যৎ জীবনে সে কাজে লাগাতে পারবে।

ওজন করবার দুণাড়পাল্লা ও বাটখারা শিশুর কাছে খুব আকর্ষণের জিনিষ। দুণাড়ি-পাল্লার দু দিক কেমন করে সমান হয় শিশু তা জানতে চাইবে এবং দুণাড়িপাল্লা নিয়ে নাড়াচাড়া করবে—নানারকম জিনিষ ওজন করবে।

পল্লী অগুলের শিশ্র দোকান সম্বন্ধে কিছু ধারণা থাকে, কেননা তাদের অনেক সময়, দোকান থেকে জিনিষপত্র কিনে আনতে হয়। এই অভিজ্ঞতার সাহায্য নিয়ে শিক্ষক শিশুদের বিদ্যালয়ে দোকান করতে উৎসাহ দিতে পারেন। দোকান করার আগে শিশুদের নিয়ে শিক্ষক কাছের কোন দোকান দেখাতে পারেন। এতে তারা দোকানে কি কি জিনিষ থাকে, কিভাবে দোকান সাজান হয়, কিভাবে জিনিষ বিক্রী করা হয়—এসব বিষয় তারা দেখতে পারে। দোকানের জিনিষপত্রের তালিকা তৈরী করান যেতে পারে। সেই অনুসারে তারা দোকানের ব্যবস্থা করতে পারে।

শिশ (पत पिर्स कार्ड (वार्ड), म् जा, ७ काठित माशास्य प्रीष्मि रिज्ती कतान स्थल भारत थवः रेटित है कता वा माहित एका पिर्स भिग ता वाहेंचाता रेजती कताल भारत। जाएनत रेजती कता प्रीष्मि । वाहेंचाता स्थलात प्राकारन वावशात कत्रण भारत। भिग प्राकारन शिर्स प्रीष्मि । वाहेंचाता त्रावशात पर्मि व वाहेंचाता त्रावशात पर्मि किन्तू व वस्ति विक्र वाहेंचाता मन्भिक जाएनत ना स्थारल हें किन्तू भारत ।

বিদ্যালয়ের বাগানে উৎপন্ন তরিতরকারীর পরিমাণ জানতে গিয়ে শিশ্ব ওজনের ব্যবহার শিখতে পারে। কাতাই করার সময় কতটা ত্লা নিয়ে কতটা স্তা কাটল সে বিষয়েও শিশ্ব ওজনের ব্যবহার শিখতে পারে।

৮। রৈখিক পরিমাপ।—হাত, বিষত, আগ্রুল ও এক গজ বা এক ফুট কাঠির সাহায়ের শ্রেণীকক্ষ, শিশুদের বিভিন্ন উচ্চতা ইত্যাদির পরিমাপ।—(ক) বিভিন্ন মাপের কাঠি ও কার্ড-বোর্ড এক জায়গায় রেখে ওগুলো থেকে সমান মাপের কাঠি বা কার্ডবোর্ড শিশুকে বৈছে বার ক'রতে দেওয়া যেতে পারে।

(খ) একটি বাঙ্গে একাধিক সমান মাপের কাঠি অন্য একটা বাঙ্গে ঐরকম কার্ডবোর্ড রেখে এক একটা বাঙ্গ থেকে এক একজন শিশুকে সমান মাপের কাঠি বা কার্ডবোর্ড বেছে বার করতে ও সমান মাপের কাঠি বা কার্ডবোর্ড সাজাতে বলা যেতে পারে।

(গ) নির্দিষ্ট মাপের কাঠি বা কার্ডবোর্ডের সমান করে কণচি দিয়ে শিশুকে পাতলা কাগজ বা স্তা বা ফিতা কাটতে দেওয়া যেতে পারে।

এই জাতীয় কাজকর্মের ভেতর দিয়ে রৈখিক পরিমাপ সম্বন্ধে শিশুর প্রথম ধারণা হবে। এই ধারণাকে আরও সঠিক করবার জন্য হাত, বিঘত, আঙগুল দিয়ে বিভিন্ন জিনিষ যেমন টেবিল, বেণ্ড, ঘরের মেঝে প্রভৃতি মাপতে পারে।

শিশ্বদের এক সারিতে দুশাড় করিয়ে কে বেশী উচ্চ, কে কম উচ্চ দেখান যেতে পারে।
তারপর একে অন্যের উচ্চতা মাপতে পারে। কোন শিশ্বর উচ্চতা মাপতে হলে তাকে দেয়ালের
পাশে দুশাড় করিয়ে সে যতটা উচ্চ সেখানে দেয়ালে দাগ দিতে হবে। তারপর নীচ থেকে
দেয়ালের সেই দাগ পর্যাত হাত, বিষত বা আঙগুলের সাহায্যে মাপতে পারে।
দেয়ালের সেই দাগ পর্যাত হাত, বিষত বা আঙগুলের সাহায্যে মাপতে পারে।

১। সময়ের পরিমাণ—সময়, দিন, সণ্তাহ ও মাসের সহিত পরিচয়।—িশশ্ কখন বৃদ্ধ থেকে ওঠে, কখন দকুলে যায়, কখন ছুটী হয়, কখন বাড়ী আসে ইত্যাদি প্রশ্নের উত্তর দিতে গেলে সময় সম্বন্ধে শিশ্র প্রাথমিক ধারণা জন্মতে পারে। এগুলোর উত্তরে শিশ্ হয়ত বলবে ভারবেলায় সে ঘুম থেকে ওঠে, সকালে দকুলে যায়, দ্পুরে দকুল ছুটী হয় ইত্যাদি। এই সময়গুলোর সঙ্গে যদি ঘড়ির সম্বন্ধ দেখান যায় তাহলে শিশ্র সময় সম্বন্ধে ধারণা দপ্ত হয়ে উঠতে পারে।

দিন সম্বন্ধে শিশ্র প্রাথমিক ধারণা হয় বারের নাম থেকে। আজ কি বার, কোন বারে হাট হয় বা কি বারে স্কুল ছুটি থাকে এসব প্রশেনর জবাব দিতে গেলে শিশ্র বিভিন্ন বারের নামের সঙ্গে পরিচিত হয়। এভাবে শিশ্র সাতটি বারের নাম শেখে। এই সম্পর্কে শিশ্রকে ক্যালেণ্ডার দেখান যেতে পারে এবং শিশ্র ক্যালেণ্ডারে বারের নাম পড়তে পারে ও ক্য়টি বারের নাম আছে তা গ্রণতে পারে। বারের নাম গ্রণতে গিয়ে শিশ্র দেখবে ক্যালেণ্ডারে সাতটি বার আছে; তখন শিক্ষক শিশ্রকে বলবেন এই সাতটি বার নিয়ে হয় এক স্পতাহ।

শিশ্বকে জিজ্ঞাসা করা যেতে পারে এটা কি মাস—শিশ্ব এর উত্তর দিতে পারলে ভালই না পারলে শিক্ষক বলে দেবেন। তারপর শিক্ষক সেই মাসের ক্যালেণ্ডার শেশীতে উপস্থিত করবেন। শিশ্বরা ক্যালেণ্ডারে দেখতে পারে—সেই মাসে ক্য়টি দিন বা ক্য়টি স্পতাহ আছে। এইভাবে শিশ্ব দিন, স্পতাহ ও মাসের সঙ্গে পরিচিত হবে।

50। মুদ্রা—টাকা আনা পয়সা—বাজার করা বা খেলার দোকানের সাহায্যে গণনা শিক্ষা—মুদ্রা কথায় প্রকাশ করতে হবে, মুদ্রার প্রতীকে (symbol) নয়।—প্রথমে প্রচলিত স্হানীয় মুদ্রার সঙ্গে শিশুর পরিচয় হওয়া দরকার—অধিকাংশ শিশুর মুদ্রার সঙ্গে কিছু পরিচয় থাকে। শিক্ষক শিশুদের কাছে প্রকৃত মুদ্রা উপস্থিত ক'রে বুঝিয়ে দিতে পারেন কোন মুদ্রার কি নাম যেমন—টাকা, আধুলি, সিকি, দুয়ানি, আনি, পয়সা ইত্যাদি। এ সময় শিক্ষক শিশুকে কটা আধুলিতে, কটা সিকিতে, কটা দুয়ানিতে, কটা আনিতে টাকা হয় তা দেখিয়ে বুঝিয়ে দিতে পারেন।

বিভিন্ন রকমের মুদ্রার আকৃতি ও রঙ ইত্যাদির সঙ্গে শিশ্ব পরিচিত হ'লে শিক্ষক শিশ্বদের সহযোগিতায় প্ররূপ মুদ্রা কার্ডবোর্ড দিয়ে প্রস্তুত করবেন—ত'র দেখাদেখি শিশ্বরা তৈরী করতে চেন্টা করবে এবং দোকান দোকান খেলায় এগ্র্লি ব্যবহার ক'রে মুদ্রা গ্রণতে শিখবে ও মুদ্রার সঙ্গে পরিচয় আরও বাড়বে।

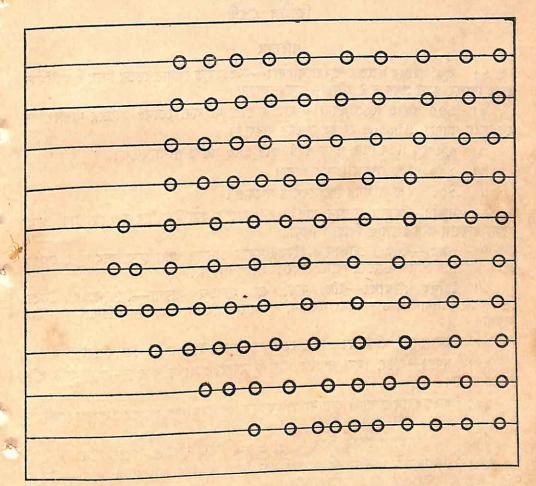
ডাক টিকিট, রেলের টিকিট বা বাসের টিকিট প্রভৃতি কাগজ বা কার্ডবোর্ড প্রারা তৈরী করান যেতে পারে—এগুলোর প্রারা মুদ্রার ব্যাবহারিক পরিচয় হতে পারে—বিভিন্ন দামের টিকিট বেচা কেনার পর হিসেব মিলিয়ে দেখা যেতে পারে।

এভাবে শিশ্র যোগ সম্বন্ধে কিছুটা ধারণা হবার পর ছোট ছোট সমস্যার দ্বারা বিয়োগের নিয়ম সম্বন্ধে ব্রিয়ে দেওয়া যেতে পারে—যেমন রামের ৭টি মার্বেল আছে সেহরিকে ৪টি দিল তাহলে তার কাছে আর কটা রইল; একটা ফুলগাছে ৮টা ফুল আছে তার খেকে ৩টা তুলে নিলে কটা ফুল গাছে থাকবে ইত্যাদি প্রশেনর সাহায্যে ব্যবহারিকভাবে বিয়োগের জ্ঞান লাভ করবে।

এভাবে বিষয় বা বস্তুর সাহায্যে যোগ বিয়োগ সম্বন্ধে শিশ্বর জ্ঞান হলে তারপর তাকে হ ঘর বিশিষ্ট সংখ্যার যোগ বিয়োগ শেখাতে হবে, হাতে কিছ্ব থাকবে না এবং কোন ক্ষেত্রেই সংখ্যাগুলো ২০এর বেশী হবে না।

১২। সংখ্যাগণনা, যোগ বিয়োগ সম্পর্কে বল ফ্রেম বা Abacus এর ব্যবহার:-

#### Abacus এর ছবি



শেলটের মত আকারের একটি কাঠের ফ্রেমে সমাল্তরালভাবে, দশটি তার লাগান থাকে। প্রত্যেকটি তারে দশটি করে কাঠের, ক্লাচের, লোহার বা পেতলের ছিদ্রযুক্ত বল লাগান থাকে। বলগুলো এদিক ওদিক নাড়াচাড়া করা যায়। প্রত্যেক সারির বলের বিভিন্ন রঙ থাকে। বজগীন বল ও নাড়াচাড়া করার ব্যবস্থা থাকায় এ জিনিষটি শিশুদের কাজে আকর্ষণের বস্তু।

#### Abacus বা বল ফ্রেমের ব্যবহার।

সংখ্যা গণনা শিখতে শিশ্রা একটি একটি করে বল গুণে একধার হতে আর এক ধারে নিতে পারে। এক এক সারিতে বা দুই সারিতে কতগুলো বল আছে তা জানতে পারে। এই অভিজ্ঞতা থেকে তারা যোগ শিখবার সুযোগ পাবে। এক সারিতে যে কয়টি বল আছে তা থেকে কতকগুলি যেমন চারটি কি পাঁচটি বল অন্যধারে সরিয়ে নিলে কয়টি বাকী থাকে, এভাবে হিসেব করার ভেতর দিয়ে শিশ্ বিয়োগ সম্বন্ধে প্রাথমিক ধারণা লাভ করতে পারে। Abacus এর দ্বারা সংখ্যাগণনা, যোগ ও বিয়োগ শেখার পর শিশ্ বস্তুনিরপেয় সংখ্যা দ্বারা যোগ ও বিয়োগ শিখতে পারে।

শিক্ষক ছিদ্রযুক্ত মাটির গুলি পুড়িয়ে নিয়ে বিভিন্ন রঙ ক'রে বণশের ফ্রেমে তার দিয়ে Abacus বা বল ফ্রেম তৈরী ক'রে নিতে পারেন।

### দিতীয় শ্রেণী

#### **शा**ठे। क्रम

- ১। পূর্ব বছরের কাজের পুনরালোচনা।— স্বতঃপ্রবৃত্ত খেলার ভেতর দিয়ে ও মৌখিকভাবে বিশেষ ক'রে প্রথম দুই প্রক্রিয়ার পুনরালোচনা।
- ২। ১৫০ পর্যাত সংখ্যাগণনা।—হাতের কাজ বা অন্য কোনও কাজের মাধ্যমে দশ দশ ক'রে গণনা। Abacus বা বল ফ্রেমের ব্যবহার।
  - । দুই দুই, তিন তিন, পণাচ পণাচ করে ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যাগণনা।
  - ৪। ১৫০ পর্যান্ত সংখ্যা চিনতে পারা।
  - ৫। ১৫० পर्यन्ज मर्थाात विस्नियं ଓ मरयाजन।
- ৬। মুদ্রা—খেলার দোকান, বাড়ীর জন্য বাজার করা ইত্যাদির সাহায্যে টাকা আনা প্রসা ব্যবহার করে যোগ ও বিয়োগ শিক্ষা।
- 9। ওজন।—খেলার দোকান ও তরিতরকারীর ওজনের দ্বারা সের, আধ সের, পোয়া, ছটাক ইত্যাদির জ্ঞান—ওজনের স্হানীয় মানের সঙ্গে পরিচয়।
- ৮। রৈখিক পরিমাপ।—ইণ্ডি, ফুট, গজ সম্বন্ধে ধারণা—শিশুগণের উচ্চতা, শ্রেণীকক্ষে আসবাবপত্র ও অন্যান্য সরঞ্জাম, বাগানের বিভিন্ন অংশের পরিমাপ সম্পর্কে ধারণা।
  - ১। তরল পদার্থ পরিমাপ।—দুধ, তেল, পানীয়জল ইত্যাদি সম্পর্কে ধারণা।
- ১০। সময়।—ঘণ্টা, দিন, সপ্তাহ, মাস ও বংসরের সঙ্গে পরিচয়—মোটামুটি ঘড়ি দেখতে জানা।
- ১১। হাতে রেখে খেলা ও অন্যান্য কাজকর্মের সাহায্যে সরল যোগ ও বিয়োগ (মোখিক ও লিখিত) সম্বন্ধে জান।
  - ১২। কর্মতংপরতার ভেতর দিয়ে ২, ৫, ও ১০ ঘরের গুলনের নামতা গঠন।
- ১৩। খেলাধ্লা ও বাগানের কাজের মধ্য দিয়ে সাধারণ জ্যামিতির জ্ঞান।— ত্রিভুজ, আয়তক্ষেত্র, বর্গক্ষেত্র এবং ব্রের সঙেগ পরিচয়।
- ১। পূর্ব বংসরের কাজের পুনরালোচনা—স্বতঃপ্রবৃত্ত খেলার ভেতর দিয়ে ও মৌখিক-ভাবে বিশেষ ক'রে প্রথম দুই প্রক্রিয়ার—যোগ বিয়োগের পুনরালোচনা।—প্রথম শ্রেণীতে যোগ ও বিয়োগ সম্বন্ধে শিশুর যে ধারণা হয়েছে তাকে কার্যকরী করার জন্য কয়েকটি খেলার সাহায্যে পুনরালোচনা করা যেতে পারে। যেমন ''হ'াস শিকার''—কার্ডবার্ডের

प्वाता करस्रकि है है है रित रे केंद्र रिट भारत थर थर थर्दि सार्छ में एर्स थारक छात्र कर्म कार्ड व्याद्ध (उठावित स्थार) एर्स है सिक्स है स

এই খেলার ভেতর দিয়ে বিয়োগের ও পুনরালোচনা করা যেতে পারে। কয়টা হ**াস** শিকার করতে পারল, কয়টা বাকী রইল প্রত্যেক শিশু যদি হিসেব করে তাহলে বিয়োগের ধারণা বন্ধমূল হতে পারে।

প্রত্যেক শিশুর জন্য সংখ্যা লিখিত কার্ড (sum card) ব্যবহার করা যেতে পারে—

শিক্ষক এ জাতীয় কার্ড প্রস্তুত করে শিশুদের দিতে পারেন এবং শিশুদের আগ্রহ বাড়াবার জন্য ছবিসম্বলিত (পাখী, ফুল, ইত্যাদি) অঙক কার্ডে দিতে পারেন।

২। ১৫০ পর্যা-ত সংখ্যা গণনা—হাতের কাজ বা অন্য কাজের মাধ্যমে দশ দশ করে গণনা। Abacus বা বল ফ্রেমের ব্যবহার।—প্রথম শ্রেণীতে শিশু যেভাবে সংখ্যা বলা, পড়া ও লেখা শিখেছে সেইভাবেই অগ্রসর হয়ে ১৫০ পর্যা-ত সংখ্যাগণনা শিশু শিখবে। এই বয়সে শিশুর সংখ্যাগণনা সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা বাড়াবার প্রয়োজন আছে—নানারকম কাজের মধ্য দিয়ে—বিদ্যালয়ের ছাত্রসংখ্যা গণনা—বাগানের কাজে বীজ বা গাছের সংখ্যাগণনা—স্তা কাটার কাজে স্তার তার—বিদ্যালয়ের আসনের সংখ্যা ইত্যাদির গণনা সম্পর্কে শিশু ১৫০ পর্যা-ত সংখ্যাগণনা ক'রতে শিখবে।

বাস্তব জিনিষের সাহায্যে সংখ্যাগণনা শেখার পর বস্তুনিরপেক্ষ সংখ্যার সাহায্যে ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যাগণনা ক'রতে শিখবে।

দশ দশ ক'রে ছাত্রসংখ্যা গণনা, স্তার তার গণনা, গাছের সংখ্যা বা সারি গণনা, বল ফ্রেমের বলগুলি গণনা ইত্যাদির সাহায্যে শিশ্ব ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যাগণনা ক'রতে শিখবে। প্রথম শ্রেণীতে ১০টি ক'রে কাঠির গোছা সম্বন্ধে যা বলা হয়েছে তার ব্যবহার এখানেও করা যেতে পারে।

Abacus বা বল ফ্রেমের সাহাযোও ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যাগণনা শেখান যায়। এক একটা তারের মধ্যে ১০টা ক'রে এক এক রংয়ের বল থাকে—নীচে বা ওপরে প্রথম সারিতে (একক) এক একটি বলের মূল্য এক—দ্বিতীয় সারিতে (দশক) এক একটি বলের মূল্য দশ— তৃতীয় সারিতে (শতক) এক একটি বলের মূল্য একশ। যদি ১১২ সংখ্যা প্রকাশ ক'রতে হয় তাহলে দেখতে হবে ১১২ এর মধ্যে কত একক, কত দশক, কত শতক আছে। ১০০+১০+২=১১২ অর্থাৎ শতকের সারির একটি বল বাম দিক থেকে ডান দিকে রাখলে ১০০ হবে—দশকের সারির একটি বল ডান দিকে রাখলে ১০ হবে—এককের সারির দুটি বল ডান দিকে আনলে ২ হবে—তাহলে মোট ১১২ সংখ্যা হবে। স্ক্তরাং এর সাহায্যে ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যার ধারণা দেওয়া যেতে পারে।

নিম্নোক্ত অঙক লেখা কার্ড (sum card) প্রত্যেক শিশর জন্য ব্যবহার করা যেতে পারেঃ—

 \$\mathcal{2} = ?
 \$\mathcal{4}^{\mathcal{4}}\$
 \$\mathcal{4}^{\mathcal{4}}\$

 \$\mathcal{2} = ?
 "
 "
 "

 \$\mathcal{2} = ?
 "
 "
 "
 "

 \$\mathcal{2} = ?
 "
 "
 "
 "
 "

 \$\mathcal{2} = ?
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "
 "

ইত্যাদি

- ৩। দুই দুই, তিন তিন, প'াচ প'াচ করে ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যা গণনা।—এই শ্রেণীতে এভাবে গণনা না ক'রলেও চলতে পারে।
- ৫। ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যার বিশ্লেষণ ও সংযোজন।—১ থেকে ২০ পর্যন্ত সংখ্যার বিশ্লেষণ ও সংযোজন শিশ্ব প্রথম শ্রেণীতে শিখেছে এবং এখানে প্ররালোচনার দ্বারা ঐ জ্ঞান কতকটা প্রসারলাভ করেছে। ঐ পদ্ধতি গ্রহণ ক'রে ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যার সংযোজন ও বিশ্লেষণ শিশ্বকে শেখান যেতে পারে।

এ জাতীয় অঙক করবার জন্য প্রত্যেক শিশুকে সংখ্যা লেখা কার্ড ( sum card ) দেওয়া যেতে পারে।

७। मूप्ता— (थलात प्रांकान, वाष्ट्रीत जना वाजात कता देवापित प्रांवाया होका जाना गत्रत्रा वाववात क'रत याज ४ विराग मिक्सा — श्रथम द्वावीर प्रांकान प्रांकान याजात जांक्छवा थ्यं के मूप्ता वाववात त्रम्वत्य शार्थामक थान्न मिन्दू द्रार्था। प्रांकान त्रांजावात वावक्ष्य वात्र्य वेक्ष्य वाष्ट्रां त्रम्वत्य शार्थामक थान्न वात्र्य वाप्ट्रां व्यांत्र व्यां विराग वाववात क'रत प्रांत्र प्रांवा वाववात वावक्ष्य वाप्ट्रां विराग वाववातिक जां वात्र त्रांवा वात्र विराग वाववातिक जां वात्र प्रांवा विराग वाववातिक वात्र वात्र प्रांवा विराग वाववातिक वात्र वात्र वात्र प्रांवा विराग वाववातिक वात्र वात्र

थाकला याण कतात म् विधा श' लि भारत, रक्तना थ्रथस्य यिन होका, जाना, ७ भ्रम्म शिमादत मर्था तिश्वा श्र हात मिन्द्र भर्ष विषयहों जायह कता किन श'र भ्र भ्र ति। जिन्हा कर्यक्रें किनियत मान्य एवं क्षेत्र श्र मिन्द्र भर्ष विषयहों जायह क्षेत्र किनियत मान्य क्षेत्र श्र मिन्द्र हाम याण क' त्र विषय जाना विषय विषय विषय के विषय के

এই খেলার দোকান বা বাজার করার ভেতর দিয়ে শিশ্ব মুদ্রার বিয়োগ অঙ্কের সঙ্গে পরিচিত হ'তে পারে যেমন ক্রেতা কয়েকটা জিনিষ কিনল—দাম হিসেবে এক টাকা দিল, কিন্তু জিনিষগুলার দাম এক টাকার কম হ'য়েছে—বাকী পয়সা ক্রেতাকে ফেরং দিতে হবে—বিয়োগের সমস্যা আপনা আপনি এসে প'ড়বে এবং এ সমস্যার সমাধান ক'রতে গিয়ে শিশ্ব মুদ্রার বিয়োগ শিখতে পারবে।

- १। ७ऊन—एथलात प्राकान ७ र्जात्वव्यकातीत ७ऊप्तत म्वाता प्रित्त, व्याध प्रत्त, प्राक्षा, क्रिंक हेणांपित छान—७ऊप्तत म्हानीय मात्नत प्रध्य प्रात्ता प्रांत छान —७ऊप्तत म्हानीय मात्नत प्रध्य प्रात्ता प्रांत प्रांत प्रात्त प्रात प्रात्त प्रात्त प्रात्त प्रात्त प्रात्त प्रात्त प्रात्त प्रात प्रात्त प्रात्त
- ৮। রৈখিক পরিমাপ—ইণ্ডি, ফ্রট, গজ সম্বন্ধে ধারণা—শিশ্বগণের উচ্চতা, শ্রেণীকক্ষে আসবাবপত্র ও অন্যান্য সরঞ্জাম, বাগানের বিভিন্ন অংশের পরিমাপ সম্পর্কে ধারণা।—আগের বছর শিশ্বদের হাত, বিঘত ও আঙগ্বলের সাহায্যে রৈখিক পরিমাপের ধারণা দেওয়া হ'য়েছে। এই শ্রেণীতে কাজের মধ্য দিয়ে শিশ্বদের ইণ্ডি, ফ্রট, গজ ইত্যাদির ধারণা দিতে হবে এবং একের সঙ্গে অন্যের সম্পর্ক ব্রিয়ে দিতে হবে।

এরকমভাবে মাপতে গিয়ে শিশ্ব হয়ত দেখবে কোন জিনিষ যেমন টেবিল ৩ ফুট হ'য়ে কিছু বেশী আছে যেটা ১ ফুটের চেয়ে কম। এই অংশটী মাপতে শিশ্বা সমস্যায় প'ড়বে —হয়ত বাকী অংশটী আঙগুল বা বিঘত দিয়ে মেপে নেওয়া যেতে পারে কিন্তু এর্পভাবে মাপতে গিয়ে মাপের তারতম্য হবে এবং সাধারণ মানে প্রকাশ করা সম্ভব হবে না (শিশ্বদের অংডগুল, বিঘতের মাপের তারতম্য থাকাতে)। স্ত্রাং শিক্ষক এক ফুট কাঠিটিকে সমান

১২ ভাগে ভাগ ক'রে দেখিয়ে দিতে পারেন এবং এক এক ভাগকে এক ইণ্ডি বলা হয় একথা ব'লতে পারেন। শিশুরা এখন টেবিলের বাকী অংশটি (৩ ফুট হ'য়ে যা বেশী ছিল) ফুটের ছোট বিভাগ এই ইণ্ডির সাহায্যে মাপতে পারে। এভাবে ফুটের সঙ্গে ইণ্ডির সম্বন্ধ বুঝতে পারবে।

শिশ्र वा रख्य कालर प्रति पाकार परिथ थाकरव वक क्रितं हिर वस्या वकि का कि जा कार्या कालक माला रखा। त्रिर कारिहिर कि विचार वा रखा। विचार प्रति प्रति प्रति विचार कालक माला रखा। त्रिर कारिहिर कि विचार विचार कारिहिर कारिहिर कारिहिर कारिहिर विचार विचार कारिहिर विचार विचार कारिहिर विचार व

৯। তরল পদার্থ পরিমাপ—দুধ, তেল, পানীয় জল ইত্যাদি সম্পর্কে ধারণা।—শিশু দোকান থেকে তেল আনতে গিয়ে বোতল বা শিশিতে নির্দিষ্ট পরিমাণ তেল মেপে দিতে দেখে—বাড়ীতে গোয়ালা দুধ দিতে আসে, বংশের চোঙগা, বা ঘটি বা টিনের কোটা দিয়ে নির্দিষ্ট পরিমাণ দুধ মেপে দিতে দেখে। এসব দেখে তার তরল পদার্থের পরিমাপ সম্বন্ধে প্রাথমিক ধারণা হ'তে পারে।

খেলার ছলে শিশ্ব কোন বড় পাত্র থেকে টিনের কৌটা, মগ, ঘটি, নারিকেলের মালা ইত্যাদির দ্বারা বিভিন্ন আকারের পাত্র জল দিয়ে ভরে দেখতে পারে কোন গাত্রে কত মগ বা ঘটি জল ধরে। এভাবে অন্যান্য তরল জিনিষের পরিমাপের সঙ্গে পরিচয় হ'তে পারে।

১০। সময়— धणा, দিন, সণ্তাহ, মাস ও বংসরের সংশ্বে পরিচয়— মোটামুটি ঘড়ি দেখতে জানা।—প্রথম শ্রেণীতে শিশুরা দিন, সণ্তাহ ও মাসের সম্বন্ধে প্রাথমিক ধারণা পেয়েছে। বাস্তব ঘড়ির সাহায্যে শিশুকে ঘণ্টা মিনিট প্রভৃতির জান দেবার চেন্টা ক'রতে হবে। শিশু যাতে ঘড়ি দেখে সাধারণভাবে সময় ব'লতে পারে তার ব্যবস্হা ক'রতে হবে— তাদের ঘড়ি দেখাতে হবে— শিশ্বকের সাহায্যে কার্ডবোর্ড দিয়ে ঘড়ি তৈরী ক'রবে। ঘড়ি দেখে সময় ব'লতে শেখাবার সময় শিশুর দৈনন্দিন জীবনে সময়ের প্রয়োজনের দিকে লক্ষ্য রেখে এ বিষয়ে অগ্রসর হ'তে হবে। কত ঘণ্টায় এক দিন হয়—দিন ও রাত্রি মিলে যে ২৪ ঘণ্টা হয় তা শিশুকে বুঝিয়ে দেওয়া যেতে পারে। দিনের সঙ্গে সণ্তাহ ও মাসের সম্পর্ক সম্বন্ধে আরও বিস্তারিত জ্ঞান্দান ক'রতে চেন্টা ক'রতে হবে। মাসের বেলায় বাংলামাসের ওপর জোর দিতে হ'বে। মাসিক পঞ্জিকা তৈরী করা দরকার হবে।

ক্য় মাসে বছর হয় তা শিশুকে ব'লে দিতে হবে। শিশুর বয়স হিসেবের দ্বারাও বছর সম্বশ্বে কতকটা ধারণা হ'তে পারে।

কোন নিদিপ্ট দিন কি বার, কোন মাস, কোন তারিখ, কোন বংসর ইত্যাদি ক্যালেপ্ডার দেখিয়ে বার, মাস, তারিখ ও বংসর সদ্বন্ধে ধারণা দেওয়া যেতে পারে। মাসিক পঞ্জিকা থেকে আরম্ভ ক'রে ক্রমে বংসরের পঞ্জিকাও শিশুকে দিয়ে তৈরী করান যেতে পারে।

শিশুর জন্মতারিখ, মহাপুরুষগণের জন্মতারিখ, পূজা পার্বণের তারিখ ইত্যাদি বিষয়গুলোর সঙ্গে শিশুর পরিচয় হ'লে সন তারিখের ধারণা হওয়া সম্ভব। বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠাদিবস শিশুকে জানিয়ে দেওয়া যেতে পারে। শিশুর জন্মতিথি বাড়ীতে পালিত হ'য়ে থাকে,
—অন্যান্য ঘটনা নিয়ে বিদ্যালয়ে উৎসবের ব্যবস্হা করা যেতে পারে—এসকল ব্যবস্হার ভেতর
দিয়ে শিশুকে দিন, মাস ও বৎসরের ধারণা দেওয়া যেতে পারে।

১১। খেলা ও অন্যান্য কাজকর্মের সাহায্যে হাতে রেখে সরল যোগ ও বিয়োগ (মৌখিক ও লিখিত) সম্বন্ধে জান।—প্রথম শ্রেণীতে শিশ্রা খেলা ও অন্যান্য কাজকর্মের সাহায্যে এবং বস্তুনিরপেক্ষ সংখ্যার সাহায্যে হাতে না রেখে যোগ ও বিয়োগ ক'রতে শিখেছে। এখানে হাতে রেখে যোগ ও বিয়োগ শেখাতে হবে—স্হানীয় মানের দরকার হবে—Abacus ব্যবহারের প্রণালী সম্বন্ধে বলার সময় স্হানীয় মান সম্বন্ধে ধারণা কিভাবে দেওয়া যায় তা

শिশ ১৫০ পর্যন্ত সংখ্যার সংযোজন ও বিশ্লেষণ শিখেছে। এই জ্ঞানের সঙ্গে সংখ্যার স্থানীয় মানের জ্ঞান হাতে রেখে যোগ ও বিয়োগ করতে শিশ কে সাহায্য ক'রবে। উদাহরণ-র পে শিশ কৈ জিজ্ঞাসা করা যেতে পারে তার বাগানের কোন অংশে প্রথম সারিতে ১৮টি বেগন গাছ আছে, দ্বিতীয় সারিতে ১৫টি আছে—মোট কটি আছে? এখানে ১৮ ও ১৫ যোগ করতে হবে। ১৮ ও ১৫ নীচে নীচে যোগ করতে গেলে পদ্ধতিটা এরকম হবেঃ—

এককের ঘরে ৮ ও ৫ যোগ করলে ১৩ অর্থাৎ এক দশ তিন হয়—৩ এককের ঘরে নামবে এবং এক দশককে দশকের ঘরে যোগ করতে হবে। দশকের ঘরের ১ ও ১ যোগ করলে ২ হয় তার সঙ্গে আর এক দশক যোগ হয়ে দশকের ঘরে ৩ নামবে—উত্তর হবে ৩ দশ ৩ অর্থাৎ ৩৩।

বিয়োগের বেলায় এ প্রক্রিয়া অবলম্বন করা যেতে পারে। যেমন শিশ্ব সকালে ১৮টি গাছ লাগিয়েছে—ঐ সারিতে মোট ৩৩টি গাছ লাগাতে হ'লে আর কয়টা গাছ তাকে লাগাতে হবে। সংখ্যায় প্রকাশ ক'রতে হলে অঙকটি এর্প হবে;—

এখানে বিয়োগের প্রশ্ন আলে। ৩৩ হ'তে ১৮ বিয়োগ ক'রতে হবে। সংখ্যা দুটো এইরকম দংড়ায়।

শিক্ষক এ জাতীয় অঙ্কের দ্বারা হাতে রেখে যোগ বিয়োগ শিক্ষা দিতে পারেন।

শিশ্র বাস্তব অভিজ্ঞতা থেকে সমস্যাম্লক সহজ যোগ ও বিয়োগ অভক শিক্ষক মৌখিকভাবে সমাধান করবার জন্য শিশ্কে দিতে পারেন।

নামতা কিভাবে পড়তে হয় তাও ব্বিয়ে দেওয়া দরকার, যেমন—

२ 4 8

২, ৩ এ ৬ ইত্যাদি

অথবা

5 व २

पूछर्व 8

৩, দুগুণে ৬

8, দুগুণে ৮ ইত্যাদি

वुष्ठ, वा त्थला वा शास्त्र कारक्षत प्वाता नामणात धात्रा विक्रार्डण प्रव निम् नामणा जावरिष क'रत लाख क'त्रा भारत।

नित्म्नाक िव्याशास्या भूगत्व नामण मन्दिन धात्मा प्रथा रात भारतः

২ এর নামতার চিত্র

ा ऽ की पूर्वे	
च्या चित्र क्षेत्र	
□ □ □ □ ७५ मूर्वे	
□ □ □ □ 8 छी हुई	
□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □	
□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□	
□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□□	
	2
নামতা শেখান ব্যাপারে শিক্ষক এ বিষয়গুলো মনে রাখবেন— ক) নামতা সঠিকভাবে মখ্যত রাখা একাল্য আব্ধাকে	

- (খ) শিক্ষক শিশুদের বাড়ী থেকে মুখস্থ ক'রে আসতে বলবেন না—শ্রেণীতেই মুখস্থ क्त्रादन थरः थरे नियमग्राला शालन क'त्रदन:-
  - (১) মুখস্থ করবার প্রের্ব শিশ্রা ভাল ক'রে ব্রুতে চেণ্টা ক'রবে।
  - (২) প্রতিদিন ১০ মিনিটের অন্ধিক সময় তারা নামতা অভ্যাস ক'রবে।
  - (৩) আনন্দদায়ক অভিজ্ঞতা যেমন খেলার মধ্য দিয়ে নামতা শেখাবার ব্যবস্থা ক'রতে
  - (৪) শিশ্রা যেন গোড়ার থেকে কোন নামতা আব্তি না ক'রেই প্রশেনর উত্তর সঠিক-ভাবে দিতে পারে, যেমন—

৫ বার (গুণন) ৬ কত হয়? উত্তর দেওয়ার সময় শিশ্ব যেন বলতে পারে ৫, ৬ এ ৩০

र्य।

১৩। খেলাধ্লা ও বাগানের কাজের মধ্য দিয়ে সাধারণ জ্যামিতির জ্ঞান—ত্রিভুজ, আয়তক্ষেত্র, বর্গক্ষেত্র এবং ব্রের সঙ্গে পরিচয়।—এমন কতকগুলো খেলার ব্যবস্থা শিক্ষক ক'রতে পারেন যাতে শিশুদের বিভিন্ন আকারে দ'াড়াতে, ব'সতে বা দৌড়াতে বলা যেতে পারে, যেমন—ত্রিভুজ, আয়তক্ষেত্রাকার, বর্গক্ষেত্রাকার, ব্যুত্তাকার ইত্যাদি।

এছাড়া বিভিন্ন আকারের কাগজ ক'াচি দিয়ে কাটতে পারে—ঘুড়ি তৈরী ক'রতে পারে।
মুদ্রা তৈরী করবার সময় ব্তাকার ও বর্গক্ষেত্রাকারের সম্বন্ধে জ্ঞানলাভ ক'রতে পারে।
শিক্ষক জ্যামিতির বিভিন্ন আকারবিশিষ্ট কাঠের টুকরা শিশুদের দেখাতে পারেন।

বাগানের কাজ ক'রতে হলে জমি প্রস্তুত ক'রতে হয়। জমি প্রস্তুত করার সময় যদি বিভিন্ন আকারের জমি শিশ্বকে দেওয়া হয় তাহলে বিভিন্ন জ্যামিতির আকারের সঙ্গে পরিচিত হ'তে পারে।

বাগানে চারাগাছ লাগাবার সময় বিভিন্ন আকারে সাজিয়ে লাগান যেতে পারে।

জ্যামিতির বিভিন্ন আকার সম্বন্ধে সঠিক ধারণা শিশুদের হয়েছে কিনা, তা জানবার জন্য জ্যামিতির ঐ আকারগুলি শিশুদের অংকতে দেওয়া যেতে পারে।

the develop mean are less substituted information of the region of

Present in the service of the servic

AND AND THE RESERVE AND IN

The second of th

100

# প্ৰথম শ্ৰেণী

এই বয়সে শিশুদের ভূগোলের কোন পাঠ্যপ্রতক থাকবে না এবং প্থক বিষয় হিসাবে ভূগোল পড়ানও হ'বে না। তবে শিশুর নানাবিধ কাজ ও দৈনন্দিন জীবনযাপনের মধ্য দিয়ে ভূগোল শিক্ষার প্রথম পাঠ আরম্ভ হ'বে। স্কুলে দেশ-বিদেশের নানারকমের রিঙ্গিন ছবির বই, চার্ট ইত্যাদি থাকবে এবং সেগুলো আলমারীতে বন্ধ না রেখে শিশু যাতে সব সময় ব্যবহার করার সুযোগ পায়—সেদিকে সতর্ক দ্ভি রাখতে হবে।

- ১। नाना त्रः दात नानात्रकम छीवछन्त्, प्रमूप्यी, निर्छापत पर्णत नानाविध श्राकृष्ठिक प्रमात हिंद (रामन पार्छि लिः, गिलः, प्रमा, ग्रह्मा हेठापि) श्राणां हिंक छीवनयातात विविध हिंद (रामन क्रांत इंगिंगि टेंज्ती कर्त्र , छिल्ला माह धर्त्र, रक्श वा प्राकान कर्त्र हेठापि हेणां गिम्पू प्रमात इंगिंगि टेंज्ती कर्त्र , छिल्ला माह धर्त्र, रक्श वा प्राकान कर्त्र हेणां हिंदि । विक्रिक्त प्रमूप्त वा किन्तू व्यू वाहा वाह्य हिंदि । विक्रिक्त वहें वामाप्त प्रमूप्त वेष्ट दिन्दी हर्मा। किन्तू व्यू काछ मुद्र हेशा प्रकात। श्राधिमक गिष्ट्रक्षण्य निर्ह्मपत वावहादिक छान व्यक्त वहें विकार वहें तहना कर्त्र भारतन।
- ২। শিক্ষক মহাশ্য় শিশ্বদের মাঝে মাঝে বেড়াতে নিয়ে যাবেন এবং গ্রামের কোনদিকে স্কুল, পোণ্ট-অফিস, নদী, বাজার ইত্যাদি রয়েছে তা দেখাবেন। বাড়ী হ'তে স্কুলে যেতে হ'লে কোন পথ দিয়ে যেতে হয় এবং পথে কি কি জিনিষ দেখতে পাওয়া যায়—শিশ্ব তা লক্ষ্য কর্ক এবং আলোচনা প্রসঙ্গে শিক্ষক মহাশয় তার শব্দভাণ্ডার ব্দিধ কর্ন। মনে রাখতে হবে—এই বয়সে শিশ্বদের শারীরিক সামথ্য খুবই কম। শিশ্বরা আনন্দের আতিশয্যে বাইরে যেতে খুবই আগ্রহ প্রকাশ করবে কিন্তু উৎসাহী শিক্ষক মহাশ্য় লক্ষ্য রাখবেন—যাতে শিশ্বরা অতিরিক্ত শ্রমণের ফলে অস্কুহ হ'য়ে না পড়ে এবং পরিশ্রমণের সঙ্গে শিক্ষার যেন যোগস্ত্র থাকে।
- ०। পथ চলতে চলতে নানাবিধ লোকের সঙেগ শিশুর পরিচয় হবে, কেউ বা ধোপা, কেউ বা নাপিত, কেউ বা কামার, কেউ বা কুমার, কেউ বা গয়লা, কেউ বা মুদী, কেউ বা চাষী, কেউ বা ব্যবসায়ী ইত্যাদি। শিক্ষক মহাশয় শিশুদের উপযোগী করে' সমাজ ব্যবস্হায় প্রত্যেকের প্রয়োজনীয়তা কোথায়—তা বুঝিয়ে দেবেন। (যদিও সমাজ সম্বন্ধে শিশুর কোন স্পর্ট ধারণা নাই—তবু তারা কে কি কাজ করেন এবং না থাকলে কি অসুবিধা হ'ত—তার একটা ধারণা দেবেন।) এই প্রসঙ্গে শিশুকেও গলপ বলতে উৎসাহিত করা হ'বে।
- 8। শিশ্রা সাধারণতঃ নানাপ্রকার জীবজন্তু ভালবাসে এবং অনেকের বাড়ীতে নানাপ্রকার পোষা পশ্পক্ষীও আছে। এই সব পোষা পশ্পক্ষী জীবজন্তুকে কেন্দ্র করে শিক্ষক
  মহাশ্য় নানাবিধ আলোচনা করবেন এবং জীবজন্তুর স্বভাব, খাদ্য ইত্যাদি বিষয়ে শিশ্বদের
  নিকট হ'তে গল্প আদায় করবেন।
- ৫। বাংলা দেশের প্রায় সর্ব্রেই স্কুলের চারধারে পথের পাশে আমগাছ, জামগাছ, কুণঠালগাছ প্রভৃতি নানাপ্রকার ফলফ লের গাছপালা থাকে। কোন ফল খেতে কেমন, কোন ফলের কি রং, কোন ফল দেখতে কেমন ইত্যাদি বিষয়ে শিক্ষক মহাশয় আলোচনা করবেন এবং শিশুর চারপাশে যা কিছু আছে—তার সম্বন্ধে তাকে সচেতন করে তুলবেন।
- ७। এই বয়সে শিশ্বদের দিক সম্বন্ধে একটা মোটাম্টি ধারণা দেওয়া হবে। স্কাল-বেলায় সূর্য কোনদিকে ওঠে এবং সন্ধ্যাবেলা কোনদিকে অসত যায়; স্যোদয়ের পূর্বে এবং স্থাস্তের পূর্বে আকাশের রং কেমন পরিবর্তন হয় ইত্যাদি বিষয়ে বলা হ'বে। কেন রাত্রি হয়, কেন দিন হয়, স্যোর গতি, আহ্নিকগতি বা বার্ষিকগতি ইত্যাদি জটিলতর বিষয় বোঝাবার বৃথা চেন্টা এখনই না করে'—সাধারণভাবে দিঙ্-নির্ণয় ও রাত্রি-দিনের বৈচিত্র্য বোঝাবার চেন্টা করা হ'বে।

এইভাবে অতি পরিচিত বিষয়বস্তুর মধ্য দিয়ে শিশ্রর প্রথম ভূগোলপাঠ আরম্ভ হ'বে এবং শিক্ষক মহাশয় এইসব বিষয়ের অবতারণা করে' ভূগোলশিক্ষাকে সরস করে' তুলবেন। তবে উপরিলিখিত বিষয়গুলি শিক্ষকের নির্দেশিক মাত্র। কৌশলী শিক্ষক নিজ পরিবেশের

মধ্যে যে সব বিষয়বস্তু লক্ষ্য করবেন তাকে কেন্দ্র করে' ভূগোল পাঠ দিতে চেন্টা করবেন এবং ইতিহাস, প্রকৃতিবিজ্ঞান, সমাজবিজ্ঞান প্রভৃতি বিষয়ের সঙ্গে সংযোগ রেখে (সমবায় প্রণাল্নীতে) ভূগোল শেখাতে চেন্টা করবেন।

#### হাতের কাজ ও সংগ্রহ

- ১। পরিভ্রমণের সময় শিশু যা দেখেছে—তার ছবি অংকা।
- হ। শ্রেণীকক্ষের নক্সা, বিদ্যালয় গ্রের নক্সা, বাড়ী থেকে বিদ্যালয়ে আসার পথ অপকা। প্রথমতঃ শিক্ষকের অভিকত নক্সার উপর শিশ্রো নিজেদের অবিচ্ছিত, শ্রেণীকক্ষের নানাবিধ দ্বের অবিচ্ছিত ইত্যাদি বসা'বে, পরে নিজেরাই অগকতে চেন্টা করবে। (যদিও এই বয়সে ঠিক চ্কেল অনুযায়ী হ'বে না তবু এটা পরে মানচিত্র অভকনে সাহায্য করবে)।
- ৩। বালি, ক'াদা ইত্যাদি নিয়ে খেলা করা (পরে এটা ভৌগোলিক তথ্য জান,তে সাহাষ্য করবে এবং প্রাকৃতিক ভূগোল অনায়াসেই আয়ত্তে আসবে)।
- ৪। নিজেদের পরিবেশের মধ্যে পাখীর বাসা, নানাপ্রকার পোকামাকড়, ফল, ফুল, পাতা ইত্যাদি সংগ্রহ করা।
- ৫। नानाविध (थलना সংগ্রহ করা এবং এইসব খেলনা কোথায় কিভাবে কারা তৈরী করে সে সম্বন্ধে প্রাথমিক আলোচনা করা। শিশ্ব অবশ্য তা প্রস্তুতের নানাবিধ কলা কৌশল সম্বন্ধে খুব বিশেষ জ্ঞান লাভ করবে না তব্ব কোথায় পাওয়া যায় এবং কে করেছে সে সম্বন্ধে মোটাম্টিভাবে জানবে।

### দিতীয় শ্রেণী

#### বয়স ৭+ হতে ৮+

- (এই শ্রেণীতেও কোনপ্রকার পাঠ্যপ্রতক থাকবে না। প্রথম শ্রেণীতে যে যে বিষয়ের কথা বলা হ'য়েছে সেই সেই বিষয়গুলির সম্বন্ধে বিশদ্ধ আলোচনা চলবে; তা ছাড়াও নিম্নলিখিত বিষয়গুলি আলোচনা করতে হবে।)
- १। এই वस्ति यानवाइन मन्दिन्य गिर्द्रिक थात्रणा जिए इति। धार्म शत्र शाज़ी, भाल्की शाज़ी, माहेरकल, जूलि, तोका हेलाजि प्रथा यास्र; एक्सिन महरत वाम, ख्राम, तिक्रमा, स्माहेत श्रकृति नानाविथ यानवाइन प्रथा यास्र। अकम्हान १८० जनम्हात्न रार्ट्ट १८० वर्गाम्या वात्रणा वात
- ৩। পরিশ্রমণ কালে গ্রামে অথবা গ্রামের কাছাকাছি হাট-বাজার থাকলে শিক্ষক মহাশয় মাঝে মাঝে শিশ্বদের সেখানে নিয়ে যাবেন। সেখানে কি কি জিনিষ পাওয়া যায় তা কোথা

## तवप्त व्यथाय

## পরিবেশ-পরিচিতি

## (ক) ভূমিকা

শিক্ষাজগতে যুগে যুগে নানাপ্রকার পরিবর্তন হয়েছে। অতীতের অভিজ্ঞতা নিয়ে মানুষ নুতন নুতন ভাবধারার সঙেগ পরিচিত হয়েছে এবং ভবিষ্যতকে কিভাবে আরও অধিকতর সুন্দর ও কল্যাণকর করা যায়—তারই প্রচেষ্টা অহরহ চল্ছে।

রাষ্ট্রীয় ও সামাজিক আদর্শের পরিপ্রেক্ষিতে শিক্ষার আদর্শ নানা দেশে যুগে যুগে পরিবর্তিত হয়েছে। এই পরিবর্তন যতই বিতর্কমূলক হক না কেন অভিনিবেশসহকারে লক্ষ্য করলে দেখা যাবে সর্বত্রই শিক্ষার একটি মূলসূত্র অব্যাহত রয়েছে। শিক্ষাকে সর্বদেশে সর্বলালে "adjustment" হিসাবেই গণ্য করা হয়েছে।

এই "adjustment" করতে হলে মানুষকে তার পারিপাশ্বিক পরিবেশকে জানতে হয়। ভূগোল, ইতিহাস, প্রকৃতিবিজ্ঞান, সমাজবিজ্ঞান প্রভৃতি জ্ঞানের শাখা সেই পরিবেশকে জানতে সহায়তা করে। এতকাল প্রাথমিক বিদ্যালয়ে জ্ঞানের এই সমস্ত বিভিন্ন বিভাগগুলোকে আমরা প্থকভাবে শেখাতে চেন্টা করেছি। অথচ শিশুর পক্ষে (৬ হ'তে ১১ বংসর) এইসব বিষয়ের বিশেষজ্ঞান অর্থহীন; পক্ষান্তরে পরিবেশের সমগ্র দ্নিউভ্জণী তাদের আকর্ষণ করে।

সেইজন্য "Environmental studies" এর নাম আজকাল শিক্ষাজগতে খুবই শোনা যায়। ভূগোল, ইতিহাস, প্রকৃতি বিজ্ঞান প্রভৃতির বিশেষ জ্ঞান না দিয়ে—পরিবেশের মধ্য দিয়ে ঐসব বিষয়ের জ্ঞান দেওয়াই "Environmental studies" এর মুখ্য উদ্দেশ্য। আমরা এর নামকরণ করেছি—"পরিবেশ-পরিচিতি"।

আমরা আমাদের পরিবেশের মধ্যে অনেক জিনিষ্ট দেখি বটে কিন্তু সন্ধানী দ্বিভঙগী নিয়ে তাহা পর্যবেক্ষণ করি না। আবিজ্ঞারকের মনোব্তি আমাদের নেই—সেখানেই শিক্ষার অসম্পূর্ণতা। উপরন্তু শিক্ষার সঙ্গে বাস্তব জীবনের যোগসূত্র বড় একটা দেখা বায় না। তাই বর্তমান কেতাবী শিক্ষাকে লক্ষ্য করে এবং তার ব্যর্থতা উপলব্ধি করে রবীন্দ্রনাথ দুঃখ করে' এক জায়গায় বলেছেন—

"वर्षान धित वर्षण ध्रितं वर्षाय कित वर्षण कितं वर्षाय कित वर्षण कितं कित्राण्टि शित्राण्टि शिन्ध्र किया व्य नारे क्ष्यू कित्या धत रेंट भूध्र प्रे शा कित्या धकि धानित भीरसत छेंश्त वकि भिमित्रविन्द्र'।

म्मिर्डिं प्रिया शांक्ष्या याय्य विश्वविद्यानाराय प्रतिष्ठ भरीक्षाय भीर्याच्या व्याधिकार करति करति विश्वविद्यानाराय प्रतिष्ठ भर्तिकार भीर्याच्या विश्वविद्याना विद्याना विद्यान विद्यान

জ্ঞানের এই যে অসম্পূর্ণতা, দৃষ্টিভঙগীর এই যে অভাব, তার পরিবর্তন দরকার। নইলে
শিক্ষার প্রকৃত উদ্দেশ্য ব্যথ হ'য়ে যায়। আবিষ্কারকের মনোবৃত্তি নিয়ে, সন্ধানী দৃষ্টিভঙগী
নিয়ে আমাদের শিশুরা তাদের পরিবেশকে সম্যকরুপে জানতে শিখুক, বুৰতে শিখুক,
উপলিন্ধ করতে শিখুক এবং সেই লব্ধ অভিজ্ঞতার দ্বারা নিজেদের প্রতিষ্ঠিত করুক। নিজেদের
প্রত্যিহিক জীবন্যাত্রায় ভূগোল, বিজ্ঞান, সমাজবিজ্ঞান ক্তথানি দ্বান জুকে আছে এবং
আলক্ষ্যে তা তাদের জীবনকে কিভাবে নিয়ন্ত্রিত করছে—তার প্রতাম জ্ঞান তারা আহবার কর্কা
তবেই ভূগোল, ইতিহাস, প্রকৃতিবিজ্ঞান প্রভৃতি শিক্ষার সাথকিতা খ'ুজে পাওয়া যাবে।

#### (খ) ভূগোল

ভূগোল পড়তে গিয়ে গোলে না পড়েছেন—এমন লোকের সংখ্যা খুব কমই আছে। দেশবিদেশের নাম ও নদনদী, হুদের সংজ্ঞা মুখ্যন্থ করা যে কির্কম কন্টকর তা কারও অবিদিত নেই। কিন্তু তবু ভূগোল পড়তে হয়েছে। এজন্য ভূগোলশিক্ষার উদ্দেশ্য ও প্র্ণেটি উভয়কেই দায়ী করা যেতে পারে।

हिलादिलास जित्नक मूथ्य क्त्रि हे'सि माञ्च भागे कित्रिल भूथियोत छल उ श्वाल विवत्न छाना यास — जाराक ज्ञाल वल''। मिछान क्जाल मिएमत नाम, नमीत नाम, भर्व जाम मूथ्य क्त्रा ज्ञाल मिछात मूथ्य छेप्ममा हिल। किन्जू धरे भूथियोठ मान्दार वाम। मान्दार छानव्णिय छन्। मान्दार छानव्णिय छन्। मान्दार छानव्णिय छन्। मान्दार छानव्णिय छन्। मान्दार छन्। मान्दार छानव्णिय छन्। मान्दार छन्। प्रहे छन्। प्रहे छन्। अहि कार्यकाल प्रमान्दार छन्। अहि कार्यकाल प्रमान्दार छन्। आमाप्त आयोप कित्र प्रमान्दार कित्र प्रमान्दार छन्। आमाप्त आयोप कित्र विपाल हाण अस्त हिन्य ना स्ता छन्। अहि ना हे'ल थान हान सान्दार मान्दार कन्। अहि ना हे'ल थान हान सान्दार प्रमान्दार कन्। अहि ना हे'ल थान हान सान्दार मान्दार कन्। अहि ना हे'ल थान हान सान्दार प्रमान्दार कन्। कर्म हान कर्न कन्। अहि ना हे'ल थान हान सान्दार प्रमान्दार कन्। कर्म हान सान्दार कन्। अहिन सान्दार कन सान्दार प्रमान्दार कन। अहिन सान्दार कन। अहिन सान्दार पर्म हान सान्दार कन। कर्म हान कर्न हान कर हान सान्दार किर सान्दार कन। कर्म हान सान्दार कन। सा

किन्जू প्राथमिक विদ্যালয়ে প্রথম দুই শ্রেণীতে—ছোট ছোট শিশ্বদের পক্ষে—ভূগোলের জান সহজে আসে না এবং জার করে মুখন্ত করালেও তার সম্বন্ধে তাদের কোন সম্যক ধারণা জন্মায় না। অথচ ৬।৭ বংসরের শিশ্ব চায়—তার পরিবেশের সঙ্গে পরিচিত হ'তে এবং তা সে অত্যন্ত আনন্দের সঙ্গে সমন্ত প্রাণমন দিয়েই করতে চায়। তার ব্যক্তিগত এবং তা সে অত্যন্ত আনন্দের সঙ্গে সমন্ত প্রাণমন দিয়েই তার কাছে প্রত্যক্ষ হ'য়ে থাকবে। অভিজ্ঞতার ন্বারা শিশ্ব যে জ্ঞান আহরণ করবে—সেটাই তার কাছে প্রত্যক্ষ হ'য়ে থাকবে। শিক্ষক হয়তো নদী কি তা বোঝাবার জন্য অনেক বিষয়ের অবতারণা করছেন তবুও শিশ্বরা শিক্ষক হয়তো নদী কি তা বোঝাবার জন্য অনেক বিষয়ের অবতারণা করছেন তবুও শিশ্বরা ব্রবতে পারছে না—কিন্তু বেড়াবার সময় যদি তাকে নদী দেখান হয়—তবে সহজেই নদী সম্বন্ধে তার স্পন্ট ধারণা হবে।

প্রাথমিক বিদ্যালয়ে আজকাল অবিভিন্ন কার্যসূচী (undifferentiated curriculum) গ্রহণ করা হ'য়েছে। কাজেই প্রথম দুই বংদর মাতৃভাষা শিক্ষার দময়ই নানার প গল্পছলেশিশুর বাচনভঙ্গী বৃদ্ধি করার দঙ্গে দঙ্গে ভূগোলের জ্ঞান দিতে হবে।

হ'তে কে এনেছে, কেন এনেছে, কোনগ্রাল গ্রামে উৎপন্ন হয়, কোনগ্রাল অন্যগ্রাম থেকে এসেছে ইত্যাদি বিষয় নিয়ে আলোচনা করবেন।

৪। গ্রামের প্রাকৃতিক অবস্থার প্রতি শিশ্র দ্বিট আকর্ষণ করা যেতে পারে। কোনদিকটা উণ্চু, কোনদিক নীচু, বর্ষাকালে কোথায় জল জমে, কোন পথে কণাদা হয় এবং কেন
এরকম হয় এই সমস্ত বিষয় হ'তে আলোচনা করে প্রাকৃতিক ভূগোলের প্রথম পাঠ আর্মভ করা
যেতে পারে। গ্রামে যদি নদী থাকে তবে নদীর ধারে শিশ্রদের নিয়ে গিয়ে তার গতি,
উৎপত্তি ইত্যাদি বিষয়ে শিশ্র কৌত্রল জাগ্রত করা যেতে পারে।

#### হাতের কাজ ও সংগ্রহ

(প্রথম শ্রেণীতে যা করা হয়েছে, তার অনুশীলন চলবে। তা' ছাড়াও নিম্নলিখিত বিষয়গুলি করা যেতে পারে।)

- ১। শিশ্ররা কণদা, মাটি, পাতা দিয়ে ঘরবাড়ী, পথঘাট ইত্যাদি তৈরী করবে।
- ২। শ্রেণীর নক্সা, বিদ্যালয়ের নক্সা, বিদ্যালয়ে আসার পথের নক্সা ইত্যাদি নানাবিধ নক্সা অাকা।
- ৩। নানাবিধ ফসল ও বীজ সংগ্রহ করা এবং একটি সংগ্রহশালা (মিউজিয়াম) তৈরী
- 8। ফলের বাগান, সবজের বাগান ও ফুলের বাগান করা এবং কোন ঋতুতে, কত দিনে কোন গাছে কি ফল ও ফুল হলো তা লক্ষ্য করা।
- ৫। दृष्टि माभवात यन्त्र। कार्नामन कण्यानि दृष्टि रत्ना मिम् ता ण लक्षा ताथवि ववः माता माम व्यथा माता वः मत्त कण देशि दृष्टि रत्ना ण वनायाम् वात कत्रण भात्र।
- ৬। Weathercock—বাতাস কখন কোনদিক হ'তে প্রবাহিত হচ্ছে—এই 
  যন্ত্রের সাহায্যে শিশুরা অনায়াসেই তা বুঝতে পারবে।
- 9। Shadow-stick এর সাহায্যে ঋতুর সম্বন্ধে প্রাথমিক জ্ঞান এবং বংসরের কোন সময় ছায়া কোনদিকে হেলে পড়ে এবং দিনের বেলায় কোন সময়ে ছায়া ছোটবড় হয় এবং কেন সে সম্বন্ধে ধারণা দেওয়া।
- ৮। শিশ দৈনিক যে সব জিনিষ ব্যবহার করে তা কোথায় কিভাবে হয় এবং কি করেই বা শিশ পায় সে সম্বন্ধে অবহিত করা; যেমন থালা বাসন, চায়ের পেয়ালা, দোয়াত, কালি, কলম, চির্ণী, কাপড়, গামছা, জামা ইত্যাদি।
- ১। পোণ্ট-অফিস সম্বন্ধে প্রাথমিক আলোচনা। ডাক্ষর Project হিসাবে নেওয়া যেতে পারে। শিশুরা এই বয়সে কাজ করতে ভালবাসে। যে কোন Project এর মধ্য দিয়ে তাদের এই কাজ করার সহজাত প্রবৃত্তিকে সহজেই পরিচালিত করা যেতে পারে; পদ্মান্তরে অঙক, ভাষা ও সাহিত্য প্রভৃতি স্কুলপাঠ্য বিষয়গুলিরও অনুশীলন হবে। যেমন কেউ বা খাম তৈরী করলো। ডাক্ষর, প্রোজেন্টের মধ্যে একদল পোণ্ট বাক্সে তৈরী করলো, কেউ বা তিকিট বানাল, কেউ বা পোণ্ট মাণ্টার, কেউ বা পিয়ন, কেউ বা ভেণ্ডার সাজলো। তিকিট বিক্রয় করার সময় কে কত দিল, তার দাম কত ইত্যাদি বিষয়ে অঙকর অনুশীলন ও সাহিত্য শেখা হবে। তারপর কোন দেশের তিকিট কি রকম, তার দাম কত ইত্যাদি বিষয় উপলক্ষ্য করে ভূগোল শিক্ষা দেওয়া হবে। অবশ্য এই শ্রেণীর উপযোগী করেই সব বিষয় বলতে হবে।
- ১০। পরিবেশ-পরিচিতির নানাবিধ চার্ট বা ক্যালেণ্ডার তৈরী করা। কোথায় কোন পাছ কোন মাসে দেখেছে, কোথায় কোন ফুল কোন মাসে ফুটেছে, কোথায় কোন জিনিম কখন কুড়িয়ে পেয়েছে তার চার্ট রাখা। প্রয়োজনবাধে শিশ্বরাই ছবি এংকে দিতে পারে অথবা লিখে দিতে পারে। কোন মাসে কি পাখী দেখেছে, কোথায় কি পোকা মাকড় ধরেছে ইত্যাদি প্রাকৃতিক জীবজন্তু পোকামাকড়ের ইতিহাস সংগ্রহ করা যেতে পারে। এইভাবে প্রকৃতিপঞ্জী (Nature calendar or nature diary) তৈরী করা যেতে পারে।

## (গ) ইতিহাস

#### ভূমিকা

প্রাথমিক বিদ্যালয়ের প্রত্যেক বিষয়বস্তুর একটা সামাজিক উদ্দেশ্য আছে। এর মধ্যে কয়েকটি বিষয় (subject) বিশেষ করে শিশুর স্বভাবের সামাজিক দিকের বিকাশের সাহায্য করে। ইতিহাসকে বিভিন্ন দ্বিভঙগী থেকে দেখা যেতে পারে ও নানার পে ব্যাখ্যা করা যেতে পারে কিন্তু ইতিহাস যে মানবজীবনের কাহিনী এই কথাটাই বেশী করে মনে রাখতে হবে। ''অতীতে মানুষ যাহা ভাবিয়াছে ও করিয়াছে ইতিহাস তাহাই বর্ণনা করে।'' তাদের সুখ দুঃখ, ভুল মুটি, পরিশ্রম ও বিশ্রাম, জয় পরাজয়ের কাহিনী। সব বাধাবিয়া অতিক্রম করে তারা কিভাবে এই প্থিবীকে আরও আনন্দপূর্ণ ও আরামদায়ক করেছে তা ইতিহাসের পাতায় দেখতে পাওয়া যায়।

প্রাথমিক শিক্ষার উদ্দেশ্য শিশ্বর সামাজিক ভাবের বিকাশ সাধন করা। ইতিহাস, ভূগোল, প্রভৃতি সামাজিক শিক্ষার বিষয়বস্তুর প্রন্গঠিন করে শিশ্বকে উপযুক্তভাবে শিক্ষা দেওয়া যেতে পারে। বর্তমান জীবনের সমস্যার সঙ্গে সামঞ্জস্য রেখে অতীতের ও দেশ-বিদেশের কাহিনী বলা উচিত। শিশ্বর সামাজিক বিকাশ তখনই সম্ভব হবে যখন শিশ্বর শিক্ষা উন্নত, বাস্তব ও জীবন্ত হবে। অর্থাৎ শিশ্বকে অফ্রন্ত স্যোগ দিতে হবে যেন তার অভিজ্ঞতার ভেতর থেকে সে কোনও শিক্ষণীয় বিষয় নির্বাচন, ম্ল্যানির্পণ, ও চিত্তা করে কাজে পরিণত করতে পারে। কোন বিষয় শেখাবার সময় মনে রাখতে হবে যে শিশ্বর মানসিক ক্ষমতা বা বোঝবার যোগ্যতা কতটা, তার জানবার ইচ্ছা বা আগ্রহ আছে কিনা, তার বয়স অনুসারে সে কতটা জানতে পারে এবং জানা উচিত। শিশ্বর ক্ষমতা, আগ্রহ ও প্রয়োজন এই তিন ভিত্তির উপর স্থাপন করতে হবে তার সমগ্র শিক্ষা বা অভিজ্ঞতা।

শিশুরা স্বভাবতঃ কৌত্হলী, তারা দেশবিদেশের ও অতীতদিনের লোকদের জীবন, তাদের পছন্দ অপছন্দ, আচারব্যবহার, ধর্ম ও বিশ্বাস এই সব বিষয় জানতে চায়। এই কৌত্হল জাগিয়ে রাখা ও বৃদ্ধি করা উচিত যেন সেটা চিরদিন জাগর্ক থাকে। ইতিহাস শিহ্মার ফলে শিশু ক্রমশঃ বুঝতে শিখবে যে অতীত থেকেই বর্তমানের উদ্ভব হয়েছে ও বর্তমানই আবার ভবিষ্যতে পরিণত হবে। আরও সে বুঝতে পারবে যে একজাতির ঘটনাবলী সময়ে সময়ে আর একজাতির ইতিহাসে প্রভাব বিস্তার করে—যেমন বর্তমানে টাকার মূল্য হাস (Devaluation), গত মহাযুদ্ধের ফলে অস্হায়ীভাবে অনেক ব্যবসায় বাণিজ্যের উয়তিও জীবিকা সমস্যা দ্রীকরণ। ইতিহাসের গল্প সকল শিশুর কল্পনাশক্তির উদ্রেক করে ও তাদের আগ্রহ জাগিয়ে তোলে।

অবিভাজ্য শিক্ষা পদ্ধতিতে (undifferentiated curriculum) ইতিহাস শিক্ষার প্রণালী পুরাতন পদ্ধতি থেকে ভিন্ন প্রকারের হবে। গতানুগতিক শিক্ষণীয় বিষয়বস্তুর পরিবর্তে শিশুর আগ্রহকে কেন্দ্র করে একটা নির্দ্ধারিত বিষয় (topic) নির্বাচন করে কাজ করা বর্তমান শিক্ষাক্ষেত্রের প্রচলিত প্রণালী। উদাহরণ স্বরূপ বলা যেতে পারে—পারিবারিক জীবন, সামাজিক জীবন, পুরাকালের জীবনযান্না, জীবনযান্নার দৈনিক প্রয়োজনের ব্যবস্থা, পরিবেশের সঙ্গে সামগুস্য রেখে জীবনযাপন, প্রথিবীর নানাদেশের আবিজ্কার ও উন্নতিবিষয়ক বর্ণনা, জাতির কৃষ্টি, সামাজিক ও জাতীয় জীবনের নানা সমস্যা (যথা সামাজিক, রাজনৈতিক ও আর্থিক) প্রভৃতি বিষয় নিয়ে আলোচনা ও কাজ করা যেতে পারে।

এই প্রণালীতে শিক্ষাদানে শিক্ষককে সর্বদা মনে রাখতে হবে যে শিশ্র শিক্ষাগ্রহণ কাজগুলি (learning activity) তাদের অভিজ্ঞতার সঙ্গে জড়িত, কাজগুলির একটা উদ্দেশ্য থাকা চাই এবং কার্য প্রসঙ্গে কোনও বিশেষ নির্বাচিত সমস্যার সমাধান করা যেন হয়। এই নির্ধারিত বিষয়ের (topic) প্রসঙ্গে অথবা সেই বিষয় বোঝাবার বা কাজে পরিণত করবার জন্যে যে যে তথ্য বা জানের প্রয়োজন ঠিক সেইগুলি যেন শিক্ষাদানের বা শিক্ষাগ্রহণের সময় স্থান পায়—প্রয়োজন ব্যতীত অবান্তর কথা উল্লেখ বা শেখানো বা গ্রহণ যেন কোনও মতে করা না হয়।

প্রাথমিক বিদ্যালয়ের প্রথম দুই শ্রেণীতে ইতিহাস শেখার দ্বান কোথায় এবং যদি শেখানো হয় তা হলে কতটা বিষয়বদতু দেওয়া উচিত এবং কোন প্রণালী বা কোন কোন প্রণালী অবলম্বন করলে শিশুর শিহ্বালাভ হবে এই সম্বন্ধে এখন দু' একটি কথা বলতে হবে।

ইতিহাসের বহুদিক আছে। ঐতিহাসিক বা ইতিহাস লেখক কোন দ্রণ্টিভ গণী দিয়ে मानवजीवत्नत वकि मिक जूल धरत्र भागेरकत मृष्टि जाकर्यन कत्वात जर्मा जाना पत्रकात्। रक्छ छात्र पिएष्ट्रेन चणीणिपत्नत्र रकान्छ थक विरम्य वश्मावनीत कीणिकनारभत (Dynastic history)। কেউ বা জোর দিচ্ছেন অতীতদিনের কোনও এক निर्वािष्ठ जः एत् नामािष्क जवन्यात ७१त। जना धक्षन यस्ता, जणीणिपत्त गान्निजन्य প্রণালী ও রাজনৈতিক অবস্থা ও উন্নতির বিষয় বর্ণনা করেছেন। শিশু শিক্ষক বুঝতেই পারছেন य, र्हे जिरामित वरे कान तुल मिन्दू माम्त्र सता यात भारत ना। अन्न रेट भारत य निम् तक कि ठावल वेिंग्यान प्राचन प्रकात त्नवे थे अथम जवन्याय? उछत थक कथाय দেওয়া চলে না—তবে এটা ঠিক যে ইতিহাসের সহজ ও স্কুন্দর রূপ অর্থাৎ অতীতের মানব-জीवत्नत्र कारिनी এই पिक्छा निम्दूक ठात्र ऋमठा, वाधर ७ श्राह्म वन्त्रात् क्रा क्रा পরিচয় করিয়ে দিতে পারা যায়। ইতিহাসের সত্যাসত্য বা গবেষণামূলক তথ্য শিশু এই বয়ুদে প্রীক্ষা বা বিশেল্মণ করতে পারবে না কিন্তু তাই বলে তাকে ইতিহাস শেখা থেকে বণিত कता हल ना। वधन প्रार्थीमक जवन्याम जर्थाए १ थिएक है वहरतत हिलामरास्पत कि कि প্রণালীতে ইতিহাসের সঙ্গে পরিচয় করিয়ে দিতে পারা যায় সেই সম্বন্ধে কিছু বলব। সর্বদা মনে রাখতে হবে যে "সাধারণ শিশ্ব" বলে কিছু ধরাব । বসতু নেই। শিক্ষক ত । র বিশেষ বিদ্যালয়ের শিশ্বদের ক্ষমতা, আগ্রহ ও পরিবেশ লক্ষ্য করে সেই অনুসারে তাদের ইতিহাসের অভিজ্ঞতা দিতে আরম্ভ করবেন। বয়সের হার স্বস্ময়ে মাপকাঠি হবে না—শ্রেণীর মাপ-কাঠিও অনেক সময়ে সাহায্য করে না। স্থানীয় শিশুদের বিদ্যাবুদিধ ও অভিজ্ঞতা ভিন্ন হতে পারে অর্থাৎ অন্য বিদ্যালয়ের তুলনায় এরা হয়তো এগিয়ে গেছে বা পিছিয়ে পড়ে আছে। শিক্ষক निर्देश कान जन् जारत राधारने देविदान राधारन वर डिझिथि थ्यानीत र्यग्रिन थ्रांग क्ता চলে সেইগুলি ব্যবহার করবেন। এমনও হতে পারে যে কোনও অগুলের শিশুরা কোনও কারণে इंजिराम मिथात जना जाश्रर प्रथार्मन वर भिष्क्रकत उत्पार वा किया वार्थ राम्र वह न्राल শিক্ষক ইতিহাস শেখাবার চেণ্টা স্হগিত করবেন। প্রথম দুই শ্রেণী ছেড়ে হয়তো তৃতীয় বা চতুর্থ শ্রেণীতে তারা ইতিহাস শিখতে প্রস্তুত হবে তখন শিক্ষক যেন তৃতীয় ও চতুর্থ শ্রেণীর উপযুক্ত উন্নততর ইতিহাস তাদের কাছে উপ্স্থিত না করেন। আর্ম্ভ করতে হবে প্রথম অবস্থার প্রণালীর সাহায্যে এবং একট্র পরেই শিক্ষক দেখবেন যে তারা সহজে ও শীঘ্রই দ্বিতীয় অবস্থার জন্যে প্রস্তুত হয়েছে।

প্রথম শ্রেণীতে ঐতিহাসিক কাহিনী বলা যেতে পারে কিন্তু তার ভেতর ইতিহাসের চেয়ে সাহিত্যের সঙ্গে যোগ বেশী। রামায়ণ, মহাভারত, শক্তুলা, পুরাণের কাহিনী, সঙ্কলিত ''সেকালের কথা'' এইগুলি থেকে শিক্ষক গল্প বেছে নিতে পারেন। গল্প বলার সঙ্গে অভিনয় করা, ভাষায় নিজেকে ব্যক্ত করা, কল্পনারাজ্যে প্রবেশ করে নিজেকে অতীতের লোকদের সঙ্গে এক করে ফেলা, এই অভিজ্ঞতাগুলি ইতিহাস শেখার পর্যায়ে পড়ে।

দ্বিতীয় শ্রেণী থেকে শিক্ষক চারটি প্রধান উপায় অবলম্বন করে ইতিহাস শেখা আরম্ভ করতে পারেন।

১। মহামানৰ জীবন কাহিনীর ভেতর দিয়ে ইতিহাস শিক্ষা।—ইতিহাসের সংগ্রে শিশুর পরিচয় হয় বিশিষ্ট ব্যক্তিদের জীবন কাহিনীর ভেতর দিয়ে। এই ব্য়সের ইতিহাস শিশুর বাস্তব ও ব্যক্তিগত হওয়া চাই। এইভাবে শেখার একটা বুটি থেকে যায়— খারাবাহিকতার (continuity) অভাব হয়। জীবনচরিত সণ্ডয়ন করা হয় অতীতের বা দুরবিদেশের ইতিহাসের বিক্ষিপত পাতা থেকে—অসংলগনভাব এসে পড়ে সেই শেখার মধ্যে। এই অভাব দুর করা যেতে পারে যদি ঐ জীবনীগুলি একটি পর্যায়ের ভেতর ফেলে একটু সাজিয়ে, পড়ানো যায় যেমন—আবিষ্কারের প্রসঙ্গে কয়েকটি বিশিষ্ট ব্যক্তির জীবন আলোচনা করা এবং আবিষ্কারের ক্রমবিকাশ ও উমতিকে কেন্দ্র করে এই শিক্ষা গ্রহণ করা।

- ২। কোনও নির্ধারিত বিষয়কে অবলম্বন করে ইতিহাস শেখা।—এটা দুইভাবে হতে পারে (ক) সময়ের অনুক্রম অনুসারে বিষয় নির্বাচন করা, (খ) প্রসংগক্রমে নির্বাচন করা। যে প্রণালীই অবলম্বন করা হোক শিশ্ব যেন সেই বিষয়টি চারিদিক থেকে দেখে তার সঙেগ জড়িত ছোট ছোট আরও প্রশ্ন ও আলোচ্য বিষয় দেখতে পায়। সব সময়ে মনে রাখতে হবে যে সেই শেখার মধ্যে থেকে যেন শিশ্ব সত্য খ্বজে পায়।
- ত। কাজের ভিতর অভিজ্ঞতা ও শিক্ষাগ্রহণ (Activities) ।—প্রাণো প্রণালীতে ইতিহাস শেখানোতে জাের পড়ত পাঠ্যপ্রস্তকের বিষয়বস্তুগ্লি স্মরণে রেখে প্রশেবর বা পরীক্ষার উত্তর দেওয়ার উপর। নতুন ব্যবস্হায় শিশ্র কাজের তালিকা বেড়ে গেছে। শিশ্কে ম্খস্থ করতে হয় না কিন্তু কাজ করতে হয়, এই কাজ করার ভেতর শিশ্র অভিজ্ঞতা বাড়ছে। সে পর্যবেক্ষণ করে, অন্সন্ধান করে, হাতের কাজ দিয়ে জিনিষ তৈরী করে, অভিনয় করে, ইতিহাস বােরে ও শেখে। উদাহরণ নীচে দেওয়া হােলঃ—
  - (১) স্থানীয় নগর বা গ্রামের মানচিত্র পরীক্ষা ও তৈরী করা(local map-making),
  - (২) নমুনা দেখে নকল তৈরী (model-making),
  - (৩) কোনও বিশেষ বিষয় বেছে তার অংক ক্ষে সংগ্রহ করা তথ্য সাজানো যথা—
    স্থানীয় জীবিকা নির্বাহের উপায়গুলি ও প্রত্যেকটির জনসংখ্যা নির্ধারণ,
  - (৪) চলচ্চিত্রে ঐতিহাসিক চিত্র দেখা,
  - (৫) Museum ও ঐতিহাসিক মুল্য পূর্ণ বিশিষ্ট জায়গা পরিদর্শন,
    - (৬) ছবির বই তৈরী, ছবি সংগ্রহ করে, বর্ণনা লিখে ইতিহাসের বই তৈরী,
    - (१) जिंखन्य नाउँक त्राना, शायाक श्रीतृष्ट्म रेठती,
    - (b) পারিপাশ্বিক অবস্থার প্রবিক্ষণ ও পরীক্ষা।

এই প্রণালীতে ইতিহাস শিক্ষায় শিশ্বদের স্বাধীনভাবাপর হতে সাহায্য করে, অভিজ্ঞতা বাড়ার সঙ্গে তাদের বয়সান্বায়ী আত্মনির্ভরিতা বাড়ে এবং স্বাধীনভাবে কাজ করবার ইচ্ছাও বাড়ে। এর পরিণতি হয় বিদ্যালয়ে ছাত্রসমাজ আবির্ভাবে।

8। ছারসমাজ।—শিশুদের জিজাসু মন কোনও সমস্যার সমাধান করবার সময়ে ব্যক্তিগতভাবে অতীতের ভাণ্ডারে অনুসন্ধান করে এবং বুঝতে পারে যে অতীতের চিন্তাধারা, কার্মপ্রণালী, বিচার ও প্রচেন্টা বর্তমানের থেকে পৃথক। এই সত্য উপলব্ধি করা ইতিহাসের এক প্রধান উদ্দেশ্য। এই আবিষ্কারের সঙ্গে শিশু ইতিহাসকে নিজস্ব করে—শুষ্ক প্রাণহীন অতীতের শিক্ষা রূপান্তরিত হয় ব্যক্তিগত সজীব অতীত কাহিনীর আকারে।

#### প্রার্থামক অবস্হায় ইতিহাস শিক্ষার প্রণালী

শিশ্ব এবং তার ঔৎস্কা ও পরিবেশকে কেন্দ্র করে তার প্রথম পাঠ আরম্ভ হবে। গতান্গতিক নিয়মে বিষয় শিক্ষার উপরে প্রথমে জোর না দিয়ে ক্রমে আরম্ভ করতে হবে। কাজ করবার সময় দুইটি বিষয় মনে রাখতে হবেঃ—

- (১) সমসত বিষয়বস্তুর বাস্তবজীবনের সঙ্গে সংগতি থাকবে,
- (২) সমস্ত পাঠগুলি শিশুদের চিত্তাকর্ষক হবে।

তাদের ভালমন্দের বিচারশক্তি হয় এবং ঐতিহাসিক তত্ত্বের মূল্যানির্ধারণ উচ্চতর শিক্ষাস্তরে অত্যত্ত দরকারী। কোনও বিশেষ বংশের ইতিহাস শিক্ষা দেওয়া আদর্শ নয় বরং শিশুকে শেখাতে হবে যে এক বিশেষ যুগে বিভিন্ন সম্প্রদায়ের লোকেরা কিভাবে জীবনধারণ করত। বিচার ক্ষ্মতার উদ্মেষ সাধন করতে পারা ইতিহাস শিক্ষার প্রধান সুফল।

১। গলপ-বলা ও তৎসম্পর্কিত প্রণালী।—যেহেতু ৭ থেকে ৯ বছরের শিশ্রা সময়ের ধারণা করতে পারে না সেই হেতু এই স্তরের ইতিহাস শিক্ষা গল্পের মধ্যে দিয়েই হবে। এই গলপগুলি সম্পত্ত যেন পৌরাণিক ও বীরত্বাঞ্জক হয় ও বিস্ময় উদ্রেক করে। এগুলি সাহিত্যের অঙগ বলেই ধরে নেওয়া যেতে পারে ও দরকার হলে অভিনয়ও করা যেতে পারে। সময়ের অনুক্রম বাদ দিতে হবে। শিক্ষক বিষয়টি 'অনেক অনেক দিন আগে' ঘটেছিল, এরক্ম করে আরম্ভ করতে পারেন। যেহেতু এই সময়ে স্থান সম্বন্ধে তাদের জ্ঞান সম্পূর্ণ নয় সেইজন্য শিশুর পাঠ্যতালিকায় ইতিহাস ও ভূগোলের সম্ব্য় করা সম্ভব নয়। এই সময়ে স্থান ও কালের জ্ঞান না দিলেও চলে।

এখন প্রশ্ন হচ্ছে ইতিহাস শেখার প্রতি বিশেষ লক্ষ্য রেখে গলপ বলা কিভাবে আর্ম্ভ করা যেতে পারে। কর্মকৈন্দ্রিক শিক্ষার ধারা অনুসারে শিক্ষক শ্রেণীতে দ্ব ইচ্ছায় সোজাস্কুজি কোনও বিষয় উপদ্হাপন করতে পারবেন না। তাই গলপ বলা সাধারণ নিয়মে কোনও শ্রমণের পর বা কোনও ঐতিহাসিক গ্র্ভুপ্র্ণ জায়গা থেকে বেড়িয়ে আস্বার পর আর্ম্ভ করা যেতে পারে।

উদাহরণ।—(ক) প্রাসাদের ধরংসাবশেষ, মন্দির বা তীর্থান্থান দর্শন, (খ) বিদ্যালয়ে অনুষ্ঠিত উৎসব—

বুদ্ধ জন্মেৎসব থেকে বুদ্ধদেবের বিষয় আলোচনা, জন্মান্টমী থেকে কৃষ্ণের বিষয় আলোচনা, ঈদ থেকে মহম্মদের বিষয় আলোচনা,

এই সব মহামানবের সমরণে বিদ্যালয়ের উৎসবানু ভানের দিনগুলির আগে বা পরে।

(ক) <u>ঐতিহাসিক গলপ কথা</u> বলতে পারা যায়। কোনও বিশিষ্ট লোকের ছবি দেখে বা কোনও বিশেষ যুগের ছবি থেকে বিষয়ের অবতারণা করা যেতে পারে।

(খ) দেশবিদেশের আবিষ্কার ও শ্রমণ কাহিনী এবং বিজ্ঞানের আবিষ্কারের কথা শিশ্বদের উপযোগী করে বলা যেতে পারে। মনে রাখতে হবে যে নিজের দেশের গণ্ডী ছাড়িয়ে গেলে ক্ষতির চেয়ে লাভই বেশী। শিশ্ব কৌত্হল, জ্ঞানপিপাসা ও আগ্রহ ভৌগোলিক সীমার ভেতর আবন্ধ থাকে না। অতীতের কয়েকটি মহান জাতির ইতিহাস ও গল্প শিশ্বদের কাছে খ্ব চিত্তাকর্ষক হয়—প্থিবীর অত্যাশ্চর্য জিনিষের উল্লেখ করে চীনের প্রাচীর, বাবিলনের দোলায়মান বাগান, রোড্সের (Rhodes) কলোসস, ম্তি, মিসরের পিরামিড এই প্রসঙ্গে দেশগুলির বিষয় সামান্য উল্লেখ চলতে পারে। চীন ও মিসরের ইতিহাস শিশ্বদের কাছে প্রিয়। এই দেশ দুইটির ভৌগোলিক দ্রত্ব ও সময়ের তাৎপর্য খ্ব বেশী বলে শিশ্বের

মনে বিসময় জাগায় ও তার আগ্রহ বাড়ায়—কল্পনার মায়াজালে বাস্তব ঘটনা ও ইতিহাস জড়িত হয়ে এক রঙগীন স্বশেনর আকার নেয়। এইরকম করে শিশ্রর সঙ্গে অতীতদিনের প্রথম পরিচয় করিয়ে দিতে পারা যায়।

(গ) ছবি।—সুন্দর ও দপন্ট করে অাকা, রঙীন, ঐতিহাসিক ঘটনা বা বিশিন্ট ব্যক্তির জীবনীর ছবি—ইতিহাস শেখার সহায়তা করে। ছবিতে চেহারা, মুখের ভাব লক্ষ্য করে সেই লোকের মনের ভাব আভাসে বুখতে পার যায়। সেই সময়ের যুন্ধ-সজ্জা, পোষাক পরিচ্ছদ ও আসবাবাদি লক্ষ্য করে সামাজিক অবস্হার ও সভ্যতার স্তর নির্ণয় করা যেতে পারে। পরে শিশুরা নিজে সংগ্রহ করে ছবির খাতা ও ইতিহাসের বই তৈরী করতে পারে। গৃহীত ছবি থেকে তাদের ক্ষমতা ও আগ্রহ অনুসারে ঐতিহাসিক তথ্য জানতে শেখে।

ছবি দেখে যেভাবে ইতিহাস শেখানো যায় যাদ্ঘরে বা ঐ জাতীয় শিক্ষার স্থানে সংগৃহীত ঐতিহাসিক বা জাতীয় জীবনের কৃষ্টির মুদ্রাঙ্কস্বরূপ যে দ্রন্টবা উপাদানগুলি আছে সেগুলি (Exhibits) দেখে শিশুর জ্ঞান আরও সপ্ট হয়। পুরাকালের যুদ্ধ-সজ্জা, রাজা-রাণীর পোষাক, অলঙকার ও সিংহাসন দেখে শিশু আনন্দ ও জ্ঞান দুইই লাভ করবে। এই অভিজ্ঞতা আরও সুদৃঢ় হবে যখন শিশু ঐগুলি দেখে বিদ্যালয়ে ফিরে এসে তার আগ্রহ অনুসারে কয়েকটি জিনিষ অগকবে বা তৈরী করবে বা ঐ বিষয়ে আলোচনা করে সেই সম্বন্ধে পড়তে চাইবে বা অভিনয়ের সময় ঐ জিনিষগুলি তৈরী করে ব্যবহার করবে। ঐ জ্ঞান তাদের সাহায্য করবে অভিনয়ের সময় ঐ চোখে দেখা ইতিহাসের চিহ্নগুলি থেকে যে জ্ঞান সে অর্জন করলে সেটা তার নিজস্ব ধন হয়ে যাবে।

- (ঘ) পাঠ্যপ্রতক।—এখন থেকে শিশ্র ইচ্ছা করলে সহজ ঐতিহাসিক কাহিনী বা গল্পের বই পড়তে আর্ম্ভ করতে পারে এবং পাঠ্য বিষয় পড়ে ও বুবে আনন্দও পাবে।
- (७) बाज्यसा— त्याना शक्य वाज्यस कतात मर्या विष्णू रयमन विकित्त शास वान्य विकासिक कार्या वाज्यस वाज्यस्य वाज्यस वाज्यस्य वाज्यस्य

৯ বছর বয়সের ছেলেমেয়েদের সঙ্গে নিম্নলিখিত তিনটি প্রণালীতে ইতিহাস শেখা আরম্ভ হতে পারে —৯ থেকে আরম্ভ করে ১১ বছর পর্যন্ত এই পদ্ধতিতে শিক্ষাদান করা যেতে পারে:—

ম্লস্ত প্ৰণালী বা Source Method।

Projects হইতে পারিপাশ্বিক অবস্থার প্যবিক্ষণ ও জ্ঞানলাভ (Survey)। ছাত্রশাসন হতে নাগরিকতা শিক্ষা (Civic training)ও দেশশাসন সম্বন্ধে প্রাথমিক জ্ঞান।

वहें श्रुणानीत हें हिंदान निक्षा न्या निवास स्वाप्त स

কোলকাতার Victoria Memorial স্মৃতিসৌধ বা আগ্রার তাজমহল পরিদর্শনে আনন্দ আছে। প্রথমোক্ত স্থানে স্যত্নে রক্ষিত রাণীর ব্যবহার্য জিনিষগালি ও পোষাক পরিছদ দেখে, সেই সময়ের বিখ্যাত লোকদের ছবি দেখে, নানারকম চিঠি ও কাগজপত্র দেখে, models পরীক্ষা করে, শিশাদের মনে ইতিহাসের ব্যক্তিগত দিক ও মানবিকতার দিক (human element) স্পন্ট করে চোখে পড়ে। Fort William কেলা পরিদর্শনে অনেক তথ্য পাওয়া যায়। শিশারা তাদের অপরিণত দ্বিউভঙগী দিয়ে সমস্ত দেখে তাই এই সময়ে শিক্ষক কখনও কৃত্রিম উপায়ে তাদের উত্তেজিত করে বা তাদের কৌত্হল উদ্রেক করবেন না। হাতের কাজ, সেলাই, অংকা, ও model তৈরীর ভেতর অভিজ্ঞতা নিজের ধন হয়ে যায় ''learning by doing'' সেকালের শিলপকলার দিকে দ্বিট আকর্ষণ করবেন শিক্ষক যখন সেকালের আস্বাব, অস্ত্র, অল্ভকার, ও পরিছেদের বৈশিন্ট্য লক্ষ্য করতে শেখাবেন।

ত। Project ও Survey আগে যা কিছু বলা হয়েছে তার ভেতর project method এর আভাস আছে—অভিনয় করা বা ধ্বংসাবশেষ দেখে সেই দিনের ইতিহাস পুনগঠিন করা project এরই অঙগ। বিশেষভাবে এখন বলা হবে কি করে এই প্রণালীতে ইতিহাস শেখানো যেতে পারে।

দ্বিতীয় শ্রেণীর শেষভাগে বা তৃতীয় শ্রেণীর প্রথম্দিকে শিক্ষক সহজভাবে এই প্রণালীতে মূল্যবান ইতিহাস শিক্ষা আরম্ভ করে দিতে পারেন। ইতিহাস শেখার নানা উদ্দেশ্যের ভেতর একটা উদ্দেশ্য বর্তমান জীবনকে ভাল করে জানা ও বোঝা এবং এই জ্ঞান আসবে যখন শিশ্র দেখতে শিখবে অতীতের কোন ঘটনা থেকে বর্তমানের কোন অবস্হার সূত্রপাত হয়েছে বা

किভाবে এक घটना जाशत घটनात উপর প্রভাব বিস্তার করেছে বা দুই ঘটনার মধ্যে जः स्याग जारह। **উদাহরণ** त्वा स्था शास्त्र स्था स्था कार्य क <u>जाल करत भर्यात्रञ्चल ७ भतीका कतराज भाशाया कता श्रव। भिक्षक धकिमन जारमत निरस</u> পाषा दिषारा दिदादिन भाषात स्थि वेषु ताम्लास थरम भेष्ट्रिन दिष्टातात मर्डण मर्डण শিশ রা প্রশ্ন করবে এটা কি? ওটা কি? কেন? কখন? কে আরম্ভ করল? না থাকলে কি হোত? শিক্ষক তাদের বোঝবার ক্ষমতা অনুসারে সহজভাবে প্রশেনর উত্তর দেবেন ও কৌত, २ ल উদ্রেক করবেন। এইরকম করে ক্রমে ক্রমে তারা বাসগৃহ, প্রয়োজনীয় স্থান रयमन छाङात्रथाना वाजून त्नवावात ममकलथाना, द्वाम छित्या, वरे ७ काथर इत प्राकान, शांठे ७ वाजात, रथलवात माठे वा शार्क, जितमा, जामालठ, शांभामा, रजल, नमीत छे अत म<sup>भ</sup>रका, वन्पत, मन्पित, म्मगानघाठ, करला, रामभाठाल, म्कूल रेठ्यापि प्रथरत ७ थीरत थीरत বুঝবে Town planning এর মূল্য। তাদের পরিবেশের সঙ্গে পরিচয় হবে ও প্রত্যৈকটির প্রয়োজন বুরবে ও প্রশ্ন করবে। এইভাবে তারা জানতে পারবে যে জীবনযাত্রা ज्ञित प्राप्त नय वा अरे नय़—oा ठलन्ठ, क्षीवन्ठ ७ श्रीतवर्जनगीन—वाक रयशास हारे सोका करत थए ७ दे हे ताबारे करत नमीत वर्कामक त्थरक जन्मितिक वात्रमा कतरह विनक काल वाष्प्रयात्नत नाशास्या वर्ष तोकाय वकन्रत्थन प्रमण्न थए वा दे हे न्शानान्त्र कत्रत भाता यात्व তাতে विंगरिकत लाख श्रव वर्षे किन्तू तोकात मालिक ও मासित काल करम यादव वा थाकरव ना। Unemployment এর সমস্যা এইভাবে সম্মুখীন করা হবে শিশুর অভিজ্ঞতার ভেতর।

পারিপাশ্বিক অবস্থার survey করে এই কয়েকটি ভাবে ইতিহাস শিক্ষা দিতে পারা যায়:—

- (ক) ইতিহাস ও পরিবেশ।—জাতি, বেশভূষা, কাজ ও অবসরকালীন খেলাধুলা বা অন্য রকম আনন্দের ব্যবস্থা যেমন কথকতা বা যাত্রা। খাদ্য ও জলের ব্যবস্থা—ভিন্ন অগুলে কি কি উপায়ে ব্যবস্থা করা হয়েছে।
- (খ) রাষ্ট্র প্রতিষ্ঠিত নাগরিকের সুবিধার জন্য যানবাহনের ব্যবস্থা।—শিক্ষা ও শুদ্রুষা-লয়ের ব্যবস্থা। যন্ত্রের আবিষ্কার, ব্যবহার ও জীবন্যাত্রার ধারার পরিবর্তন।
- (গ) জানব্দি।—জীবন্যাত্রার প্রণালী পরিবর্তন যেমন কারখানা, বৈদ্যুতিক ও অন্য উপায়ে চালিত যান্বাহন, খাল ও রাস্তা তৈরী, জঙ্গল কাটানো। সহরের আরম্ভ—লোকসংখ্যা ব্যদ্ধ।

অতীতে নিজ হাতে প্রস্তুত দ্রাসামগ্রী—এখন বেশীর ভাগ কারখানায় প্রস্তুত (personal past ও impersonal present)।

খাদ্যসমস্যা ও অন্য দেশের উপর নির্ভরশীলতা—বাণিজ্যে আদানপ্রদান

8। नार्गात्रकण निक्षा।—द्याणिण निर्वाणन निर्दाण निर्वाणन प्रिस्त निक्षक दिन्न प्राप्तिक छान पिटि शादन। जिन नासकरक कर्णवा प्रम्दिन्स प्रतिण्य कित्र प्रतिन, श्रात्तिक प्रणादिक कर्णवा वृत्तिरिस प्रतिन अ जात्र प्राप्ति वाकर्षण कर्तिन स्य युक्त प्रािस्च, प्रत्याणिणा श्र्चणि द्याणीकार्स्य वित्यस्व प्राणा विष्ठण्य दिन्य वाकर्षण कर्तिन स्वाणा स्वाप्ति विष्ठ स्वाणा स्वाप्ति विष्ठ स्वाणा स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वा

## (ঘ) প্রাকৃতিক বিজ্ঞান

#### উप्प्ला

প্রাথমিক (নিম্ন বুনিয়াদী) বিদ্যালয়ের প্রথম দুই শ্রেণীতে প্রকৃতিবিজ্ঞান আলোচনার প্রধান উদ্দেশ্য হবে (১) শিশুর পর্যবেহ্ণণশক্তির বিকাশে সাহায্য করা, (২) তার ঔংসুক্যের পরিতৃতি সাধন করা, (৩) আবিজ্ঞারের বা নিজে জেনে নেবার, পরীষ্মা করার স্বাভাবিক মনোব্যক্তিকে জাগর্ক রাখা এবং (৪) ক্রমশঃ বিভিন্ন বস্তুর মধ্যে সাদ্শ্য ও বৈসাদ্শ্য নিরীষ্ণণ করা, কার্য-কারণ সম্বন্ধ, মানুষ ও অন্যান্য জীবজন্তু ও উদ্ভিদের পরস্পর নিভার-শীলতা সম্বন্ধে সাধারণ জান অর্জন করা। এক কথায় বৈজ্ঞানিক দুণ্টিভঙগী গ'ড়ে তোলা এবং শিশুকে বিজ্ঞানী ক'রে তৈরী করা প্রকৃতি পরিচিতির অন্যতম লক্ষ্য।

#### সাধারণ পদ্ধতি

শিশ্কে সুযোগ দিতে হবে পরীক্ষা করবার; প্রত্যক্ষ জ্ঞান অর্জন করবার। হাত ফেরতা জ্ঞান বা অভিজ্ঞতা অনেকাংশে শিশ্বর কাছে নির্থক হয়। ৬-৮ বংসর ব্য়স্ক ছেলেমেয়েদের শ্রেণীতে ধারাবাহিকভাবে বিজ্ঞান আলোচনার প্রয়োজন নেই। তাতে শিশুরা আগ্রহবোধ ক'রবে না। প্রকৃতির রাজ্যে বিচরণ ক'রতে গিয়ে ছোট ছোট ছেলেমেয়েরা প্রকৃতি সম্বন্ধীয় रय সाধाরণ জान वा অভিজ্ঞতা অর্জন ক'রবে শিশুর পরিবেশের মধ্যে যেটুকু বিজ্ঞান স্বাভাবিকভাবে আসবে প্রধানতঃ তাকে কেন্দ্র ক'রেই শিশ্র প্রকৃতিবিজ্ঞান গড়ে উঠবৈ। ঐ ব্য়দের শিশুকে জটিল বৈজ্ঞানিক তথ্যের সাথে পরিচিত করার প্রচেণ্টা ব্যর্থতায় প্রবিসিত रत। शाथीत जानात वर्गरेविंठिता ७ जात शास्त मून्ध र'रस मिम् शाथीत रिष्ट्र एडारि, विভाবে সে পाখी সম্বন্ধে অনেক কিছু निर्छिर छित्न किला। काला सिर्घ जाकाम ছिस्स सास, किण्यू भरत वृष्णित धाता नारम । भिम् वृष्णिविन्मूत हे भोगभ भन्म भारत जात जात বাতালের বুক চিরে কেমন ক'রে জল নেমে আলে। বয়োজ্যেন্টদের বাগানের কাজ ক'রতে দেখে শিশ্র বাগানের কাজ ক'রতে চায়, সে মাটি ঘে'টে আবিष्কার করে এ'টেল মাটি ও व्यत्न माणितं প्रत्वम, निर्द्धतं शास्त्र शास्त्र हाता नाताशाहि विकित्त कृत्न कृत्न कृत्व हेर्स अरहे, শিশ্র আনন্দ আর ধরে না। শীতের ভোরে ঘাস কেন ভিজা থাকে, দিনের পরে কেন রাত আসে, মাছ কেন জলে থাকে—এরকম কত প্রশ্ন শিশুর মনের মধ্যে ভিড় করে। এসব্ প্রশেনর উত্তর খ জতে গিয়ে নির্মল অফ্রনত আনন্দান ভূতির মধ্য দিয়ে শিশ্ব বিজ্ঞানী হ'য়ে ওঠে। श्य (वक्षणे कतात क्रमा श्रकृषि निम्तू क वक्ष त्र के न्या प्राण प्राण मिक्रके निम्तू के न्या विकास থেকে যেন বণ্ডিত না করেন। ভুট্টাগাছের জীবন ইতিহাস ছেলেমেয়েদের মুখস্থ না করিয়ে শিক্ষক শিশ দের ভূটার বীজ বপন ক'রতে দেবেন, নিজের হাতে লাগানো গাছটির ক্রমবিকাশ সে দিনের পর দিন সানন্দে পর্যবেক্ষণ করবে, গাছটিকে যত্ন ক'রবে, গাছটিতে ফল আসবে, শিশ্বর মন খুসীতে ভ'রে উঠবে। ভুট্টার জীবন ইতিহাস সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ জ্ঞান অর্জন ক'রে তার শিক্ষাকৈ সার্থক ক'রবে।

প্রকৃতিবিজ্ঞানের আলোচ্য বিষয়গুলি নির্ধারিত হবে বিভিন্ন ঋতু ও পরিবেশের দ্বারা।
শীতকালে পাট চাষের কথার অবতারণা করা হ'লে শিশ্ব প্রত্যক্ষ জ্ঞান অর্জনের সুযোগ পাবে
না। আকাশ যেদিন নির্মাল, মেঘমুক্ত সেদিন মেঘের আলোচনা নিষ্ফল। সহরবাসী ছেলেমেয়েকে মটরশ<sup>°</sup>্বটির জীবন ইতিহাসের সঙ্গে পরিচিত করাতে হ'লে তার শ্রেণীকক্ষে মাটির
সরাতে কিংবা বিদ্যালয় প্রাঙগণে মটর বীজ বপন ক'রে অথবা নিকটবতী গ্রামের মটর ক্ষেতে
শিশ্বকে নিয়ে গিয়ে মটরগাছ বা তার চাষ সম্বন্ধে প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা অর্জনে সহায়তা ক'রা
যেতে পারে।

## বিশেষ পদ্ধতি

#### (১) ফলফ,লের বাগান ও প্রকৃতি পরিচিতি

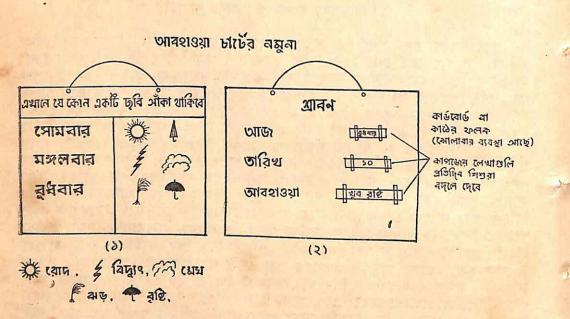
প্রকৃতিপাঠের জন্য সৰ্জী ও ফুলের বাগান প্রাণকেন্দ্রস্বর্প। বিদ্যালয়ের জমির খানিকটা অংশকে ছোট ছোট ক্ষেত্রে বিভক্ত ক'রে সেগুলিকে চাষের উপযোগী ক'রে তৈরী ক'রে দিয়ে তাতে ছেলেমেয়েদের বীজ বপন ক'রতে যদি দেওয়়া হয় এবং এক একটি দলকে এক একটি ক্ষেত্র চাষ করার জন্য যদি দেওয়া হয় তবে বাগানের কাজের ভেতর দিয়ে তাদের माशिव्दवाध जन्मादा—निराज्य कृमिषादक कृत्वकृत्व म्यून्यत करत जूनात्वर रय रद जातक। हेशहरू वश्कूरताम्भम, मिम् हेम्बिएसत व्यन्धि वेवश कित्र्ति हेम्बिएसत व्यम्धि, लाभ, जल ७ माछित দ্বারা প্রভাবান্বিত হয় তাঁ প্রীক্ষা করতে পার্বে এবং উদ্ভিদের 'শ্রু ও বন্ধুদের' সংগে পরিচিত হ'তে পারবে। বিভিন্ন ঋতুতে নানাবিধ শাকসক্ষী ফুল ইত্যাদি উৎপাদন করে শস্য বপন পঞ্জিকা তৈরী ক'রতে পারবে। বাগানটিকে সুস্জিজত এবং সুপরিকল্পিত ক'রতে গিয়ে ওরা জ্যামিতি ও গণিত সম্বন্ধে কিছুটা তথ্য 'আবিষ্কার' ক'রবে। বিভিন্ন রঙের পুর্তেপর উদ্যান রচনা ক'রে রঙ সম্বন্ধে ধারণা ক'রে নিতে পারবে এবং সংগ্ मः एवं भी क्ये द्वां व व के कि के कि मार्थिक करता भारतीतिक विभामार्थीत करा हाउँ ता कामान চानाट भात्र ना भणा ; ७ ता किर्य किर्मिट वीक वभन, भार्ष्त यन कता, जाभाष्टा উৎপাটন করা, লতানো গাছটির আকর্ষের জন্য খ°ুটি প্°ুতে দেওয়া ইত্যাদি কাজ সাগ্রহে क'त्रत्व। वाशात्नत्र शाष्ट्रशालाश्रीलत् ছिव वाशकर्वे ছाउँ । वाशात्नत् काल ক'রতে গিয়ে ছেলেমেয়েরা যদি কেঁচো, উইয়ের চিপি, পিঁপড়ার বাসা, শামুক, সংযো পোকা, প্রজাপতি এবং বেগুণ, ঢে ড়স ইত্যাদি গাছের কাণ্ডের ভিতর পোকার সন্ধান পায় তবে শিক্ষক তাদের সেই সব জিনিষ, পোকামাকড় পর্যবেক্ষণ ক'রতে ব'লবেন এবং তাদের সম্বন্ধে স্থজভাবে আলোচনা করবেন। শিশুদের মধ্যে যারা লিখতে পারে তারা লিখে রাখবে কোন জিনিষটি কোনদিন কোথায় কি অবস্হায় পেয়েছে।

সহরের বিদ্যালয়গুলিতে উদ্যান রচনার স্থান না থাকলে কাঠের বাঙ্গে বা মাটির সরাতে বা টবে বীজ বপনের পরীক্ষা করা যেতে পারে।

#### (५) जावशाउमा अर्यावऋण

दिनाथ रेजाण्ठे मार्मित প्रकृष त्रिष्ठाण, व्यासां द्यावर्णत व्याकान्यता स्मिर् ध्वः वर्सन्म् थ्वः श्वकृषि क्रांतिपत् एक्ति व्यान्त व्याक्तिम्, मत्रात्व स्मिर् निर्माण व्याकान्म, स्मार्यत्व श्वकृषि क्रांतिपत् र्वाम, मीरा क्रांति क्रांनि, मत्रांति व्याकान्म, स्मार्यत्व श्वान, मिर्के व्याम, मीरा क्रांति क्रांति क्रांति श्वकृष्ठित धेर श्वित्वर्जन श्वरंति श्वान क्रांति व्याकार्य क्रांति हिल्ले प्रवाद व्यावश्वात क्रांति क्रांति श्वाम क्रांति व्यावश्वात क्रांति व्यावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात क्रांति व्यावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वात क्रांति व्यावश्वात स्वावश्वात स्वावश्वा

পরিশ্রাত হ'য়ে পড়ে। সকালে সুর্য আকাশের কোন স্থানে অবস্থান করে, কখনই বা মাখার উপর আসে আবার কখনই বা হেলে পড়ে, ছায়ার দৈঘ্য পরিমাপ, চন্দ্রকলার হ্রাসব্দিধ, ন্ফ্রভরা আকাশ, কোনদিন ঝড় বইল, কোনদিন বৃদ্টি হ'ল,—এসব প্রাকৃতিক ঘটনাবলী শিশুরা ছবি এ'কে বা কথায় লিখে প্রতিদিন লিপিবন্ধ ক'রতে পারে। বৃদ্টির আভাস ছাতি এ'কে প্রচণ্ড রৌদ্রতাপ সুর্য এ'কে আবহাওয়ার চাটে দেখাতে পারে। মাসের শেষে বিভিন্ন দিনের তালিকাগুলি একত্রিত ক'রে কয়িদন বৃদ্টি হোল, কয়িদন রোদ উঠল ইত্যাদি শিশুরা নিশ্র ক'রে আবহাওয়া সম্বন্ধে একটা মোটামুটি ধারণা ক'রে নিতে পারবে। সম্ভব হ'লে শিক্ষক একটি তাপমান্যন্ত্র স্কুলে রাখবেন। সুর্যঘড়ি এবং বৃদ্টিমাপ্যন্ত্র শিক্ষক ম্থাশ্য় নিজেই তৈরী ক'রে নিতে পারবেন।





#### আষাঢ

এখানে বড় হরফে একটা বর্ষার কবিতা বা ছড়া লেখা থাকবে— (যেমন—)

কার্ডবোর্ড বা কার্গ্রফলক।

> এখানে একটা ছবি আঁকা থাকবে যাতে ধানের চারা, পাট গাছ, ব্যাঙ, জলে ভরা নদী ইত্যাদি অঙ্কিত থাকবে

"এমন বর্ষা জীবনে দেখিনি
থই থই করে জল
কুমড়া লতাটি শুকাইল চালে
ঝ'রে গেল কচি ফল
লক্ষা বেগুন শশা ঝিঙা পুঁই
হয়ে গেল সব সার।
মবে গেল জলে বাবার লাগানো
কাঁঠালের দুটি চারা।"

(0)

## প্রকৃতি পঞ্জীর নমুনা

কি দেখেছে	ছবি	কে দেখেছে	কোন দিন দেখেছে	কোথায় দেখেছে
(मार्यन		রপা	২-৫-৫৬	স্কুলের পাশের গাছটির ডালে
শিউলি ফুল	•	তুলসী	৮-৭-৫৬	বাড়ীর উঠানে
धाटनत भीघ		হামিদ	৯-৭-৫৬	স্কুলের পাশের মাঠে
শূঁয়া পোকা		রেখা	৯-৭-৫৬	কুল গাছে
		ers and e		
		*		

(কার্ডবোর্ডের উপর কাগজ, তাতে ঘর কাটা থাকবে, যে যখন যা দেখবে লিখে দিয়ে যাবে)

## (ঙ) প্রকৃতি পাঠ, ছড়া ও কবিতা

শিশুরা কবিতা ও ছড়া আবৃত্তি ক'রতে ভালবাসে। যে সকল কবিতা বা ছড়ায় প্রাকৃতিক তথ্য রয়েছে সেগুলি যদি ছেলেমেয়েরা মাঝে মাঝে আবৃত্তি করে তবে যুগপং কবিতা বলার আনন্দ ও প্রাকৃতিক জান আহরণ ক'রতে পারবে। চিন্রাংকণ সাহায্যে ছড়াগুলিকে আরও হুদ্য়গ্রাহী করা যেতে পারে এবং পর্যবেশ্বনের সহায়তাও করা যেতে পারে। তাছাড়া ছেলে-মেয়েরা যেসব দ্রব্য সংগ্রহ ক'রবে বা পর্যবেশ্বণ করবে সেগুলি সম্বন্ধে গলপ, ছড়া, কবিতা ইত্যাদি রচনা করবার জন্য শিক্ষক তাদের উৎসাহিত ক'রবেন। এ'ভাবে প্রকৃতিপাঠ সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা দিতে গিয়ে তিনি ছোটদের স্কুনাজুক লেখার সুযোগ দিতে পারবেন। কয়েকটি ছড়ার ও কবিতার উদাহরণ নিম্নে দেওয়া হ'লঃ—

- (১) 'ব্ৰিউ পড়ে টাপুর ট্ৰপুর ন'দে এলো বান''
- (২) "পাখী সব করে রব রাতি পোহাইল কাননে কুসুমকলি সকলি ফুটিল"
- (৩) ''দিনের বেলায় ঝোপে ঝাড়ে আড়ালে গা ঢাকি মাঝে মাঝে বনের মাঝে হুয়া হুয়া ডাকি গাছের থেকে কৌশলেতে কণঠাল চুরি ক'রি লোকের ঢোখে ধুলো দিয়ে স্টান সরে পড়ি।''
- (8) "গরমের কালে লিচু আম জাম জামরুল থরে থরে বেল পে°পে লেবু কলা আনারস আমার বাগানে ধরে।"
- (७) "এসেছে गतः रिस्तित शत्म लिशिह राउग्नात शत्त स्रकाल दिलाग्न घारम् जाशाग्न मिनिस्तित दिशा स्ति।"

#### (৪) ভ্রমণ ও প্রকৃতি পরিচয়

वार्णरे वला र'राह माठेघाछे घूरत र्दाज़्र शाकृणिक रेदिण तात परिण क्रिंग शिक्षिण रेस् विक्रिया क्रिंग क्रंग क्रिंग क्रिंग

প্রতিনের সময়ে ছেলেমেয়েরা গাছপালা, শ্স্যক্ষেত্র, ধানের জমি, বুনো গাছপালার উপনিবেশ লক্ষ্য ক'রবে। কি কি পাখী দেখল তা লিপিবন্ধ ক'রবে, পাখীর পালক সংগ্রহ

ক'রবে। জীবজন্তুর পায়ের ছাপ দেখলে তা' এঁকে নিতে চেন্টা ক'রবে। জীবজন্তু, পোকা-মাকড় কে কোথায় কিভাবে বাস করে তা' পর্যবেহ্ণণ ক'রবে, তাদের বাসা ব'াধবার পদ্ধতি জানতে, বুঝতে চেন্টা ক'রবে। এভাবে জীবজগতের সঙ্গে শিশুরা ক্রমশঃ পরিচিত হ'তে পারবে।

#### (७) मिमां त जारतभी

হাট বাজার বা মেলায় শিশ্বদের মাঝে মাঝে নিয়ে গেলে তারা পণ্যদ্রব্য সম্বন্ধে, বেচা-কেনা সম্বন্ধে কিছু অভিজ্ঞতা অর্জন তো ক'রবেই উপরন্তু কি কি শাকসক্ষী, জীবজন্তু বাজারে বিক্রয়ের জন্য আসে তা' দেখবার সুযোগ পাবে। তাছাড়া বিভিন্ন গ্রামের বা পল্লীর মান্য, তাদের বিচিত্র পোষাক ইত্যাদি দেখবার অবকাশও মিলবে।

### (৬) খেলার ছলে প্রকৃতি পরিচয়

#### (१) जनज डिंग्डिम उ धारी श्रादिऋग

গ্রামের সাত আট বছরের ছেলেমেয়েরাও ছিপ ফেলে মাছ ধরে, এ'ভাবে মাছ ধ'রতে গিয়ে তারা মাছের চলার ভঙগী ও মাছের দেহের গঠন সম্বন্ধে কিছু তথ্য স্বাভাবিকভাবেই 'আবিষ্কার' ক'রে ফেলে। স্বক্ষিত্রে এ'ভাবে প্কুরে বা ডোবায় নিয়ে গিয়ে জলজ উদ্ভিদ্বা প্রাণী পর্যবেক্ষণ সম্ভব নাও হ'তে পারে। এ'ফেরে কৃত্রিম জলাশয় প্রস্তুত করা মন্দ নয়।

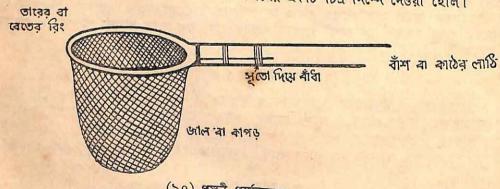
#### (৮) কৃত্রিম জলাশয়

 পরক্পর শন্। ব্যাওাচি ও শাম্ক একসঙেগ থাকতে পারে। সব পানেই দুই একটা শাম্ক দিয়ে দেওয়া ভাল। কারণ শাম্কেরা মাছ বা অন্য প্রাণীর ময়লা খায়। বোতল বা বৈয়ামের গায়ে লেবেল এ°টে লিখে রাখতে হবে কোনদিন কি কি প্রাণী বা উদ্ভিদ 'জলাশয়টিতে' ছাড়া হ'ল। এ' জীবগ্লির পরিচর্যা ও খাবার যোগানো শিশ্রাই ক'রবে। ঐ দায়িত্ব শিশ্রা সানন্দে নেবে। ব্যাওাচির ব্যাওে র্পান্তর গ্রহণ, মশকের র্পান্তর, মাছের চলার ভংগী, তাদের শ্বাসপ্রশ্বাস কার্য ইত্যাদি শিশ্রা এই কৃত্রিম জলাশয়ের ভেতর দেখতে পারবে।



(৯) প্রজাপতি, ফড়িং ইত্যাদি কীট পতভেগর রূপাল্তর

ফুদ্র ফুদ্র ডিম্বক থেকে বিশ্রী শত্র্রাপোকার উৎপত্তি, তার আবার গুটিতে পরিণতি এবং অবশেষে সুন্দর প্রজাপতিতে রুপান্তর—এ একটি প্রাকৃতিক বিস্ময়। প্রজাপতির জীবনের ইতিহাস বই থেকে মুখ্স্থ না করিয়ে এই বিচিত্র রুপান্তর দিনের পর দিন চোখের সামনে শিশুদের দেখতে দেওয়া উচিত। বিভিন্ন অবস্থায় পরিণত কতদিনে হ'ছে, শতুরো-পোকা কি খায়, কেমন ক'রে খায়, কখন খাওয়া বন্ধ করে, কেমন ক'রে গুটিতে আবন্ধ হ'য়ে যায়—এ' সব কিছুই শিশুরা চোখের সামনে দেখুক। প্রজাপতি ফড়িং ইত্যাদি পতঙ্গ ধ'রে এনে কার্ড বোর্ডের বাঙ্গ (সাবানের বাঙ্গ — বাতাস যাতায়াতের জন্য যাতে কয়েকটি ছিদ্র ক'রে দেওয়া হ'য়েছে) বা টিনের মধ্যে রাখতে পারে। Magnifying glass এর সাহায্যে সেগুলিকে শিশুরা পর্যবেক্ষণ ক'রতে পারে এবং তাদের দেহের বৈশিষ্ট্য সম্বন্ধে অবহিত হ'তে পারে।



(५०) शक्षी शर्यातक्र्ग

দনান ক'রবে, এবং শিশ্রা পাখীর দনান দেখতে পাবে। ৭ 1৮ বংসরের ছেলেমেয়েরা প্রতিদিন পাখীগ্রলি কোন খাবার খেয়ে গেলো তার একটা হিসাবও রাখতে পারবে। ঠেণটের আগায় খড় কুটো নিয়ে কত থৈর্বের সঙ্গে পাখীরা বাসা বশধে, কেন বাসা বশধে, সব সময় বাসা বশধার এত হিড়িক তো পড়ে না—এমনিতর অনেক কিছু জানবার স্যোগ ছোটদের দেওয়া যেতে পারে। একটা খাঁতির উপর কাঠের বাক্স দিয়ে পায়রার খোপ ক'রে দিলে, পায়রা এসে বাসা বশধবে, শিশ্রাও প্রতিদিন পায়রা দেখবার, তার দ্বভাব জানবার স্যোগ পাবে।

#### (১১) গ্হপালিত পশ্

ছাত্র-ছাত্রীদের কারও বাড়ীতে পোষা বিড়াল, কুকুর, খরগোস, পাখী ইত্যাদি থাকলে সেগ্রিল মাঝে মাঝে শ্রেণীকফে নিয়ে আসতে শিশ্বদের বলা যেতে পারে। নিজেদের পোষা জীবজন্তুকে ওরা খুবই ভালবাসবে, তাদের যত্ন ক'রবে, সময়মত খাবার দেবে এবং প্রতিদিন চোখের সামনে দেখবে ব'লেই ঐ জীবগ্রিল সম্বন্ধে তাদের সম্যক ধারণা জন্মাবে। কয়েকটি চতুপদ জীবজন্তু সম্বন্ধে স্কেণ্ট ধারণা হ'লে অন্র্প জন্তুকে না দেখেও তার দেহাবয়ব ও তার গঠন ভাল ব্রুতে পারবে। যেমন বিড়ালকে জানা হ'য়ে গেলে হয়ত বাঘের গলপ শ্বেন বাঘের আকৃতি সম্বন্ধে কিছুটা অনুমান ক'রতে পারবে বাঘ না দেখেও।

(১২) আহরণী প্রুচ্তক শিশ্বদের 'পাতার বই,' 'ফুলের বই', 'গালকের বই'

শিক্ষক মহাশয়ের সাহায্যে শিশ্রা নিজেদের 'পাতার বই', 'ঘাসের বই', 'ফুলের বই', 'গাছের বই', 'পালকের বই', 'পাখীর বই' ইত্যাদি তৈরী ক'রবে। ৭ 1৮ বংসরের ছেলে-মেয়েদের আহরণ করবার আকাঙক্ষা খুব বেশী। যে সব জিনিষ তারা সংগ্রহ ক'রবে সেগুলি তারা সমত্রে রেখে দেবে। পাতা, ঘাস, ফুল ইত্যাদি দুটো রটিং কাগজের মধ্যে রেখে ভারী জিনিষ দিয়ে চাপা দিলে ৬ 1৭ ঘণ্টা পরে দেখা যাবে তাদের জলীয় অংশ কাগজ শংষে নিয়েছে। এখন এই পাতা, ফুল ইত্যাদি নিজেদের খাতায় শিশ্রা লাগিয়ে রাখতে পারে। এমনি ক'রে তারা 'ফুলের বই', 'পালকের বই' তৈরী ক'রতে পারবে।



## (১৩) প্রকৃতি পরিচয় ও ভাষা, সংখ্যা ও চিত্রকলার অভিজ্ঞতা

নিজেদের সংগ্হীত দ্ব্যাদির নামকরণ ও নাম লিখতে গিয়ে শিশ্রা লিখন পঠনের ও ন্তন ন্তন শব্দের সঙ্গে পরিচিত হ্বার স্যোগ পাবে। বেগুনের ক্ষেতে ক্তটি সারি, এক এক সারিতে ৬টি ক'রে বেগুন গাছ থাকলে ১০টি সারিতে ক্ষটি বেগুন গাছ আছে, ক্রমবর্ধমান চারা গাছটি কত ইণ্ডি ক'রে বাড়ছে ইত্যাদি অঙক সম্বন্ধীয় অনেক সমস্যা সমাধান ক'রতে পারবে। গাছপালা, পশ্পক্ষী, মেঘ, স্য্, চন্দ্র ইত্যাদি অংকতে গিয়ে অঙকনের অভ্যাস ক'রতে পারবে।

## দশম অধ্যায়

## (ক) নৃত্য সম্বলিত অঙ্গ সঞ্চালন

ভারতীয় নৃত্যকলা শিক্ষা দেবার উদ্দেশ্য শিশ্বশিক্ষার ভেতর দিয়ে ভারতীয় সংস্কৃতির প্নর্ভজীবন। শিশ্বকে স্ত্তুভঙগী, আত্মবিশ্বাস, সৌন্দর্থপ্রীতি, স্গঠিত স্বাস্হ্য অর্জন করতে সাহায্য করতে হবে এবং শিশ্বর শিল্পকলায় অন্বাগ জন্মিয়ে দিতে হবে।

ন্ত্যকলা শিখবার প্রথম অবস্হায় অঙগভঙগী একটা বিশেষ স্থান অধিকার করে আছে।

প্রথম শ্রেণীতে নানারকম অঙগভঙগীর ভেতর দিয়ে ও নানারকম ছন্দ ও তালের সঙ্গে শ্রীরচর্চার অভ্যাস করতে হবে। পাহাড়ওঠা, অগ্নিশিখা, পাতা ঝরে পড়া ইত্যাদি জিনিমগুলো প্রকাশ করবার একটা সহজ ভঙগী তাদের আয়ত করা চাই এবং ছন্দ ও তালের সঙ্গে শ্রীরচর্চার ভেতর দিয়েই এটা শেখান য়েতে পারে। শিশুর পরিবেশ অনুযায়ী দু একটি সহজ লোকন্ত্যের ধারণা তাকে দেওয়া য়েতে পারে। ''স্র্র্মামা'', ''হা-খে-না-খা'' প্রভৃতি সহজ ব্রতচারী নাচ এই শ্রেণীতে স্হান পাবে।

এই বয়সে হরিণ, সিংহ, হাতী প্রভৃতি জন্তুর অনুকরণ করে তা ভাবে প্রকাশ করতে শিশ্ব চেন্টা করবে এবং তাতে আনন্দ পাবে।

দ্বিতীয় শ্রেণীতেও প্রথম শ্রেণীর অনুরূপ অঙগভঙগীর দ্বারা শিশ্ব সহজ ভাব প্রকাশ

সহজ স্থওতাল নাচ এবং এই ব্য়সের উপ্যোগী ব্রতচারী নাচ আরও দু একটা দেওয়া যেতে পারে।

ফসল কাটা, হোলি ইত্যাদি দু একটি উৎসবের নাচ যদি শিশ্রর পক্ষে আয়ন্ত করা সম্ভব হয় তবে দেওয়া চলে। তবে এই দুই শ্রেণীতেই নৃত্যের বেশীর ভাগ কর্মসঙ্গীত (action song) ও শরীরচর্চার ভেতর দিয়ে সমাপত হবে। আলাদা করে নাচ শেখাবার কোন প্রয়োজনীয়তা আছে বলে মনে হয়় না। শিশ্রয়া স্বতঃসফ্ত আত্মপ্রকাশকে ছন্দ ও গোড়াপত্তন হ'ল।

#### (খ) ছন্দ ও ছড়া

#### (ক) ভূমিকা

ছড়া বলতে আমরা বুঝি ছেলেভুলান ছড়া, ইংরেজীতে যাকে বলা হয়ে থাকে nursery rhymes. রবীন্দ্রনাথের মতে "ছড়াগুলিই শিশুসাহিত্য, তাহারা মানবমনে আপনি জন্মেছে। ছড়াগুলি ভারহীনতা, অর্থবন্ধনশুন্যতা এবং বৈচিত্র্যবশতঃই চিরকাল ধরিয়া শিশুদের মনোরঞ্জন করে আসছে। শিশুমনোবিজ্ঞানের কোন সূত্র ধরে রচিত হয় নি"। তিনি আরও বলেছেন "প্রাচীন ঋগ্বেদ ইন্দ্র চন্দ্র বরুণের স্তবগান উপলক্ষে রচিত—আর মাতৃহ্দয়ের যুগলদেবতা খোকাখুকুর স্তব হইতে ছড়ার উৎপত্তি"।

সাহিত্যের দ্ভিভঙগী নিয়ে বিচার করতে বসলে এই ছড়াগুলোর ভেতর যে উচ্চতরের সাহিত্যের লক্ষণ খুঁজে পাওয়া কঠিন, একথা সকলেই দ্বীকার করবেন। বিশেষণ করলে ভাবের পারদ্পর্য, ভাষার সৌন্দর্য, ঘটনার ধারাবাহিকতা ইত্যাদি কিছুই ছড়াগুলোর ভেতর পাওয়া যাবে না। কবিতার বাধুনী যথেষ্ট অপটু হাতের একথা দ্বীকার করতেই হবে। নিয়মের বন্ধন মেনে না চলার ফলে ছড়াগুলো অসংলগনতা দোষে দুষ্ট একথাও না মেনে উপায় নেই। প্রচলিত ছড়াগুলোর মধ্য দিয়ে যে ছবি ফুটে উঠতে দেখা যায় তাকে শুধু অভ্ভূত বললে চলবে না, অসম্ভব ও অসঙগত বলেও মেনে নিতে হবে।

এখন প্রশ্ন এই যে এসব অসম্ভব, অসঙ্গত, অর্থহীন ছড়াগুলো সহর থেকে একরকম বিলুপত হয়ে গেলেও পল্লীগ্রামে এখনও কি ক'রে আপন বৈশিট্য বজায় রেখে চলছে? তার উত্তরে আমরা বলতে পারি ছড়ার ভেতর দিয়ে পল্লীবহুল বাংলাদেশের যে দ্বাভাবিক চিত্র ফুটে উঠেছে, পল্লীর কুটীরের যে সঙ্গীত অনুর্রণিত হয়ে উঠেছে, কৃত্রিম সহরের ছবির সঙ্গে তার কোন সাদ্শ্য নেই বলেই ছড়ার ধারা আপন বৈশিষ্ট্য বজায় রেখে একই খাতে আজও প্রবাহিত হয়ে চলেছে বাংলার পল্লীগুলিতে।

''आय आय हैं। मा सामा हिंश मिर या, है। है। है। है। है। है। माह क्टें ल मुख्या प्रत् भाम क्टें ल मुख्या प्रत् भाम कामल क्टें प्रांति काल शब्द मूथ प्रत् मूथ थावाब वाहि प्रत्, है। प्रत् काल है। में है। मिर या।"

विधारन मार्ष्ट्र मूर्ड़ा, थारन्त क्रैंड़ा वर काल शत्त्र मूर्थत लाख है मा मामा थताथार जविन रित्त किना एम विषय यरथ मिन्स थाकरल जात्र दिन्ती मर्न्स्ट जार्श म्हर्त वर्ष्ट्र है मार्ष्ट्र मार्ड्र मूर्ड़ा, थारन्त्र क्रैंड़ा वर काल शत्त्र मूर्थ मर्श्व कता मम्बद रित किना।

## (খ) ছড়ার গিছনে মনোবৈজ্ঞানিক তথ্য

আগেই বলা হয়েছে শিশ্ব মনোবিজ্ঞানের স্ত্র ধরে ছড়াগ্বলো রচিত হয় নি। অথচ আশ্চর্যের বিষয় এই যে শিশ্ব মনোবিজ্ঞানের স্ত্র ধরে রচিত না হয়েও ছড়াগ্বলো চিরকাল শিশ্বদের মনোরঞ্জন করে আসছে। এই প্রচ্পরবিরোধী কথাটাই এখন বিচার্য বিষয়। এই বিষয়ে বিচার করতে গেলে আমরা বলতে পারি যে রচনার সময় মনোবিজ্ঞানের স্ত্রগুলো সম্মুখে ধরে রচিত হয়ে না থাকলেও যখন চিরকাল শিশুর মনোরঞ্জন করে আসছে তখন নিশ্চয়ই ছড়াগুলো রচনার পর থেকে মনোবিজ্ঞানের নিয়মগুলো মেনে আসছে। নয়তো শিশুর মনকে রঞ্জিত করছে কি ক'রে?

এখন দেখতে হবে কি কারণে অসঙগত, অসংলগ্ন ছড়াগুলো শিশুমনকে গভীরভাবে নাড়া দেয় ? মনোবিজ্ঞানসম্মত উপায়ে রচিত না হয়েও যদি ছড়াগুলো গভীরভাবে শিশুমন আলোড়িত করে থাকে, তবে বুঝতে হবে ছড়া রচনা খুব সহজ কথা নয়। ছড়ার ভেতর দিয়ে যে সহজ সরল সুরটি বেজে ওঠে, সেই সরল সুরটিকে আবিষ্কার করে ছড়ারচনা খুবই আয়াসসাধ্য। ছড়ার ''যেমন তেমন ভাবটি পাওয়া সহজ নহে। যেটি স্বাপেক্ষা স্বল, সেটি স্বাপেক্ষা কঠিন''।

ছড়া রচনা করা কঠিন হোক আর নাই হোক এখন আলোচ্য বিষয় রচিত এবং প্রচলিত ছড়াগুলোর বৈশিষ্ট্য কি? কি কারণে চিরকাল ধরে এরা শিশুর মনোবীণায় মধুর ঝঙকারে ঝঙকৃত হয়ে আসছে?

এর উত্তরে প্রথমেই বলা যায় অসংলগ্নতা শিশ্মনের পরিচায়ক। স্কালগ্নভাবে কোন কিছুর প্রথম থেকে শেষ পর্যন্ত অন্সরণ করা শিশ্মনের ধর্ম নয়। এজন্য অসংলগ্ন ছড়াগুলো চিরকাল শিশ্মনকে গভীরভাবে আলোড়িত করে আসছে।

দ্বিতীয়তঃ নিয়মবন্ধনহীন ছড়ার সঙ্গে শিশুমনের এক অদ্ভূত মিল দেখতে পাওয়া যায়। শিশুমন নিয়ম মেনে চলতে পারে না বলেই নিয়মবন্ধনহীন ছড়ার ছবিগুলো অতি সহজে সে গ্রহণ করতে পারে এবং গ্রহণ করে অপরিসীম আনন্দলাভ করে।

তৃতীয়তঃ শিশ্মন অত্যন্ত কল্পনাপ্রবল। এই প্রখর কল্পনাশক্তির সাহায্যে অতি সহজেই তারা মনের মত ক'রে জিনিষ গড়ে নিতে পারে। সেজন্যই ছড়ায় ভেঁাদড়ের নাচ, লাল গামছা পরিহিত টিয়ে পাখী, ফ্লীর নদী অথবা কশকাল বশকিয়ে সীতানাথের নাচ ইত্যাদি কোন চিত্রই শিশ্মনের কাছে অন্ভূত অথবা অসম্ভব নয়। কারণ "শিশ্ম এখনও জগতে সম্ভাব্যতার শেষ সীমাবতী প্রাচীরে গিয়া চারিদিক হইতে মাথা ঠুকে ফিরে আসেনি। সে বলে যদি কিছুই সম্ভব হয় তবে সকলই সম্ভব"।

চতুর্থতঃ শিশ্মন অর্থলিপ্স্নার। অর্থের জন্য তার জগতের কিছুই আসে যায় না।
ছড়ার ছন্দের বঙ্কারই তার মনোবীণার তারে বঙ্কার তুলতে যথেন্ট সম্থা। স্কুতরাং বয়স্ক
জগতে অর্থহীন হলেই যা বর্জনীয়, শিশ্ব জগতে অর্থহীনতার জন্য তা বর্জনীয় নয়।

স্বাশেষে আমরা দেখতে পাই ছড়ার স্বরের মাধ্যা শিশ্মনকে গভীরভাবে অভিভূত করে ফেলে।

স্তরাং দেখা যাচ্ছে যে রচনার আগে ছড়াগুলো মনোবিজ্ঞানের স্ত্র ধরে রচিত না হয়ে থাকলেও রচনার পর শিশ্ব মনোবিজ্ঞানের স্ত্রগুলো মেনেই চলেছে। এ কারণেই শিশ্বর

## (ग) मिना त भानीत्रक विकारण इष्टात श्रद्धालनीय्रा

ছড়াগুলো শিশুর মানসিক বিকাশে প্রয়োজনীয় কিনা—এ বিষয়ে বিচার করে দেখতে গেলে আমরা দেখতে পাই (১) ছড়ার ছন্দের ঝঙকার এবং ছত্রে ছত্রে মিল শিশুমনে অজ্ঞাতসারে সাহিত্যরসবোধ স্থিট করে থাকে, (২) ছড়ার অদ্ভূত অসংলগ্ন ছবিগুলো শিশুর কল্পনাশক্তির বিকাশসাধনে সাহায্য করে, (৩) ছড়া আবৃত্তির দ্বারা শিশু আত্মপ্রকাশের ক্ষমতা অর্জন করে, (৪) স্মৃতিশক্তির উন্মেষ সাধিত হয়, (৫) বাক্শক্তি ও উচ্চারণের জড়তা কেটে যায়, (৬) ছড়ায় ব্যবহৃত শব্দগুলো শিশুর শব্দভাশ্ডার বৃদ্ধি করতে সাহায্য করে, (৭) দল্পতভাবে আবৃত্তি অপেক্ষাকৃত ভীরু (nervous) ও লজ্জাশীলতা দ্রীভূত করতে সাহায্য করে, (৮) ঘুমপাড়ানী অথবা অনুরূপ ছড়া আবৃত্তির সাহায্যে মা মাসীর অনুকরণে শিশু মা মাসীর স্হানে নিজকে কল্পনা ক'রে অভিনয় করে

থাকে—এভাবে ছড়া আব্তির সাহায্যে শিশ্র অন্করণ প্রবৃত্তি সন্তোষ লাভ করে এবং এর সাহায্যে মনের ভারসাম্য (mental balance) রক্ষিত হয়, (৯) সর্বোপরি ছড়া আব্তিন্বারা শিশ্র প্রচুর আনন্দলাভ করে থাকে।

স্তরাং শিশ্র জগতে ছড়ার প্রয়োজনীয়তা অবশ্য দ্বীকার্য। তবে এটা মনে রাখতে হবে যে প্রধানতঃ ৪-৭ বংসর বয়স্ক শিশ্রাই ছড়াদ্বারা বিশেষভাবে আকৃষ্ট ও উপকৃত হয়ে থাকে। কারণ এ বয়সের শিশ্রাই বেশী কলপনাপ্রবণ।

#### (ঘ) ছড়ার শ্রেণীবিভাগ

ছেলেভুলান ছড়াগুলোকে সাধারণতঃ প্রাচ ভাগে ভাগ করা যেতে পারে। যেমন—

- (১) ঘুমপাড়ানী ছড়া,
- (২) মাতৃহ্দয়ের অকৃত্রিম স্নেহের পরিচায়ক খোকাখুকুর স্তবর্পে রচিত ছড়া,
- (৩) প্রকৃতির সঙ্গে সম্বন্ধযুক্ত ছড়া,
- (৪) খেলার সঙেগ সম্বন্ধযুক্ত ছড়া,
- (৫) চিত্ৰবহুল কল্পনা উদ্দীপক ছড়া।
- (১) মায়ের কোলে শুয়ে ঘুমপাড়ানী গান শুনতে শুনতে নিদ্রাদেবীর কোলে ঢলে পড়ছে—এরকম শিশুর চিত্র বাংলাদেশে অতি সাধারণ।

'धू भপাড়ানী মাসি পিসি মোদের বাড়ী এস খাট নাই পালং নাই খোকার চোখে বস।"

এই ছড়াগুলো শিশুদের ঘুমপাড়াবার জন্য মা মাসীরা ব্যবহার করলেও মা মাসীদের মুখ থেকে শুনে শুনে খেলার ছলে ৪-৬ বংসর বয়স্ক খুকুমণিরাও আবৃত্তি করে থাকে এবং নিজকে মা মাসীর জায়গাতে কল্পনা করে অভিনয়ের ভেতর দিয়ে প্রচুর আনন্দলাভ করে থাকে।

(২) এই জাতীয় ছড়া সম্বন্ধে রবীন্দ্রনাথ বলেছেন "মুগ্ধহ্দয়া বন্দনাকারিণীগণ নব নব স্নেহের ছীচে ঢালিয়া এক শিশ্ব দেবতার কত ম্তিই প্রতিষ্ঠা করিয়াছে"। বাস্তবিক নানাভাবে শিশ্ব দেবতার স্তব করেও মাতৃহ্দয়ের আকাঙখা মিটতে চায় না।

''धन धन धन

বাড়ীতে ফুলের বন''

অথবা

'থোকন আমাদের সোনা সেকরা ডেকে মোহর কেটে

र्शास्त्र सर करा व

श्रीष्ट्रा एवं पाना।" रेजापि

এ জাতীয় ছড়াও সাধারণতঃ ৪—৬ বংসর বয়স্ক শিশ্রা মা মাসীর জায়গাতে নিজেকে কল্পনা করে অভিনয়ের ভঙগীতে আবৃত্তি করে থাকে।

(৩) প্রকৃতির সঙেগ সম্বন্ধযুক্ত ছড়া বাংলার ঘরে ঘরে শিশুদের আবৃত্তি করতে শোনা যায়। মুষল্ধারে বৃষ্টি পড়ছে, শিশুমন গ্রের বন্ধন কাটিয়ে উঠতে চাইছে। সরল বিশ্বাসে সে তখন মনের ভাব প্রকাশ করছে—

''লেবু পাতা কর্মচা ওরে ব্রিট থেমে যা''

এ জাতীয় ছড়া সাধারণতঃ ৫—৮।৯ বংসর বয়স্ক শিশুরা আবৃত্তি করে থাকে।

(৪) খেলার সঙ্গে সম্বন্ধযুক্ত ছড়াও বাংলার প্রামে কম প্রচলিত নয়। এরকম ছড়াগুলো নিতান্তই অর্থহীন। তবুও শব্দবিন্যাস ও সুরের ঝঙকার এবং তার সঙ্গে খেলার আনন্দ শিশুমনে জাগিয়ে তোলে অভ্তুত প্রেরণা সাধারণতঃ দেখা যায় কয়েকটি খেলার সাথী শিশু একসঙ্গে আসনপিড়ি হয়ে বসেছে। তাদেরই ভেতর পরিচালনায় সমর্থ কোন শিশু ছড়ার প্রত্যেকটি শব্দ উচ্চারণের সঙ্গে সঙেগ প্রত্যেকের হণট ছুয়ে ছুয়ে যাছে এবং আবৃত্তি করে চলেছে—

''আগডুম, বাগডুম, ঘোড়াডুম সাজে'' ইত্যাদি

এ জাতীয় ছড়ার সঙেগ খেলার আনন্দ উপভোগ করে থাকে সাধারণতঃ ৬—৮।৯ বংসর বয়সক শিশুরা।

(৫) চিত্রবহুল কল্পনা উদ্দীপক ছড়াগুলো সাধারণতঃ ৫—৭।৮ বংসর বয়দক শিশ্রা আবৃত্তি করে থাকে। চিত্র যতই অদ্ভূত হোক শিশ্মনের কল্পনাপ্রবণতা অতি সহজেই কোন কিছু স্জেন করতে সক্ষম। তার কল্পনা রচিত স্থিতিগুলোই ক্রমশঃ তার ভাবের অভিব্যক্তিকে সাহায্য করে থাকে। এ জাতীয় ছড়ার চিত্রগুলোকে আবার তিনভাগে ভাগ করা যায়। যেমন (ক) অদ্ভূত, অসম্ভব ছবি (খ) বাঙগালী গ্রের সজীব ছবি (গ) বাংলাদেশের প্রাকৃতিক দ্শোর ছবি।

### (ক) ''টিয়ের মার বিয়ে লাল গামছা দিয়ে'' ইত্যাদি

পরিণত মন নিয়ে দেখতে গেলে টিয়ের মার বিয়ের নিহিত অর্থই হল একটি বিধবা বিয়ের আসর এবং দেখা যায় বিয়ের জন্য টিয়ে পাখী লাল গামছায় সজ্জিতা। শিশ্মন যুক্তিতর্ক দিয়ে জানতে চাইবে না টিয়ে সমাজে বিধবা বিয়ে প্রচলিত আছে কি না অথবা টিয়ে সমাজে গামছা পরবার রীতি প্রচলিত আছে কিনা। শিশ্মন নিঃসন্দেহে কল্পনার রঙে রাঙিয়ে মনে মনে ছবি এ°কে চলে।

(খ) আজ দুর্পার অধিবাস, কাল দুর্গার বিয়ে,
দুর্গা যাবেন শ্বশুর বাড়ী সংসার কণদিয়ে।
না কণদেন মা কণদেন ধূলায় লুটায়ে,
সেই যে মা পলাকাটি দিয়েছেন গলা সাজায়ে।
বাপ কণদেন বাপ কণদেন দরবারে বসিয়ে
সেই যে বাপ টাকা দিয়েছেন সিন্দুক সাজায়ে।

वाङ्गाली घरतत একটি সজীব কর্ণ ছবি—মেয়েকে শ্বশ্র বাড়ী পাঠানো। শিশ্বেলা থেকে মা বাবা যাকে স্নেহের অাচলের আড়ালে আড়ালে মানুষ করে তুলছিলেন কাল তার বিয়ে। মা বাবার স্নেহের বাংধন কাটিয়ে তাকে দ্বে চলে যেতে হবে। তাই মা বাবা কিছুতেই অশ্র সংবরণ করতে পারছেন না। এতো আমাদের বাঙ্গালীর হ্দয়ের চির্ত্তন বেদনার ছবি।

(গ) ''আয় চ'াদ আয়

ব'াশ বনের ভেতর দিয়ে

চ'াপা গাছের ওপর দিয়ে

দীঘির জলে স্গাতার দিয়ে

আয় চ'াদ আয়।''

বাংলার পল্লীতে লালিত পালিত শিশ্র কাছে বংশ বনের দ্শ্য, চংপা পাছের আকৃতি অথবা দীঘির জলের গভারতা মনশ্চক্ত্তে দেখবার প্রয়োজন হয় না।

মোটের ওপর ছড়ার শ্রেণীবিভাগ করে আমরা নির্দিষ্ট কোন ছড়াকে যে শ্রেণীর অন্তর্ভুক্তই করি না কেন প্রত্যেকটি ছড়াই শিশ্বর মানসিক বিকাশে যথেষ্ট সাহায্য করতে সক্ষম। রবীন্দ্রনাথ ছড়াকে মেঘের সঙ্গে তুলনা করে বলেছেন 'জেড়জগতে এবং মানব জগতে এই দুই উচ্ছুঙখল অন্তুত পদার্থ চিরকাল মহৎ উদ্দেশ্য সাধন করিয়া আসিতেছে। মেঘ বারিধারায় নামিয়া আসিয়া শিশ্বশস্যকে প্রাণদান করিতেছে এবং ছড়াগ্বলিও স্নেহরসে বিগলিত হইয়া কল্পনা ব্রিউতে শিশ্বস্কাকে উর্বর করিয়া তুলিতেছে।"

## (৬) ছড়া শিক্ষা পৰ্ম্বাত

एटल छूलान छुण निम्नूत श्रथम कारा—৫—१।४ दश्मत राम्म् तिम्नूति कार्छ छुण ते अराम्म् उपराणिण श्रमाणिण त्र व्याप्त व्याप

তবে প্রচলিত মুখ্দ্র পদ্ধতি মনোবিজ্ঞান সম্মত নয়। কেননা সাধারণতঃ দেখা যায় বিদ্যালয়ে কবিতা মুখ্দ্র করান হয় একই ছয় বার বার উচ্চারণ করে। তাতে ছদ্দের তাল কেটে যাবার সম্ভাবনা থাকে, অর্থবোধও হয় না। এ কারণে প্রচলিত মুখ্দ্র পদ্ধতিতে মুখ্দ্র ব্যাপারে শক্তিও সময় যতটা অপচয় হয়, সুফল ততটা পাওয়া যায় না। মুখ্দ্র করবার পদ্ধতি হওয়া উচিত সমদ্ত ছড়াটা বার বার উচ্চারণ করে প্রথমে মোটামুটি তার ভাব গ্রহণ, তারপর মুখ্দ্র করা। মুখ্দ্র বিষয়ে এভাবে শিশুকে পরিচালনা করলে শিশুরে দিক থেকে সুফল পাবার সম্ভাবনা। ছড়া বড় হলে ভাব গ্রহণের পর অর্থবোধক অংশে বিভক্ত করে মুখ্দ্র করান য়েতে পারে। আর আকারে ছোট হলে বিভক্ত করবার প্রয়োজন হয় না।

ছড়ার পাঠদান মৌখিক হলেও শিক্ষকের দিক থেকে নির্দিষ্ট ছড়ার জন্য রঙ্গীন চিত্রযুক্ত চার্ট শ্রেণীতে নিয়ে যাওয়া প্রয়োজন। তার কারণ রঙ্গীন চিত্র শিশ্বমনকে যত সহজে আকৃষ্ট করে এমন আর কিছুতে নয়।

এছাড়া কলপনার চোখে মনে মনে যে ছবি সে এ°কে চলেছে, চোখের সামনে নানারভেগ প্রতিফলিত তারই বাস্তবর্পে সহজে ছড়ার ভাবগ্রহণে তাকে সাহায্য করে।

ছড়ার পাঠদান শ্রেণীতে সমবেতভাবে হওয়া প্রয়োজন। তাতে ছন্দের ঝঙকার ও সুরের মাধুর্য বেশী উপলব্ধি করা যায়। এবং অপেক্ষাকৃত ভীর্ (nervous) এবং লজ্জাশীল (shy) শিশুরা ভীর্তা ও লজ্জাশীলতা কাটিয়ে উঠবার সুযোগ পায়। অবশ্য সমবেতভাবে হলেও শিক্ষকের তীক্ষা দৃষ্টি রাখা প্রয়োজন ব্যক্তিগত উচ্চারণভঙ্গী ও মনোযোগিতার উপর।

মোটের উপর শিশ উপযোগী ছড়ার মধ্য দিয়েই হবে শিশ র সাহিত্যের সঙ্গে প্রথম পরিচয় এবং ছড়ার মধ্য দিয়েই প্রথম জন্মাবে সাহিত্যের রসবোধ।

# (চ) ছড়ার নমুনা তালিকা (১)

ঘুমপাড়ানী মাসি পিসি
মোদের বাড়ী এস,
মেজ নেই মাদুর নেই

খোকার চোখে বস।

বাটা ভরে পান দেব

গাল ভরে খেও খিড়কীদ্রয়োর খুলে দেব

य, ७,९ करत रयछ।

(\$)

ছেলে धुमान পाড़ा জुड़ान বগ वन দেশে। বুলবুলিতে ধান খেয়েছে খাজনা দেব কিসে।। ধান ফুরুল, পান ফুরুল এখন উপায় কি? আর কতদিন সবুর কর রসুন বুনেছি।।

(0)

क्शम्रात मान्नी क्शम्रात मान्नी

तिमण्यात वाना

हिल्ल क्शम्रात वरल जूमि

भाग्न करत्र वाना

हिनाला छार्व शाथत जारन

क्शम्रात हिल्ल क्रिक् करत शास्त्र।

(8)

त्थाका थन द्विष्ट्स मू पाठि एका क्रिक्स मू (धत वािं एक त्थाका च्रांक्त थााका। त्थाका यादन नास नान क्रुचुसा शास्त्र।

(0)

আয় জল বে°পে
মুড়ি দেব মেপে
কচুর পাতা নল বে°পে আয় জল।

(%)

आस द्याम्पूत रहत। हाशन प्रत रहेत। मूर्यित मा दूछि। काठे कूड़्राठ श्रीन।। कथाना कालज़ रलीं । क' रवोरक फिलि।। व्यालीन मित्रम्, कारज़। कलाशास्त्र व्यारज़।। कला लरज़ हे लों ल। द्रिज़ थाय गुल्लाल।।

(9)

रेकिं ि सिकिं ि ठास िकिं। ठारमंत काठा में में में में में स्वारं। रथर्स थल मारमामत्। मारमामरत्त्र रथिं क्षिं। म् सारत वरम ठाल कथिं। ठाल कथिं। ठाल कथिं। ठाल कथिं। छाठ थाउर्थ म् भूत्रव्ला। छाठ भुल माहि। देशमाल मिरस ठथिं।। देशमाल कल खथें।।

(P) '

वास्तत वास है दिस्।
नारस वता मिरस।।
ना निरस रंगल द्यासाल भाष्ट्र।
वा प्रत्थ प्रतथ खंगमज़ नारह।।
उदा खंगमज़ किरस हा।
दथाकार नाहन प्रतथ सा।

(৯)

रथाकन यात्व न्वग्तू वाज़ी
प्रत्थं यात्व तक।
वाज़ीत्व व्याष्ट्र कित्वा जूला
कामत्र तवे स्रव्धा।
क्वात्व मृर्थं वर्षेन
जूलात मृर्थं वािठ।
शाक्की कत्त्र वहें वान्त्व
स्थाकन श्रिशांि।

(50)

''ওপারেতে কাল রঙ',
বৃদ্টি পড়ে বস, বস,
এপারেতে লঙ্কাগাছটি রাঙা টুকটুক করে
গুলবতী ভাই আমার মন কেমন করে''
''এ মাসটা থাক দিদি কে'দে ক'কিয়ে
ও মাসেতে নিয়ে যাব পাল্কী সাজিয়ে''
'হাড় হল ভাজা, ভাজা, মাস হল দড়ি
আয়রে আয় নদীর জলে বিংপ দিয়ে পড়ি।''

(55)

ও পাড়ার ময়রা বুড়ো।
রথ করেছে তের চুড়ো।।
তোরা রথ দেখতে যা।
তোদের হলুদমাখা গা।।
আমরা পয়সা কোথায় পাব।
আমরা উল্টোর্থে যাব।।

(52)

আকাশ ঘিরে মেঘ করেছে
স্থি গেল পাটে।
খুকু গেছে জল আনতে
পদ্দেশীঘর ঘাটে।।

পদ্মদীঘির কাল জলে
হরেক রকম ফুল।
হে°টোর নীচে দুলছে খুকুর
গোছাভরা চুল।।

ব্দি এলে ভিজবে সোনা

চুল শ্কান ভার।
জল আনতে খ্কুমণি

যায় না যেন আরা।

प्रचेवा।— यूक्मिन्त इंज़ — याशीन्त्रनाथ नत्रकात, निि द्क नानारेि।

# (গ) সঙ্গীত

## ভূমিকা

শিলেপর মধ্যে ললিত তথা চারুকলার স্থানই হল প্রধান। চারুকলার প্রকাশ, চিত্র, ভাস্কর্য ও সঙগীত নিয়ে পরিপূর্ণ। এ তিনের ভাব সৌন্দর্যের তুলনা নাই। কিন্তু তাহলেও শিল্পবিদ্রো সঙগীতকেই শ্রেষ্ঠ কলা বলেছেন।

সঙগীত কি? সঙগীত বলতে বুঝায়, গাঁত, বাদ্য ও ন্ত্য এই তিনের সমন্বয়—অর্থাৎ আদেশ সংগীত হবে গান বাজনা ও নাচের একত্র সমাবেশ।

সঙ্গীত যে কেবল কলার মধ্যেই শ্রেষ্ঠ তা নয়। মানুষের জীবনেও এর স্থান অতি উচ্চে থবং মানব শিক্ষার স্থান্ট হতে বিদ্যা শিক্ষার ব্যাপারেও সঙ্গীত একটি বিশিষ্ট স্থান অধিকার করে আছে। তাই বিদ্যার অধিষ্ঠাত্রী দেবীর এক হাতে বীণা ও আর এক হাতে পুস্তক। আর্য থকিক বাগ্দেবীর এই ম্তিতিই প্রকাশ পাচ্ছে শিক্ষায় সঙ্গীতের স্থান কোখায়।

# বুনিয়াদী শিক্ষায় সঙগীত

द्निय़ामी निष्माय मध्यीणिक धकि विनिष्णे म्हान धमान कर्ता हर्यहा। किन्तु किन् अत्याक कर्ता वा प्रमास मध्यीणिक धारक वा मध्या मध्या प्रमास कर्ता हर्यहा कर्ता वा प्रमास कर्ता हर्या कर्ता वा प्रमास कर्ता हर्या कर्ता कर्त

## শिक्षाय प्रकारित अर्याकनीयना ও अन्त

वर्णमान यूजिर निष्मात रक्षति निन्द-निक्सात यूजि वला रस वर्था निष्मात वाजित निन्दे वाज मूथा विससविष्ठ (निर्देश)। वर्णमान जलरावत निष्माविष्ठ निष्माविष्

শिक्षापर्ग तिव विदेश पित कि कि विद्या प्राप्त विद्या विद्या कि वि

বুনিয়াদী বিদ্যালয়ের সংগীতকে মোটামুটি নিম্নলিখিত কয়টি ভাগে ভাগ করতে

- (১) ভজন বা ধর্মসঙগীত,
- (२) জाতौर मध्मील वा प्प्यायुत्वाथक मध्मील,
- (৩) ঋতু সঙগীত,

- (8) কর্ম সঙগীত,
- (c) मिम् प्रत्न डेलयुङ जामम जाइ स्यम् शात,
- (৬) খেলা হাসি ও আনন্দের গান।

### मक्ष्मीण किलारव भिगा त जीवनरक श्र**ावान्विण कर**त

attend for the

- (১) সংগীত বিদ্যালয়ের সাধারণ কর্মস্চীতে পরিবর্তন আনে এবং বিদ্যালয়ের পরিবেশকে আনন্দময় করে তোলে। শিশুরা পায় নির্মল নির্দোষ আনন্দ, সে আনন্দের রেশ চলে তার সারা জীবন ধরে। নৃত্য গীত ও বাদ্যের প্রতি সকল শিশুরই একটা স্বাভাবিক অনুরাগ ও আকর্ষণ থাকে। মনের এই দিকটি বিকশিত না হলে কোন মানুষের শিক্ষাই স্বাঙগীণ শিক্ষা হতে পারে না।
- (২) শিশুর চরিত্রের উপর ও সঙ্গীতের প্রভাব বড় কম নয়। সুরুচিপূর্ণ সঙ্গীত শিশুকে মাজিত রুচি সম্পন্ন করে তোলে।
- (৩) শিশুর মানসিক শক্তি বিকাশেও সংগীতের প্রভাব কিছু কম নয়। প্রথম অবস্থায় শিশুরা যখন পড়তে শেখে না, তখন তারা গান শেখে শুনে শুনে —এতে তাদের স্মৃতিশক্তি বাড়ে। শিশুরা যখন পড়তে শিখে যায়, তখনও সংগীত পড়তে গিয়ে বাড়ে তার নিরীষ্ণ শক্তি, দুত পঠন ক্ষমতা ও ভাবপ্রকাশ ক্ষমতা। গানের স্বরের উন্থান পতন লক্ষ্য করতে গিয়ে ব্রুদ্ধি পায় তাদের বিচার শক্তি ও ধারণাশক্তি এবং মনঃসংযোগের ক্ষমতা।
- (৪) শিশুরা কেবল একক সঙগীত শিক্ষা করে না—তারা শেখে সমবেতভাবে গান করতে। সমবেতভাবে গান শিখতে গিয়ে তারা একই সঙগীত পরিচালকের নির্দেশ মেনে চলতে শিখে। প্রত্যেকে প্রত্যেকের সুরের প্রতি লক্ষ্য রেখে গান করতে শেখে। এতে তাদের একত্ববোধ জাগে। তারা প্রস্পরের প্রতি সহান্ভূতিশীল হতে শেখে।
- (৫) শিশ্র শরীর, মন ও আত্মার স্থম বিকাশই আজ শিক্ষার মূল উদ্দেশ্য ব'লে স্বীকৃত হয়েছে। বুনিয়াদী বিদ্যালয়ের শিশ্বদের ভজন গান করতে করতে, শ্র্ধু যে তাদের আধ্যাত্মিক জীবনের ভিত্তি গড়ে উঠবে তা নয়, প্রাচীন ভারতের ভজনের সঙ্গে তারা পরিচিত হবে। জানবে তারা ভারতীয় সঙ্গীতের গৌরবময় ইতিহাসকে।
- (৬) বুনিয়াদী শিক্ষা কর্ম-কেন্দ্রিক। স্বভাব-চণ্ডল শিশুরা স্থির হয়ে বসে পাঠ ভাভ্যাস করার চাইতে কর্মের মধ্য দিয়ে শিক্ষালাভ করতেই ভালবাসে। তাদের এই কর্মের আনন্দ দ্বিগুণিত হয় যখন তারা সমবেতভাবে গান গেয়ে গেয়ে কাজ করে।
- (৭) জাতীয়তাবোধ এবং দেশাত্মবোধও জাগ্রত করা যায় এই সঙগীতের মধ্য দিয়ে।
  শিক্ষার অন্যতম উদ্দেশ্য হল শিশুদের মনে দেশাত্মবোধ জাগানো, দেশের কৃষ্টি ও ঐতিহার
  প্রতি তাদের শ্রুধাসম্পন্ন করে তোলা। সঙগীত সেই দেশাত্মবোধ জাগ্রত করার অন্যতম প্রকৃষ্ট
  উপায়।

#### সঙগতি শিক্ষার লক্ষ্য

- (১) বিদ্যালয়ে সঙ্গীত শিক্ষার প্রধান লক্ষ্য হল শিশ্র শ্রবণশক্তিকে এমনভাবে শিক্ষিত করে তোলা যেন তাদের শ্রেষ্ঠ সঙ্গীত সম্বন্ধে ধারণা জন্মে এবং শ্রেষ্ঠ সঙ্গীতের প্রতি তাদের অনুরাগ বৃদ্ধি পায়।
- (২) দ্বিতীয়তঃ শিশ্র কণ্টম্বরকে এমনভাবে চালিত করতে হবে যেন সংগীতের স্বরু তাল লয় বজায় থাকে।
- (৩) সঙ্গীত শিক্ষার আর একটি লক্ষ্য হবে যে, যখন শিশু বিদ্যালয়ের পাঠ শেষ করবে, তখন তারা যেন সঙ্গীতের ভাব গ্রহণ করতে পারে।

(৪) সঙ্গীত শিক্ষায় সকলের চাইতে বড় লক্ষ্য হল, শিশ্র আন্ভূতিক বিকাশকে সাহাষ্য করা। দৈহিক, মানসিক, আন্ভূতিক, সামাজিক ও চারিত্রিক—এই স্বাঙ্গীন বিকাশ সাধনই বুনিয়াদী শিক্ষার উদ্দেশ্য।

## সংগতি শিক্ষার বিভিন্ন স্তর

শৈশর জীবন বিকাশের বিভিন্ন স্তরের প্রতি লক্ষ্য রেখেই সঙ্গীত শিক্ষার ও বিভিন্ন স্তর হওয়া উচিত। শৈশর জীবন বিকাশের পথে আমরা পাই শিশর শৈশব (অর্থাৎ Infancy) ৫ হতে ৭ বংসর পর্যন্ত। শিশর বাল্য (Boyhood) ৭ হতে ১১ বংসর পর্যন্ত এবং শিশর কৈশোরকে (Adolescence) ১১ বংসর হতে ১৪ বংসর পর্যন্ত। সঙ্গীতকেও শিশর মানসিক বিকাশ ও শক্তির প্রতি লক্ষ্য রেখে এই তিন ভাগে ভাগ করা যায়—অর্থাৎ একেবারে শিশুদের জন্য আতি সহজ সরল গান বালকদের জন্য আরও একটু কঠিন এবং কিশোরদের জন্য আরও শক্ত সঙ্গীত নির্বাচন করতে হবে। সঙ্গে সঙ্গে তাদের মানসিক বৈশিন্টের প্রতিও লক্ষ্য রাখতে হবে। কারণ শিশর যে গান ভাল লাগবে কিশোর সে গানে আনন্দ পাবে না। যেমন শিশর পছন্দ করে সহজ সরল কর্ম সঙ্গীত, প্রাকৃতিক সঙ্গীত, লোকসঙ্গীত ও মজার গান। কিন্তু কৈশোরে শিশু হয়ে উঠে ভার্বিলাসী ও বীরপুজারী তখন তারা চায় জাতীয় সঙ্গীত ও দেশাঅবোধক সঙ্গীত—যে সঙ্গীতের তালে তালের হদের স্পন্দিত হয়ে উঠবে। ছোট শিশুদের উপযুক্ত আদর্শ তাদের উপযুক্ত সরল সঙ্গীতের মধ্য দিয়ে পরিবেশন করলে তাদের চারিত্রিক বিকাশের সহায়তা হয়। কিন্তু তাদের বোধশক্তির অনধিগম্য উচ্চ শ্রেণীর সঙ্গীতও তাদের প্রাণে বিশেষ সাড়া জাগিয়ে তোলে না।

বুনিয়াদী শিক্ষকের শিশ্বদের সঙগীত নির্বাচনের আগেই তার নিজস্ব পরিকল্পনা ও সঙগীত সংগ্রহ থাকা দরকার। তাকে আগেই ভেবে স্থির করে নিতে হবে, সারা বংসরে কোন, শ্রেণীতে কোন, প্রকারের গান কতগুলি শেখাবেন। প্রাথমিক বিদ্যালয়ের উপযোগী কতগুলি গানের তালিকা এই পুস্তাকায় দেওয়া হল।

## সঙগীত শিক্ষা পৰ্ণ্ধতি

ংশ্রেণীতে সংগীত শিক্ষা ২০ ।৩০ মিনিটের বেশী একসংখ্যে করা উচিত নয় কারণ শিশুরা প্র চাইতে বেশীক্ষণ একটি বিষয়ে মনঃসংযোগ করতে পারে না। শিক্ষক গানের কথাগুলি লিখে আনতে পারেন বা বোর্ডে লিখে দিতে পারেন।

এইবার গান আরম্ভ করতে হবে। আরম্ভের জন্য এক স্তবকই যথেণ্ট। কিল্তু শিশুরা প্রা গানটির সৌন্দর্য ও মাধুর্য যাতে উপলব্ধি করতে পারে তজ্জন্য সমগ্র গানটি তাদের একবার শোনান দরকার হবে। এর পর শিক্ষক একটি ছত্র গাইবেন—শিশুরাও তাহার সঙ্গে সঙ্গে পান করবে। শিশুরা স্বভাবতঃই সুরগ্রাহী। শিশুদের উপযুক্ত গান সমবেতভাবে তিন চারবার করার পরে অধিকাংশ শিশুই আপনা হতেই গানের সুরটি শিখে নেবে।

সমসত গানটি যখন চলতে থাকবে শিক্ষককে তখন তীক্ষা দৃষ্টি রাখতে হবে কোন্ ছেলে গান করছে, কোন্ ছেলে করছে না এবং কেন করছে না। কোন বুটির জন্য না পাইলে সেই বুটি খুব যত্ন ও সহান্ভূতির সঙ্গে সংশোধন করে দিতে হবে। গানের সঙ্গে মাঝে মাঝে বাজনাও চলতে পারে। যারা অত্যন্ত বেস্কুরা বা অত্যধিক জোরে গান করবে তাদের থামিয়ে সকলের সঙ্গ ধরিয়ে দিতে হবে। শিশ্বদের সঙ্গীতের তাল রক্ষার জন্য ১, ২, ৩ বলে আরম্ভ করাতে হবে এবং গানের সঙ্গে সঙ্গে শিক্ষকের মত তারাও হাতে তালি দিয়ে তাল রাখতে শিখবে। সাধারণতঃ গানের বই বা খাতা ব্যবহার করা হবে না, কারণ তাতে মনোযোগ ভঙ্গ হবার সম্ভাবনা।

সঙগীত শেখাতে গিয়ে আর একটি জিনিষ মনে রাখতে হবে। সঙগীত শেখাতে হবে বলে যে কেহ যেন সঙগীত শেখাতে চেণ্টা না করেন। সঙগীত শিক্ষক যদি নিজে ভাল গান করতে না পারেন, তাহলে তিনি গণায়ের স্থায়ক যণারা তণাদের সাহায্য নেবেন। শিশ্বদের সামনে শ্রেষ্ঠ সঙগীতের নম্নাই ধরতে হবে।

অনেক সময় দেখা যায় সঙগীত শিক্ষক নিজে খুব সুগায়ক, কিংবা ভাল গান জানেন। কিন্তু তার কাছে গান শিখেও শিশুরা ভাল গাইতে শেখে না। এর পিছনে আছে কতকগুলি কারণ—(১) প্রথমতঃ শ্রেণীর ছাত্রছাত্রী সংখ্যা হয়তো অত্যন্ত বেশী—শিক্ষক বা শিক্ষয়িত্রী শ্রেণীর শ্ভেখলা রক্ষা করতে পারলেন না কিংবা শিশুরা তাকে মেনে চলে এমন ব্যক্তিত্বও তার নাই। অথবা গানগুলি হয়তো শিশু-চিন্তাকর্ষক নয়। শিক্ষক মহাশয় যদি গানের ক্লাশটিকে সরস এবং লোভনীয় করে না তুলতে পারেন, তখন তার শেণীতে অথথা গোলমালের সৃষ্টি হয়। শিশুদের কণ্টস্বরের কোন সামঞ্জ্য থাকে না।

- (২) দ্বিতীয়তঃ দেখা যায় যে হয় তো একই দিনে সঙগীতের দুটি ঘণ্টা পর পর রয়েছে। এমন ক্ষেত্রেও মোটে সঙগীত শিক্ষা হয় না। সপতাহে একদিন এক ঘন্টা সঙগীতের জন্য না রেখে দুদিন আধ ঘণ্টা করে রাখলে অনেক বেশী কাজ হয়।
- (৩) তৃতীয়তঃ অনেক সময় দেখা যায় যে, শিশ্রা খুব বেশী চীংকার করে গান করে। কিন্তু এই প্রকার গান সঙেগ সঙেগ বন্ধ করে দিতে হবে। জোরাল কণ্ঠস্বরই শ্রেষ্ঠ সঙগীতের মাপকাঠি নয়। চীংকার করে গান গাইতে গেলে শিশ্বদের গানে ভাব কিংবা তালও রক্ষিত হয় না। সেজন্য অনেক সময় দেখা যায় যে ছোটবেলায় কণ্ঠস্বর স্থিমিউ হলেও পরিণত বয়সে সেটা আর থাকে না।
- (8) ज्ञान प्रमुख प्राय याय या विक्षिक मर्शिमस प्रविक्षण मिन एमत प्राय प्राय कराइन, कर्ल मिन प्राय प्राय कराइन मिन प्राय प्राय कराइन मिन प्राय कराइन प्राय कराइन मिन प्राय कराइन कराइन प्राय कराइन करा
- (৫) সঙ্গীতের সঙ্গে সকল সময়ে বাদ্যযন্ত্র ব্যবহার করলে শিশ্ররা এমন অভ্যস্ত হয়ে যায় যে তারা যন্ত্র ছাড়া গান গাইতে পারে না এবং বাজনা ছাড়া গাইতে গেলেই তাদের স্বর কেটে যায়।
- (७) गिम् एपत छान शान शाहरण ना भातात वकि विमिष्ठ कात्र इन गिम्म् कत व्याशाण वा महान छूणित वाजा । गिम्म् क द्रा रा म शासक किरवा पम्म महिश्व किन् छे भ्रय के भिम्म कि ना शाका है किन् छे भ्रय के भ्रय के

#### ১। ধর্ম সঙগীত

- (১) তোমারি গেহে পালিছ স্নেহে।
- (২) রঘুপতি রাঘব রাজারাম।
- (०) তুমি यে গো সাথে সাথে।
- (৪) সকলেরই প্রভু তুমি।
- (৫) ছোট শিশ মোরা।
- (७) ভाইবোনে भिला।
- (१) वल प्रिंथ छारे धमन करत्।

## २। जा**ा**ग्र मध्यील

- (১) জন-গন-মন (প্রথম স্তবক)।
- (६) উर्द्ध गगरन वास्क मामल (প্রথম স্তবক)।
- (७) वन वन वन मत्व (अथम म्ठवक)।
- (৪) হও ধরমেতে ধীর।
- (৫) वाःलात शां वाःलात जल।

## ৩। ঝতু সঙগীত

- (५) स्पर्धत कारन त्त्राम रहरमरह।
- (२) जामता ति १ विक कारमत भूष्ट।
- (७) छद्र भ्रवाभी स्थाल म्वात स्थाल।
- (8) काशून त्वरंगर वरन वरन।
- (७) काभूत्नत नवीन वानत्म।
- (৬) পৌষ তোদের ডাক দিয়েছে।
- (१) गौराउत राउग्राग्न लागल नाहन।
- (৮) বाদল वाউল वाজाয়।
- (৯) বাদল ধারা হল সারা।
- (১০) मत्र रामात जत्न जालात जलित।
- (১১) আমি পথ ভোলা এক পথিক।
- (১২) পথিক মেঘের দল।
- (১৩) সহসা ডাল পালা তোর।
- (১৪) ওরে বকুল ওরে পার্ল।
- (५৫) जाक शात्नत क्ला

## 8। कर्म प्रक्रींड

- (५) वामत्रा ठाय क्त्र वानत्ना।
- (६) ठल कापाल ठालाइ।
- (७) त्न हरस त्न हरस त्न हरस हु॰है।
- (8) ''আয়রে মোরা ফসল কাটি।''
- (0) চল ভাই साই জল जानि यारे।
- (७) बाद द्वाप काथा नार वि वाशात्नर यारे।

P

### ৫। শিশুদের উপযুক্ত আদশ

- (১) আমরা শিশুর দল।
- (২) আমি তাই ভাবি বসে।
- (৩) ছোট একটি কৃষক আৰ্ম।
- (8) दि था एवा थाकव ना रका।
- (৫) গণক ঠাকুর গণক ঠাকুর।
- (৬) ঐ শোন ডাকছে কোকিল।

## ७। दथला, शांत्र, मजा, ও बानत्मत शान

- (১) হাসি মোরা হাসি।
- (५) (थला क्ति (थला।
- (७) ठल ठल त्थिल क् हेवल।
- (8) लाल तुडा घूडि।
- (৫) একদিন জিভ বলে শোন ভাই।
- (৬) সুপ্রভাত হে স্থিমামা।
- (৭) খাওরে মন্ডা গন্ডা পন্ডা।
- (৮) কত পাখী আছে।
- (৯) আমরা খরগোষ।
- (১o) বড় গ্রম ভারি গ্রম।
- (১১) वे धात्राह किला।
- (১২) जामता भवारे त्रत्वत गाड़ि।
- (५७) शाप्तरशा नन्पतानी।
- (১৪) ফুলের পোষাক পরব।

# (ঘ) গান ও স্বর্লিপি

খেলা করি খেলা

ভাগাই মোর। স্যত্নে

হরষেরই ভেলা

नान। तक्य (थन। कति

খেলার ছলে লিখি পড়ি

প্রাণটি নূতন করে তোলে

वांगाप्तत्र द्यंना।

10

10

II ना ना ना মঙ্গ্ৰা म। श्री भी मा | श्री -1 C 季 রি বে खा পুমা | জুরা জ্ঞা - । | খ্রা আ या 5 B শা त्या রা म य 都 彻 खा 彻 मा -1 -1 -1 II -1 ছ ঘের এ 3 ভ ना II -1 1 ना र्मा -1 | न र्मा -1 ना ना ना না র 4 य খে वा রি -। र्ज्जा | र्जनार्जा -। | र्जनार्जा र्ग। 4 ना লে 5 • नि বি ড়ি র্বা र्मा र्गा -1 | 41 সা 47 1 मा ना T 9 雷 नू 0 ন রে তো पा पा ell मनमा श्रा -1 -1 -1 -1 II দের 9 B খে ना

তোমারি গেহে পালিছ সেহে, তুমিই ধন্য ধন্য হে।

আমার প্রাণ তোমার দান, তুমিই ধন্য ধন্য হে।।

পিতার বক্ষে রেখেছ মোরে, জনম দিয়েছ জননী-ক্রোড়ে,
বেঁধেছে সখার প্রণয়-ডোরে, তুমিই ধন্য ধন্য হে।।

তোমার বিশাল বিপুল ভুবন, করেছ আমার নয়ন লোভন,
নদী গিরিবন সরস শোভন, তুমিই ধন্য ধন্য হে।।

হুদয়ে বাহিরে স্বদেশে বিদেশে, যুগে যুগান্তে নিমেষে নিমেষে
জনমে মরণে শোকে আনলে, তুমি ধন্য ধন্য হে।।

মা মা গে পা नि হে ছ শ্বে - মা পা -ধা মা ধা গা -11 ना ना ধ यि তু ন | সা সা সা | পা না -1 ना 9 প্রা তো যা मा वा ना -1 -মা | পা -ধা মা া গা ধা मि ना ि वैना न ना I স্থ স্থা -1 না া না না II (3)例 ব রে ছ বি বি ×II न পু ল (২)তো মা র বি CY CF হি রে স্ব 64 CH (৩)গ্ F বা (य र्मार्भा | र्मार्म्बाना | ধা र्भा ना না नी F ঞো ঝে ছ (2) 呀 ম न य न ला ন B আ या র বে নি নি গা न् उ त्य ষে (৩) যু গে, यू

ধা ধপা | মা গরা গা | মা ধা মা মা পা ধা -1 (১) বেঁ ধে ছ স খা ৰ প্র d य ডো রে (२) न मी नि রি ব ল স র স শো 5 9 (0) 9 ন বে য র ८व त्ना কে আ न न পে | সা 91 ধা -1 21 পা -ধা या গা -1 -13 | II (3) 0 যি 8 ना ध ना হে (২) তু गि ध ना 4 ना হে (৩) তু गि ষ ना ধ ना হে

জনগণমন-অধিনায়ক জয় হে ভারত-ভাগাবিধাতা।
পঞ্জাব সিন্ধু গুজরাট মারাঠা দ্রাবিড় উৎকল বঙ্গ
বিন্ধ্য হিমাচল যমুনা গঙগা উচ্ছল-জল্পিতরঙ্গ
তব শুভ নামে জাগে
গাহে তব জয়গাথা।
জনগণ-মঙ্গলদায়ক জয় হে ভারত ভাগাবিধাতা।

जस रह, जस रह, जस रह, जस जस जस रह।।

সারাগাগা | গাগাগাগা | <sup>ন</sup>গা - 1 গাগা | <sup>গ</sup>রাগামা - 1 I ज न न न म न ज वि न। - य क ज य टर -<sup>ন</sup>গা-1 গাগা | রা-ারান্ | <sup>ন্</sup>রা-1 সা-1 1 1 -1 -1 -1 | তा - त ত **छा** - ग्रा वि ধা – তা – <sup>4</sup>에 - 에 에 | - 에 에 - | 에 - 에 에 <sup>에</sup> 째 | <sup>\*\*</sup>에-째 \*에 - | জা - ৰ সি न् धू जूख -রা – ট মা রা | भा -1 मा शा | <sup>श</sup>जा - मा शा -1 | -1 -1 -1 -1 | मा - गामा मा - वि ए छ९ - क न

```
<sup>ल</sup> जा - | जा - | जा ता | <sup>त</sup> शा शा शा - | <sup>श</sup> मा - | मा - | |
वि – का हि मा – চ न व वृ ना – अঙ् – अ। –
গা-1 গা গা | <sup>গ</sup>রারারান্ | <sup>ন্</sup>রা-1 সা -1 | -1 -1 -1 |
छ - ठ्य न
          ष न वि छ
                      গাগাগাগা গা - গামা | <sup>ম</sup>রা - গামা - | - | - | - | - | - |
          ना - त्वं - जा - ति -
ত ব ভ ভ
ত व ए छ जा - भी घ मा - छा -
<sup>স</sup>লা - ব লা- | লালা<sup>গ</sup>রারা | <sup>র</sup>ন্-রাসা- | - | - | - | - |
গা - হে - ত ব জ য় গা - থা -
खन गर्ग मध- गन मा- यक खया हर-
মা - মা মা বিগা-গাগমা পিরা-মামগা- - - - নানা
তা – র ত তা – গাবি শা – তা –
- - ज्य द्र - - -
হে - -
       পा । <sup>প</sup>धा - 1 - 1 । <sup>ध</sup>मा मा जा जा । गा गा गंजा गा ।
-1 -1 21
            ट्ट - - ज त ज त ज त ज त
- - 9
        य
            方 10 mm 3 世 於 1時 1 起 E 100
   -1 -1 -1
হে
```

1

74.

4.1

1/3

स्पायंत्र कार्ल त्याम रंग्याहर वामल श्राष्ट हे हि, बाज वामारमंत्र हे हि, ७ छाउँ, बाज वामारमंत्र हे हि। की किंत्र बाज छित ना भाउँ, भथ शांत्रिय कान वर्त याउँ, कान मार्ट य हु छ त्र हाँ, भक्त हिल के हि।

क्या भागत तोका भर्ष प्राक्षित्य प्रव कृत्व जान पिधित्य जानित्य प्रव क्रांत्य प्रव प्रवा। ताथान ष्ट्रांत्व न्रत्था स्थन् क्रांव जाज वाजित्य त्वन्, भाथत्व भार्य कृत्वत त्वन्, क्रांभात्र भार्य कृत्वत त्वन्, क्रांभात्व भार्य कृति, ७ जारे, जाज जाभाष्ट्रत ष्ट्रि।

II সাসা-রা | গাপা-ধা | পধা-নানা | <sup>ন</sup>ধাপা- | - ताम् - तः ल छ -म यत्र -কো লে <sup>প</sup>গারা -1 | গা গা মা | <sup>ম</sup>গা রা-গরা | -সা -1 | वा मन -গে ছে हे টি হা হা भा -। धा । <sup>ध</sup>र्मार्मा -। । <sup>ग</sup>र्नामा -। । <sup>ग</sup>नाधा -ना । गा (पत्र আ वी दू – ও ভা ই 교수에 -1 위 │ <sup>4</sup>수에 수에 - 에 │ <sup>3</sup>수에 수에 위 위 위 -1 -1 │ या (पत 16 5

मा - | ता | जा - | ता | मा - | - | - | - | वा 💵 আ – – হা – – হা – – - গা | পা পা -ধা | ধ্সা সা - | সা সা - 1 TT 91 কি – ক বি আজ – ভে বে – না পাই – र्मा - | र्जा | र्जा वर्जी - जी | जी स्था - | भाष – हा ति एत – किन् – व न **माइ –** পा - | क्षा | क्ष्री र्जा - | र्जना ना - र्जना | नशा शा - 1 | কোন – म। ঠে यে – ছু টে – বে জাই – श्रा - श - ना निर्धा शा - ना शा शा - ना - ना - जा है ग क न ছেनে – जू ि – – – - 1 회 | 에 -1 - 31 | 케 -1 -1 | -1 -1 II সা হা – – হা আ প্সাসা - । সা সা - রা | গা - । গা গা গা II পাতার – নৌ – কা গ ছে | जा जा - श | धा था - नश | अला -1 -1 | গা গা রা प व - कृ ल -সা জি য়ে গা গা -ম। বগা গা গা গরা স। -1 গা -1 রা ৰি তে – ভা সি য়ে দে ৰ তাল – দি সা - । ধা । সা সরা -গা । গা গরা -গরা | -সা -1 -1 ठल् − त्व मू ल − मू ल − পा ग्ला - ला | ला ला - धा | धा - र्जा र्जा | र्जा नी | রা খাল – ছে লের – স – জে ধে নু –

d

শরং তোমার অরুণ আলোর অঞ্জলি

ছড়িয়ে গেল ছাপিয়ে মোহন অঙগুলি।

শরং তোমার শিশির ধোওয়া কুতলে

বনের-পথে-লুটিয়ে পড়া অঞ্চলে

আজ প্রভাতের হৃদয় ওঠে চঞ্চলি'।

মাণিক-পশ্যা ঐ যে তোমার কঙকণে

বৈলিক লাগায় তোমার শ্যামল অঙগনে।

কুঞ্জ-ছায়া গুঞ্জয়ণের সঙ্গীতে

ওড়না ওড়ায় একি নাচের ভঙগীতে

শিউলি-বনের বুক যে ওঠে আন্দোলি।

- 1 - 1 - 1 - 1 - 1 | निर्माश ना | निर्मार्गना - 1 ছ ড়ি য়ে গেঁল -- | - | - | सा | स्था भा मी | र्गा सा - | -1 -1 ছ ড়ি য়ে গে ল था थना नथा | श्री मा -t | গা রা গা | পমা -† -† II পি য়ে মোহন — অঙ — ও नि ছা - | श्रा क्षा - | श्रा क्षा - ना | ना ना II মা মা তো মার – শি শির – ধো x) রৎ विधा - । शा | शा - 1 | वर्मार्मा - 1 | वर्णा वा - 1 | ব নের – প থে – কুন – ত লে – -† | সগা -t রা | পমা -t -t | ধা ধা ধা at মা অন্ – চ লে য়ে প ড়া টি नू - | প্ৰাস্থি | প্ৰাৰ্ম্ণা | मा - जी | र्गनार्जा ও ঠে – হ্ परा -ভা তের শ্র আজ -4 阿利西北京大学的新 नथा - । ना । नर्ता -I'm a stop to the লি – हन् - ह -† | রা -গা -গা | গা গা -† | ধা ধা -া II রা রা মা ণিক্ -গা থা -† -† | মা মা -† | পা ধা -† | 91 া গা -1 গা — বি লিক — লা গার

নে

थां ना - 1 | ना ना - 1 | <sup>न</sup>शा - 1 शा | शा - 1 - 1 | তো মার – শ্যা মল্ – অঙ্ – গ নে – <sup>প</sup>ধা-মা মা | পা ধা -া | <sup>প</sup>ধা-মা মা | পা ধা -া | कून - ज – গুন্ – জ র ণের – ছা য়া भा - । भा । भा - । । भा - । भा न । भा भा न । স্ভ্ – গী তে – ওড় – ন। ও ডায় – विभाधा - १ | शा मा - ता | मा - १ शा | धा - १ - १ | – না চের – ভঙ্ – গী তে – এ কি वर्मा - । र्मा | र्मा मी - । र्मा - मी | र्मना वर्मा - । भी ना वर्मा - । भी ना वर्मा - । भी ना वर्मा - । । भिंछ – नि व त्नत – तूक – य ७ ८५ – था -1 of | <sup>9</sup>र्दा -1 -1 | णान् - (म) नि

2

আমরা বেংধছি কাশের গুছ, আমরা
গেংথছি শেফালি মালা।
নবীন ধানের মঞ্জরী দিয়ে
সাজিয়ে এনেছি ডালা।
এসগো শারদ লক্ষ্মী, তোমার
শুল্র মেঘের রথে,
এস নির্মাল নীল পথে
এস ধৌত শ্যামল আলো-ঝলমল
বনগিরি পর্বতে!
এস মুকুটে পরিয়া শ্বেত-শতদল
শীতল শিশির-ঢালা।।

बाता भानाजीत कृतन আসন বিছানো নিভূত-কুঞ্জে ভরা গঙ্গার কুলে ফিরিছে মরাল ডানা পাতিবারে তোমার চরণম্লে ग्रु अत्रान जू निरमा रामात সোনার বীণার তারে म्मू मध् सङ्कारत शांत्र जाला भूत शिल्या शिज्द হ্মণিক অশ্রেধারে। রহিয়া রহিয়া যে পরশর্মাণ सलरक जलक रकारन পলকের তরে সকরুণ করে वूलारमा वूलारमा भरत! সোনা হয়ে যাবে সকল ভাবনা, वंशात ररेल वाला।।

विना ना भी মা নগা মা িপা -া পা ি।।(দপা -সা সা) या या চ্ছ शा - । शा | श्या मा मा | ना मी विमी | नर्मा -शा -मा | ছি গেঁথে রা শে ফা नि या ना - । नना ना ना । र्मार्मी वी । र्गना -र्मार्गना । বী ন धां तन র यन् मा म्ला लगा | मला ला लगा | मना ना मना ती पि या गां जिया थ ति ছि ना

- 1 - 1 II ला ना ना निर्मा निर्मा - 1 श्री निर्मा 4 ग रो। भा त प न - क्वी ৰ্মানা - | সা - গ্ৰুগ | জ্ঞাসামা | গ্না সা -না | ७ - व म प्र त তো মার র दर्थ वर्षा भी - । वर्मी - । मी । भी मी बी मी । वर्षा भी - ना । - नि - र्च न नी न প 4 স दर्श निमा श्रामा | १४मी - मिर्ग | मीर्ग अभि अभि | ग्रामा भी ना | এ স – ধৌ – ত শ্যাম ল আ লো নদা পা পমা | মপা পণা ণদা | পা পমা -গা | মা 24 -1 ব ন গি রি প – न ग न र्द তে রা মা মা মা মগা মা পা -1 সা স<u>া</u> भा 24 मुकू ए । श ति **–** ଏ স শ্ৰে য়া 5 × शा शा | अना ना नर्था | अर्जी र्जा ना | नशा -1 -ना | म न भी छ न भि भि ত র DT - - 커 II না ना

वर्मा - ने शा श मां प्रशा - मां मां मा म - नमां - श्रमां - श्रमां ₹ · কুন – জে ভ রা গ – জা র यशा - 1 | शा मा ना | नर्जा जी - 1 | र्गना স্ ফিরিছে ম রাল – ডা না পা मा मश्री श्रमा | मश्री श्री श्री | मग्री | श्रमा -† গপা তিবারে তোমার চর ণ মূ श्रम - 1 श्री श्रिमा-शा-शा श्री भा - 1 গুন্ – জ র তান (न

मा मा - | मा गक्षा - | श्वा ঝা -1 मा मा मा তো মার সোনার – ণার বী नि या তু था - । भा - । - । भा था -1 গা মা মা ঝঙ্ यू पू धू রে তা

মা -া-গপা [ পমা -গা (-ঝা) } ] -া I
কা - - রে - - -

-4

| भी भी - । गैना भी ना । पा भा পমা शा मा मर्जा – গ লিয়া ড়ি 9 হা সি ঢা ना मूत বে | नि - ने भी | मा - गर्मा - भिन् | में भी -11 -1 मश्रा श्रा श्रा অ – শু ধা – ক্ষ ণি ক রে

YTO IT

मां मां मां | न मीं मीं | र्याधीयीं | र्मा मीं मीं | র হিয়া ব হিয়া যে প' র X) ণি ম र्मार्मा क्छी | ब्यो यो मी | गना - । गंथा | नर्म - म অ ল ক কো – (प দ্ঝাস্থি | - | খাস্থা | গ্লাস্থিনা | 4t att পমা প ল কের – তরে স ক রু c রে পণা এদা পা | পণা এদা পা | পমা-গমা-পদা | দপা -া -1 ৰু नां द्या वू नां रा म নে সা খা খমা মা মগা মা | পা পা পা | পা At . भा ला ना इ যা বে য়ে স ক न ভা ना अना ना नथीं | अर्मार्मा ना | आ - 1 ना | আঁধার হ ই বে আ ना -1 -म्रा II II ना

> वामल वाछेल वाजायरत धक्छाता
>
> भाता विला थे'द्र बत बत बत धाता।
>
> जारमत वर्त थात्मद रिष्ट्र
>
> जाश्म जारल जार्शीन रिष्ट्र
>
> राह्म विल्ला भाता
>
> धन घटात घटा धनाय जाथात जाकाण भारव शाजाय शाजाय हे भूत हे भूत न्भूत मधूत वार्क्ष धत-हाज़ारना जाकूल भूत উদাস হয়ে বেজ়ায় घ्रुत भूत शुरुव शुरुव ग्रुव

সা -1 গা গা | গা -মাধপা -1 | পগা -1 মা -1 | মগা -1 পমা -গা | বা – দ ল্বা – উ ল্বা – জায় বা – জায়

```
गर्वा - । गर्भा - गर्भा - । । । । गर्भा - ज्ञा भी ना । नर्भा ना नर्भा - । ।
  বা – জায়রে – – বা – জায়রে – এ কৃ
  পা ধা মা পা | পগা-মা-রা-গা)} I পা -া I পা না -া না
          <u>– র। – – সা – রা – – বে</u>
   না-স্বি- স্না I ধনা - ব - পা - ব - ব পা - বা |
   ना - - ध दा - - - व द
   প স্থিনা-স্থি-নানপা-। পা-ধা-মা-পা
   ঝ – র – ঝ – র – ধা – – –
   शर्भा -मा -बा -भा II
   রা – – –
             | अना नशा ना - | नर्मा - | र्मा - | र्मा - | र्मा - |
II श का श श
               ব - নে - ধা - নের কে - তে -
   জা - মে র
   পার্সা - বানা | নধা - না সা - বা - নার্সিনা | ধনা - বিপা - বা
               তা - নে - আ - প নি মে - তে -
  呵 - প न
   शा -र्जा - ना | ना - ना - शा | वशा - धा वशा - ना |
                 — চে — নে — চে —
               নে
  পমা -পমা মগা - | সা - | গা - | গা - মা পা - | II
  त - क - हां - ला - जा - जा -
न – घ – छोत् घ – छो – घ – नां य
          গা | গমা - ব পা গা | গমা - রাগা - 1 | - 1 - 1 - 1 - 1 |
  मा - । গা
  जाँ – शांत जा – कां भं मां – বां –
```

100

4.

গপা আনা পা আনা | আনা আনা পা না নধা ধা | ধপা আনা পা না | পা — তার পা — তার টু — পুর পক্ষপা-ধাৰপা-া | পমা -া গা -া | গরা-পমানগা-া | -া -া -া -া नू - পूत म - धूत वा - छ -ঘ – র ছা ড়ा − ना − णा − कू न् ञ्र − त्र − নধা-না সা - | - | - | - | সা না | নধানা সা না | ধনা - | ধপা- | | म् – हारा व – ज़ारा यू – त्त – ট - দা -ना - 1 नर्मा गंना | गंधा - न धंशा - 1 | - शा - र्मा - 1 | शा - 1 | शा - 1 | शा - 1 | পু - বে -হা ও য়া ধপা - । ধা পা | পমা - । পা - । II গ - হ -হা – রা

> वामल शांता रल माता वारक विमाय मूत शांतत शांला स्मि करत स्म यांवि जरनक मूत्र। राष्ट्रण स्मा अशांत ररण राष्ट्रण स्मा अशांत ररण राष्ट्रण स्मा अशांत ररण राष्ट्रण स्मा अशांत स्मारण मूलार उती नमीत श्रथ उत्रक्ष वन्स्ता। कम्म रक्मत राज्य जांकर जांक वन्यत्वत स्मिल स्मोमाहिता रक्सा वर्तत श्रथ शिरम्र जूलिः ज्ञराण जांक म्ठक राउसा जांकाम जांकि मिमित हाउसा जांकाण जांक म्म्रांठित जांगम व्रिकेत विन्मूत।

II পাপা- | <sup>প</sup>মাপধা-মপা | <sup>প</sup>মা<sup>ম</sup>জ্ঞা-। | <sup>জ</sup>রামাজ্ঞা-রা | সাসারা |
বাদল ধারা – হোলো – সারা – বাজে – '
জ্ঞাজ্ঞারা | <sup>র</sup>সা - । - । | - । - । - । I
বিদার সূব – – –

{गा शा - । शा शा - धा । धशा र्जा गार्मणा । ধা 21 -1 शां त इ 外 न। Cat ঘ ₹ রে দে -1} I शा शा वशा মা গরা -গা গ্ৰা - 1 - 1 -1 -1 শেঘ ক রে प्प রে রা II ম্জা -া মপা পমা -1 -1 রা সা गळा। खा রা যা বি -F র্ নে ক্ অ স্য নর্য I Ι ণা II পা -1 পা -1 शा পা -ধা शा शा পা র হ তে 8 ছा ড্ न য়া ধে श्रधा म्था -1 পমা গা -রগা र्ज्ञा - । र्ग ना ধা পা -1 শ্ৰো তে রা – র ভ पि নে ভা - দ্ৰ िंगा -छा জর্গ -জा I (জा -1 জा खा -1 -1 রী 0 मु न् ए রে জরা মজ্ঞা -রা সা সা রা खा ভত্তা রা জরা জ্ঞা -न् গ ত র 8 থে A न मी त - I 'গানের পালা শেষ' ইত্যাদি অস্থায়ীর ন্যায় -1 -1 त्रमा -। -। র্ भू সা -রসা मा -। मा ना পা -1 না II गना ना -1 আ জ ছে কে -O র × কে क प ग् -1 -1 -1 -1 न्। সা ना न्श्रा -1 गना ना -1

नि

র ধূ

दन

ত

ব

সা-জ্ঞাজা | জরাজ্ঞা - I জরাজ্ঞা - I | জরামজ্ঞা - রা | ছি র। – কেয়া – ব নে র্ म छ मा সরা-সারা রামজ্ঞা-রা সরাসা - | - 1 - 1 I প থ গি दश ছে -जु नि পा भा -। | भा भा -। | भा -। धा | गा र्जा-नर्जा | অ র – टर्ग আঁজ নত ধ হাও য়া र्वर्भा गा - । विश পা - । পিধাৰপা - । পমা গা - রগা আ কা শ আ জি - শি শি র্ ছাও য়া मा -1 -1 | -1 -1 - I {मख्डा ख्डा - | छदा ख्डा - I I রে - -– আ লো – তে আ জ্ জরাজ্ঞা-া জিরা মজ্ঞা -৷ সিরাসারা | স্মৃতি র আ ভা म् वृ घ ि জ্ঞাজারা বিসা -া -া -া -া ''গানের পালা'' त विन मू ইত্যাদি আস্থায়ীর ন্যায় II

> खद ग्रवात्री, त्थाल न्वात तथाल, लागल य पाल। त्र्याल करल वनजल, लागल य पाल। त्थाल, न्वात तथाल,। ताखा शित्र तार्मि तार्मि जत्मात्क भलात्म, ताखा त्मा प्राय प्रमा श्रखात्ज जाकात्म, नवीन भाजात्र लाग्न ताखा शिद्धाल। त्थाल, न्वात तथाल,। विभूवन मर्माद्र पर्थन वाजात्म श्रुकार्भाज प्रात्न धारत्म।

# মউমাছি ফিরে যাচি ফুলের দখিনা পাখায় বাজায় তার ভিখারীর বীণা, মাধবী-বিতানে বায়ুগন্ধে বিভোল খোল, দ্বার খোল।

मा ता ॥ शा ता मा ता | तथा - । शा ना थाथा - । शा था ना थशा I ও – রে – গৃহ বা – সী – খোল্ছার খো – – ল্ I পा शानाना | ४ भा - । - । - । I र्घार्माना ना | शा मान् – उराज दन ना ग् न् य I প্ধা-াধাধা | পা-াপা-মা I গা -া গা -রা | সা -া ना ग्नय पान्धात थान्धात थान् রা জা হা সি মে যে নে শা পু ভা ত আ কা – শে রা ঙা নে শা र्ता - र्मार्मा माना नाता | शा -I ท์าท์า-าส์า তায়লাগে রাঙা হিল্ | লোল ঘা न वी न शा | সা -1 সা -রা II গা -। গা -রা খো ল্ "ও –" (था न् वा त

भा-गा भाषा | भाषा भाषा I धर्मा मी मी मी नी | र्ज़मी - । मी - । I कि तत यो ि कु तन त ম উ নাছি प থি ना र्मर्शा भी - विकास की की मी मिला | धना - 1 शशी পা খায়বা জায় তার ভি খারী র বী ett र्बार्बार्मामा । मा - मा का | भा - न र्भा भी भी । সা রা I मा व वी वि ण दन वा मू भ न् दव वि ভো ল হা র গা - গা - রা | সা - i সা - রা II II थी न् वां त थी न् "७ -"

> काण्यात्व नवीन जानाम शानधानि शंभिंद्याम इत्सा। पिल ठाद्ध वनवीथि द्याकित्वद्ध कल्शीठि, छदि पिल वकूत्वद्ध शत्सा। मासवीद मस्मय मन्य द्रांख द्रांखाल पिशन्छ। वाणी मम निल जूलि, श्रवात्मद्ध पिल ठव मिश्वत्स्था।

II {সাসারারা | রাগামাপা I পনা নধাপা - । (-মা-গা-মাপা)}

ফাণ্ড নের ন বী ন আ ন ন্দে — — — — —

I - া - া - । । পানাসরি । রসিণা ধাপা I পা - ধাধপা - । ।

- - - গান্ধানি গাঁথি লাম্ছ ন্দে —

মাগামাপা I [] I

ছ ন্দে —

[মা জারা সা]

र्ति जी पैशा श्रेशी দিল তারে বনবী – থি – – – का कि ल त क ल शी - ि - -- वार्मा मित्रीमी शास्त्रीशा शामा गामा-शा ज ति पि न व कू ला त श न् स्थ -মা গা মা পা I [ ] II { সা সজাজারা | জাজাজারা I मां ४ वी त म धुम ग्र न त् स -জ্ঞা-রাজ্ঞা-া | -া -া -া -রা I সা রাজ্ঞারা | সা রাজ্ঞারা I तां डां लां पि त एड त एड न ज -∫[र्त्र मी पेशा शेशा] मना - । मा- १ - १ - १ - १ - १ - १ विश्वा श्री श्री श्री मामा र्जा मना दि . \_ \_ বাণী ম<sup>া</sup>ম নিল তু \_ न् छ -5 -1 -1 -1 -1 -1 -1 -1 স্তুরি জিলা | তুলি জুলি জুলি রি I পলাশের কলি ৩ – नि ম্জু 1-1-1-1-1-(1-1)} I-র্রা স্বা| স্বাস্বা পা| (वँ रव मि न 同 - -পা ধা পা I মগা -া মা -গা | মা -গা মা -পা II [] II

व म णि व न् स्थ - व न् स्थ -

4

X

"আমি পথভোলা এক পথিক এসেছি।
সন্ধ্যা বেলার চার্মোলগো, সকাল বেলার মল্লিকা,
আমায় চেনো কি?"

"চিনি তোমায় চিনি নবীন পান্হ,
বনে বনে ওড়ে তোমার

ফাগ্ন প্রাতের উতলাগো, চৈত্র রাতের উদাসী,
তোমার পথে আমরা ভেসেছি।'
'পথভোলা এক পথিক এসেছি।'
ঘর ছাড়া এই পাগলটাকে
এমন করে কেগো ডাকে

-MAG

রঙগীন বসন প্রান্ত।

কর্ণ গ্রেরে' যখন বাজিয়ে বীণা বনের পথে বেড়াই সঞ্চরি?''

''আমি তোমায় ডাক দিয়েছি ওগো উদাসী, আমি আমের মঞ্জরী।

তোমায় চোখে দেখার আগে তোমার দ্বপন চোখে লাগে

त्यपन जारन रना,— ना চिनिटिं छाल त्यर्मिष्ट।"

''পথভোলা এক পথিক এসেছি।

যখন ফুরিয়ে বেলা চুকিয়ে খেলা

ठ<sup>9</sup>ठ ध्लात পথে

যাব ঝরা ফুলের রথে
তখন সঙগ কে লবি?''

"लव আমি মাধবী।"

''যখন বিদায় ব'াশীর সুরে সুরে শুক্নো পাতা যাবে উড়ে, সঙেগ কে রবি?''

''আমি রব উদাস হব ওগো উদাসী আমি তর্ণ করবী। বসন্তের এই ললিত রাগে
বিদায় ব্যাথা লুকিয়ে জাগে;
ফাগুন দিনে গো
কাদন-ভরা হাসি হেসেছি,
আমি পথভোলা এক পথিক এসেছি।"

शामा II ग्ला -र्जा वा | शा ला ला | मा शा मा | शा - मा | আমি প থ ভো লা এক – প থিক – ं -1 -1 -1 | मां था था | था था -1 | शांथा -1 | गन् -धा (व नात – धालधार्मा I धाधा- । व र्मा - I र्गधा-र्मा वधा । नि लो - ग कोन् - व नात -म न् नि शानं नं | नानानं | धनां न्धां नां | र्जां नं नं नं गामा II কা - - আমায় - চে - নো কি - --1 -1 -1 II ना ना -1 | ना ना -1 I श्रेमा ना -1 | ना ना ना मा I — — চি নি — তো মা য় চি নি — ন বী ন थना - 1 | मी - 1 - 1 मिना मी - 1 | मिना मी ती I वर्मा शा - 1 পান-- থ -- ব নে - ব নে - ও ড়ে -ধাপামা I গামাপা I ধা ণা র্বা | র্মা-ধর্মা-ণধা | তোমার রঙীন্ – ব স ন্ প্রান্ – वशा-ां जा | मा मा ना | नशां था - । | था था - । था शां मा I কা গুন্ – প্রাতের – উ ত – লা গো मधां - दिश्वा विभाग विभ চৈ – ত্র রাতে র भी . উ দা –

তোমার – পথে – আম – রা ভে – সে र्जा - 1 - 1 - 1 गां मां II ছি - - – আ মি \_ \_ \_ বর — ছা ভাএই — পাগল — টা কে — র্মার্মা-গা। রা সা - । I গ্নার্ম্রার্মা। গা ধা - । } I এ मन् – क दा – क – ता ज क – মা পা - † | প্ৰপা-মগাগা I মা - † - † | - † মা মা | क क़र्ग - ७ न् छ ति - - य थन ৰগাগামা | ৰগা মা - 1 I ৰগা মা - 1 | গা মা - 1 I পা ধা - 1 | বাজিয়ে বী ণা – ব নের – প থে – বে ড়াই – ना -1 ना | र्जा -1 -1 -1 -1 -1 | र्ज्या भी -1 | र्ज्जी भी -1 I সন্ – চ রি – – – – আ মি – তো নায় – ৰ্গা-ামা | ৰ্গা-মাজ্ঞা I জ্বাজ্ঞাবা | ব্নাৰ্সনা না | ভাক্ – দি য়ে ছি – ও গো – উ – দা र्मा - 1 - 1 - 1 र्मार्मा | मा शा - 1 | धशा - मशा शा | মা -া -া -া -া -া -া সাসাভলা ভিরা ভলা -া I রী -- - - তোমায় - চো খে -জ্রাজা - | রাজ্ঞা - | জ্পা পা - 1 | প্রামা রা I রমা বজ্ঞা - 1 | দেখার – আ গে – তো মার – স্ব পন – চো খে –

রা সা -া -া জা -া -া -া -া I জ্ঞা জ্ঞা -া বিজ্ঞা বিমা জ্বা জা – গে বে দন नां ती मा - 1 - 1 - 1 - 1 न मिश्रा - शा | शा शा न I शा शा मा न। - हि नि छ्टे - ज ला 파에 - 레 I 커리네 - 1 - 1 에 제 II "আ মি" বে – সে ছি – – मा | ता ता - I ता मा ता | शा शा - II मा मा - II मा मा য়ে বে লা – চু কি ধে द्य রি थन - क् शहा - श | मा मा - I मला ला - 1 मा গা - I মা মা ধাI রা – থে – যা ব ঝ 9 লার তপ - ত ধ্ -। र्जा ना र्जा I नधा -। धा | ना धा थाना I ना जी ত খন্ – সঙ্ – গে কে – ল ফ লের – র থে मी मी I मा शा -। वशा मना ना I -1 -1 | -1 न व या मि -মা - ধ বি - - -मा - । - । - । मा मा मा पक्षा - । | क्षा का I ना वी - - य थन वि नाग्न - वाँ भित्र - उप রে र्गमा - नर्गा | र्ता मा - I मनार्बमा वर्मा | र्गना मा - I শুক্ – না পা তা – যা বে – সু রে - । পা । ধপা -মগা গা I মা -। -। -। -। -। I मना था -1 I মা - গে কে - র বি म् উ ডে मा - I शा था - | नार्मा - I मना नाशा মগা মা -া नना ভ দাস – হ ব ব \_ র আ মি

0

পনা ন না I র্সা ন ন । । । মা মা I মা পা ন । ধপা মগা গা I উ — দা সী — — — আ মি ত রুণ — ক — র
মা ন ন । । । ন ন I সা সাজ্ঞা | জুরাজ্ঞা ন I জুরা জ্ঞা ন |
বী — — — — ব সন — তের এই — ল লিত —
জুরা জ্ঞা ন I জুপা পা ন | পমা মা রা I রা রুমা মজ্ঞা |
রা গে — বি দার — ব্যাথা — লু কি রে

রা সা - I - ভা - ৷ - ৷ - ৷ - ৷ I সজ্ঞা জ্ঞা - ৷ ৷ রজ্ঞা - রমা জা গে - - - - - ফা গুন্ - দি -

10

পা পা মা | মপা -৷ ধা | পধণা -৷ -৷ | -৷ গা মা II হা সি – হে – সে ছি – – 'আ মি'

गरमा जानभाना जात जेवना स्थ!
(उ कीभा उ कत्त्वी)
कारत वूरे प्रम्थात्व प्रिन्न
जानम भारव
जानि ना स्थ।
कार्नि ना स्थ।
कार्नि ना खात्र थरम
रवज़ास जिरम,
(उ कीभा, उ कत्त्वी)
कात ना स्थ।
जाति ना स्थ।
जाति ना स्थ।

दकान, बाजानात दिशान दामात भरन जारण ? दकान, तर्डत भाठन उठे, क मू दक कू दल कू दल ! दक भाजात्व त्रडीन भारज जानि ना रय।

| शा - र्जा र्जा I गना धना - शा | मा II ना ना मा পমা ডা ল্ পা गा লা তো র উ 2 -1 গা I গা গা -রগা গ্ৰা পা -1 -1 চাঁ পা 3 যে ना সা I সমা মগা शा मा -मा -1 -1 রসা CF \* কা রে তু रे বী র र्मा - I र्मना र्ज़मा -1 र्जाना | - । - । I - । - । नर्जा কা মা ঝে আ ल नि श्रेचा ध्रशा - । येमा शा - । शा शा दा গা श्रा I ना ना नि ना যে স जा नि -ना य -জা शर्मा मा - | मा - ना I ना পমা পক্ষা ধপা 511 তো র ना न् श्री ডা সা 2 -1 511 I রগা 91 ना গা গমা -1 গমা 511 ক Ďİ 夘 13 13 যে ना भा तमा - । - भा भी I भी भी - । भी ती ती ना I नर्ती – কোন স্থ রের – মা न হাও য়া 5 বী -ना ना ना -मा I र्भा मा -र्जा I नर्मा ना धा निया -। धा I ना -। ভে সে য় ড়া বে व रम

সাধা - সা সা । স্বনা ধপা - I (-1 -1 -1 | -1 সা সা ) I
ত - ক ব বী - - - - কো ন্

গা গা - | গা গা - । I গা গা রা | গা গা পা I - । - । | জা নি – না যে – জা নি – না যে – – –

ন ন পা II পর্মান। | র্মান না I না পক্ষা ধপা | পমা গারা I — – স্হু সা – ডাল পা লাতোর উ ত – 2

রগা মা - | - । সা না I সা গা - । | গসা গা - । I গসা গা - । I গসা গা - । I লা যে – — তোরে ক্লেণে — ক্লেণে — চ ম ক্

গা মা - I মা পা পা পা পা - । | পা পা ধা | धर्मा र्जना धा I चा গে - को नृष्य का ना त थि ता नृष्ण मात

बलाबा बला मांगा | गा मा -1 I -1 -1 -1 -1 र्जा र्जा I म त्न - जा त्य - - - - क्वा न्

পা - श I ना -1 ना | ना ना र्मा I श र्मा भं I श र्मा भं I श र्मा । म स्था -1 I कू - - I ल - ७ है श - ७ - क द ती -

मा गा - I मना ना - । गा ना - I ना ना ता | ना ना ना ना I का नि - ना य - का नि ना - - - | - - - - श I পर्मार्मा - | र्मा - ना I न् সা ডা म र ता I शा मा -। -। -। मा I ধপা পমা গা পাক্ষা উ ত ना যে তো ना मशी शा अमा I গা त्रमा -। - 1 - 1 - 1 II মগা বী ठाँ পা 8

যেথায় স্বশ্নকমল ভাসে
দে আমাদের এক,টি এমন গগন-জোড়া কোণ যেথায় ফাগুন ভরে দেব দিয়ে সকল মন।।

ধা ণা র্সা - 1 ণা র্সা | - 1 ণা ধা - 1 পা ধা | - 1 ণা র্সারা বি ধানে আ জ পাই - এ ম ন্ম নের - ম তো 
ণা -র্সা | - 1 ণা ধা - 1 ধা ণা | ণা - 1 ধা - 1 বা পা - 1 |

ঠাই - যে থা য় ফা - ৩ ন ভ - রে 
- 1 মপা ধপা মপা I নগা - 1 | - 1 - 1 - 1 বা মা |

- দে - - ব - - - দি য়ে

ধা পা পা ণা I ণধা - 1 | - 1 ধা ধা ণা I পা ধা | - 1 না না - 1 বা

- স ক ল্ম ন - দি য়ে - আ মা র স ক ল

র্সা - 1 | - 1 ধা ধা না II

7

1

de

neth .

 IIII
 मं न जं क्का न I त्रां क्का न I क्का न न न न न म जा मा जित्र का न न म जा मा जित्र का न न म जा मा जित्र का न म जा मा जित्र का न म जा मा जा मा जित्र का न म जा मा जा मा जा मा जित्र का न म जा मा मा न मा न मा मा न मा न मा न मा न मा न मा मा न मा न मा मा न म

पि दय —

স

था - | - 1 था था - 1 । या था | - 1 ना ना - 1 । मी - 1 | म - न पि या - जा भा त न क न म -- 1 커 제 I 제 - 1 시 - 1 제 - 1 I 제 - 1 시 - 1 시 제 - 1 I न् ७ त - व - कू न् शी - क - न् ७ त -न् शियां त त न 🖁 - - -मा मा | शा शा शा न I शा शा | न शा शा न I का भू नि वि ज् क রে – তোরা – माँ **ज़ गु** तन जि ज़् क दत – जा मि – - र्मा - 1 - 1 | नार्मा | - 1 र्गना - 1 शा I र्ज़ - 1 र्ज़ मी र्मा - 1 I - त - - bi हे - त - - bi हे त a म न् on -1 | जी on et on I on et | -1 ना ना जी I जी -1 | न् ध त ए त् वि भू न पारंग - जन -1 -1 -1 I श था | -1 था था ना I ना मी | -1 मी मा -1 I च कू न् च व - का ल - य था ऱ् मीमी - | भी भी नी - | भी भी | - | ख्री - 1 - 1 मी - | প ন্ক ম ণ্ ভা দে ---र्ज्जा र्ज़ा अर्ज - I र्ज़ा - | र्ज्जा र्ज़ा मी र्ज़ा I ना मी | - र्ज़ा मी र्ज़ा I मा प्तत – এ क् िं धि म न् गं गं न् ज्ञा जा — ॄें नी | -1 ना धा -1 I धा ना | ना -1 धा -1 I शा -1 | - न्याभागका - ७ न् ७ - ति -

> गौरिव शिखां से वांशन नाहन वांभनिक थे जातन जातन। शावांश्वि गिंत्रींगिंत्रस् वांत्रस्त पिन वांतन वांति। जेंजिरस्त पिन वांति वांति। जेंजिरस्त पिना वांति वांति। कांडान वांत्रं कतन गिर्म, व्येन वांचात्रं करन्ति गिर्म, व्येन वांचात्रं करन्ति गिर्म, व्येन वांचात्रं करन्ति गिर्म, व्येन वांचात्रं करन्ति वांचात्रं त्रहेन ना वांत्रं वन्वताता। गौरिव शत्रेन वर्षा शक्त व्यामा गौरिव शत्रा व्यामा वांस्ति क्रमस् वांमात्र वांस्ति वे प्रक्रिक एक्रम्, भव व्यासावात्रं समस् वांमात्र व्यास्ति वेथान वांमात्र

 II গাঁ গাঁ - । গরাঁ সাঁ - । যি না - । সাঁ । সরা রিসা - । যা । । স্বা ।

 শী তের হাও য়া য় লা গ্ল না চন লা গল

 ক্ষাধা ধপা - । যি পা - । মা । গা গধা - । । গা গা মা । মা পা - । ।

 না চন্ আ ম্ল কির ও ই ডালে – ডালে –

আনা পা - । | ধা না - | নসা - । র্রা রি র্রা নি | সর্পা - । | পা তা - ৩ লি - । শি র শি রি রে - । শি র শি রি রি না - । শি র শি রি রি না - । শি রা রি রি রি নি না - । ধা পা - | বি রে - । বি রে দি ল - তা লে - তা লে -

র্বা -1 মা | র্পার্মি -1 I -1 -1 -1 -1 -1 I ক ব্ল শে ঘে - - - - - -

0

-0

1

পা পা -1 | शक्ता পা -1 I क्ता পা -1 | शक्ता न भा । ত খ न তা হার ফ লের বা হার র ই ল ধা না র্মা র র্মা I র মা না I র মা না I র মা না ত রা লে –

IIপা - পা | পক্ষা পা - 1 I পধা ধপা - 1 | মা গা মা I রা গা - 1 |
শু – ন্য করে – ভরে – দেওয়া – যা হার

मा शा मा I ता शा - 1 | भा शा - 1 | का शा - 1 | धा ना - 1 I বেলা – তারি – লাগি – ুশীতের পর र्मा ती - | ती भी - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 भी भी | থে কে – থে কে – যা ঐ – ডে কে – ি স ব্ খো য়া বা র র্ স আ यां র্ হ বে -र्मा भी भी | र्गती मा - HI কো ন স কা त्न

॥ श्रा मा - । मा मा রা I গা পা পা । পা মা মপা I গা - । मा পৌ ঘ – তোদের ডাক দি য়েছে – আ য় রে

200

d

.

1

॥ शा शा भी । भी भी -1 I भी नहीं भी । भी भी -ईभी I হাও য়ার নে শাষ্ট ঠ্ল মে তে र्गना - । স্বাধান পাপাধা । ধানা - I - । - । - । । मि श्व धृता – शांत त था**छ** – -- † - † I পা श - † | र्मा ना - † I श পা পা | श भा - † | – – রোদের সোনা – ছ ড়িয়ে প ড়ে – পা পা না | ধা ধা নধা | পা ধা পা | মা গা রসা I 🍆 আঁচ **–** লে – ম রি या টি র সা - বা বা বিগা - বা I সা - বা - বা - বা - বা I II श - स् श स् - - श स् - -11 회에 에 -1 | 에 에 -1 I 제 에 -1 | 제 에 -1 I 전 제 -1 | गार्ठ त वाँ मि – छ न – छ न – णाकां मू धा ना | धा शा -1 | -1 -1 -1 शा धा -1 | र्मा ना -1 I শি – হোলো – – – ঘরে – তে আ श्

शा - 1 था | ना था ना I थशा - 1 - 1 | शा शा - 1 I गशा शा - 1 | গো – – খো লো – খো লো – র বে পা পা - | আল পা - | ধা না পা | না না - | না ধা না | या त् (था ला - (था ला - प्या 4 আ লো র্ হা সি ৰ্মানরা সাঁ সাঁর্সা | না সা - া | না ধা না I পাপাধা উ र्व ज टर्ग বানের শিষে – শিবর था ना -1 I -1 -1 -1 -1 -1 I शा था -1 | र्माना -1 I व्य त्रा -켗 1 -ব রা র था था ना | था शा -1 I शा ना ना | था था ना | नशा था शा | - नां लां - खे - त्य छ थ - ल ধ शा बमा | मा - 1 द्रां | बशा - 1 द्रां | मा - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 य রি হা - য় হা - য় হা য়

The same

12

আয়রে মোরা ফদল কাটি।

মাঠ আমাদের মিতা, ওরে আজ তারি সওগাতে
মোদের ঘরের আঙন সারা বছর ভরবে দিনে রাতে।

মোরা নেব তারি দান

তাই যে কাটি ধান,

তাই যে গাহি গান,

তাই যে সুখে খাটি।

বাদল এসে রচেছিল ছায়ার মায়াঘর,

द्राप এপেছে সোনার যাদ্কর।

শ্যামে সোনায় মিলন হোলো মোদের মাঠের মাঝে, মোদের ভালবাসার মাটি যে তাই সাজল এমন সাজে। মোরা নেব তারি দান তাই যে কাটি ধান, তাই যে গাহি গান,

II সা-জ্ঞাজ্ঞা | -৷ জঞারা I মজ্ঞা-৷ ৷ -৷ ঋ৷ -সা | সমাজ্ঞা-৷ | म ल রা - -– মো – য় রে আ छत - I गछत आ। - । मा पृष् - I म्। छत छत । - । आ। - I I টি – ফ স লু কা টি – ফ -স কা -। -। -। -। -। সা-। সা সা সা ঝা | জ্ঞা-। -। | মা-। পা। गार्ठणा गाप्त र्गि - - जा - -ि छ्या - । - । | - - - छ। थी या I - - -মা-I মাণাদা পামাজ্ঞা রামজ্ঞা-া রাজ্ঞাসাI রে – আজতা রি সও গাতে – মোদে র | জ্ঞা-া-রাI রমাম্জ্ঞা-। | ঝাসা-। I জ্ঞাজ্ঞা-। | ७ - न् साम त আ -ঘ রে র জরাভরা-৷ রাভরা-৷ রাভরা-৷ I ভরমা-৷মা | ভরাঝাভরা I मा রা− ব ছ র্ ভ র্বে দি নে − আ न - | गुमा-। I मा-छाछा | - । छन्। - । मा-। - | ঘ – রে র্আ – – মোদে ব্ मामा - I मामा ना | ना ना - I भा - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 নেব – তারি – দান্ – মোরা -

श्रा वा विश्वा को श्री श्री ने ने ने ने ने में को को श्री তा हे य का हिं - शा - - ग् - - जा हे य মাজ্ঞারা I জ্ঞা-া-া | -া-া-া I জ্ঞা-দাপা | মাজ্ঞা-া I गा हि - गां न् - - - जा हे य ख्रा -ता ब्ला - | भा मा - | I ममा ब्ला - | ता ब्ला - | I मब्ला भा - | था हि - सा ता - क न न का हि - क न न मा ना - 1 नि छो छो | - 1 शां - 1 मा - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 I का हि - क - ग न का - हि - -<u>এ সে – র চে – ছিল – ছায়ার্</u> वा प न् <u>মারা – ঘ – র্ – – রোদ্এ</u> সে ছে – সাসাঝা | ভাজঝা - I ঝসা - বা | ভামা - I সাসাঝা | लो ना ब्र का पू - क ब - ७ म - मा ब ख्डो ङ्या - 1 यमा - 1 - 1 - 1 - 1 मामा - 1 | मामा या I জা দু – ক – – – ৰ্ শ্যামে – সোনা য়্ জ্ঞা - 1 - 1 মা - 1 পা I জ্ঞা - 1 - 1 | জ্ঞা সা - 1 I সা সা - 1 | মি - - न - न् -সা সাঝা I তা তামা | মা মা - I মদাদা - গামাতা I সোনা য় मि न न হোলো – মো দের্ মা ঠের हा छवा - 1 था मा - 1 | मा मा छवा | तो छवा - 1 दि छवा - 1 ति | মাঝে – মোদের ভাল – বাসার্মা –

Per

3

who were

মজ্জা -। -। I -। -। । ঋাসা -। I সা জ্ঞা -। । রাজ্ঞা -। I - - - মোদের ভাল - বাসার্ জরানজা-। রাজা-। I জামামা | জাঝাজা I ঝাসা-। **हि - य ठा हे ना ज़ न এ म न्** সা জে – म् ना | म् म् छा | स्वा था छा I छथा मा ना | ना मा I মোদের ভাল্ – বা পার্ মাটি – . – মোর। मना ना - । नि नि - । ये भा - । - । - । - । ये भी भी भा । व - जाति - मान् - - - जाहे य नशा मां -शा I शमां -। -। -। -। I मां -मां शां का हि - या - - - न् ठा है य মা ভৱারা I ভৱা - ৷ - ৷ - ৷ - ৷ - ৷ I মা দা পা | মা ভৱা - ৷ I शा हि - शा - - न् - - ज हे य ञ थ -জরাম্ভবা-া | ঝা সা - া I সমাভবা-া | রা ভবা-া I था हि - साजा - क म न् का हि -गळा था - । माना - । I ना - छा छा । - । था - । I क म न न न ि - क - म न न न न न भा -1 -1 | -1 -1 -1 II 10 - -

চল্য চল্য খেলি চল্য ফুটবল সকলে
বুট সার্ট হাফ্য প্যাণ্ট বল নিয়ে বগলে।
ধাই করে মারি বল
এই বুঝি হয় গোল
চারিদিকে ঘন ঘন হাততালি জয় রোল
হাততালি জয় রোল।

বিপক্ষ পারিবেকি মোদের এই ভারি বুট কাছে তেড়ে আস্তেই ধাই করে মারি স্ট।

> তারপরে হেড, করি হো হো ভারি মজা ভাই খেলা শেষে ফিরে আসি মোরা সব কজনায়।।

ठल छार यार जल णानि यार कलभी काट्य जल णानि यार निवनी जलट्म भूमिल ट्रांताशा ठल ठल छुता छार जल णानि यारे।

ছল ছল ছল ছল নদী জল নাচে
মলয় সমীরণ সুন্দর নাচে
হেরিয়ে সে শোভা নাচিবে হরমে
কলসী বিভঙ্গে তরঙগ রঙগে।

কুল, কুল, কুল, কুল, কুল, কুল তানে গাহিবে তটিনী স্ক্রের তানে শ্নিয়া সে গীতি ঠুন, ঠুন, বাজিবে কঙকণ হাতে কলসের সাথে।

1

0

II সানাসা - | রা-1-1-1 | রাজ্ঞামাজ্ঞা | রা-1-1-1 চ न जो ই गाँवे - ज न या नि या वे - -রা - পা - | মা - পা - | মা জ্ঞারাসা | রা - া - া - | क न मी - का - थि - ज न जा नि या है - -ता - 1 श - 1 श - 1 श | श - 1 श श | भ ग श श - 1 | न नि नी - थ न रम - मू - मि न र दा शी -মাজ্ঞারাসা | রাজ্ঞাপা-া | মাজ্ঞারাসা | রা-া-া-া II प ता जा हे ज न जा नि या है --ठ न ठ न II भा ना भा - । | ता भा ता - । | भा भा भा - । | भा - । | भा - । | ष्ट्रन ष्ट्रन **ष्ट्रन प्रम**िष्टन ना – टिन तां ता ना ना | धा - न शा - न | মা - 1 রা পা | পা - 1 পা - 1 म ल - य ग भी त न गून् न त ना - एठ -পামাজারা | সা-া সা-া | রমা-ামামা | রপা-াপা-া ए ति सा ज ला − जा − कि त्व ह त स्व −

পামাজারা | সা-াসা-া | রামা-াজা | রা-াসা-া | II क न नी वि ७ ६ ग्रा - ७ त ६ - ग त ६ रा -II मानामा - । बामाबा - । भानामा - । भानामा - । कू नू कू न् कू नू कू न् 이 - 대 -कृ न कृ न् ताता ना ना | धा - 1 शा - 1 | भा - 1 ता शा | शा - 1 शा - 1 | পামাজ্ঞারা | সা-াসা-া | রমা-ামামা | बপা-াপা-া | र्यू नूर्यू ना जि त्न -গী - তি -ए नि यो टम পা मा छा ता क ६ क ग रा – ए० – क न राग त गा – ११ –

ঐ শোন ডাকছে কোকিল

কি মধ্র মনোহর
গুণ আছে বলে তারে
সবাই এত আদর করে
গুণের জোরে কাল কোকিল
সবার কাছে পায় আদর।।

de

II 新 -1 | 제 4위 위 -1 제 धा ना -1 শো ন ডা কো কি ল্ ক্ ছে श शा ना भा ना মা গা রা সা -া কি ম ध র ম — त्नां र त -भा भा না না সা | রা গর্গ र्भा मा -1 छ न আ ছে ব লে তা রে – | ती भी भी | तैमी ना र्मा ना -1 স বাই এ ত আ प त ক রে – मां मां ना धर्मा भी । ना धी नौ -† -† छ दनंद জোরে কা ল কো कि न् -

পা পা | গা পা গা | মা গা | রা সা - † II সুবার কাছে পা যুখা দুর —

वल प्रिंच छारे थमन करत छूवन क्वा शिष्ट्र शिष्ट्र शिष्ट्र हाता सार्थिक हिंद्र कि तार्थिल हिंद्र शिष्ट्र हाता सार्थिक हिंद्र कि तार्थिल हिंद्र सार्थ्य स्वा हिंद्र सार्थ्य स्वा निवाद सार्थ्य स्वा निवाद सार्थ्य स्वा निवाद सार्थ्य स्वा निवाद सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य क्वा क्वा क्वा क्वा कि तार्थ्य सार्थ्य हिंद्र सांख्य स्वा सार्थ्य हिंद्र सांख्य स्व सार्थ्य क्वा सार्थ्य क्वा सार्थ्य सार्य सार्थ्य सार्थ्य सार्य सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य सार्थ्य सार्य सार्थ्य

সা সা রা গা গা II ध्1 - ध्1 -| গা शा -1 থি JOY ব ল্ CY ভা এ य न গা গা রা সা সা রা গা গা মগা রা কে বা 5 ডি न রে SI পা -1 ধা धा नधा পক্ষা পা -। गा निक् -न न ভ রে তা রা র 5 গা মগা সা রা গা গা মগা त्रां भा -। রা থি ডা য়ে কে রা ছ न রে at at ধা र्भा भी -। र्भा গা গা ना উ উ জ न ঘা 3[ আ (ना থে ना Catt 껓 ধা य 껓 থে ভা यू রে ₹ তু 4 য়া র 5 ना न ना রে ধা ना गंना 21 ধা না ना र्जना ना ধা ST Cयो তা হে হ न মে ঘে র व ना থি ভু ব ন কে রা न 9 রে য়া ল্ CA ই 4 ভা ভূ লো ना রে

धा नधो | श्रेक्या शा -। 21 -। ধা PH stt × বি Catt ভ न বী র न न কে ভা र्ने न् ব ल 4 য়া य 7 এ ভা লো র বা সে न ্মা (प 7 য়া न গা মগা সা গা রা -1 গা মগা রা সা রা 51 ভ नि রে ग्र न न न হে রে पि खी ব न যে ল বে CH হে ব 4 ন ভ রে P ग्रा न ব লো রা গা সা সা সা शा মগা রা সা সা -i -1 P या व আ यां य 4 या ক রে =17 शी 9 ব ব 5 न न হে রে সা 511 91 91 ধ্ ধা সা সা রা গা গা पि জ न লে যো রা य्र य न রে ধ मी पि नी त ধ্যে ল (F) मा At M ধা ধা পক্ষা পা -। sit -1 নধা 21 -1 पि 9 9 রা (न मा CH র न 4 য়া न কু 4 नि য়ে ক य न ব न 取 ल at 91 -1 গা গা গা 91 রা stt রা मा -1 う আ 5 ना য়ে ভা मा র 5 রে U নি যা 껗 বা স য়ে य (11) 2 রে

> ठल, ठल, ठल, छण्यत श्रीत वारक भामल निरम्न উठला ध्रशीठल बार्ण श्राटित ठन्न मल ठलरत ठलरत ठला

II সা রা রা মা মা মা সা -1 -1 -1 -+ -+ | Б न् Б न् Б न् মা ধা ধা মা ধ ধা ধা মা ধা 9 -1 91 1 -ট র 8 5 7 বা লে জ या 4 न्

शां शां शां शां शां ने मा -t st | গা 21 গা ध त भी উ नि 4 নে ত ना धा | भा धा णा | र्जा - 1 - 1 মা ধা ধা মা ধা 9 था তে ত রু 9 म न् -র অ রু ধা পামগা | মা -া -া | রা -া -া | রা र्मा et | চ ল্রে চ Б न् রে ধা পা মগা | মা -া -া | মা -া -া | 斩 at | ठ न् त्र Б न् न् রে -† -† | ম† -† -† | -1 -† -† II মা মা -1 न् ठ - न् 5 न् Б (উৰ্দ্ধ গগনে ইত্যাদি)

ফুলের পোষাক পরব আমায় সাজিয়ে দে মা ভাল করে
নেচে নেচে করব খেলা পোষাক পরে বনের ধারে
পড়ব হাতে ফুলের মালা
পড়ব গলায় ফুলের মালা
ধরব মাখায় ফুলের ডালা
ফুল বিলাবো ঘরে ঘরে।

মামা - গাপামা - মা মা -া II মা পো ঘা A র गांग ক ব র ফু ल গা | ता - ग | मा शा ता | शा - 1 মা 11 CF - गां न क রে **जि** स्म ভা সা সা - | রা রা - | নানা - | সা সা খে ব त्न ए ক র লে **CD** -

<u>- | রাগামা | রাপামা | গা - i - i |</u> পৌ ঘা ক প রে ব নের श রে পা পা -1 | 제 পা -1 | 제 পা -1 | II না প। श न त व হা তে -ফু दन র यो न! ना - | मा | রা গামা রা পা মা গা র- ব र्ग ना य ফু লের या ना 에 에 - | 제 에 - | 제 에 -1 ন্মা প - 1 मां था य ব कु तन র ডা গা মা | রা পা মা | গা -া -া | রা वि ना त्व। ঘ রে য রে II

By

dr

- (১ম) কৃষক—ছোট খাট কৃষক আমি জমিতে দিই চাষ
  ধান ছোলা কলাই মটর বুনি বারমাস
  হালের গ্রুগুলি আমি যতন করি কত
  তাদের নিয়ে ক্ষেত খামারে সদাই কাজে রত।
- (২য়) ঝি—আমি ওদের পুরানো ঝি হাট-বাজারে যাই
  সকাল বিকাল স্বায় আমি দিয়ে থুয়ে খাই
  রুগীর সেবা আমার কাছে সকল সুখের সার
  সদাই আমি ব্যাস্ত আছি কাজে আপনার।
- (৩য়) কামার—ছোট খাট কামার আমি গড়ি কা°চি ছুরি
  সঙ্গীন বন্দুক তলোয়ারে দেখাই বাহাদুরি
  আমার মতন ওদ্তাদ এমন খুঁজে মেলাই ভার
  সদাই আমি ব্যাদ্ত আছি কাজে আপনার।
- (৪থি) গোয়ালা বৌ—আমি পাড়ার গোয়ালা বউ বেড়াই দুধ দিয়ে

  মাখন ছানা বেচি আমি বাড়ী বাড়ী নিয়ে

  চিনি পাতা দই বসাই অতি চমংকার

  সদাই আমি ব্যাস্ত আছি কাজে আপনার।

- (৫ম) পিয়ন—ছোট খাট পিয়ন আমি ঘুরি চিঠি নিয়ে
  কত পার্শেল কাগজ কেতার বেড়াই দিয়ে দিয়ে
  পাড়ার সবাই চেনে আমায় আমার পথ চায়
  সদাই কাজে ব্যাস্ত থাকি দিবসে নিশায়।
- (৬ছা) গ্ৰহু মেয়ে—আমি এক গ্ৰহুই মেয়ে জল আনতে যাই রা°ধতে বাড়তে দিতে থুতে বসতে সময় নাই আমার কাজ গ্ৰহুহালী বৃহৎ পরিবার সদাই আমি ব্যাহত আছি কাজে আপনার।
- (৭ম) নাবিক—ছোট একটি নাবিক আমি ভাসাই জলযান
  (আমি) দেশের তরে রণস্হলে দিতে পারি প্রাণ
  ভরিনাকো ঝড় তুফানে কাজে যখন থাকি
  দেশের মান স্বার আগে সেইটি মনে রাখি।
- (৮ম) সকলে—চুপটি করে শ্রে বসে স্থের আশা করে যারা

  এ জীবনে একটি দিন স্খী কভু হয় না তারা

  আপন কাজে একমনেতে দিনটি যাহার কাটে ভাই

  এ জগতে তাহার মত ভাগ্যবান আর কেহ নাই।
- জ মি তে দিই কৃ ঘক্ আ মি БŤ ছো ট খা ট | প্ৰান্ন | সা - 1 - 1 - 1 | গারা সান্ সা রা গা মা वु नि वा त क नारे म हेत शा न एहां ना গাপামাপা মাণা-া-1 গা মা গা রা সা গা গা গা য তন্ক রি ক ত -छ नि या मि হা লের গ'রু शृश्श्रा श्रा श्रान न সানা সাধ্ সা সা গা রা ক্ষেত খা মা রে म पारे का एक র ত - -তা দের नि दय II (२) गा गा गा । शा भा गा ता । मा गा ता मा । ता -1 -1 |

আ মি ও দের পুরা নোঝি হাট্বাজারে

श् श् मा मा । श् श् मा मा । ता ता मा ना । मा न न न ।

म काल् ति काल् म ता जा मि पि सा थू सा था हे — —

मा मा भा भा । मा भा ता ता । भा ता मा ना । मा न न न ।

क भी द स्म वा वा सा का एक म कल मू स्थत मा त — —

मा मा भा ता । मा ना मा श् । श्राश् मा । श् -श् न न ा ा ा सा सा खा का का का का का का का मा ना न न ।

म मा भा ता । मा ना मा श् । श्राश् मा । श् -श् न न ा ा न —

TO STATE

- ছোট খাট কা মার আ মি গ ড়ি কাঁ চি ছু রি - -গাপামাপা | গামারাগা | সান্সারা | সাসা-া-া | म भीन् व मूक ত ला या त प्त थारे वा रा দ রি - -সাসাগাগা মাগারারা | গারাসান্ | সা - 1 - 1 - 1 আ মার ম তন ও তাদ এ মন यूँ एक रम नारे ভার – – मा मा शा शा | मा ना मा स् | शा शा श् मा | शा न ्न ा II म मारे जा गि ব্যান্ত আছি কাজে আপ নার - -

ध्रा मा ना ध्रा | श्रान न न II मा मा मा ना সা সা সা সা কা জে আ প ना त -ना छ जा ছि म पारे णा मि ध्। ना ना ता मा - ना -সা রা সা না (৫ম) II সা সা সা সা षु ति ि छि नि – स्य शि यन जा मि एहां हे था है था ना ना ना धा - । शा श् ना ना ना श्रा श्रा श् पि - द्य व ड़ाई पि स्य কা গজ কে তাব ক ত পা ৰ্শেল ना -1 -1 -1 পা গা মা রা মা গা রা গা সা সা গা গা আ মার প থ পা ড়ার স বাই क त्न या गांग मा - 1 - 1 II গা ता मा ना মা গা রা রা ता भा भा भा पि व एम नि \* if 및 वा छ श कि স দাই কা জে | जा -1 -1 -1 গাপামামা (७४) II मा मा गा गा গা মা গা রা या ই - -জ ল আন্তে इ एखत त्य द्य আ মি এক গৃ সা সা রা না ना -। -। -। রা রা গা রা গা গা মা গা বস্তে সময় না पि एवं एवं রাঁধ তে বাড় তে मा -। -। -। সা সারানা ना धा शा शा म। न्। श्। -। বৃ হৎ প রি বা गृ र शा नी আ মার কা জ धा था ना शा धा -1 न्। न्। मा न्। সা সারা সা কা জে আ প না র वा छ जा ছि म पारे जा मि সাসারা না मा -1 -1 -1 রা রা গা রা (৭ম) II গা গা মা গা या न आ मि তা সহি জ ল ना विक् णा मि ছো ট এক টি शा -। -। -। श्रा श्रा न्। श्रा ना ना मा ना সা সা রা সা দি তে পা রি भा व न श त

0

দে শের ত রে

প্ৰধ্য থ থ থ নানানা | সাসাসাসা | রা-া সা-া |

জ রি নাকো বাড় তুকানে কাজে যখন থা – কি –

সাসাসা-া | সাসাসানা | ধ্যানানা | ধ্বা- প্র - II

দেশের মান স্বার আাগে সেই টি ম নে রা – থি –

(৮ম) II मा मा গা গা | মা গা রা গা | গা পা মা পা | গা পা মা গা |

চুপ টি ক রে শুরে ব সে সু থের আ শা ক রে যারা

গা পা মা পা | গা মা রা গা | সা রা গা মা | গা রা সা না |

এ জীব নে এক টি দি ন সু খী ক ভুহয় না তারা

সা সা গা গা | মা গা রা রা | গা রা সা না | সা রা বা রা |

আপন কা জে এক ম নে তে দিন্টি যাহার কা টে ভাই

প্য পা না না | সা সা রা রা | সা গা রা গা | সা রা সা না II

এ জ গ তে তা হার ম ত ভা গ্য বান আর কে হ না ই

वर्कामन जिल्ल वरल रमान लारे रमिन वर्के वर्क रमा नारे रमिन स्माता मर्व रायदा अस्य मृद्ध वरम वरम भायदा। रमि वर्का वर्ष राथ लारे ठारेठ रमिन वर्का का नारेठ अति जरना का कि नारेठ अति जरना के कि मिरसा मृद्ध जूल लाठ मिरे वरिया। भा विल्ला हर्ष स्मात घार्ष वाथा करत मिल स्मात राष्ठ् रमि याय रमम्लसा जामि रस्टें मित अत जरना। আচ্ছা ভাই বল দেখি তোরা আমি কিরে হই ওর ঘোড়া শুনে স্বাই রেগে বলে ভারী পেটের সঙেগ করো সবে আড়ি। সবাই খবরদার ওর সাথে আর क्टि करता नाका कात्रवात शला शिलाय ना किंग्डे थूलाय ना দিবে দা°তকপাটি হুড়্কা আ°টি। थाछाथाछि इं। छाइ धार्व मिछि এই ভাবে দিন গেল দুই তিন পেটে नारि पाना পानि মোদের কি হল জানি वेर्य प्षे त्रव देवन नषे मन्म कथा वल कारन পেটে সাজা फिल् এত গোলেমালে। পড়ে তাহা কেবা জানে হেন্মতে সবে কা°দে উচ্চরবে शालि फिर्य त्रन्तारत मन्म कथा छारे मानिए ना ठारे वीलव ना कलू कादत।

11 शा-। शा-। माधा | शाशा | मामा | शा-। भा न জি ভ व त्व धक मिन রা-া | রাগা | রামা | গারা | मा -। है उ কা জ এ ক পে ট টা র | भाभा | भाधा | भाधा | नि-। | धा-। | হা য় म द রি (मां ना त्थ टिं

शा शा शा शा शा शा शा ता ता शा ता ना ना II ख स ७ रय ব দে ব দে था य রে — II st -t | | मां -1 | তাই তাই व त्न शै शै হা ত ভ – मा - । ज्ञा - । ज्ञा जा | जा - । जा - । जा - । পেট টার কোন কাজ নাই ত – পাপা | পাগা | পাপা | গাপা | धाधा | शा-1 | **ज** त्ना क ठ क हे न हि ও রি यां -| পা পা | গা - 1 | রা - 1 | গা রা | সা - 1 II मु दर्थ তুলে ভাত দিই বহি ग्रा -माध् | माना | माता | माता | शा-ा | II লিছে চড়ে মোর যা – পা ব ডে – | श्रा श्रा | श्रा - | श्रा श्रा | श्रा - | রা গা पिन भा त ব্য থা ক রে হা -ডে -위 - 1 | 위 원 | 제 - 1 | 원 - 1 | 위 - 1 | शर्न - र् त्त्र है या य ल - मन् ७ - ला -| পাপা | গাগা | রা-া | গারা | সা-া ना ना या गि व्यँ तो गति ७ त छ — | সা - | সারা | রারা | রা - | রা - | সা সা আ চছা ভা ই বল দেখি তো– রা– शा शा | शा शा | शा -1 | ज्ञा -1 | शा जा | शा -1 II কিরে হই ওর যো– আ মি

T

2

**ET** -

ভানে সুবাই রেগে বলে ভা – রি – | রারা | রাগা | গাসা | রা-া | রা-া | পেটের স্জে করো স্বে আ – ডি – मां - | ता - | ता मां | मां - | या या । দার ও র সাথে আর স্বাই খবর शा-1 | श्रा-1 | धा-1 | श्रामा | ज्ञा-1 | मा-1 রো – নাকো কার বা র কো -কে উ न् य़ | मा मा | मा - | मा य़ | शा शा | मां मां বেনা ঠোঁট খুল বেনা श ना . शिन | রারা | গারা | সামা | গাগা | া রা রা शा शा ক পাটি হু ড়ক। ঘাঁটি খা ট। म ज पि दव बाबा | भागा | माना | बाना | मां - III भा भा शैं है। याँ वि वि न 10 -খা টি भा - १ भा - १ शा - १ ज्ञा - १ मा - १ At -1 II जा वि मिन शिन पूरे তি ন व रे | সাসা | সারা | গারা | রারা | রারা | भा भा म द व द ल ना हि मां ना शांनि त्य ए গা-া বা-া বাবা गा श রা -1 नाहि . भी है स्मार्ट त कि व न তা ই ना - । ना - । र्मा ना । वा - । श्रा श्रा भा धा थे - य - पृष्टे ज्र जा नि

6

ধাধা নাধা পাপা গাপা ধাপা মাগা II रेक न न है य न ক থা व त्न कां तन রারা | পাপা | গা - | রা - | সা - | | II पि टन পে টে मां जा এ ত भी न यां तन সা গা রগা সা গা গা সা সা গা গা श एड তা হা কে বা का तन ट्र न গামা রাগা পাপা গা গা भा था काँ प স বে বৰ ভি গা नि র বে पि दश धा धा श श श না পা शं शा মা মা ना द র স न्म ম ক থা ভা ই ख नि রা রা भा या া গা গা রা রা मां - II তে না চা ই व लि ব না ক ভূ

1

वे धर्मि किला उक ठाड़ि ना छारे उन रिर्हानी रे द्वा उन मत्न रिश्मा नारे उन नारे हिन्नी द्न्म ठारे बाकना हूल थाक करे प्रमा ज्वा किल ठारे भारम कामा माथ्य उन रम्मि ल्या भड़ा ठारे जामन काममा नारे उन मनि किन्तु छाल उक छूल द्वाना छारे। वे बाकड़ा लास्मिन मार्व उन कामल जार्थ म्हि ठाम ममारे रामिन थ्वा जान स्न्व थाक क्हि उन्हें करेंटि नाम कथा उन म्हि नाम जानाम छालनामा जारे हिड़ना छारे उक लािन निरम राटि जाम कानाम जारा ठाड़िना जाम राटि

II সাসাগারা | গাগাগাগা | পাগামারা | গা-াগা-া |
ঐ এ সেছে কে লোও কে তাড়িও না ভাইওর

#### अकाममं जधााश

## নৈতিক ও আধ্যাত্মিক শিক্ষা

আমাদের বর্তমান ধর্মনিরপেক্ষ রান্ট্রের প্রাথমিক শিক্ষায়তনগুলিতে অন্যান্য শিক্ষার পরিপ্রেক হিসাবে, কি রকম ধর্ম কি প্রণালীতে শিক্ষা দেওয়া যেতে পারে, সেটাই হল এই অধ্যায়ের আলোচ্য বিষয়।

ধর্মে উদারতাই ভারতবর্মের চিরন্তন রীতি। আর্য, দ্রাবিড়, শক, হুণ, কোল, কিরাত প্রভৃতি নানা সংস্কৃতির মিলন এই ভারতে ঘটেছে। খুটোন, ইহুদী, পারসীরা সকলেই এদেশে এসে সাদর আশ্রয় পেয়েছেন। রাজনৈতিক, অর্থনৈতিক অথবা অন্য কোনও কারণে, মধ্যে মধ্যে সংঘর্ম ঘটলেও, মোটাম্টিভাবে বলা যেতে পারে যে, চির্দিনই ভারতবর্ষে বিভিন্ন ও বিচিত্র ধর্মমতাবল্মনা লোকে শান্তি ও সখ্যের সঙ্গে পাশাপাশি বাস করেছেন। এখন স্বাধীন ভারতবর্ষে সেই ধর্মনিরপেক্ষ সাম্য ও মৈত্রীর আদশ্কেই তুলে ধরতে হবে।

কেবলমাত্র ধর্মনিরপেক্ষতার নেতিম্লক আদশই যথেন্ট নয়, কারণ ধর্মনিরপেক্ষতা ক্রমে ধর্মের প্রতি সম্পূর্ণ উদাসনীনতায় পরিণত হতে পারে। এখন সাম্প্রদায়িক সঙকীর্ণ আচার অনুষ্ঠানগ্রাল বাদ দিয়ে সাবভাম ও সর্বজনসেব্য ধর্মশিক্ষা প্রবর্তন করতে হবে। এই ধ্রের আদশ্ হবে—

- (১) বাহ্যাড়ম্বর বাদ দিয়ে নিজের ধর্মের মূল আদশ্গুলি সম্বন্ধে শ্রন্ধা ও সচেতনতা;
- (২) প্রমত-সহিষ্ট্রতা এবং অন্যের ধর্মের প্রতি শ্রন্ধা; স্বধ্মের মৌলিক একত্ববোধ;
- (৩) সকল ধর্মের সার হিসাবে সার্বভৌম মানবধর্মের ভিত্তিস্হাপন।

এই প্রশেনর উত্তরে আমি বলতে চাই যে, এই বয়সে এত বড় আদর্শ বোঝা বা গ্রহণ করা নিশ্চয়ই সম্ভবপর নয়, কিল্তু,

- (5) শিশ কাল হতে অনাড়ম্বর কিন্তু জীবন্ত, সার্বভৌম ধর্মের আবহাওয়ার মধ্যে মানুষ হলে, শিশ রা নিজেদের অজাতসারেও তার থেকে কিছুটা গ্রহণ করে, যাতে, বয়ঃ সন্ধিক্ষণে, তাদের মনোভূমি উন্নত আদর্শ গ্রহণ করবার জন্য প্রস্তুত হয়ে থাকে। কিন্তু, শিশ কাল হতে ক্ষেত্র প্রস্তুত না করলে, উপযুক্ত বয়সে ধর্ম ও নীতির বীজ বপন করা কঠিন হয়ে পড়ে।
- (২) প্রাথমিক নিম্ন ব্নিয়াদী বিদ্যালয়েও উচ্চতর শ্রেণীর ৯।১০ বংসর বয়সের শিশ্বদের মধ্যে নিজধর্ম ও প্রধর্মের প্রতি সচেতন শ্রুণ্ধা জাগান যায়, এবং বিশ্বমানবতাবোধের ভিত্তি স্হাপন করা যায়, যদি বিভিন্ন ধর্মাবলম্বী মহাপ্রুষদের জীবনকাহিনী এবং বিভিন্ন ধর্মের সারাংশগ্রিল শিশ্ববোধ্য সরল ও সরস ভাষায় তাদের কাছে উপস্থিত করা যায়।
- (৩) প্রাথমিক উচ্চ ব্নিয়াদী বিদ্যালয়ের ১১-১৪ বংসরবয়স্ক বালকবালিকাদের জন্য ধর্মশিক্ষা একান্ত প্রয়োজন। উপযুক্ত প্রণালীতে শিক্ষা দিতে পারলে এবং উন্নত দ্টান্ত দেখাতে পারলে এরা অত্যন্ত স্বাভাবিকভাবে এই শিক্ষা গ্রহণ করে। বস্তুতঃ, স্যোগ ও সহায়তা পেলে এই বয়সের শিশ্রা নিজেরাই বিদ্যালয়ের দৈনিক প্রার্থনা পরিচালনা করতে পারে এবং বিভিন্ন ধর্মস্কলান্ত 'দিবস''গ্লি উপযুক্তভাবে উদ্যোপন করতে এরাই হয় প্রবীণ উদ্যোক্তা।

অন্যান্য চিত্তবৃত্তির ন্যায় ধর্মবৃত্তিও মানবমনের একটি সহজাত বৃত্তি। বয়ঃসন্ধিমণে এই বৃত্তির যথার্থ উন্মেষ হয়, কিন্তু, উপযুক্ত পরিবেশ না পেলে পরে এই বৃত্তি বিকৃত অথবা বিলুপত হয়ে যায়। দৈহিক, মানসিক, আনুভূতিক ও সামাজিক বিকাশের সঙ্গে সঙ্গে আমাদের বৃনিয়াদী বিদ্যালয়ে শিশুর চারিত্রিক এবং আধ্যাত্মিক বিকাশের স্ব্যোগ যদি না দিতে পারি তাহলে আমাদের সর্গেগীণ বিকাশের উচ্চ আদর্শ স্কুম হবে।

কি উপায়ে এবং কি প্রণালীতে শিশুদের আধ্যাত্মিক এবং চারিত্রিক বিকাশের সহায়তা করা যেতে পারে সেই কথাই এবারে আলোচনা করব—

(५) धर्म प्रचिक् वा धर्मा परिष्य नाराया निम्म प्राप्त धर्म वा नी ि निम्म प्रविद्या यास ना। ছाট निम्म सर्म वा नी ि ज नारि ज नारि के प्रयास व्यवा मरा प्राप्त स्मि ज नि कि ज नि नी व्यवा परा प्राप्त स्मि ज नि कि ज नि

মধ্যে মধ্যে এই ধরণের গলপকে নাটকের মধ্যে রূপদান করলে, শিশ্রচিত্তে তা সহজেই প্রভাব বিস্তার করে।

(২) তোতাপাখীর মতন নীতিবাক্য মুখস্থ করলেই শিশ্বরা নীতিবান বা স্বুরুচি-সম্পন্ন হয়ে ওঠে না। বরও, স্বাভাবিকভাবে যদি বা তারা নীতিবাক্যের কিছুটা মর্ম গ্রহণ করতে পারত, মুখস্ত করানোর ফলে বাক্যগ্বলি কেবলমাত্র একটি যান্ত্রিক প্রক্রিয়াতেই পর্যবিসিত হয়।

উচ্চতর শেণীর শিশুদের সঙেগ শিক্ষক মহাশয় প্রতি সন্তাহে কিছুয়ণ সময় বিভিন্ন
ধর্মের সদ্ভেদ্থ পাঠ করতে পারেন, ও সেই সকল নীতি ও আদর্শ সম্বন্ধে তাদের স্বাভাবিকভাবে আলোচনা করতে উৎসাহিত করতে পারেন। বিভিন্ন ধর্মাবলম্বী মহাপুরুষদের
জন্মতিথি অথবা তিরোধান দিবস পালন উপলক্ষো সেই সকল মহাপুরুষদের জীবনী ও
উপদেশাবলী পাঠ এবং আলোচনা করা যেতে পারে। তাঁদের জীবনের ঘটনা ও চিত্র
সংগ্রহ ক'রে অভিনয় বা প্রদর্শনীর মধ্য দিয়ে শিশুরা রূপদান করতে পারে।

উচ্চতর শ্রেণীর শিশ্রা যদি প্রাত্যহিক প্রার্থনার সময়ে এবং বিভিন্ন উৎসব উপলক্ষ্যে বিভিন্ন ধর্মগ্রন্থ ও মহাজনবাণী হতে সহজ দুটি একটি উপদেশ পাঠ করে এবং শিশ্রবোধ্য ভাষায় সামান্য একট্র ব্যাখ্যা করে, তাহলে নিম্নতর শ্রেণীর শিশ্রদের মনে তা কিছুটা রেখাপাত করতে পারে।

- (৩) বিদ্যালয়ের দৈনিক প্রার্থনাসভায় এবং বিভিন্ন উৎসব উপলক্ষ্যে যে সকল ভজন ও ধর্ম সঙগীত গাওয়া হবে তার অর্থেক যদি অন্ততঃ প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীর শিশ্বদের বোধ-গম্য হয় তাহলে তারা সঙগীতের স্বর ও কথার সঙ্গে সঙ্গে তার ভাবও কিছুটা গ্রহণ করতে পারে। এই প্রিতকার অন্যত্র শিশ্বদের উপযুক্ত কয়েকটি সঙগীত সন্নিবিষ্ট হল। এই ধরণের অন্যান্য সঙগীতও শিক্ষক সংগ্রহ ক'রে শিশ্বদের শেখাতে পারেন।
- (8) धर्म ७ नीजिनिक्सात लाएात कथा एल जन्नून जात्वचनी ७ छेन्यू न नित्ति। विमालस्त्र नित्ति अनेज्ञात स्ति। विमालस्त्र नित्ति अनेज्ञात करत। वकि विस्ति नीजिनिक्सात कार्मित विष्ठानस्ति जा जात जात नित्ति करत। वकि विस्ति नीजिनिक्सात कारमत मध्य पिर्म नित्ति किनाम मण्डिन नम्म विमालस्त्र मम्म कार्म विकार्णत महास्त्र निक्ति विकार्णत मण्डिन निक्सा कर्म जात्र विकार्णत महास्त्र नित्ति ज्याचार्थी स्वाधार्थी क्रिक्स मान्या कर्म क्रिक्स क्रिक्

শিশ্রা এসকল সম্প্রণভাবে শিখে নিতে পারবে না। কিন্তু বিদ্যালয়ের আবেষ্টনী যদি তাদের মনে অবচেতনভাবে শিশ্বাল হতে কাজ করতে থাকে, তাহলে ক্রমে তাদের ধর্ম ও নীতিশিক্ষা স্বসম্পূর্ণ হতে পারে।

- (৫) धर्म ७ नौणिमिक्सात जारता वकि मन्न वर् कथा वल छेलयुक म्लान्न वर छेमावता। य नकल छेत्रन जामम मिक्स मरामात मिम्मुरमत मर्था नलातिन कत्रन नत्रन निर्मा कर्मात्र मिम्मुरमत मर्था नलातिन कर्म न्याति छवन कर्म करा ना पारत्म वर निर्मा क्रमण काल-कर्म-जानात्र-जानत्र क्रिया कूलरा मा पारत्म, जावरा मा राज्य क्रिया कूलरा मा पारत्म, जावरा मा राज्य क्रिया क्रिया क्रमण क्रामि क्रिया क्रमण क्रामि क्रिया क्रमण क
- (७) क्विल्याव निक्ष्क महाम्रायं प्रश्निक वर्श विद्याल्यं छेत्रठ श्रित्वे य्रथ्के न्या। यार्व्य निम्नावित प्रथा व्यक्ति भ्राय मिन्नावित प्रथा व्यक्ति भ्राय निम्नावित प्रथा व्यक्ति भ्राय भ्राय निम्नावित प्रथा विद्याल्यं निम्नावित प्रथा विद्याल्यं निम्नावित प्रथा विद्याल्यं निम्नावित विद्याल्यं विद्यालयं विद्
- (৭) শিক্ষক মহাশয়ের স্বিধার জন্য বিভিন্ন ধর্মগ্রন্থ ও মহাজনবাণী হতে কিছু কিছু অংশ এই প্রন্থের শেষে লিপিবন্ধ করা হল। বিদ্যালয়ের দৈনন্দিন প্রার্থনাসভায় এইগ্রেলি ব্যবহার করা যেতে পারে।

প্রাত্যহিক সমবেত প্রার্থনাটি খুব সংক্ষিণত এবং হুদ্য়গ্রাহী হওয়া প্রয়োজন। একটি উপযুক্ত সমবেত সঙগীত, কোনও শিক্ষক বা অপেক্ষাকৃত বয়স্ক শিশু কর্তৃক একটি মহাজনবাণী পাঠ ও এক মিনিট কাল সমবেতভাবে নীরব প্রার্থনা—এই হলেই যথেন্ট। কিন্তু, প্রথম শ্রেণী হতেই শিশুদের শিক্ষা দিতে হবে যেন এই সংক্ষিণ্ড অনুষ্ঠানটি যথাযোগ্য নিষ্ঠা ও ভক্তির সঙগে প্রতিপালিত হয়।

#### शृष्ठे धर्म

দীনেরাই ধন্য কারণ তাহাদের জন্যই স্বর্গরাজ্য। শোকার্তেরা ধন্য কারণ তাহারাই সান্ত্বনা পাইবে। বিনীতেরা ধন্য কারণ তাহারাই প্থিবনীর অধিকারী হইবে। ধর্মের জন্য ক্ষুধিত ও ক্ষুধিতেরা ধন্য কারণ তাহারা পরিতৃণ্ত হইবে। দয়াবানেরা ধন্য, তাহারা জন্য ক্ষুবিত। নির্মালচিত্তেরা ধন্য, কারণ তাহারা ঈশ্বরের দর্শন পাইবে। শান্তিদয়া পাইবে। নির্মালচিত্তেরা ধন্য, কারণ তাহারা ঈশ্বরের সন্তান বলিয়া গণ্য হইবে। ধর্মের জন্য সংস্হাপকেরা ধন্য, কারণ তাহাদেরই স্বর্গরাজ্য। (Matt., 5, 3-10.)

অত্যাচারীর প্রতি প্রতি-অত্যাচার করিও না। (Matt., 5, 39.) স্বর্গস্থ পিতার মত তোমরাও নিক্লুষ ও পূর্ণ হও। (Matt., 5, 46.)

র্যাদ চাহিতে জান তবে পাইবে। র্যাদ খ ্রাজিতে জান তবে লাভ করিবে। আঘাত 🆠 করিলেই দ্বার উন্মুক্ত হইবে। (Matt., 7, 8.)

অন্যের নিকট তুমি যে ব্যবহার চাও সেইর্প ব্যবহার অন্যের প্রতিও তুমি করিও। (Matt., 7, 12.)

স্বর্গস্থ পিতার ইচ্ছান্সারে কার্য যে করে সেই জনই আমাদের ভাই, ভগনী ও মাতা। (Matt., 12, 50.)

দ্বর্গরোজ্য দর্মপ্রবীজের মতই ক্ষুদ্র।.....বড় হইলে ইহাই বৃদ্ধ হয়, ইহাতে পক্ষীরা আশ্রয় পায়। (Matt., 13, 31-32.)

সম্প কণাটির সমান বিশ্বাস থাকিলেও পর্বতকে টলাইতে পারা যায়। বিশ্বাসের কাছে কিছুই অসম্ভব নাই। (Matt., 17, 20.)

হৃদয় পরিবর্তান করিয়া স্কুদ্র শিশ্বর মত না হইলে স্বর্গরাজ্যে প্রবেশ করিতে পারিবে না।
শিশ্বর ন্যায় নিজেকে নম্ম করিলেই স্বর্গরাজ্যে শ্রেণ্ডত্ব লাভ করিবে। (Matt., 18, 3-4.)

সকল হুদয় দিয়া ঈশ্বরকে ভালবাস। প্রতিবেশীকে আত্মবং প্রীতি কর। ইছাই ভগবানের শ্রেষ্ঠ শাস্ত্র। (Matt., 22, 36-39; Luke, 10, 27.)

পরের ছোট দোষও দেখিতে পাও। নিজের মহৎ দোষও দেখ না। (Luke., 6, 41.)

যে ঈশ্বরের আজা শোনে এবং পালন করে সেইজনই ধন্য। (Luke, 11, 28.)

নবজন্ম লাভ না করিলে ঈশ্বরকে দেখা যায় না। (John, 3, 3.)

ঈশ্বর ভাবস্বর প (spirit) ভাবে এবং সত্যেই ঈশ্বরের উপাসনা করিতে হয়। (John, 4, 24.)

পত্যকে জান। পত্যই তোমাদিগকে মুক্তি দিবে। (John, 8, 32.)

ঈশ্বরের ইচ্ছানুসারে চলিলে, কে আর শত্রু হইতে পারে? (Rom, 8, 31.)

যদি দীনদুঃখীর উদর প্রণের জন্য সর্বস্বও দান করি, শরীরও দান করি, তবুও দাক্ষিণ্য (charity) ও প্রতি না থাকিলে কোনো লাভ নাই। (I. Cor., 13, 3.)

1

অহ্নগত শাস্ত্রে ও ভাষায়(letter) প্রাণ নাই। ভাব ও প্রীতিই (spirit) প্রাণ দিতে পারে। (II, Cor., 3, 6.)

বিশ্বাসই আমাদের চালাইতে পারে, চক্ষু পারে না। (II, Cor., 5, 7.)

প্রেম, আনন্দ, শান্তি, সহিঞ্তা, ভদ্রতা, কল্যাণশীলতা, বিশ্বাস, নম্রতা, সংয্ম, সবই প্রাণময় ভাবেরই (spirit) ফল। (Gal., 5, 22-23.)

কল্যাণকর্মে যেন কখনো দ্রান্ত না হই। (Gal., 6, 9.)

তোমারও প্রভু আছেন, ইহা ব্রিয়া আপনার ভূত্যগণকে তাহাদের ন্যায়সঙগত প্রাপ্য দান কর। (Col., 4, 1.)

বিচার করিয়া দেখ। বিচারে যাহা মনে হয় ভাল তাহাতেই দ্যুভাবে লাগিয়া **থাক।** (I. Thess., 5, 21.)

(৭) ৯ বড়দের পিতামাতার ন্যায় সম্মান কর। কনিষ্ঠদের প্রতি ভাই ভগ্নীর মচ শুদ্ধভাবে আচরণ কর। (I. Tim., 5, 1-2.)

অন্তরে অন্তরে যাহা আমাদের প্রাথিতি অথচ যাহা আমাদের দ্বিটর অতীত, একমার বিশ্বাসই তাহার প্রমাণ।  $(\mathrm{Hib.},11,1.)$ 

ভাইকে যদি বিদেব্য কর তবে তাহা নরহত্যার মতই অপরাধ। (I, John, 3, 15.) স্থাসন্তর প্রেম্বর প্রম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রম্বর প্রেম্বর প্রেম্বর প্রম্বর প্রমেম্বর স্বর প্রমেম্বর স্বেম্বর 
ঈশ্বর প্রেম্ন্বর্প। প্রেমের মধ্যে বাস করা ঈশ্বরের মধ্যে বাসেরই সমতুল্য। (I, John, 4, 16.)

প্রেমই ভয়। পূর্ণ প্রেম সকল ভয় জয় করে। উভয়ের মধ্যে গ্লানি আছে। ভয় আর প্রীতির পূর্ণতা এক কথা নয়। (I, John, 4, 18.)

যদি কেহ বলে, "আমি ঈশ্বরকে ভালবাসি," কিন্তু যদি সে অপর মানুষকে বিদ্বেষ করে, তবে তাহার কথা মিছা। চোখে-দেখা আপন ভাইকেই যে ভালবাসিল না সেজন না-দেখা ঈশ্বরকে কেমন করিয়া ভালবাসিবে? (I, John, 4, 20.)

## বৌদ্ধ ধর্ম

যেখানে ধর্মের অপমান হয় সেখানে থাকিও না। (ললিত বিস্তর, ৪, ১, ২১।)
ভোগস্খ্ময় গ্রাম্য জীবন অপেক্ষা মৃত্যুও ভাল। (ললিত বিস্তর, ১৮, ১, ১৬।)
নিরপরাধদের প্রতি অপরাধ করার বহু দোষ। (ললিত বিস্তর, ২১, ১৬, ৩৭।)

আজুদীপ হও, আজুশরণ হও, অনন্যশরণ হও, ধর্মদীপ হও, ধর্মশরণ হও, অন্যের শরণাপন্ন হইও না। (মহা-পরিনিন্বানস্ত, ২, ৩২।)

কাম-রাগাদিশ্ন্য ও শীলব্রত হইলেই মান্য ভিক্ষুর কাষায় বন্দ্র ধারণ করিছে পারে। (ধন্মপদ, ১০।)

পাপকারী উভয় লোকেই তাপ ভোগ করে। (ধম্মপদ, ১৭।)

পরের কৃত-অকৃত কর্ম বিচার না করিয়া আপন কৃতাকৃত বিচার কর। (ধ্যম্পদ,

পাপ প্রথমে সুখকর হইলেও পরিণামে দুঃখকর। (ধ্রুমপদ, ৬৯।)
তিনিই পণ্ডিত যিনি আপনাকে দমন করিতে পারেন। (ধ্রুমপদ, ৮০।)

সার্থি যেমন অশ্বকে চালন করে তেমনি প্রুষ ইন্দির্গণকে কল্যাণার্থ চালনা করিবেন। (ধন্মপদ, ১৪।)

অন্যকে জয় করা অপেক্ষা আপনাকে জয় করাই শ্রেয়ঃ। (ধম্মপদ, ১০৪।)

দুশ্চরিত্রের দীর্ঘ জীবন অপেক্ষা শীলবানের একদিনের জীবনও ভাল। (ধ্যম্পদ, ১১০।)

হঠাৎ একবার কৃত হইলেও প্নঃপ্নঃ পাপ করিবে না। পাপ দুঃখকর। (ধন্মপদ, ১১৭।)

সকলকে আপন মনে করিয়া আঘাত বা বধ করিবে না। (ধন্মপদ, ১২৯।) সুব্রতগণ আপনাকে দমন করেন। (ধন্মপদ, ১৪৫।) অসাধুও অহিত কর্মতি সহজেই করা যায়, সাধুও হিতকর কর্ম প্রম দুজ্কর। (ধ্ন্মপদ, ১৬৩।)

হীন ধর্ম সেবা করিবে না। প্রমত্তাবে বাস করিবে না। (ধ্মস্পদ্, ১৬৭।)

পাপ না করা, কুশল কর্ম করা, চিত্ত নির্মলে রাখা, ইহাই বুদেধর অনুশাসন। (ধম্মপদ, ১৮৩।)

আসক্তির মত অণ্নি নাই, বিদেব্যের মত পাপ নাই। (ধ্ম্মপদ, ২০২।)

ন্বাস্হ্যই পর্ম লাভ, সন্তোষ্ট প্রম ধন। (ধন্মপ্দ, ২০৪।)

সত্য কথা বলিবে। ক্রোধ করিবে না। প্রাথিতি হইলে কিছু দিবে। (ধম্মপদ, ২২৪।)

কায়-মন-বাক্যের সর্ববিধ দুজ্লার্য পরিত্যাগ করাই ভাল। (ধ্ম্মপদ, ২০১-২০৪।)
পরদোষ শীঘ্র দেখা যায়, আত্মদোষ দেখা যায় না। (ধ্ম্মপদ, ২৫২।)

উদ্যমের সময় উদ্যম না করিলে, যুবা এবং সমর্থ হইয়াও অলস রহিলে সেই অলস ও নিবীয়া মানুষ কখনও জ্ঞানমার্গ লাভ করিতে পারে না। (ধ্ম্মপদ, ২৮০।)

নিজে যাহা লাভ করিয়াছ তাহা তুচ্ছ করিও না, পরদ্রব্যের দপ্হা করিও না। (ধম্মপদ,

স্থিরবুদ্ধি হও, কর্তব্যে নিপুণ হও, তবেই দুঃখ ধ্বংস করিতে পারিবে। (ধ্ম্মপদ,

কায়ে মনে বাক্যে য°। ছার পাপ নাই, এই ত্রিবিধ বিষয়ে যিনি সংযত, তিনিই ব্রাহ্মণ।

যিনি দণ্ড পরিহার করিয়া দুর্বল-সবল স্বভূতে কৃপাবান, যিনি বধ করেন না বা বধ করান না, তাহাকেই ব্রাহ্মণ বলি। (ধম্মপদ, ৪০৫।)

যিনি কঠোর বচন ছাড়িয়া সত্য কথা বলেন, যিনি অপ্রদন্ত বস্তু গ্রহণ করেন না, তংহাকেই ব্রাহ্মণ বলি। (ধন্মপদ, ৪০৮।)

#### ইসলাম

हेमलाम कथात म्लरे हरेल "मान्छि"। मान्छि-रे रेरात मात मछ। काताल वलन— म्वर्ण धर्क जनारक "मान्छि" "मान्छि" विलया मरम्वायन कित्रत (५०, ५०)। म्वर्ण मान्छित वानी हाड़ा जात किहू रे माना याय ना (८७, ५७)। मान्छियामरे कातालित लक्षा (५०, ५७)। काताल छा भूविवणी मव मान्छ ७ मराभूत् यरमत वानीरक ममर्थन कित्रतात जनारे हेक (७, ७)। कार्डिंग काताल जना यर्भित वित्रूष्यामी नरह।

কাহাকেও আল্লার সমমর্যাদাসম্পন্ন জ্ঞান করিও না; পিতামাতার প্রতি সমুদ্ধ ব্যবহার কর; খাইতে দিতে পারিবে না ভাবিয়া সন্তান-হত্যা করিও না—আল্লাই তোমাদের ও তোমাদের সন্তানদের আহার-দাতা; যাহা কুংসিত, গোপনে হোক কিম্বা প্রকাশ্যে হোক তাহার নিকটেও মাইও না.....সংভাবে ভিন্ন অনাথের ধন-সম্পত্তির নিকটে যাইও না.....ন্যায় ধর্মের বশবর্ত্তি হইয়া ওজন ঠিক দাও, মানুষের পক্ষে যাহা সাধ্য তাহাই আল্লা তাহার জন্য বিধান করেন; যখন কথা বল তখন হক কথা বল আত্মীয়ের বিরুদ্ধে হইলেও....এইই আল্লার পথ, সত্য পথ, এই পথ অনুসর্গ কর, অন্য পথে যাইও না, গেলে তাহার পথ হইতে বিচ্যুত

সব দেশে সব জাতির মধ্যেই ভগবান ত'হার বার্তাবহদের পাঠাইয়াছেন। (৩৫,২৪।)
প্রভু পর্ম কার্ত্বিক ও দ্য়াময়। (স্রা ফাতিহা, ২।)

অপব্যয় করিও না। আত্মীয়গণের যাহা প্রাপ্য তাহা দিবে। দরিদ্র ও পথচারীদেরও সহায়তা করিবে। (১৭শা)

সংযমের দ্বারা চরিত্র শুদ্ধ রাখিবে। (১৭শ।)

शर्व कित्रं गा। (५१ग।)

দান করিয়া ক্লেশ দেওয়ার চেয়ে স্নেহবাক্য ও হৃমা ভাল। (১১শ)

পূর্ব পশ্চিম সব দিকই ঈশ্বরের। তিনি সর্বব্যাপী, সর্বজ্ঞ। যেদিকেই মুখ করিয়া উপাসনা কর, তাহার মুখ সেদিকেই বিরাজমান। (১১শ)

তিনি ছাড়া আর কোনো প্রভু নাই। তিনি দয়ায়য়। (১১শ)

তিনি বিশ্বাসীদের সহায়। তিনি তাহাদের অন্ধকার হইতে আলোকে লইয়া যান। (১১শ)

ত হাতে নির্ভার কর। তিনি সহায় থাকিলে কেহই তোমাদিগকে পরাজিত করিতে পারে না। (৩য় অধ্যায়।)

न্যায় এবং ধর্ম অনুসারে পরস্পরের সহায়তা কর। অন্যায়ে ও বিদ্বেষে সহায়তা করিও

শা। (৫ম।)

সত্য পথে চলিলে কেহ তোমাদের স্থতি করিতে পারে না। (৫ম।)

क्रेम्द्रवे ज्ञा १८थ नरेशा यान। (५०म।)

হতাশ হইও না। ঈশ্বরের দয়ার শেষ নাই। (১২শ।)

নিতা উপাসনা কর, দান কর, ত'হাতে দ্য় নির্ভর কর। (২২শ।)

নিত্য প্রার্থনা কর, দর্ব অপরাধ হইতে তাহা তোমাকে রক্ষা করিবে। (১৯শ।)

যিনি ক্ষমা করেন এবং শন্ত্র সহিত কলহ বিদেব্য মিটাইয়া ফেলেন তিনি ঈশ্বরের প্রসাদ
লাভ করেন। (৪২শ।)

য°হারা ঈশ্বরে বিশ্বাস করেন ত°াহারা প্রস্পরে ভাইএর মত। ভাইদের মধ্যে কোনও বিদেব্য যেন না থাকে। (৪৯শ।)

(হদীস হইতে)

0

আল্লার শত দয়ার মধ্যে একট নয়া লইয়া জগতে সকলে পরস্পরে দয়া করে। (মুসলিম।)
যে যেট ুকু মঙ্গল করে, আল্লা তাহার দশগণে মঙ্গল করেন। (মুসলিম।)

প্রত্যেক সংকার্যই দানের সমান। (উভয়।) সচ্চরিত্রতাই ধর্ম। (উভয়।)

আল্লা পবিত্র। তিনি কিছু অপবিত্রই স্বীকার করেন না। (মুসলিম।)
মিখ্যা বাক্য ও আচরণ যে ত্যাগ না করে তাহার উপবাসে কোনোই ফল নাই।
(বুখারী।)

বিশ্বজগৎ আল্লার পরিবার; সে-ই আল্লার কাছে ভাল যে ত'ার পরিবারের প্রতি প্রেমপূর্ণ।

## हिन्तू धर्म

একই দেবতা ভিন্ন ভিন্ন নামে অভিহিত ও প্রজিত। (ঋণ্বেদ, ১, ১৬৪, ৪৬।) তিনি আমাদের স্বাকার বন্ধু, পিতা ও প্রভু। (যজুবেদ, বাজ, ৩২, ১০।)

তোমাদের মধ্যে সহ্দয়তা, স্মচিততা ও অবিদ্বেষ বিরাজ কর্ক। ভাই যেন আর ভাইকে দেব্য না করে। ভাগনী যেন আর ভাগনীকে দেব্য না করে। তোমরা একচিত ও একরত হইয়া সকলে প্রস্পরের প্রতি কল্যাণ্বাণী বল। (অথব বেদ, ৩, ৩০, ১-৩।)

শুধু দেবতা বা রাজার প্রিয় কার্য করিলে চলিবে না। ছোট বড় স্বার্ট প্রিয় ও কল্যাণ কর্ম করিতে হইবে। (অথব বেদ, ১৯, ৬১, ১।)

সত্যের তপ্স্যাতেই আত্মাকে লাভ করা যায়। সত্যেরই জয় হয়, মিখ্যার জয় হয় না। (মুন্ডক, ৩, ১, ৫।৬।)

সেই এক পরম প্রাণই সর্বভূতে বিরাজিত। (মুণ্ডক, ৩, ১, ৩।)

অশান্তি ও দুশ্চরিত হইতে বিরত না হইলে, শুধু জানের দ্বারা তাহাকে পাওয়া যায়

অসত্যা, অন্ধকার ও মৃত্যু হইতে সত্যা, জ্যোতি ও অম্তে আমাকে উপনীত কর। (বৃহদারণ্যক, ৩, ৩, ২৮।)

সর্বভূতের মধ্যে সত্যই মধ্ময়। সত্যের কাছেও সর্বভূত মধ্ময়। এই সত্যে বিরাজমান
প্রেষ অম্তময় ও তেজোময়। (বৃহদারণ্যক, ২, ৫, ১২।)

মানুষের মধ্যে যে রক্ষকে দেখিয়াছে সেই ত'াহাকে প্রম্প্রানে দেখিয়াছে। (অথব বিদ, ১০, ৭, ১৭।)

স্বজিনীবে একই দেবতা বিরাজমান, যদিও তাহা আমরা এই চক্ষে দেখিতে পাই না। (শেবতা, ৬, ১১।)

সর্ব এই ঈশ্বর বিরাজমান। তিনি যাহা দেন তাহাই ভোগ কর। (ঈশা, উপ, ১।)

সত্যেই বায় প্রবাহিত, সত্যেই স্থা উদিত। দ্যুলোকেও সত্য। সত্যেই রাজ্যের প্রতিষ্ঠা, সত্যেই সব কিছু প্রতিষ্ঠিত। তাই সত্যকে বলা হয় পরম বস্তু। (তৈত্তি, আ, ১০, ৬৩, ১।)

আমরা যেন কর্ণে কল্যাণের কথাই শুনি, চক্ষে যেন কল্যাণই দেখি। (ঋণ্বেদ, ১, ৮৯, ৮।)

সকল অবস্থায় আমাদের মন যেন সবার প্রতি কল্যাণ সঙকল্পেই পূর্ণ হয়। (যজুর্বেদ, বাজসনেয়ি, ৩৪, ১-৫।)

অলপ বয়সে এমন সংকাজ করিবে, যাহাতে বৃদ্ধকালে সুখে থাকিতে পার। (মহাভারত, উদ্যোগ, ৩৪,৬৯।)

যে কর্মকে কল্যাণকর মনে করিবে, তাহা জীবনের ব্রত করিবে। কেহ অন্যায় করিলে তাহার প্রতি ফিরিয়া অন্যায় করিও না। সদা সাধু আচরণ করিবে। (মহাভারত, শান্তি, ৯৪, ১০।) (মহাভারত, বনপর্ব, ২০৬, ৪৪।)

প্রীড়িতকে শ্যা দিবে, পরিশ্রান্তকে আসন দিবে, তৃঞার্তকে পানীয় দিবে, স্কুধিতকে অম দিবে। (মহাভারত, বনপর্ব, ২, ৫৪।)

ধর্মকে যদি নত্ত কর, তবে ধর্মের দ্বারা তুমিই নত্ত হইবে। ধর্মের রক্ষা করিলে তুমিই রক্ষা পাইবে। (মন্, ৮, ১৫।)

पुः थ शारेटल अथरम मन मिटन ना। (मन्, 8, 5951)

K.

মানুষ হইতে শ্রেষ্ঠ আর কিছুই নাই। (মহাভারত, শান্তি, ২৯৯, ২০।)

অধর্মের দ্বারা হয়তো কিছুকাল ধন ধান্য বৃদ্ধি হয়, সুখ সম্পত্তিও হয়, সকলকে ছাড়াইয়াও যাওয়া যায়, কিল্তু ভিতরে ভিতরে সম্লে সে বিন্ট হয়। (মন্, ৪, ১৭৪।)

সুখার্থী ব্যক্তি পরম সন্তোষ আশ্রয় করিয়া সংযত হইবেন। সন্তোষেই সকল সুখ, অসন্তোষেই যত দুঃখ। (মন্, ৪, ১২।)

প্রবশ্তাই সকল দুঃখ, আঅবশ্তাই সর্ব সুখ। (মনু, ৪, ১৬০।)

জলে হয় দেহশুদিধ, সত্যে হয় মনঃশুদিধ, বিদ্যার তপস্যায় হয় আঅুশুদিধ, জানের দ্বারা হয় বুদিধর শুদিধ। (মন্, ৫, ১০৯।)

কট্ বাক্যের উত্তর্দিও না, কাহাকেও অপমান করিও না, কাহারও শন্ত্রতা করিও না। (মন্, ৬, ৪৭।)

অপরাধ করিয়া অনুতাপ করিলে আর পাপ থাকে না। জানিয়া বা না জানিয়া অপরাধ না করিয়া ফেলিলেও সাবধান হইবে, আর যেন তাহা না করা হয়। (মন্, ১১, ১৩০-১৩১)

গাছপালা পশ্-পক্ষীও বাঁচে, কিল্কু দেই বাঁচাই যথার্থ বাঁচা যখন আমাদের মনও জীবন্তভাবে বাঁচে। (যোগবাশিষ্ঠ, ২, ২৮।)

অকল্যাণ হইতে মনকে কল্যাণে লইয়া যাওয়াই মন্ম্যত্ব। (যোগবাশিষ্ঠ, ৪, ১৭।) সংসংগই যথার্থ তথিস্থান। (যোগবাশিষ্ঠ, ৪, ৭৯।)

যিনি উদার তিনি সকলকেই আত্মীয় মনে করেন। (যোগবাশিষ্ঠ, ১৯, ৫৭।)

ক্ষমার দ্বারা ক্রোধকে জয় করাই পৌরুষ। (মহাভারত, আদিপর্ব, ৭৯, ৪।)

ক্ষমাতেই ধর্মের সব কিছু নিহিত। (মহাভারত, বনপর্ব, ২৯, ৩৬।)

যে ধর্ম অন্য ধর্মের বিরুদ্ধ তাহা যথার্থ ধর্ম নয়। বিরোধহীন ধর্মই যথার্থ ধর্ম। (মহাভারত, বনপর্ব, ১৩১, ১১।)

দ্রাই ধর্মা, ক্ষ্মাই বল, সত্যই প্রম ব্রত। (মহাভারত, বনপর্বা, ২১২, ৩০।)

সর্বভাবে সকলের হিতসাধন, অনুগ্রহ ও দানই সনাতন ধর্ম। (মহাভারত, বনপর্ব, ৩১২, ৭৬।)

পাপ করিবে না। পাপাচরণে প্রজ্ঞা নন্ট হয়। (মহাভারত, উদ্যোগ, ৩৪, ৬২।)

অক্রোধের দ্বারা ক্রোধকে, সাধ্তার দ্বারা অসাধ্তাকে, দানের ও উপকারের দ্বারা অপকারকে ও সত্যের দ্বারা মিখ্যাকে জয় করিবে। (মহা, উদ্যোগ, ৭৩, ৭৪।)

শন্ত গ্রে উপস্থিত হইলে উচিত আতিথ্য করিবে। পাশ্রাগত ছেদককেও বৃদ্ধ ছায়া দানে বণ্ডিত করে না। (মহা, শান্তি, ২৪০, ৫।)

স্যত্নে ধর্ম, সত্য, জান, ন্যায়, দ্য়া, সরলতা ও সাধ্তা আচরণ কর। (ম্হা, শান্তি, ১৫৩, ৮১।)

সতাই নিতা ও সনাতন ধর্ম, সতাই প্রমা গতি, সতাকেই নমস্কার কর। ধর্ম, যোগ, তপস্যা, যজ্ঞ প্রভৃতি স্বই সত্যে প্রতিষ্ঠিত। (মহা, শান্তি, ১৬২, ৪-৫।)

সমতা, দম, অমাৎসর্য, হুমা, হুী, তিতিহ্বা, অনস্য়েতা, ত্যাগ, ধ্যান, আয়াত্ব, ধৈয়া, দ্যা, অহিংসা—এই সব সত্যেরই নানাবিধ রূপ। (মহা, শান্তি, ১৬২, ৮-৯।)

রালণের পক্ষে একতা, সমতা, সত্যতার মত সম্পদ আর নাই। (মহা, শান্তি, ২৭৫, ৩৭।)

কল্যকার কাজ আজ কর। বৈকালের কাজ সকালে কর। (মহা, শান্তি, ১৭৫, ১৫।)
যুবা বয়সেই ধর্মশীল হওয়া উচিত। (মহা, শান্তি, ১৭৫, ১৬।)

বিদ্যার সমান চক্ষু নাই, সত্যের সমান তপস্যা নাই, আসক্তির সমান দুঃখ নাই, ত্যাগের সমান সুখ নাই। (মহা, শান্তি, ১৭৫, ৩৫।)

অহিংসা, সত্য, সরলতা, ক্ষমা, অপ্রমাদ য°াহার আছে তিনিই সুখী। (মহা, শান্তি, ২১৫, ৬।)

জ্ঞানের সমান পবিত্র আর কিছুই নাই। (গীতা, ৪, ৩৮।)

স্বজীবে সমভাবে বিরাজমান প্রমেশ্বরকে দেখাই সত্য দ্ছি। (গীতা, ১৩, ২৭।)

মাতাপিতার শুরুষা, ভাইদের প্রতি স্নেহ যদি থাকে তবেই স্বর্গগামী হইবে। (মহা, অনুশাসন, ২৩, ৯৪।)

যে সকলকে অভয় দান করে, সর্বভূতে তাহাকে অভয় দান করে। (মহা, অনুশাসন, ১১৬, ২৩।)

অহিংসাই পরম ধর্ম, পরম দম, পরম দান, পরম তপস্যা, পরম যজ, পরম বল, পরম বন্ধু, পর্ম সূখ, পরম সত্য, পরম শাস্ত্র। (মহা, অনুশাসন, ১১৬, ৩৮-৪০।)

সত্যের সমান ধর্ম নাই, মিথ্যার সমান পাপ নাই। সত্যহীন প্রুজা, জপ, তপ, সবই ব্যথ । (মহানিবাণ তল্ম, ৪, ৭১-৭২।)

সত্য যাহার ব্রত, দীনে যাহার দ্য়া, কাম ক্রোধ যাহার বশে, সেজন ব্রৈলোক্যজয়ী। (মহানিব্রিণ তন্ত্র, ৮, ৬৭।)

বিশ্বের হিতসাধনেই বিশ্বাত্মা প্রমেশ্বর প্রীত হন। (মহানির্বাণ তন্ত্র, ২, ৩৩।)
যাহারা দ্য়াশীল, কলি তাহাদের কিছু করিতে পারে না। (মহানির্বাণ তন্ত্র, ৪, ৫৭।)
যাহারা হিংসা-মাংস্যাহীন ও দম্ভ-দ্বেষরহিত, কলি তাহাদের কিছু করিতে পারে না।
(মহানির্বাণ তন্ত্র, ৪, ৬১।)

# हिन्दू (टेब्बन)

জৈন—
জীবমাত্রেই চায় বংচিতে। জীবন স্বার্ই প্রিয়। দুঃখু ও মৃত্যু স্বাই এড়াইতে চায়।
জীব বধ করিও না। (আচারাঙ্গ স্ত্র।)

যতদিন প্রিত্র শুদ্ধ স্বর্পের বোধ না হয় ততদিন ব্রত, তপ্স্যাদি স্ব আচারই নির্থক।
(যোগ্রীক্র ১)

(যোগীন্দ্র।)
কামকে জয়় করাই বীরত্ব। যুদ্ধে বীয়র্গ প্রকাশ বীরত্ব নহে। (স্বামী কাতিকেয়।)
১৫

অন্য জীবে দয়া করার অর্থ আপনাকেই দয়া করা, অন্যকে হিংসা করার অর্থ আত্মহিংসা। দূর হইতেই হিংসাকে ত্যাগ করা শ্রেয়ঃ। (শিবাযাণ)

ताल एचरसत তत्र ७१ क्ल मत्न वाज्य प्रवृत मर्गन स्मरण ना। (मित स्मन।)

অসংযমই দুঃখ ও আপদের প্রা। সংযমই সুখের প্রা। ইহা জানিয়া যে পথে ইচ্ছা, যাও। (সংকৃত।)

जन्य कि? य जकत्रीय कर्म करत्।

र्वाधत कि? य शिववाका त्मारन ना।

Commence of the Commence of th

रवावा रकं? य यथान्रमस्य कल्डान वाका विलय जारन ना। (श्रार-नाखन ने ना

ভাল কাজ না করিয়াও তাহার ফল পাইতে লোকে চায়। আর পাপের ফল ভোগ করিতে না চাহিয়াও লোকে পাপ করে। (গুণভদ্রাচার্য।)

্ জান বিনা সাধ্যার কোনো অর্থ নাই। খাদ্য না থাকিলে পাত্র দেখিয়া পেট ভরে না। (ফ্রচ্ডামণি।)

যদি ক্রোধ করিতে হয় তবে ক্রোধের প্রতি ক্রোধ কর। কারণ ক্রোধই সর্ব অন্থেরি মূল। (বাদীভঙ্গিংহ।)

যে অপরের দোষের মত নিজের দোষও দেখে সে অতুলনীয় মানুষ। সেই যথার্থ মুক্ত পুরুষ। (বাদীভিসিংহ।)

পরের অনুকরণ করার অর্থ নাই। সত্যকে অনুসর্ণ কর। (আষাঙ্গ সূত্র।)



